हिन्दी उपन्यासों के बेस्ट सेलर

अमित खान

का नया बेहद खौफनाक थ्रिलर

हादसे की रात

उसकी रातों-रात किस्मत बदल गयी

एक अत्यन्त रहस्यमयी रात की थर्रा देने वाली कहानी। वह दिल्ली में एक मामूली ऑटो रिका ड़ाइवर था। उसका अरमान था कि वह 'धन कुबेर' बने। उसके आगे-पीछे नौकर चाकर हों।

फिर -एकाएक उसकी किस्मत ने पलटा खाया और उसके हाथ 24 कैरेट सोने की छ: मूर्तियां लग गयीं, जिनकी कीमत 2 करोड़ रुपये थी।

लेकिन मूर्तियां मिलने के बाद उसके जीवन में तबाही, आतंक हृदयविदारक घटनाओं का ऐसा खौफनाक सिलसिला शुरू हुआ कि वह त्राहि-त्राहि कर उठा।

हादसे की रात

अमित खान

सावधान !

इस उपन्यास के अंत की एक भी पंक्तिपहले ना पढ़ें।

हमारा दावा है-यह उपन्यास आपका जबरदस्तमनोरंजन करेगा

उपन्यास : हादसे की रात

लेखक : अमित खान

प्रकाशक : रवि पॉकेट बुक्स,
33 हरी नगर, मेरठ – 250 002
फोन : (0121) 2521067,2531011
लेजर टइपसैटिग : मित्तल कम्प्यूटर्स, मेरठ
मुद्रक : विमल ऑफसैट प्रिन्टर्स, मेरठ।

HADSE KI RAAT : Commander Servics : By AMIT KHAN

लेखकीय...

यह मेरे 'फेवरेट' सब्जेक्ट. में एक है!

पिर्य पाठको,

'रवि पॉकेट बुक्स' में प्रस्तुत है, मेरा नवीनतम हंगामाखेज थ्रिलर उपन्यास-हादसे की रात।

यह उपन्यास मैंने एक ऐसे सब्जेक्ट पर लिखा है, -जिसका कथानक मेरे दिमाग में तब से है, जब मैंने उपन्यास की दुनिया में लेखन कार्य शुरू ही किया था।

यह सबजेक्ट मेरे सबसे ज्यादा 'फेवरेट' सब्जेक्टों में एक है।

इसकी शायद एक मुख्य वजह ये भी है कि यह सब्जेक्ट मेरे दिमाग में लम्बे टाइम तक रहा है और इसीलिए मुझे इस सब्जेक्ट पर मेहनत करने का काफी 'मौका मिला है। इसे अच्छी तरह सजाने-संवारने का मौका मिला है। इस सब्जेक्ट को मैं बहुत पहले ही लिख देना चाहता था-लेकिन बीच-बीच में कुछ ऐसे व्यवधान आते रहे कि यह सब्जेक्ट लेट होता चला गया।

शायद इस कथानक खो अभी मार्किट में आना था। प्रस्तुत थिलर उपन्यास मैंने बहुत मेहनत और लगन से लिखा है और मुझे पूरी उम्मीद है कि हमेशा की तरह यह उपन्यास भी आपका भरपूर मनोरंजन करेगा।

इस उपन्यास में कुलभूषण का कैरेक्टर आपको शत-प्रतिशत पसंद आयेगा !

कुल मिलाकर हादसे की रात अब आपके हाथों में है। अब सिर्फ यह देखना है कि उपन्यास आपको कैसा लगा।

आपको पसंद आया या नहीं

आपको अमूल्य राय की प्रतीक्षा में-

अमित खान
डी-603, स्काई पार्क,
अजीत ग्लास गार्डन के नजदीक
ऑफ एस.वी. रोड, गोरेगांव (वेस्ट)
मुम्बई-400104

Detailed view of table

'अमित खान' के अन्य सम्पर्क सूत्र
मोबाइल : 09821163955
(सिर्फ रविवार को रात्रि दस बजे तक)
ई-मेल : foramitkhan@gmail.com
टिवटर : Yesamitkhan

Detailed view of table

हादसे की रात

अमित खान

तीन जुलाई!

वह बुद्धवार की रात थीं-जिस रात इस बेहद सनसनीखेज और दिलचस्प कहानी की शुरुआत हुई।

वह एक मामूली ऑटो रिक्शा चालक था।

नाम-कुलभूषण!

कुलभूषण पुरानी दिल्ली के किशनपुरा में रहता था। किशनपुरा-जहां ज्यादातर अपराधी किस्म के लोग ही रहा करत है। जेब तराशी, बूट लैगरस और चैन स्नेकिंग से लेकर किसी का कतल तक कर देना भी उनके लिये यूं मजाक का काम है-जैसे किसी ने कान पर बैठी मक्खी उड़ा दी हो।

कुलभूषण इस दुनिया में अकेला था-बिल्कुल तन्हा।

फिर वह थोड़ा डरपोक भी था।

खासतौर पर किशनपुरा के उन गुण्डे-मवालियों को देखकर तो कुलभूषण की बड़ी ही हवा खुश्के होती थी-जो जरा-सी बात पर ही चाकू निकालकर इंसान की आत-आतड़ियां बिखेर देते हैं।

सारी बुराइयों से कुलभूषण बचा हुआ था-सिवाय एक बुराई के।

शराब पीने की लत थी उसे।

उस वक्त भी रात के कोई सेवा नौ बज रहे थे और कुलभूषण किशनपुरा के ही एक दारू के ठेके में विराजमान था।

उसने मेज से उठाकर दारू- की बोतल मुंह से लगायी -चेहरा मत की तरफ उठाया-फिर हल्दी जैसे व पाले रंग वाली दारू को गटागट हलक से नीचे उतार गया। उसरे जब फट् की जोरदार आवाज के साथ बोतल वापस मेज पर पटकी, तो वह पूरी तरह खाली हो चुकी थी।

ठेके में चारों तारफ गुण्डे-मवालियों का साम्राज्य कायम था-वह हंसी-मजाक में ही भद्दी- भद्दी- गालियां देते हुए दारू पी रह थे और मसाले के भुने चने खा रह थे।

कुछ, वेटर इधर-उधर घूम रहे थे।

"ओये-इधर आ।" कुलभूषण ने नशे की तरंग में ही एक वेटर कीं आवाज लगायी।

"क्या है?"

"मर वास्ते एक दारु की बोतल लेकर आ-जल्दी-फोरन।" उदेश दनदनाने के बाद कुलभूषण ने अपना मुंह मेज की तरफ? झुका लिया और फिर आखें बंद करके धीरे-धीरे मेज ठकठकाने लगा तभी महसू_स्_हुआ-जैसे कोई उसके नजदीक आकर खड़ा हो गया है। "बोतल यहीं रख दे।" कुलभूषण ने समझा वेटर है- "और फूट यहां से।"

लेकिन उसके पास खड़ा व्यक्ति एक इंच भी न हिला।

"अबे सुना नहीं क्या?" झल्लाकर कहते हुए कुलभूषण ने जैसे हो गर्दन को उपर उठाई-उसके छक्के छूट गए।

मेज पर ताल लगाती उसकी उंगलियां इतनी बुरी तरह कांपी कि वह लरजकर अपने ही स्थान पर ढेर हो गयीं।

सामने रुस्तम सेठ खड़ा शा-दारू के उस ठेक का मालिक। लगभग पचास-पचपन वर्ष का व्यक्ति-लाल-सुर्ख औखे, लम्बा-चौड़ा डील-डील और शक्ल-सूरत से ही बदमाश नजर आने वाला।

"र...रुस्तम सेठ अ...साप!" कुलभूषण की आवाज थरथरा उठी- "...आप!"

कुलभूषण कुर्सी छोड़कर उठा।

"बैठा रह।" रुस्तम सेट ने उसके कंधे पर इतनी जोर से हाथ मारा वह पिचके गुब्बारे की तरह वापस, धड़ाम से कुर्सी पर जा गिरा।

"म... मैनें आपको थोड़े ही बुलाया था सेठ!"

"मुझे मालूम है कि तूने मुझे नहीं बुलाया।" रुस्तम सेठ का बोला।

"फ...फिर आपने क्यों कष्ट किया सेठ?"

"ले...पड़ इसे।" रुस्तम सेठ ने कागज का एक पर्चा उसकी हथेली षर रखा।

"य...यह क्या है?"

"उधारी का बिल है।" रुस्तम सेठ ने पुन. गुर्राकर कहा- "पिछले दस दिन से दारू फ्री का माल समझ कर चढ़ाये जा रहा है-अब तक कुछ मिलाकर दो सौ अस्सी रुपये हो गये हैं।

"बस।" कुलभूषण ने दांत चमंकाये- "इतनी-सी बात।"

"चुपकर-यह इतनी-सी बात नहीं हैं-मुझे अपनी उधारी अभी चाहिए-फौरन।"

"ल...लेकिन मेरे पास तो आज एक पैसा भी नहीं है सेठ।" कुलभूषण थोड़ा परेशान होकर बोला- "चाहे जेबें देख लो।"

उसने खाली जेबे बाहर को पलट दी।

"जेबें दिखाता है साले-जेबें दिखाता है।" रुस्तम सेठ ने गुस्से में उसका गिरहवान पकड़ लिया- "मुझे अभी रोकड़ा चाहिये। अभी इसी वक्त।"

"ल...लेकिन मेरी मजबूरी समझौ सेठ।"

"क्या समझूं, तरी मजबूरी।" रुस्तम सेठ चिल्लाया- "तू लंगड़ा हो गया है... उापाहिज हो गया है।"

"य...यह बात नहीं...आपको तो मालूम है।" कुलभूषण सहमी-सहमी आवाज में बोला-"कि मैं ऑटो रिक्शा चालक हू और पिछले

पंद्रह दिन से दिल्ली शहर में आँटो रिक्शा ड्राइवरों की हड़ताल चल रही है। इसलिए काम-धंधा बिल्कुल चौपट पड़ा है और बिल्कुल भी कमाई नहीं हो रही।"

"यह बात तुझे दारू पीने सं पहले नहीं सूजी थी।" रुस्तम सेठ डकराया- "कि जब तेरा काम-धंधा चौपट पड़ा है तो तू उधारी कहां से चुकायेगा। लेकिन नहीं-तब तो तुझे फ्री की दारू नजर आ रही होगी। सोचता होगा-बाप का माल है, जितना मर्जी पीयो। परन्तु अगर तूने आज उधारी नहीं चुकाई तो तेरी ऐसी जमकर धुनाई होगी जो तू तमाम उम्र याद रखेगा।"

रुस्तम सेठ को चीखते देख फौरन तीन मवाली उसके इर्द-गिर्द आकर खड़े हो गये।

कुलभूषण भय से पीला पड़ गया।

"स...सेठ!' ' उसने विनती की- "म...मुझे एक मौका दो। हड़ताल खुलते ही मैं तुम्हारी पाई-पाई चुका दूंगा।"

"यानी आज तू रुपये नहीं देगा।"

"न...नहीं।"

"बुन्दे,शेरा।" रुस्तम सेठ चिल्लाया- "पीटो साले को कर दो इसकी हड्डी-पसली बराबर।"

"नहीं!" कुलभूषण दहशत से चिल्लाता हुआ दरवाजे की तरफ भागा।

तीनों मवाली चीते की तरह उसके पीछे झपटे।

दो ने लपक कर हॉकिया उठा लीं।एक ने झपटकर कुलभूषण को जा दबोचा।

"नहीं!" कुलभूषण ने आर्तनाद किया-"मुझे मत मारो, मुझे मत मारो।"

मगर उसकी फरियाद वहां किसने सुननी थी। दो हॉकिया एक साथ उस पर पड़ने के लिये हवा में उठीं। कुलभूषण ने खौफ से आखें बंद कर लीं।

"रुको।" उसी क्षण एक तीखा नारी स्वर ठेके में गूंजा। हॉकिया हवा में ही रुक गयीं।

वह एकाएक करिश्मा-सा हुआ था-कुलभूषण ने झटके से आखें खोलीं-सामने शीतल खड़ी थी।

शीतल लगभग पच्चीस-छब्बीस वर्ष की बेहद सुंदर लड़की। वह किशनपुरा में ही रहती थी। सात साल पहले उसके मां-बाप एक एक्सीडेण्ट में मारे .गये थे। तब से शीतल बिल्कुल अकेली-हों गयी थी। परन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी। वह बी०ए० पास थी-उसने एक ऑफिस में टाइपिस्ट की नौकरी कर ली और खुद अपनी जिंदगी की गाड़ी ढोने लगी।

कुलभूषण जितना डरपोक था, शीतल उतनी ही दिलेर।

पिछले एक महीने से किशनपुरा में उन दोनों की मोहब्बत के चर्चे भी काफी गरम थे।

कुलभूषण जहां अपनी मोहब्बत को छिपाता, वहीं शीतल किसी भी काम को चोरी-छिपे करने में विश्वास नहीं रखती थी।

"क्या हो रहा है यह?" शीतल अंदर आते ही चिल्लायी- "क्यों मार रहे हो तुम इसे?"

"शीतल!" रुस्तम सेठ भी आंखे लाल-पीली करके गुर्राया- "तू चली जा यहां से-इस हरामी को इसके पाप की सजा दी जा रही है।"

"लेकिन इसका कसूर क्या है?"

"इसने उधारी नहीं चुकाई।"

"बस!" तिलमिला उठी शीतल- "इतनी सी बात के लिये तुम इसे मार डालना चाहते हो।"

"यह इतनी सी बात नहीं है बेवकूफ लड़की।" रुस्तम सेठ का कहर भरा स्वर- "आज इसने उधारी नहीं...कल कोई और नहीं चुकायेगा। यह छूत की ऐसी बीमारी -जिसे फौरन रोकना जरूरी होता है। और इस बढ़ती बीमारी को रोकने का एक ही तरीका है-इस हरामी की धुनाई की जाये।"

"लेकिन इसकी धुनाई करनेसे तुम्हें अपने रुपये मिल जायेंगे?"

"जबान मत चला शीतल-अगर तुझे इस पर दया आती है तो तू इसकी उधारी चुका दे और ले जा इसे।"

"कितने रुपये हैं तुम्हारे?"

"दो सौ अस्सी रुपये।"

शीतल ने फौरन झटके से अपना पर्स खोला-रुपये गिने और फिर उन्हें रुस्तम सेठ की हथेली पर पटक दिये।"ले पकड़ अपनी उधारी।"

फिर वह कुलभूषण के साथ तेजी से दरवाजे की तरफ बड़ी। "वाह-वाह।" पीछे से एक गुण्डा व्यंग्यपूर्वक हंसा- "प्रेमिका हो तो ऐसी-जो दारू भी पिलाये और हिमायत भी ले।"

कुलभूषण ने एकदम पलटकर उस गुण्डे को भस्म कर देने वाली नजरों घूरा।

"तेरी तो...।" कुलभूषण ने उसे 'गाली' देनी चाही।

"गाली नहीं।" गुण्डा शेर की तरह दहाड़ उठा- "गाली नहीं। अगर गाली तेरी जबान से निकली तो मैं तेरा पेट अभी चीर डालूंगा साले।"

"चल।" शीतल ने भी कुलभूषण को झिड़का। "चुपचाप चल।"

कुलभूषण खून का बूट पीकर रह गया।

जबकि ठेके में मौजूद तमाम गुण्डे उसकी बेबसी पर खिलखिलाकर हंस पड़े।

"तू क्यों गयी थी ठेकेपर?" अपने एक कमरे के घर मे पहुंचते ही कुलभूषण शीतल पर बरस पड़ा।

"क्यों नहीं जाती?"

"बिल्कुल भी नहीं जाती।" कुलभूषण चिल्लाया-"वह हद से हद क्या बिगाड़ लेते मेरा, मुझे हॉकियों से पीट डालते, धुन डालते। तुझा नहीं' मालूम वहां एक से एक बड़ा गुण्डा मौजूद होता है।"।

शीतल ने हैरानी से कुलभूषण की तरफ देखा।

"ऐसे क्या देख रही मुझे?"

"अगर मेरी इज्जतका इतना ही ख्याल है-तो तू ठेके पर जाता ही क्यों है, छोड़ क्यों नहीं देता इस शराब को?"

"मै शराब नहीं छोड़ू सकता।"

"क्यों नहीं छोड़ सकता।" शीतल झुंझलाई- "और अगर नहीं छोड़ सकता तो फिर कमाता क्यों नहीं। ऑटो रिक्शा ड्राइवरो ने ही तो हड़ताल की हुई है, जबकि कमाने के तो और भी सौ तरीके हैं।" "देख-देख मुझे भाषण मत दे।"

"मैं भाषण दे रही हूं?"

"अगर नहीं क्या दे रही है।" कुलभूपण चिल्लाया-"थोड़ी-सी उधारी क्या दी। अपने तोप ही समझने लगी।"

"अगर ऐसा हा यही सही।" शीतल बोली-"ज्यादा ही हिम्मतवाला है तो जा, मेरी उधारी के रुपये मुझे_ वापस लाकर दे दे।"

"मुझे गुस्सा मत दिला शीतल।" कुलभूपण आक्रोश से बोला।"

"नहीं तो क्या कर लेगा तू। मेरे रुपये अभी वापस लाकर दे देगा? कहां से लायेगा? रुपये क्या पेड़ पर लटक रहे हैं या जमीन में दफन हैं?"

"मै कहीं से भी लाकर दूं-लेकिन तुझे तेरे रुपये लाकर दे दूंगा।"

और तब शीतल ने वो 'शब्द' बोल दिये-जो कुलभूषण की बर्बादी का कारण बन गये।

जिनकी वजह से एक खतरनाक सिलसिले की शुरुआत हुई।

ऐसे सिलसिले की-जिसके कारण कुलभूषण त्राहि-त्राहि कर उठा।

"ठीक है। " शीतल वोली- "अगर अपने आपको इतना ही धुरंधर समझता है-तो जा, मुझे मेरे रुपये वापस लाकर दे दे।"

कुलभूषण फौरन बाहर गली में खड़ी अपनी 'ऑटो रिक्शा की तरफ बढ़ गया।

शतिल चौंकी।

रात के दस बजने जा रहे थे।

"ल...लेकिन इतनी रात को कहां जा रहा है तू?"

"तेरे वास्ते रुपये कमाने जा रहा हूं।" कुलभूषण ने ऑटो में बैठकर धड़ाक से उसे स्टार्ट किया- "और कान खोलकर सुन शीतल-अब मैं तेरे रुपये कमाकर ही वापस लौटूंगा।"

अगले ही पल कुलभूषण की ऑटो रिक्शा किशनपुरा र्का? उबड़-खाबड़ सड़क पर तीर की तरह भागी जा रही थी।

पीछे शीतल दंग खड़ी रह गयी।

भौंचक्की!

यह बात तौ शीतल की कल्पना मैं भी न थी कि कुलभूषण इस तरह इतनी रात को रुपये कमाने निकल पड़ेगा।

तभी एकाएक काले सितारों भरे आसमान पर बादल घिरते चले गये।

काले घनघोर बादल।

पलक झपकते ही उन्होंने स्याह आसमान के विलक्षण रूप को अपने दानव जैसे आवरण में ढांप लिया।

तेज बिजली कौंधी और फिर मूसलाधार बारिश होने लगी। शीतल का दिल कांप गया।

दैत्याकार काली घटाओं से घिरे आसमान की तरफ मुंह उठाकर बोली वह "मेरे

भूषण की रक्षा करना भगवान, मेरे भूषण की रक्षा करना।"

लेकिन नहीं।

उसका भूषण तो पल-प्रतिपल अपनी बर्बादी की तरफ बढ़ता जा रहा था।

अपनी मुकम्मल बर्बादी की तरफ।

कुलभूषण ने अपनी ऑटो रिक्शा कनॉट प्लेस के रीगल सिनेमा के सामने ले जाकर खड़ी की।

जिस हिस्से में उसने ऑटो रिक्शा खड़ी की-वहां अंधेरा था।

सिनेमा पर 'राजा हिन्दुस्तानीं' चल रही थी।

कुलभूषण ने सोचा कि वह नाइट शो छूटने पर वहां से सवारियां ले जायेगा।

लेकिन अभी तो सिर्फ सवा दस बजेथे।

शो छूटने में काफी समय बाकी था।

कुलभूषण ने सीट की पुश्त से पीठ लगाकर इत्मीनान से औखें बंद कर ली।

मूसलाधार बारिश लगातार हो रही थी।

मस्त बर्फीली हवा ने कुलभूषण पर चढ़े दारू के नशे को दो गुना कर दिया।.

परन्तु एक बात चौंकाने वाली थी-इतनी तेज मूसलाधार बारिश में भी फ्लाइंग

स्वायड यड की एक मोटरसाइकिल लगातार उस इलाके का चक्कर-काट रही थी।

मोटरसाइकिल पर दो पुलिसकर्मी सवार थे।

जरूर कुछ चक्कर था?

जरूर गहरा चक्कर था?

होगा कुछ फिर कुलभूषण ने जोर से अपने दिमाग को झटका दिया-उसकी बला से।

फिर कब मस्त बर्फानी हवा ने नरम-नरम रेशमी झौंकों ने कुलभूषण को सुला दिया-उसे पता न चला।

धांय-धांय!

थोड़ी देर बाद ही बराबर वाली गली में दो तेज धमाके हुए।

साथ ही किसी के हलक फाड़कर चिल्लाने की आवाज भी आधे से ज्यादा कनॉट प्लेस में गूंजी।

मोटरसाइकिल पर सवार दोनों पुलिसकर्मी चौंके।

तुरन्त उनकी बुलेट सड़क पार 'यू' का आकार बनाती हुई तेजी से उसी गली में जा घुसी।

लेकिन कुलभूषण सोता रहा।

उसके इतने नजदीक गोलियां चलीं। कोई हलक फाड़कर चिल्लाया-मोटरसाइकिल धड़धड़ाती हुई गली में घुसी। इतनी हाय-तौबा मची परन्तु कुलभूषण के कान पर जू तक न रेंगी।

उसकी नींद तो तब टूटी जब आफत बित्कुल उसके सिर पर आकर खड़ी हो गयी।

ऑटो रिक्शा को भूकम्प की तरह लरजते देख उसने चौंककर औखें खोली।

उसने हड़बड़ाकर पीछे देखा।

ऑटो रिक्शा की यात्री सीट पर उस समय एक काले रंग का कद्दावर-सा आदमी बैठा बुरी तरह हॉफ रहा था। उसने अपने शरीर पर नीले रंग की प्लास्टिक की बरसाती पहन रखी थी, सिर पर प्लास्टिक का ही फेल्ट हैट था।

कद्दावर आदमी के हाथों में एक काले रंग का ब्रीफकेस भी था। जिसे वो अपनी जान से- भी ज्यादा संभालकर छाती से चिपटाये हुए था।

"क...कौन हो तुम?"

"जल्दी ऑटो भगा।" उस आदमी ने लम्बे-लम्बे सांस लेते हुए कहा।

वह बेढंग खौफजदा था।

" ल...लेकिन...।"

"सुना नहीं।" वह आदमी चिंघाड़ उठा और उसने बरसाती की जेब से रिवॉल्वर निकालकर एकदम कुलभूषण की तरफ तान दी- "जल्दी 'ऑटो स्टार्ट कर वरना एक ही गोली में तेरी खोपड़ी के परखच्चे उड़ जायेंगे।"

कुलभूषण के होश फना हो गये।

पलक झपकते ही उसका सारा नशा हिरन हो था। फिर उसके हाथ बड़ी तेजी से

चले उसने ऑटो स्टार्ट की और गियर बदला।

फौरन ऑटो रिक्शा सड़क पर विघुत गति से भागने लगी।

कुलभूषण ऑटो रिक्शा चला जरूर रहा था-लेकिन उसके दिल-दिमाग में नगाड़े बज रहें' थे-ढेरों नगाड़े।

चेहरे पर आतंक-ही-आतंक था।

तभी कुलभूषण को अपने पीछे किसी वाहन की घरघराहट सुनाई दी-उसने उत्सुकतापूर्वक शीशे में देखा।

फौरन कुलभूषण के छक्के छूट गये। उसके मुंह से चीख-सी खारिज हुई-

"प...पुलिस!"

"पुलिस।" कद्दावर दगादमी भी हड़बड़ाया।

"हा पीछे पुलिस लगी है।"

"क्या बकवास कर रहा है।" वह चीखा और फिर उसने एकदम झटके से पीछे मुड़कर देखा।

अगले क्षण वो सन्न रह गया।

ऐसा लगा जैसे किसी ने मिक्सी में डालकर उसके चेहरे का सारा धून निचोड़ लिया हो।

वाकई एक बुलेट मोटरसाइकिल उनके पीछे दौड़ी चली आ रही थी-जिस पर फ्लाइंग स्वायड दस्ते के वही दोनों पुलिसकर्मी सवार थे।

वह बार-बार विसिल बजाकर ऑटो रिक्शा रोकने का आदेश भी दे रहे थे।

अजनबी ने जल्दी से अपने चेहरे का पसीना साफ किया। "ऑटो को स्पीड और बढ़ा।" फिर वह बोला।

"ल...लेकिन...।"

"बहस मत कर।" अजनबी दहाड़ा- "यह बहस का वक्त नहीं है। इस समय मेरी जान पर बनी है।"

"ल...लेकिन अगर मेंने ऑटो रिक्शा न रोकी तो पुलिस मेरी बाद में ऐसी-तैसी कर देगी साहब।"

" पुलिस तो तेरी बाद में ऐसी तैसी करेगी।"अजनबी ने फौरन रिवॉल्वर कुलभूषण की कनपटी पर रख दी- "लेकिन उससे पहले मैं तेरी अभी इसी वक्त ऐसी तैसी कर दूंगा। रिवॉल्वर का घोड़ा दबेगा और तू ऊपर होगा हमेशा के लिये ऊपर।"

अजनबी ने रिवॉल्वर' का सैफ्टी-कैच हटाया तो कुलभूषण के प्राण हलक में आ फंसे।

"न...नहीं।" कुलभूषणकी आवाज कंपकंपायी। "न...नहीं।"

"लो फिर स्पीड बढ़ा।"

"बढ़ाता हूं-अ...अभी बढ़ाता हूं।"

उसके बाद कुलभूषण ने सचमुच ऑटो रिक्शा की स्पीड बढ़ा दी।

फौरन ऑटो रिक्शा बुलेट को पछाड़कर सडक पर भागी।" अ. आह...आह।"

यही वो पल था-जब उस अजनबी के मुंह से पहली बार कराह निकली।

कुलभूषण ने पछे मुड़कर देखा.

सीना भींचे किसी दर्द न्धे दबाने की कोशिश कर रहा था।

कुलभूषण ने स्पीड और तेज कर दी।

एक ऑटो रिक्शा चालक होने के नाते उसे यूं तो सभी रास्तों की जानकारी बड़े अच्छे ढंग से थी लंकिन कहां बुलेट और कहां उसकी ऑटो।

खरगोश और कछुए जैसी उस दौड़ मैं जो बात कुलभूषण के लिये सबसे ज्यादा फायदेमंद सावित हुई-श्तु था- कनॉट प्लेस में बिछा सड़कों का जाल।

कुलनूषण अपनी ऑटो रिक्शा को स्टेट्समैन तथा सुपर बाजार की पंचदार गलियों में घुमता हआ जल्द ही फलाइंग स्वायड़ की मोटरसाइकिल को घोका देने में कामयाब हो गया।

दस मिनट बाद ही ऑटो रिक्शा दरियागंज के इलाके मैं दौड़ रही थी।

"श...शाबाश!' अजनबी उसकी सफलता से खुश हुआ- "श...शाबाश!'।

कुलभूषण ने फिर पीछे मुड़कर देखा।

अजनबी अब सीट पर अधलेटा-सा हो गया था और उसने अपना सिर पीछे टिका लिया था।

कुलभूषण को उसकी हालत ठीक न दिखाई दी।

जरूर वह कोई खतरनाक अपराधी था।

"एक सवाल पृछूं? "कुलभूषण थोड़ी हिम्मत करके बोला।

"प...पूछो।"

"तुम्हारे...पीछे अभी पुलिस क्यों लगी थी?"

"प...पुलिस!"

"हां।"

"त... तुम अभी यह बात नहीं समझोगे।" अजनबी पुन: पीड़ा से कराहता द्रुआ बोला- "य...यह एक लम्बी कहानी है।"

"तुम कराह क्यों रहे हो?"

"म...मझे गोली लगी है।"

"गोली।"

बम सा-फट गया कुलभूषण के दिमाग में-उसके कष्ट से चीख-सी खारिज हुई।

हाथ ऑटो रिक्शा के हैण्डिल पर बुरी तरह कांपे-जिसके कारण

पूरी ऑटो को भूकम्प जैसा झटका लगा।

-ल...लेकिन किसने मारी तुम्हें गोली-प...पुलिस ने?"

अजनबी कुछ न बोला।

ऑटो रिक्शा अभी भी तूफानी गति से सड़क पर दौड़ी जा रही थी।

"त...तुम्हें जाना कहां है? "

अजनबी फिर चुप।

वह कराहता हुआ सीट पर कुछ और पसर गया।

"जवाब क्यों नहीं देते?"

"त...तम कहां रहते हो?"

" म...मैं!" कुलभूषण मकपकाया- "ल...लेकिन तुम्हें इससे क्या मतलब है?"

"बताओ तो सही-शायद कुछ मतलब निकल आये।" अजनबी की आवाज मैं अब थोड़ी नरमी आ गयी थी।

वह नरमी का ही असर था जो कुलभूषण ने बता दिया- "मैं किशनपुरा में रहता हूं।"

"अ...और कौन-कौन रहता है तुम्हारे साथ?" अजनबी ने कराहते हुए पूछा।

"मैं अकेला रहता हूं।"

"अ...अभी शादी नहीं हुई "

"नहीं।"

"म...मां बाप।"

'वह भी नहीं हैं।"

"ओह!"

" ठ...ठीक है।" अजनबी ने बेचैनी पूर्वक पहलू बदला- "अगर तुम अकेले रहते हो त...तो तुम मुझे अपने ही घर ले चलो। इ...इस समय वही जगह सबसे ठीक रहेगी। "य...यह क्या कह रहे हो तुम।" कुलभूषण के काष्ट से सिसकारी छूट गयी।

उसके दिल दिमाग पर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी।

ऑटो रिक्शा को झटका लगा-इतना तेज झटका कि उस झटके से उभरने के लिये कुलभूषण को ऑटो फुटपाथ के किनारे सड़क पर रोक देनी पड़ी।

"क्या कहा तुमने अभी?" कुलभूषण तेजी से अजनबी की तरफ

पलटकर बोला- "क्या कहा? तुम किशनपुरा जाओगे?"

"ह...हां।" अजनबी ने संजीदगी से कहा- "सोचता हूं। आज रात तुम्हारे ही घर आराम कर लूं।"

"लेकिन क्यों करोगे मेरे घर पर आराम। तुम अपना एड्रैस बोलो-तुम जहां रहते हो। मैं तुम्हें वहीं लेकर जाऊंगा। दिल्ली के आखिरी कौने में भी तुम्हारा घर होगा तो मैं तुम्हें वहीं ले जाकर छोडूंगा।"

"म मगर...मैं इस वक्त अपने घर नहीं जाना चाहता।" अजनबी इस समय भी काला ब्रीफकेस कसकर अपने सीनेसे चिपकाये हुए था।

"क्यों नहीं जाना चाहते अपने घर?"

"तुम नहीं जानते बेवकूफ आदमी।" अजनबी थोड़ा खीझ उठा।

"पुलिस मेरे पीछे लगी है-संभव है कि पुलिस ने मुझे गिरफ्तार करने के लिये मेरे घर पर भी पहरा बिठा रखा हो-अगर ऐसी हालत में मैं अपने घर गया तो क्या फौरन पकड़ा न जाऊंगा।" कुलभूषण सन्त रह गया।

एकदम सन्त!

उसे अब महसूस हो रहा था कि एकाएक कितनी बड़ी आफत में वो फंस चुका है।'

एक लगभग मरा हुआ सांप उसके गले में आ पड़ा था।

"तुम नहीं जानते। "अजनबी बोला- "त... तुमने पुलिस से मेरी जान बचाकर मेरे ऊपर कितना बड़ा उपकार किया है-मैं तहेदिल से तुम्हारा आभारी हूं। अब मेरे ऊपर एक उपकार और कर दो-सिर्फ आज रात के लिये मुझे अपने घर में शरण दे दो। मैं वादा करता हूं कि दिन निकलने से पहले ही मैं तुम्हारे घर से चला जाऊएगा और तुम्हारे ऊपर मेरी वजह से कोई औच नहीं आयेगी।"

कुलभूषण चुपचाप उस अजनबी को देखता रहा।

"म...मुझे इस तरह क्या देख रहे हो?"

"क्या तुम्हारे पास इसके अलावो कोई और रास्ता नहीं।"

"अ...अगर रास्ता होता-त. तौ मैं तुम्हें ही क्यों कष्ट देता दोस्त!"

वह बार-बार पीड़ा से कराह रहा था।

"गोली का क्या करोगे?"

"व... वह कोई बड़ी समस्या नहीं है।" अजनबी बोला- "गोली निकालना मेरे बायें हाथ का खेल है-आखिर आज मैं कोई पहली बार थोड़े ही जख्मी हुआ हूं।"

कुलभूषण कोई फैसला नहीं कर पा रहा था।

"क्या सोच रहे हो?"

कुलभूषण चुप।

"म...मेरे जख्य से खून बहुतबुरी तरह निकल रहा है। अजनबी लगभग छटपटाता हुआ बोला- "म मुझे जल्दी अपने घर ले चलो-व...वरना मैं मर जाऊंगा।"

कुलभूषण फिर चुप।

" द...देर मत करो।" अजनबी इस बार गिड़गिड़ाया।

"म मेरी जिंदगी का सवाल है-अ...अगर मेरे ऊपर नहीं, तो कम-से-कम मेरी हालत पर ही रहम खाओ।"

कुलभूषण ने देखा-उसकी आखों में अब सफेदी पुतने लगी थी। होठ शुष्क होने लगे थे।

कुलभूषण कश-म-कश में फंसा रहा-फिर कुछ सोचकर वो ऑटो रिक्शा की ड्राइविंग सीट पर जा बैठा और उसने ऑटो रिक्शा किशनपुरा की ओर दौड़ा दी।

थोड़ी ही देर बाद जब कुलभूषण की ऑटो रिक्शा किशनपुरा मौहल्ले में अपने घर के सामने जाकर रुकी तो उस समय पूरी गली काजली अंधेरे में डूबी थी।

बारिश भी बंद हो चुकी थी और अब सिर्फ हल्की-फुल्की बूंदा-बांदी ही हो रही थी।

कुलभूषण ने नीचे उतरकर अपने घर का ताला खोला।

अजनबी व्यक्ति भी संभल-संभलकर चलता हुआ कुलभूषण के पीछे-पीछे ही घर में आ गया था।

अंदर घर में भी गली जैसा ही घुप्प अंधेरा था।

कुलभूषण ने बल्ब जलाने के लिये जैसे ही स्वीच बोर्ड की तरफ हाथ बढ़ाया-तभी वो घटना घटी, जिसके बाद कुलभूषण त्राहि-त्राहि कर उठा।

अजनबी तब तक उसके करीब आ गया था-तभी एकाएक अजनबी का पूरा शरीर बुरी तरह लरजा।

उसके मुंह से तेज कराह फूटी-झाग निकले।

कुलभूषण उसे संभाल पाता-उससे पहले ही वह अजनबी धड़ाम नीचे फर्श पर जा गिरा।

कुलभूषण ने लपककर बल्ब का स्विच ऑन किया।

भक्क से बल्ब जला।

और बल्ब के जलते ही कुलभूषण ने जो दृश्य देखा-उसे देखकर उसके कण्ठ से इतनी तेज हृदयविदारक चीख खारिज हुई कि वो चीख पूरे किश्त में गूंजी।

वह चीख शीतल ने भी सुनीं।

कुलभूषण की चीख सुनते ही शीतल एकदम उछलकर खड़ी हो गयी। फिर वो आनन-फानन दरवाजा खोलकर बाहर निकली और बेपनाह फुर्ती से कुलभूषण के घर की तरफ लपकी।

उसके घर का दरवाजा खुला था।

शीतल दनदनाती हुई अंदर पुसी।

और!

अंदर घुसतेही शीतल के कण्ठ से भी तेज चीख खारिजे होते-होते बची।

फर्श के बिल्कुल बीचों-बीच एक लम्बे कड़ियल आदमी की लाश पड़ी थीं-उसकी बरसाती आधी से ज्यादा खून में लथपथ थी। अजनबी की मौत दो गोलियां लगने से हुई थी, जो उसकी पीठ में धंसी थीं।

इसके अलावा जो सबसे ज्यादा चौंका देने वाली बात थी-वो यह थी कि अजनबी ने काले रंग के ब्रीफकेस को मरने के बाद भी कसकर अपने सीने से चिपटा रखा था।

"यह...यह तुमने क्या किया?" लाश को देखते ही शीतल के जिस्म का एक-एक रोआ खड़ा हो गया।

"म...मैंने!" थर्रा उठा कुलभूषण।

"क्या इसकी हत्या नहीं की?"

" म...भला इसकी हत्या क्यों करने लगा।"

कुलभूषण कंपकंपाये स्वर में बोला- "म...मैं तो यह भी नहीं जानता कि ये कौन है?"

"फिर इसकी लाश यहां कैसे आ गयी?"

कुलभूषण ने बड़ी तेजी से पूरी घटना सुना दी।

सन्त रह गयी शीतल एकदम सन्न।

घटना वाकई सनसनीखेज थी।

"अ...अगर इसके पीछे पुलिस लगी थी।" शीतल का सकपकाया स्वर-"तब तो संभव है कि पुलिस ने ही इसे गोली मारी हो?"

"मुझे भी यही लगता है कि जरूर इसे ने गोली मारी है।" कुलभूषण बोला- "यह कोई अपराधी है- पुलिस से बचकर भाग रहा था। इसके अलावा एक बात और मुमकिन है।"

"क्या?"

"मौके का फायदा उठाकर क्या पता इसके किसी सहयोगी ने ही इसे गोली मार दी हो।"

"ओह!' '

"क्या सोचने लगी शीतल।"

"तुझसे भयंकर गलती हो चुकी है भूषण-त... तू फंस गया।"

"य...यह क्या कह रही है तू?" कुलभूषण के होश फना हुए।

"म...मैं सच कह रही हूं-तू वाकई फस गया-अब इस आदमी की हत्या. का इल्लाम तेरे सिर पर आने वाला है।"

"लेकिन मैं हत्यारा नहीं हूं।"

"सिर्फ तेरे कहने से कुछ नहीं होगा भूषण।"

"कैसे कुछ नहीं होगा।" कुलभूषण झल्ला उठा- "अगर मैंने इसकी हत्या की होती तो क्या मैं यू ही इसकी लाश की नुमाइश करता? इसे लेकर अपने घर में ही आता? फिर इसकी हत्या गोली लगने से हुई है-जरा सोच मेरे जैसे मामूली आदमी के पास रिवॉल्वर जितना खतरनाक हथियार कहां से आ सकता है? और अगर रिवॉल्वर जैसा हथियार आ भी गया तो क्या उसे चलाना मेरे बसका है?"

शीतल चुप।

"फिर क्या मैं तुझे इंतना ही बड़ा पागल नजर आता हूं।"

कुलभूषण बोला- "कि तेरी उधारी चुकाने के चक्कर में मैं किसी की हत्या तक करने पर आमदा हो जाऊ?"

"गया तो इसी तरह था।" शीतल बोली- "जैसे आज कहीं से भी लायेगा। किसी का भी गला काटकर लायेगा। लेकिन मेरी उधारी जरूर चुकता करेगा।"

"उस समय मैं गुस्से में था। मुझे कुछ' मालुम नहीं कि मैं क्या-क्या बक गया।" कुलभूषण बोला-"फिर चंद रुपयों दे लिये मैं किसी की हत्या कैसे कर सकता हूं-इतना ही दिलेर दिखाई देता के मैं तुझे? अगर मैं इतना ही दिलेर होता तो आज शाम रुस्तम सेठ ओ?र उसके गुण्डों की ठेके में ऐसी-तैसी न कर देता।"

"तू कहना क्या चाहता है?"

"मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं किए यह हुत्या मैंने नहीं की। मैं हत्यारा नहीं।" कुलभूषण ने लगभग आर्तनाद करते हुए कहा।

"मत भूल भूषण।" शीतल एक-एक शब्द चबाते हुए बोली-हर हत्या करने वाला यही कहता है, जो तू कह रहा है ऐसी परिस्थिति

में कौन तेरी बात पर यकीन करेगा।"

"तू तो यकीन करेगी?"

"मेरे यकीन करने या न करने से कुछ नहीं होने वाला।" शीतल बोली- "असली बात यह है कि पुलिस तेरी बात पर यकीन करती है या नहीं।"

"प...पुलिस!'

"लाश तेरे घूरमें पड़ी है।" शीतल विचलित मुद्रामें बोली- "फिर तेरे कपड़े भी खून में सने हुए हैं-पुलिस को तुझे हत्यारा स्वीकार करने के लिये इससे बड़ा सबूत और क्या चाहिए।"

कुलभूषण की जान हलक में आ फंसी।

उसे एकाएक वो लाश अपनी मौत का वारण्ट लगने लगी।

मौत का ऐसा वारण्ट जो उसे हर पल हर लम्हा बर्बादी की तरफ लिये जा रही थी।

तभी घंटना ने एक और ऐसा नया मोड़ लिया-जिसके बाद कुलभूषण के ग्रह पूरी तरह संकट में घिर गये।

कुलभूषण की नजर एकाएक अजनबी के ब्रीफकेस पर पड़ी।

तुरन्त उसके दिमाग में. सवालों का धमाका हुआ।

"इ...इसने ब्रीफकेस अपने सीने से क्यों चिपटा रखा है?'...क्या है इसके अंदर?"

"इसमें ऐसी क्या खास चीज है-जो मरने कै बाद भी अजनबी कीं ब्रीफकेस से मोह भंग न हुआ?"

कुलभूषण के दिमाग घण्टियां लगीं।

तेज घण्टियां!

"जरूर-जरूर इसमें कोई खास चीज है।"

"कोई बेहद खास चीज!"

घण्टियों ठी आवाज अब कुलभूषण के दिमाग में तेज होती जा रही थी।

उसे एकाएक के ब्रीफकेस अपना उद्धारकर्ता नजर आने लगा। उसे लगने लगा कि वो ब्रीफकेस उसे पुलिस के फंदे से बचा सकता।

और

यह अहसास होते ही कुलभूषण तुरन्त अजनबी की तरफ बढ़ा।

डरते-डरते नीचे झुका।

फिर उसके हाथ अजनबी के शिकंजे से ब्रीफकेस निकालने के तिए जैसे ही उसके सीने की तरफ बड़े-

"य...यह का कर रहा है- तू?" शीतल दहशत से चिल्ला उठी। मगर तय तक कुलभूषण ब्रीफकेस का एक कोना पकड़ चुका था।

कोना पकड़ते ही उसने ब्रीफकेस अपनी तरफ खीचा तथा फिर वह उसे-लेकर यूं अपनी पहले वाली जगह भागा-मानों पीछे से

अजनबी द्वारा पकड़ लिये जाने का खतरा हो।

शीतल भी फौरन उसके नजदीक पहुंची।

"य..यह ब्रीफकेस तुने किसलिये छीना है?"

"देखती जा।"

कुलभूषण ने अब वो ब्रीफकेस नोचे फर्श पर टिका दिया था। फिर उसने धड़कते दिल से उसे खोला।

चट् की हल्की आवाज हुई।

और ब्रीफेकेस में ताला लगा हुआ नहीं था। इसलिये फौरन ही वो खुल गया।

और ब्रीफकेस खुलते ही उन दोनों के दिल-दिमाग पर आसमान-सा टूटकर गिरा।

तेज विजली गड़गड़ाई।

काले रंग के उस ब्रीफकेस में सोने की छ: नटराज मूर्तियां थीं।

शुद्ध सोने की मूर्तियां।

"य...यह तो सोने की मूर्तिया हैं शीतल।" उन मूर्तियों पर नजर

पड़ते ही कुलभूषण की आवाज खुशी से कंपकंपा उठी- "असली सोने की मूर्तियां।

"स...सोने की मूर्तियां!" शीतल को भी तेज झटका लगा। चार सौ चालीस वोल्ट से भी ज्यादा।

"सारे प्रतिरोध उसके शरीर की तमाम हरकत इस तरह फ्रीज हो गयीं-मानो विजली से चलने वाली मशीन का किसी ने स्विच बंद कर दिया हो।

"ह...हां-यह शुद्ध सोने की मूर्तियां हैं।" कुलभूषण की आखों में चमक कौंधी- "द...देख- इसके नीचे क्या गुदा है-चौबीस कैरेट प्योर गोल्ड!"

"है भगवान!" शीतल के मुंह से सिसकारी छूटी- "तब तो यह मूर्तियां बहुत कीमती हैं।"

"हा-यह बहुत कीमती मूर्तियां हैं-बेहद कीमती-अ...अब हमारे दिन बदल गये शीतल-नसीब जाग गये हमारे।"

चौंकी शीतल-"यह तू क्या कह रहा है भूषण?"

लेकिन कुलभूषण तो दीवाना हो उठा था।

इस समय वो कल्पना लोक के सागर में गोते लगा रहा था। " म...मैं ठीक कह रहा हूं शीतल।" उसने खुशी से कंपकंपाये लहजे में ही कहा- "तुझे अब नौकरी करने की जरूरत नहीं-मुझे ऑटो चलाने की जरूरत नहीं। हम दोनों अब शादी करेंगे शीतल-तू रानी बनकर रहेगी।"

"बेवकूफ-तू पागल हो गया है।" शीतल ने उसे झंझोड़ डाला- "अपनी बर्बादी का सारा प्लान खुद ही बना रहा है-होश में आ।"

कुलभूषण ने चौक कर शीतल को देखा।

"तू सपने देख रहा है भूषण।" शीतल ने गुस्से में उसे कोड़े जैसी फटकार लगायी-

"दिमाग ठिकाने पर नहीं है तेरा।"

"मेरा दिमाग पूरी तरह ठिकाने पर है।"

"नहीं है।" चीखी शीतल- "अगर तेरा दिमाग अपनी जगह होता तो तू ऐसी बहकी-बहकी बातें हर्गिज न करता। तू भूल गया है कि तेरे घर में लाश पड़ी- है-फांसी का फंदा तेरे गले में झूल रहा है-और ऐसी परिस्थिति में तुझे अपने नसीब जागते हुए नजर आ रहे हैं-तुझे शादी करने की पड़ी है।"

ल...लाश!

कुलभूषण की नजर पुन: अजनबी के शव पर जाकर अटक गयी। एकाएक उसने ब्रीफकेस की तमाम जेबों की तलाशी लै डाली-परन्तु उसमें से उसे कोई भी ऐसा कागज या विजिटिंग कार्ड न मिला, जिससे अजनबी की पहचान हो पाति।

"इसमें क्या देख रहे हो?"

"इसका नाम या घर का एट्रेस तलाशने की कोशिश कर रहा हूं।" मिला कुछ?"

"नहीं।" कुल-भूषण ने बेहद हताश भाव से इंकार में गर्दन हिलाई ...

"अगर ब्रीफकेस में नहींहै-तो जरूर इसकी पेट-शर्ट की जेब में कुछ होगा.।"

कुलभूषण की नजर फिर लाश की तरफ उठी।

उसकी हिम्मत न हुई कि वो लाश की पैंट-शर्ट में हाथ डाले। परन्तु उसे तलाशी तो लेनी ही थी।

कुलभूषण ने अपने अंदर हौसला पैदा किया और एक बार फिर डरते-डरते लाश की तरफ बढ़ा।

नीचे झुका।

और अगले ही क्षण उसने कंपकंपाते हाथों से अजनबी की जेबों की तलाशी ले डाली-वहां भी न था।

तमाम जेबों में कागज का एक अदद टुकड़ा तक न मिली था-जिससे अजनबी की पहचान हो पाती, लेकिन उसकी पहचान की मालूमात करने की दिशा में वह कम-से-कम सूत्रधार का काम तो करता।

काश!

काश कुलभूषण ने अजनबी की उसी हालत से कोई नतीजा निकाला होता।

उसी से उसने खतरे का अंदाजा लगाया होता-आखिर उसकी जेबों में कुछ न था।

लेकिन कुलभूषण के दिल-दिमाग पर तो उस समय पूरी तरह लालच सवार था।

वह फिर मूर्तियों को संजीदगी के साथ देखने लगा।

"इन्हें इस तरह क्या देख रहा है भूपण।" शीतल का दिल धाड़-धाड़ करके बज रहा था।

"यह मूर्तियां नहीं हैं शीतल।" एकाएक वो बड़बड़ाया- "यह मूर्तियां नहीं है।"

" फ...फिर क्या हैं ये?"

"यह किस्मत है-किस्मल।" कारून का खजाना है ये।" कुलभूषण खुशी से कंपकंपाये स्वर में बोला- "मैंने आज तक सिर्फ सुना था शीतल कि ऊपर वाला जब देता है-छप्पर फाड़कर देता है। लेकिन अज अपनी आखों से देख भी लिया। भगवान सचमुच बड़ा कारसाज है। उसने हमारी बंद किस्मत के दरवाजे खोल दिये।"

"तू पागल हो गया है।" शीतल झुंझला उठी- "मौत तेरे सिर पर मंडरा रही है बेवकूफ-और

तू भगवान का गुणगान कर रहा है। तूने इस लाश को देखा है।" शीतल ने दांत किटकिटाये- "पुलिस को जब यह लाश तेरे घर में से बरामद होगी तो बड़े-बड़े दुर्दान्त पुलिसकर्मी तेरी ऐसी धुनाई करेंगे कि किस्मत के जो दरवाजे तुझे इस समय खुलते नजर आ रहे हैं-वह सबके सब एक झटके में बद हो जायेंगे।"

"प...पुलिस अब मेरा कुछ नहीं. बिगाड़ सकती।" कुलभूषण ने एकाएक बम-सा छोड़ा।

"क्यों नहीं बिगाड़ सकती?"

"क्योंकि पुलिस का एक इंतजाम मैंने सोच लिया है।"

"क...कैसा इंतजाम?"

जरा सोच शीतल पुलिस उसी हालत में तोमेरा कुछबिगाड़ सकती है जब दिन निकलने पर उसे यह लाश मेरे घर के अदर से बरामद होगी। लेकिन अगर यह लाश ही पुलिस को मेरे घर के अंदर से न मिले तब कैसा रहेगा?

"त...तू कहना क्या चाहता है?"

आसान सी बात है शीतल।" कुलभूषण ने विस्फोट किया-"मै इस लाश को आज रात ही

गायब कर दूंगा।"

"क...क्य तू लाश गायब कर देगा?"

"हां शीतल-अब इस मुसीबत से छुटकारा पाने का यही एक तरीका है।" कुलभूषण का दिमाग इस समय काफी तेजी से चल रहा था- "मैं लाश को आज रात ही किसी ऐसी जगह फैंक आऊंगा-जहां से बरामद होने पर पुलिस को मेरे ऊपर किसी भी तरह का कोई शक न हो।"

"य...यह तू करेगा?" शीतल हैरत से बोली।

"हां-यह मैं करूंगा।"?

"यह सब करने की हिम्मत है तेरे अंदर?"

"हिम्मत हो या न हो शीतल!" कुलभूषण दृढ़तापूर्वक बोला।

"लेकिन इस काम को मैं करूंगा जरूर। क्योंकि तभी पुलिस से बचा जा सकता हैं। इस लाश से बची जा सकता है। और...।"

"अ...और क्या ?"

"सोने की इन कीमती मूर्तियों को हड़पा जा सकता है।"

शीतल दंग रह गयी।

दंग!

"आज जरूर तेरी खोपड़ी खराब हो गयी है।" शीतल गुस्से में बोली- "तू क्या सोचता है-तू लाश को कहीं भी फेंककर पुलिस के हाथों से बच जायेगा? मूर्तियां इतनी आसानी से हड़प लेगा तू? नहीं भूषण नहीं यह वहम है तेरा। पुलिस तुझे तलाशती हुई एक-न-एक दिन तेरे तक जरूर पहुंच जायेगी। फिर तू नहीं बचेगा फिर तू सिर पटक-पटक कर कितनी भी दूहाई देगा कि यह हत्या तूने नहीं की, तूने नहीं की तब भी पुलिस तेरे ऊपर यकीन नहीं आयेगा। आज जो रास्ते तू अपने बचाव के लिये बना रहा है भूषण-आने वाले' दिनों में वही रास्ते तेरी मुकम्मल तबाही का कारण बन जायेंगे।"

"त...तू कहना क्या चाहती है?"

"मैं सिर्फ यह कहना चाहती हूं कि अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा भूषण। तू सभी मूर्तियां और लाश कानून के हवाले कर दे और पुलिस को सब कुछ सच-सच बता दे। तेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा।"

"कैसे कुछ नहीं बिगड़ेगा।" कुलभूषण उत्तेजित हो उठा- "पुलिस क्या इतनी ही सीधी है-जो वह खामोशी से मेरी हर बात स्वीकार कर लेगी।"

"क्यों नहीं स्वीकार करेगी-पहले की और अब की परिस्थिति में फर्क है भूषण-इस समय तेरे पास बेश कीमती मूर्तियां हैं। अब पुलिस भी यह सोचेगी कि अगर तेरे मन में कोई छल-कपट होता-तो तू यह मूर्तियां ही कानून के हवाले क्यों करता।" तू नहीं जानती शीतल!' "कुलभूषण के दिमाग पर लालच पूरी तरह हावी हो चुका था- " पुलिस मेरी इस ईमानदारी का भी कोई नया अर्थ निकाल लेगी। आजकल अपराधियों ने जासूसी उपन्यास पढ़-पढ़कर कानून की आखों में धूल झोंकने की ऐसी-ऐसी तरकीबें ढूंढ ली हैं कि किसी के लिये भी सही गलत का अंदाजा लगाना मुश्किल हो गया है-ऐसी परिस्थिति में मेरी ईमानदारी को भी शक की नजर से देखा जायेगा।"

शीतल यूं आश्चर्य से कुलभूषण को देखने लगी-मानो वह आज उसका कोई नया रूप देख रही हो।

"फिर तू ही सोच शीतल!" कुलभूषण धारा प्रवाह ढंग से बोलता चला गया- "क्या जिंदगी है हमारी-एक भूखे; नंगे, बेघर' और गंदे गटर में कुलबुलाते कीड़े जैसी जिंदगी बसर कर रहे है हम। जबकि इस समय हम पलक झपकते ही धनवान बन सकते हैं-कहने की जरूरत नहीं कि आज के समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा का अधिकारी सिर्फ वही व्यक्ति होता हैं-जिसके पास दौलत है-ढेर सारी दौलत! ठण्डे दिमाग से सोच शीतल-हम क्या हैं और क्या बन सकते हैं। तमाम जिंदगी मेहनत करने के बाद भी हमें समाज में वो पोजीशन हासिल नहीं होगी-जो अब हम पलक झपकते ही हासिल कर सकते हैं। अपने तमाम ख्वाब पूरे करने का इससे बेहतर मौका हमारे हाथ फिर कभी नहीं आने वाला।"

शीतल टुकुर-टुकुर उसे देखती रही।

"मैंने क्या कुछ गलत कहा?"

" ल....लेकिन अगर पुलिस को यह पता चल गया भूषण।"

शीतल बोली- "कि मूर्तियां हड़पने के लिये तूने ही यह लाश ठिकाने लगायी थी-तब तू क्या करेगा?"

"मगर पुलिस को यह किस तरह पता चलेगा?" कुलभूषण ने एक-एक शब्द चबाते हुए पूछा-" 'पुलिस को क्या आसमान से आवाज आयेगी? मत भूल शीतल-यह व्यक्ति रीगल सिनेमा के सामने एकाएक मेरी ऑटो रिक्शा में आकर बैठा था-उसके बैठते ही मैंने ऑटो रिक्शा फुल स्पीड से सड़क पर दौड़ा भी दी थी-पुलिस की मोटरसाइकिल तो बाद में पीछे लगी।"

"लेकिन उन पुलिस कर्मियों ने तुझे रीगल के सामने खड़े तो देखा होगा?"

"नहीं।" कुलभूषण प्रफुल्लित मुद्रा में बोला- "नहीं देखा। मैंने ऑटो रिक्शा ड्राइवरों की हड़ताल के कारण आज अपनी ऑटो घुप्प

अंधेरे में खड़ी कर रखी थी-क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि किसी की नजर मेरे ऊपर पड़े आज किस्मत पूरी तरह मेरे साथ थी।"

"परन्तु एक और बड़ी महत्वपूर्ण बात तू भूल रहा है भूषण!"

"कौन-सी बात?"

"पुलिसकर्मियों ने पीछा करते समय तेरी ऑटो रिक्शा का नम्बर तो नोट किया ही होगा।"

"नहीं-नम्बर भी नोट नहीं किया।" कुलभूषण खुश होकर बोला- "मैंने कहा न आज किस्मत मेरे साथ थी। मैंने गली में आते ही नम्बर प्लेट देखी थी-उस पर मिट्टी पुती हुई थी। जरूर ऑटो रिक्शा का पहिया किसी गारा से भरे गड़हे में पड़ गया होगा और फौरन ढेर सारी मिट्टी उछलकर नम्बर प्लेट पर पुत गयी। बहरहाल जो भी हुआ-मेरे हक में बहुत अच्छा हुआ। अगर नम्बर प्लेट पर मिट्टी न पुतती-तो मेरे फंसने के फुल चास रहते।"

शीतल बेचैन हो उठी।

"तू चाहे अपनी बात के पक्ष में कितने ही तर्क दे भूषण।" शीतल सनसनायेसार में बोली-

"परन्तु मुझे लगता हैकि अगर तूने इन मूर्तियों को हड़पने के लिये कोई भी कदम

उठाया-तों तू जरूर किसी बड़ी मुसीबतमें फंस जायेगा। कोई आफत तेरे ऊपर टूटकर गिरेगी-इसके अलावा तू एक बात और नजर अंदाज कर रहा है।"

"क्या?"

"यह आदमी शक्ल से ही कोई गुण्डा दिखाई देता है-संभव है कि इसने यह मूर्तियां .कहीं से चुराई हों। अगर ऐसा हुआ भूषण-तो जब तू इन मूर्तियों को बेचने जायेगा तभी तू फंसेगा।"

"यह सब बाद की बातें हैं।" कुलभूषण मूर्तियां हड़पने के लिये दृढ़ था- "मूर्तियां बेचने के लिये भी कोई-न-कोई ऐसा रास्ता सोच लिया जायेगा--जिसमें कोई खतरा न हो। फिलहाल हमें अपना सारा ध्यान इस बात के ऊपर केन्द्रित करना चाहिये कि लाश को किस तरह ठिकाने लगाया जाये।"

उन दोनों के बीच थोड़ी देर और बहस चली।

लेकिन आखिरकार कुलभूषण ने शीतल को इस बात के लिये तैयार कर ही लिया कि उस लम्बे कड़ियल आदमी की लाश ठिकाने लगाने में ही उनका भला है।

फिर कुलभूषण ने शीतल की मदद से उस अजनबी आदमी के शव को घर के अंदर से निकालकर ऑटो रिक्शा में लादा।

वह उन दोनों के लिये बड़े नाजुक क्षण थे।

शीतल तो लाश को हाथ लगाते हुए भी घबरा रही थी-लेकिन के बार-बार के आग्रह के बाद वो इस काम को करने के लिया तैयार हो गयी।

उस समय रात के दो बज रहे थे।

पूरा किशनपुरा सन्नाटे में डूबा था।

कुलभूषण ने चैन की सांस ली-आज से पहले वो यह कहते हुए नहीं थकता था कि उस मौहल्ले में बेहद पत्थर दिल लोग रहते हैं-रात को कितनी हाय तौबा मचती है-वहां कैसी-कैसी झड़पें होती हैं-परन्तु क्या मजाल कोई अपनी खिड़की में से भी झांककर देख ले।

वहां कोई मरता है तो मर जाये-उनकी बला से।

परन्तु आज कुलभूषण के दिल से दुआयें निकल रही थी-अगर आज उसकी नगाड़े जैसी चीख सुनकर वहां शीतल के अलावा कोई और -गा धमकता-तो वह मूर्तियों का वारिस तो क्या बनना था-उल्टे उसे हत्या के अपराध में जेल के अंदर चक्की और पीसनी पड़ती।

बहरहाल अभी तक नसीब उसके साथ था।

उसने खून से रंगे कपड़े उतारकर नये धुले हुए कपड़े पहने। उसके बाद खून से रंगे कपड़ों पर कैरोसीन ऑयल डालकर उसने उनमें आग लगा दी और राख को नाली के रास्ते बहा दिया।

शीतल ने भी एक महत्वपूर्ण काम किया।

उसने पहले पानी तथा फिर डेटॉल की मदद से फर्श पर लगे खून के धब्बों को अच्छी तरह साफ कर डाला।

जबकि कुलभूषण ने आनन-फानन में अजनबी की जेबों से अपने फिंगर प्रिंट भी मिटा दिये थे।

फिर ऑटो रिक्शा की नेम प्लेट पर. लगी मिट्टी भी साफ की-ताकि उसी एक प्वाइंट की वजह से वो कहीं फंस न जायें। बहरहाल कुलभूषण जैसे सीधे-सादे आदमी से जितनी उम्मीद की जा सकती है-उसने उससे कहीं ज्यादा काबलियत का परिचय देते हुए सबूत मिटाये।

अजनबी को ऑटो रिक्शा में लादते समय उन दोनों ने अपने हाथों में दस्ताने पहन लिये।

अजनबी चूंकि लम्बी-चौड़ी कद काटी वाला आदमी था-इसलिये टांगें वगैहरा मोड़कर वह बड़ी मुश्किल सं ऑटो रिक्शा की पिछली सीट पर सैट हो गया।

लाश के ऊपर एक मोटा कम्बल डाल दिया गया।

फिर शीतल बेहद खौफजदा मुद्रा में लाश के पहलू में इस तरह बैठ गयी-जैसे वह लाश, लाश न होकर कोई मरीज हो और वह उस मरीज की सम्बन्धी हो।

अगले पल ऑटो रिक्शा तूफानी गति से सड़क पर दौड़ पड़ी।

अब कुलभूषण की आखों के सामने रात के काजली अंधेरे में डूबी काली कोलतार की वीरान सड़क थी-जो मूसलाधार बारिश होने की वजह से शीशे की तरह चमक रही थी।

और उसकी आखों में सपने थे।

सुनहरी सपने।

कुलभूषण ने देखा-उसकी और शीतल की शादी हो रही है। उनके पास एक बंगला है।

शानदार एम्पाला गाड़ी है।

आगे-पीछे नौकर-चाकर हैं।

वह खुश है।

बेहद खुश।

कुलभूषण सपने देखता रहा-ऑटो रिक्शा अपना फासता तय करती रही।

तभी संकट की शुरुआत हुई।

पिक! पिक!

पीछे से आती सायरन की आवाज को सुनकर कुलभूषण चौंका। सारे सपने एक झटके में बिखर गये।

उसने पीछे गर्दन घुमाई और 'गर्दन घुमाते ही मानो एक साथ हजारों बिच्छुओं ने उसे डंक मार दिया था।

" प...पुलिस!" कुलभूषण के मुंह से चीख निकली।

"का नाम सुनकर शीतल के भी होश उड़ गये।

पीछे फ्लाइंग स्क्वॉयड की एक नीली जिप्सी सायरन बजा-बजाकर ऑटो रिक्शा को रोकने का आदेश दे रही थी।

" य...यह पुलिस हमारा पीछा क्यों कर रही है?" शीतल ने बेदहवासों की तरह पूछा।

"म...मुझे क्या मालूम।" कुलभूषण के जिस्म का एक-एक, रोआ खड़ा हो गया।

"जरूर उन्हें यह पता चला गया है कि हमारी ऑटो रिक्शा में लाश है।"

"परन्तु उन्हें कैसे पता चल सकता है?"

"य...यह तो वही बेहतर जाने।" शीतल कंपकंपाये स्वर में बोली- "परन्तु हण्ड्रेड परसेण्ट उन्हें हमारी हरकत के बारे में मालूम हो गया है।

मैं तेरे से पहले ही बोलती थी भूषण-इस चक्कर में मत पड़-मत पड़-फंस जायेगा। मगर नहीं-तब तो तुझे धनवान बनने का शौक चढ़ा हुआ था।"

"बेकार की बात मतकर शीतल।"

कुलभूषण झुंझला उठा-पहले ही उसका दहशत के मोर बुरा हाल था-उसके जिस्म से पसीने की धारायें बह निकली थीं। उसने ऑटो रिक्शा की स्पीड और बढ़ा दी।

ऑटो अब आधी-तूफान की तरह सड़क पर दौड़ने लगी। और उससे भी कहीं ज्यादा तेजी से दौड़ रहा था कुलभूषण का दिमाग। दिमाग-जो उस एकाएक गले पड़ी मुसीबत से छुटकारा पाने की कोई तरकीब सोच रहा था।

"श...शीतल।" कुलभूषण आदोलितल लहजे में बोला- "म...मेरी बात ध्यान से सुन।"

"क...क्या बात?"

"पुलिस से बचने का मेरे दिमाग में एक आइडिया आया है-तू कम्बल ओढ़कर लाश के ऊपर लेट जा-जल्दी-फौरन।"

पसीने छूट गये शीतल के- "य...यह क्या कह रहा है तू?"

"बहस मत कर।" कुलभूषण चिल्ला उठा- "पुलिस की जिप्सी नजदीक आती जा रही है-जैसा मैं कह रहा हूं जल्दी वैसा कर-बरना आज हम दोनों का फंसना तय है।"

"ल...लेकिन लाश के ऊपर लेटने से ही क्या हो जायेगा?"

शीतल की आखों में मौत नाच रही थी।

उसकी हवा खुश्क थी।

"लाश के ऊपर लेटने के बाद यह भी पता चल जायेगा कि क्या होगा-इसलिये जल्दी कर।"

उन दोनों की आपसी बहस किसी ठोस नतीजे तक पहुंच पाती उससे पहले ही पुलिस की नीली जिप्सी जोर-जोर से सायरन बजाती हुई ऑटो रिक्शा के पहलू में से गुरूरी और फिर सड़क के बिल्लकु बीचों-बीच ऑटो रिक्शा के सामने जाकर खड़ी हो गयी।

हाथ-पांव फूल गये कुलभूषण के।

उसने फौरन ब्रेक अप्ताई किये।

फिर भी ऑटो रिक्शा के पहिये किर्र-किर्र की भयानक आवाज करते काफी दूर तक घिसटते चले गये और एक्सीडेंट होते-होते बचा।

उसी पल शीतल भी हरकत में आगयी।

हादसे की रात-3

वह एकदम दहशत के वशीभूत होकर लाश के ऊपर जा पड़ी थी-लाश के ऊपर गिरते ही उसने झट से लाश पर पड़ा कम्बल! खींच लिया था फिर उस कम्बल से अपने आपको और लाश को अच्छी तरह ढक लिया।

अब वह लाश के एकदम ऊपर थी।

अजनबी की गोद में।

उधर जिप्सी के रुकते ही उसमें से धड़ाधड़ तीन पुलिसकर्मी नीचे कूदे।

वह शक्ल-सूरत से ही शैतान नजर आ रहे थे।

नीचे कूदते ही वह ऑटो रिक्शा की तरफ बड़े।

कुलभूषण ने देखा-उनमें जो सबसे आगे था, वह एक बड़े खतरनाक मुखमण्डल वाला सब-इंस्पेक्टर की रैंक का पुलिसकर्मी था-जबकि उसके पीछे-पीछे आने वाले दोनों पुलिसकर्मी हवलदार थे।

कुलभूषण ऑटो रिक्शा की ड्राइविंग सीट से कुछ और ज्यादा चिपककर बैठ गया तथा अपने होने वाले खौफनाक अंजाम की कल्पना से ही थर-थर कांपने लगा।

तब तक वह तीनों उसके करीब आ चुके थे।

"क...क्या हुआ साहब?" कुलभूषण ने मरियल-सी जबान में पूछा।

"बाहर निकल साले।" सब इस्पेक्टर की हथौड़े जैसी आवाज ने सीधे उसके दिमाग पर चोट की- "बाहर निकल"

थरथरा उठा कुलभूषण।

हाथ-पैर कीर्तन करने लगे।

"ल...लेकिन बात क्या है साहब ?"

"सुना नहीं हरामी।"

सब-इंस्पेक्टरने चिंघाड्ते हुए आगे झुककर उसका गिरेहबान पकड़ लिया- "सुना नहीं -मैं क्या कह रहा हूं।...मगर...।"

कुलभूषण के मुंह से निकलने वाले आगे के तमाम शब्द एक लम्बी चीख में परिवर्तित हो गये-क्योकि गुस्से में भिन्नाते हुए उस सब-इंस्पेक्टर ने कुलभूषण को न सिर्फ बाहर पकड़कर खींच लिया था बल्कि बाहर खींचते ही उसने धड़ाधड़ उसके मुंह पर तीन-चार ऐसे झापड़ भी जड़े कि वो चीखते हुए घड़ी के पेण्डुलम की तरह दायें-बायें झूल गया।

"जबान चलाता है साले-अपने बाप से जबान चलाता है।" उसने एक झापड़ और जड़ा।

बिलबिला उठा कुलभूषण।

उसकी आखों के गिर्द अनार-पटाखे से छूटने लगे।

"ल...लेकिन मेरा कसूर तो बोलो साहब?

"कुलभूषण ने फरियाद की-"म...मेरा अपराध क्या है?"

"तुझे अपना अपराध नहीं मालूम साले।" सब-इंस्पेक्टर ने उसे कहर बरपा करती नजरों से घूरा- "तुझे अपना कसूर नहीं मालूम।" धड़ाधड़ दो झापड़ बड़े कसकर उसकी कनपटी पर पड़े।

कुलभूषण के पट्टे रुलाई छूटते-छूटते बची।

"उल्लू के पट्टे!" सब-इंस्पेक्टर ने उसके बाल पकड़कर झंझोड़े- "इतनी तेज ऑटो रिक्शा चला रहा था-हवाई जहाज बना रखा था इसे और ऊपर से पूछता है मेरा अपराध क्या है-मेरा कसूर क्या है?"

सब-इंस्पेक्टर ने गुस्से में भिन्नाकर उसके पेट में इतनी जोर से घुटना मारा कि वह हलकाये कुत्ते की तरह डकरा उठा।

सचमुच बड़ा कड़क पुलिस वाला था।

फिर यह सोचकर कुलभूषण को राहत मिली कि मामला स्पीडिंग के चालान कों था-लाश का वगैहरा का नहीं।

" ल...लेकिन इसमें मेरी क्या गलती है साहब?" कुलभूषण रुंधे हुए स्वर में कलपते हुए बोला।

"अच्छा-इसमें तेरी गलती कुछ नहीं।" सब-इंस्पेक्टर ने उसे भस्म कर देने वाली नजरों से घुरा- "ऑटो रिक्शा को आंधी तूफान बना रखा था-पुलिस सायरन की आवाज भी तुझे सुनाई नहीं दे रही थी-लेकिन फिर भी तेरी कुछ गलती नहीं।"

"साहब-मेरे पास एक इमरजेन्सी केस है।" कुलभूषण आहत स्वर में बोला- "इसी वजह से मैं ऑटो रिक्शा आधी-तूफान बनाकर चला रहा था।"

"इमरजेन्सी-कैसी इमरजेन्सी?"

"एक लड़की की जान खतरे में है साहब।"

सब-इंस्पेक्टर ने फौरन अपने हाथ में मौजद टॉर्च का प्रकाश ऑटो रिक्शा की पिछली सीट पर डाला-शीतल मुंह खोले पड़ी थी। अलबत्ता कम्बल से उसने लाश को बड़े करीने से ढक रखा था।

अ...आह।"

मुंह पर टॉर्च का प्रकाश पड़ते ही शीतल दर्द भरे अंदाज में जोर से कराही-उसने इमरजेन्सी वाली बात शायद सुन ली थी।

"क्या हुआ है इसे?" लड़की को बीमार हालत में देखकर सब-इंस्पेक्टर के तेवर-कुछ ढीले पड़े।

"पेट से है साहब-दाई ने बोला है कि केस सीरियस है-इसलिये इसे फौरन हॉस्पिटल ले जाओ।"

"अगर यह बात है-तो पहले क्यों नहीं बताया?

"सब-इंस्पेक्टर चीखा।

"अ...आपने बोलने का मौका ही कहां दिया साहब-अ...आप तो-आप तो एकदम से...।"

"ठीक है-ठीक है " सब-इंस्पेक्टर ने फिर से आखें लाल-पोली की-"ल...लेकिन यह तो कुछ ज्यादा ही मोटी नजर आ रही है।"

"व... वो क्या है साहब।" कुलभूषण जल्दी से बोला- "य...

यह पेट से है न-इ.. इसीलिए देखने में ऐसा लगता है।"

"ओह! ओह! सब-इंस्पेक्टर मुस्कराया। उसी के साथ दोनों हवलदार भी हो-हो करके हँसे।

"अब मैं जाऊं साहब?" कुलभूषणने व्याकुलता दर्शाई- "जितना ज्यादा लेट होऊंगा-उतना ही केस बिगड़ेगा।"

"ठीक है-जाओ। और सुनो!" सब-इंस्पेक्टर कठोर लहजे में बोला-"आज तो मैंने तुम्हें एमरजेन्सी की वजह से छोड़ दिया है-लेकिन अगर आइन्दा फिर कभी तुमने फ्लाइंग स्क्वॉयड के सायरन की आवाज सुनकर भी ऑटो रिक्शा न रोकी-तो फिर तुम्हारी खैर नहीं। समझे।"

"स...समझ गया साहब-समझ गया।"

"अब दफा हो जाओ यहां से।"

कुलभूषण तुरन्त ऑटो रिक्शा लेकर वहां से नौ दो ग्यारह हो गया।

उसे ऐसा लगा-मानो जल बची और लाखों पाये।

सुबह के पांच बजे का समय।

यह वो समय होता है-जब मॉर्निंग वॉक के लिये लोग अपने-अपने घरों से बाहर निकलते हैं।

लेकिन उस दिन की शुरुआत बड़े ही सनसनी खेज ढंग से हुई-इण्डिया गेट के आसपास चहल कदमी करते लोगों कौ जमघट एकाएक अमर जवान ज्योति के नजदीक वाली झाड़ियों के आसपास लग गया था।

जमघट लगने का कारण था-धनी झाड़ियों में एक लाश का पाया जाना।

अजनबी की क्षत-विक्षिप्त लाश को सबसे पहले कारपोरेशन के एक मालीं ने देखा-जो सूरज निकलते ही झाड़ियों की कटाई-छंटाई के वास्ते रोजाना वहां आता था।

झाड़ियों में लाश देखते ही उसने गला फाड़-फाड़कर चिल्लाना शुरू कर दिया।

परिणामस्वरूप वहां भीड़ जमा हो गयी।

यह भी बड़ी दिलचस्प बात थी कि कुलभूषण उस समय खुद भी वहां पुलिस और आम लोगों की प्रतिक्रिया जानने के लिये मौजूद था-उसने ट्रेक सूट पहन रखा था और उसके हाव-भाव ऐसे थे, मानो वह भी दूसरे लोगों की तरह ही मॉर्निंग वॉक के लिये निकला हो और लाश की बाबत सुनकर चौंका हो।

दरअसल रात वह फ्लाइंग स्क्वॉयड दस्ते का सामना करने के बाद इतना घबराया था कि अमर जवान ज्योति के पास सन्नाटा देखकर उसने लाश को वहीं झाड़ियों में फेंक दिया-वरना कुलभूषण का इरादा तो लाश को किसी ऐसी जगह ठिकाने लगाने का था-जहां से वो पुलिस को कई सप्ताह। तक बरामद न होती।

कुलभूषण जानता था कि उसने लाश ऐसी जगह फैंकी है-जहा सुबह होते ही हड़कम्प मच जायेगा-इसलिये वो खुद भी उस हड़कम्प का नजारा करने के लिये वहां मौजूद था।

तभी एकाएक भीड़ में शोर-शराबा सा हुआ और फिर जोर-जोर से सायरन बजाती एक पुलिस जीप घटनास्थल पर आकर रुकी। फिंर देखते-ही-देखते इंस्पेक्टर चक्रधर अपने पूरेदल-बल के साथ जीप में से कूदा।

इंस्पेक्टर चक्रधर सत्ताइस-अट्ठाइस साल का एक हष्ट-पुष्ट नौजवान था।

वह इतने दबंग व्यक्तित्व का मालिक था कि अण्डरवर्ल्ड के बड़े-बड़े गुण्डों की उसके नाम से रुह कांपती थीं-अपने इसी रीब-दाब के कारण ही वो अभी नया-नया ही सब-इंस्पेक्टर से इंस्पेक्टर बना था और फ्लाइंग स्क्वॉयड के उस दस्ते से सम्बन्धित था-जो सिर्फ हत्या वाले केसों की तफ्तीश करता है।

इंस्पेक्टर चक्रधर को देखते ही भीड़ 'खाई' की तरह फट गयी। उसके व्यक्तित्व से कुलभूषण भी प्रभावित हुआ और उसके दिल दिमाग में एक ही सवाल नगाड़े की तरह बजने लगा-

"अब क्या होगा?"

"अब क्या होगा?"

उधर चक्रधर जैसे ही अपने सहयोगियों के साथ लाश के नजदीक पहुंचा-तुरन्त एक हवलदार के मुंह से निकल- "अरे यह तो चिना पहलवान है साहब।"

"च...चिना पहलवान।"

"वही चिना पहलवान साहब। "हवलदार बोला- "जो पहले अखाड़े में जाकर पहलवानी करता था-लेकिन फिर धीरे-धीरे जुर्म के पेशे में आ गया और खून-खराबा करने लगा-दिल्ली पुलिस के रिकॉर्ड में इसका नाम काफी ऊपर है साहब।"

"क...कहीं यह वही चिना पहलवान तो नहीं।" इंस्पेक्टर चक्रधर जल्दी से बोला-"जिसका कई डकैतियों में भी हाथ था?" बिल्कुल सही अंदाजा लगाया साहब-यह वही चिना पहलवान है।"

"ओह...ओह।"

इंस्पेक्टर चक्रधर अब धीरे-धीरे स्वीकृति में गर्दन हिलाने लगा। उसके बाद पुलिस ने सबूत जुटाने और पचनामा बनाने की तैयारी शुरू कर दी थी।

कुलभूषण जब घर पहुंचा-तो वहां शीतल बड़ी बेसब्री से उसी का इंतजार कर रही थी।

वह घबराहट के मारे आज ऑफिस भी नहीं गयी थी।

"क्या आ?" कुलभूषण को देखते ही वह उसकी तरफ लपकी- "कोइ? खास बात पता चली?"

"हां।" कुलभूषण गहरी सांस लेता हुआ कुर्सी पर बैठ गया- "उस अजनबी का नाम मालूम हो गया।"

"क...कौन था वो?"

"कोई चिना पहलवान नाम का अपराधी था-जिसके ऊपर डकैती और हत्या के कई केस दर्ज थे।"

"ओह-इसके अलावा कुछ और पता चला?"

"नहीं-बाकी तो कुछ नहीं पता चला।" कुलभूषण ने सस्पैंसफुल मुद्रा में कहा- "अब शाम: को सांध्य टाइम्स आयेगा-शायद उसी से कोई और नई जानकारी मालूम हो।"

उसके बाद बड़ी बेसब्री से सांध्य टाइम्स का इंतजार शुरू हुआ। वह दोनों नटराज मूर्तियों के बारे में कोई जानकारी हासिल करने के लिये कुछ ज्यादा ही उत्सुक थे।

खासतौर पर कुलभूषण तो इस मामले में हद से ज्यादा बेकरार था।

शाम को तीन बजे के करीब सांध्य टाइम्स आया।

चिना पहलवान से सम्बन्धित खबर अखबार के कवर पेज पर ही मोटी-मोटी हैडलाइनों में छपी थी।

लिखा था:

कुख्यात अपराधी चिना पहलवान की रहस्यमयी हत्या शव बरामद,

नई दिल्ली, 4 जुलाई। आज सुबह दिल्ली शहर के कुख्यात अपराधी चिना पहलवान की क्षत-विक्षिप्त लाश पुलिस को इण्डिया गेट के नजदीक बेहद रहस्यमयी हालत में पड़ी मिली-मृत्यु का कारण वह दो गोलियां बतायी जाती हैं जो चिना पहलवान की पीठ में लगी हुई थीं।

इस सम्बन्ध में गश्तीदल के दोइ पुलिसकर्मियों का कहना है कि उन्होंने रीगल सिनेमा के नजदीक गश्त लगाते समय पौने बारह बजे के करीब गोलियों के दो धमाके सुने थे-गोलियों की आवाज सुनकर वह फौरन आवाज की दिशा में दौड़े-जहां उन्होंने चिना पहलवान को भागते हुए देखा। उसके हाथ में काले रंग का एक ब्रीफकेस था-वह पुलिसकर्मी चिना पहलवान को पकड़ पाते, उससे पहले ही वो रीगल के सामने अंधेरे में खड़ी एक ऑटो रिक्शा में बैठकर फरार हो गया। गश्तीदल के पुलिसकर्मियों ने ऑटो रिक्शा का नम्बर भी नोट करने का प्रयास किया-परन्तु उसकी नम्बर प्लेट पर मिट्टी पुती होने के कारण वह अपने मकसद में कामयाब न हो सके।

पुलिस का अनुमान है कि ऑटो रिक्शा ड्राइवर चिना पहलवान का कोई सहयोगी था-पुलिस मामले की तह तक पहुंचने के लिये ऑटो रिक्शा ड्राइवर और चिना पहलवान के ब्रीफकेस की बड़ी सरगर्मी से तलाश कर रही है।

कुलभूषण ने वह खबर खुद भी पड़ी और शीतल को भी। पूरे समाचार में नटराज मूर्तियों का कहीं भी कोई जिक्र न था।एक बात बड़ी भयानक थी-दिल्ली पुलिस, ऑटो रिक्शा ड्राइवर का चिना पहलवान से जो सम्बन्ध निकाल रही थी-उसने उन दोनों के होश उड़ाकर रख दिये।

" य...यह तो बड़ी खतरनाक खबर है।" सांध्य टाइम्स अखबार में छपी उस खबर को सुनकर शीतल के शरीर में कंपकंपी दौड़ी।

"क्यों?"

"मालूम नहीं- तुम्हारे और चिना पहलवान के बीच क्या सम्बन्ध निकाल रही-वह तुम्हें उसका कोई सगेवाला समझ रही है।"

"मुझे नहीं समझ रही।" कुलभूषण गुर्राया- "बल्कि वह उस ऑटो रिक्शा ड्राइवर को उसका सगेवाला समझ रही है-जो उसे रीगल सिनेमा के पास से लेकर भागा था।"

"लेकिन भूषण।" शीतल की आखों में हैरानी के भाव थे- "वह ऑटो रिक्शा ड्राइवर तू ही तो था।"

"अभी यह बात सिर्फ हम दोनों को मालूम है-हम दोनों को। पुलिस यह रहस्य नहीं जानती कि वो ऑटो रिक्शा ड्राइवर मैं ही था।" अगर पुलिस अभी इस रहस्यको नहीं जानती।" शीतल थर-थर कांपते हुए स्वर में बोली- "तो बहुत जल्द वो जान भी जायेगी। मैं तुझसे पहले ही कहती थी भूषण-इस चक्कर में मत पड़-मत पड़-फैस जायेगा। लेकिन नहीं-तब तो मेरी बात तेरे कान पर नहीं रेंग रही थी-तब तो तुझे सिर्फ धनवान बनने का शौक चढ़ा था।"

"अब इन बेकार की बातों को छोड़ शीतल।" कुलभूषण झुंझला. उठा- "सच बात तो यह है कि अभी भी हमारा कुछ नहीं बिगड़ा है। अगर हम ठण्डे दिमाग से सारे हालातों का जायजा लें, तो खुद हमें भी महसूस होगा कि पुलिस हम तक कभी भी नहीं पहुंच सकती।"

"क्यों नहीं पहुंच सकती।"

"क्योंकि पुलिस अभी सिर्फ यह जानती है शीतल।" कुलभूषण एक-एक शब्द चबाता हुआबोला- "कि कोई चिना पहलवान को ऑटो रिक्शा में लेकर भागा। शब्दों पर गौर करो- 'कोई।

अभी यह बात मुकम्मल अंधेरे में 'है कि वह 'कोई' कौन था-दिल्ली पुलिस अभी न तो मेरे नाम से ही वाकिफ है और न उसे मेरी ऑटो रिक्शा का नम्बर ही मालूम है। शीतल।" कुलभूषण की आवाज और ज्यादा रहस्यमयी हो उठी- "दिल्ली शहर में ऑटो रिक्शाओं की कमी नहीं है-यहां हजारों की संख्या में ऑटो रिक्शा हैं। इसलिये दिल्ली पुलिस को यह बात इतनी आसानी से नहीं पता चलेगी कि जिस ऑटो रिक्शा में चिना पहलवान रीगल के पास से भागा-उस ऑटो रिक्शा का ड्राइवर कौन था।"

"अ...और मूर्तियां।" शीतल ने सकपकाये स्वर में पूछा-"मूर्तियों का क्या होगा?"

"मूर्तियों के सम्बन्ध मे एक बड़ी अच्छी बात है।" कुलभूषण उत्साहपूर्वक बोला- "उनके बारे में अभी दिल्ली पुलिस को कुछ भी मालूम नहीं है।"

"त...तुम कहना क्या चाहते हो?"

"देखो शीतल।" कुलभूषण ने उसे विस्तार-से समझाया- "इस समय जो बात चिना पहलवान से हमारा लिंक जोड़ती है वो है हमारे पास मौजूद सोने की छ: नटराज मूर्तियां। उन मूर्तियों के अलावा हमारे पास ऐसा कोई सूत्र नहीं है-जो पुलिस के सामने इस बात की शहादत बन सके कि हमारा चिना पहलवान से या उसकी लाश से कैसा भी कोई रिश्ता था। और फिलहाल हमारे पास सबसे दूसरा ट्रम्प कार्ड यह है कि पुलिस उन मूर्तियों की तरफ से भी पूरी तरह अंजान है-इसलिये इससे पहले कि दिल्ली पुलिस ऑटो रिक्शा ड्राइवरों की छानबीन करती हुई मेरे तक पहुंचे-उससे पहले ही क्यों न हम मूर्तियां बेचकर दिल्ली से ही फरार हो जायें।"

"यह...यह क्या कह रहे हो तुम?" शीतल चौंकी।

"ठीक' ही तो कह रहा हूं।" कुलभूषण सनसनीखेज स्वर में ही बोला- "पुलिस को सभी ऑटो रिक्शा ड्राइवसे की जांच-पड़ताल करने में क्रम-सेकम तीन-चार दिन का, समय लग जायेगा-इस बींच हम आराम से वह नटराज मूर्तियां बेच सकते हैं। मूर्तियां बेचने के बाद हमारे पास कोई सबूत भी नहीं रहेगा।"

" ल...लेकिन सवाल तो ये है भूषण-वो मूर्तियां बेची भी किस तरह जायेंगी।?" शीतल शुष्क स्वर में बोली- "मैं पहले ही आशंका जाहिर कर चुकी हूं-अगर वह मूर्तियां चोरी की हुई तो...?"

"तो क्या होगा?"

"तब तू पकडां नही जायैगा।"

कुलभूषण ने बड़े ही विश्वास के साथ इंकार में गर्दन हिलाई-

"मैं तब भी नहीं पकड़ा जाऊंगा।"

"क...कैसे?" शीतल ने हैरानी से नेत्र फैलाकर पूछा।

"जरा सोचो शीतल।" कुलभूषण ने आइडिया बताया- "अगर कोई व्यक्ति किसी ऐसी दुकान पर जाकर चोरी का माल बेचे-जो ज्यादातर चोरी का ही माल खरीदता हो-तो फिर खतरा कैसा तो फीर दुकानदार भला पुलिस को इन्फॉर्मेशन क्यो देगा?"

"त...तुम ऐसे किसी सर्राफ़ को जानते हो?" शीतल के मुंह से सिसकारी छूटी-"जो चोरी का सोना खरीदता है?"

"हां-जानता हूं। और आज रात को ही मैं उक्से मूर्तियों का सौदा करूंगा-क्योंकि इस मामले में मैं ज्यादा देर नहीं करना चाहता।"

शीतल हैरानी से कुलभूषण को देखती रह गयी।

उस कुलभूषण को-जो हर पल एक गहरी पहेली बनता जा रहा था।

" दरीबा कलां!

यह जगह दिल्ली में चांदनी चौक के नजदीक ही है।

उस समय रात के ग्यारह बज रहे थे-सर्राफे की रिटेल मार्केट के रूप में प्रसिद्ध दरीबा कलां की तब तक लगभग हर दुकान बंद हो चुकी थी-सिर्फ अपवाद के तौर पर एक दुकान खुली थी, जिसके शटर के ऊपर एक न्योन साइन बोर्ड जल-बुझ रहा था।

उस न्योन साइन पर लिखा था-

सेठ दीवानचन्द एण्ड सन्स

सनमाइका के विशाल काउण्टर के पीछे सेठ दीवानचन्द एण्ड सन्स का एक सेल्समैन खड़ा था।

सेल्समैन ने सबसे पहले अपना चश्मा दुरस्त किया-फिर तीक्ष्ण दृष्टि काउंटर पर कोहनी टिकाये खड़े कुलभूषण पर डाली और उसके बाद अपनी बेहद पारखी नजरों से उस नटराज-मूर्ति को देखने लगा, जिसे कुलभूषण ने अभी-अभी उसे बेचने की खातिर सौंपी थी। मूर्ति देखते-देखते सेल्समैन की आखों में एकाएक हैरानी के चिन्ह उभरने लगे।

फिर उसने घोर आश्चर्य से पूछा- " यह यह मूर्ति...तुम्हारे पास कहां से आयी?"

"मैंने चुराई है।" कुलभूषण ने बड़ी दिलेरी के साथ जवाब दिया।

"च...चुराई है।" एक पल के लिये सैल्समैन के होश उड़ गये।

"हां।"

"अगर यह चोरी की है तो तुम इसे यहां क्यों लेकर आये हो।"

सेल्समैन थोड़ा भड़ककर बोला- "हम चोरी का माल बिल्कुल नहीं खरीदते-समझे।"

मुस्कराया कुलभूषण।

उसकी 'मुस्कान' ने सेल्समैन को और ज्यादा सस्पैंस में फंसा दिया- "त... तुम मुस्करा क्यों रहे हो?"

"क्योंकि मुझे सब मालूम है बिरादर।" कुलभूषण बोला- "मैं जानता हूं कि तुम और तुम्हारे सेठजी रात के दो-दो बजे तक यहां बैठकर क्या करते हैं।"

"क्या करते हैं?" सेल्समैन ने अपनी आखें लाल-पीली कीं।

"देखो-मैं यहां लड़ाई-झगड़ा करने नहीं आया।" कुलभूषण ने अपनी आवाज नरम की-अगर तुम्हारी इच्छा हो-तो मूर्ति खरीदो। न इच्छा हो-तो मना करो।" उसके बाद कुलभूषण ने सेल्समैन के हाथ से अपनी इकलौती नटराज मूर्ति ले ली और फिर चलने का उपक्रम करता हुआ बोला- "वैसे एक बात कहूं?"

"कहो।"

"मेरे जिस दोस्त ने मूर्ति बेचने के लिये मुझे यहां का एड्रेस दिया था-वह एड्रेस गलत नहीं हो सकता। क्योंकि मेरा दोस्त बहुत भरोसे वाला आदमी है और उसने अपने जीते जी कभी कोई गलत बात जबान से बाहूर नहीं निकाली।"

वह' बात कहने के बाद कुलभूषण जैसे ही जाने के लिए मुड़ा।

"सुनो।" सेल्समैन ने उसे पुकारा।

कुलभूषण ठिठका।

"क्या है?"

"तुम अपने उस दोस्त का नाम बता सकते हो-जिसने तुम्हें यहां का एड्रेस दिया।"

अब' कुलभूषण सकपकाया।

उसे एकाएक कोई जवाब नहीं सूझा।

"बताया नहीं तुमने-तुम्हारे दोस्त का क्या नाम है?"

"च... चिना- चिना पहलवान।" कुलभूषण के मुंह से का पहलवान का नाम अनायास ही निकल गया- "च...चिना पहलवान ने मुझे यहां का एड्रेस दिया था।"

चिना पहलवान।

उस नाम को सुनकर सेल्समैन के नेत्र यूं अचम्भे से फटे-मानो उसके सिर पर एकाएक बम आकर गिर गया हो।

"त...तुम चिना पहलवान के दोस्त हो?" सेल्समैन के मुंह से सिसकारी छूटी।

"हां।"

"ठीक है-तुम मुझे मूर्ति दिखाओ।" सेल्समैन आश्चर्यपूर्णमुद्रा में ही बोला- "मैं अभी अंदर सेठ जी से बात करके आता हूं।"

कुलभूषण ने खुशी-खुशी मूर्ति उसे सौंप दी।

सेल्समैन मूर्ति लेकर दुकान के अंदर वाले पोर्शन में चला गया। कुलभूषण नहीं जानता था कि अब वो एक और कितनी बड़ी आफत में फंसने जा रहा है।

कितनी बड़ी मुस्किल उसके सिर पर टूटने वाली है।

दरअसल 'सेठ दीवानचंद एण्ड संस' की ज्वैलरी शॉप दो पोर्शनों में बंटी हुई थीं।

एक फ्रण्ट पोर्शन!

जबकि दूसरा फ्रण्ट पोर्शन से ही होता हुआ अंदर का पोर्शन।

उस अंदर के पोर्शन में ही सर्राफों के सर्राफ सेठ दीवानचंद बैठते थे और वहां तक सिर्रफे सेल्समैन की पहुंच थी-वहां कोई कस्ट्रयूमर नहीं जा सकता था

वह सर्राफे की दुकानूर रोजाना रात के दो बजे तक खुलती थी इतना ही नहीं-तब तक वहां कुलभूषण जैसे इक्का-दुक्का ग्राहक भी आते रहते थे।

ऐसे ही कई ग्राहकों को कुलभूषण पहले भी कई मर्तबा अपनी ऑटो रिक्शा में बिठाकर वहां लाया था। उनमें से कुछेक ग्राहक नशे में बुरी तरह पुत होते और वह ऑटो रिक्शा में बैठे-बैठे सेठ दीवानचंद को माल बेचकर बस रुपया हासिल होने की बात करते रहते। कुलभूषण को तभी मालूम हुआ कि रात के समय वहां कौन-सा धंधा होता है। इस समय कुलभूषण फ्रंट पोर्शन में बिल्कुल अकेला खड़ा था।

ज्वैलरी के वहां जितने भी शो-केस थे-वह सब लॉक्ड थे ताकि कोई उनके साथ छेड़छाड़ न कर सके।"

कुलभूषण ने अपने चेहरे पर नकली दाढ़ी-मूंछें भी चिपकाई हुई थीं।

उसे वहां खड़े-खड़े दस मिनट से भी ज्यादा गुजर गये-लेकिन सेल्समैन अंदर वाले पोर्शन से बाहर न निकला।

अब कुलभूषण बेचैन हो उठा।

" क...क्या चक्कर है-यह बाहर क्यों नहीं आ रहा?" कुलभूषण बेचैनी पूर्वक इधर-से-उधर टहलने लगा।

पाच मिनट और इसी तरह गुजर गये-परन्तु सेल्समैन फिर भी बाहर न निकला।

अब कुलभूषण की बेचैनी हद से ज्यादा बढ़ चुकी थी।

उसके मस्तिष्क में' रह-रहकर खतरे की घण्टियां बजने लगी।

"ज..जरूर कुछ चक्कर है।"

"ज..जरूर कुछ चक्कर धपला है।"

" भाग कुलभूषण-भाग।"

"भाग!'

कुलभूषण के माथे पर पसीने चुहचुहाने लगे।

एकाएक कुलभूषण बड़ी फुर्ती के साथ ज्वैलरी शॉप से बाहर निकला और नजदीक ही बने कारपोरेशन के पेशाबघर में जा घुसा।

पेशाबघर की जालियों के पीछे से ज्वैलरी शॉप का नजारा बिकुल साफ देखा जा सकता था।

तभी घटना ने एक और नया मोड़ लिया।

कुलभूषण ने देखा-उसके पेशाबघर में घुसते ही भड़ाक से सैकिण्ड पोर्शन का दरवाजा खुला था, फिर उसमें से सेल्समैन के साथ-साथ बुरी तरह हड़बड़ाया एक और व्यक्ति भी बाहर निकला जरूर वह सेठ दीवानचंद था।

उसकी उम्र लगभग चालीस-पैंतालीस के बीच थी। गेंहुआ रंग लम्बी-चौड़ी कद काठी-साधारण सेठों की भांति उसका शरीर थुलथुला होने की बजाय काफी तंदरुस्त था।

उसने काले रंग का बंद गले का कोट और काली पैंट के साथ ही अपने गले में ढेरों किस्म की रंग-बिरंगी मालायें भी पहनी हुई थीं-दोनों हाथों में रत्नजडित अंगुठियां थीं-कुल मिलाकर सेठ दीवानचंद अपने पहनावे से ही धनकुबेर नजर आ रहा था। परन्तु उसके चेहरे पर ऐसी क्रूरता विद्यमान थी-जो ज्यादातर खतरनाक अपराधियों के चेहरे पर ही पायी जाती है।

कुलभूषण को ज्वैलरी शॉप के अंदर से गायब देख वह दोनों चौंके।

" य...यह कहां गया?" सेल्समैन की साफ-साफ भौंचक्की आवाज कुलभूषण के कानों में पड़ी।

" वडी तेरे को ही मालूम होगा नी-कहां गया।" सेठ दीवानचंद अपनी 'सिन्धी' भाषा में बोला- "मेरे से क्या है नी।"

"ल...लेकिन अभी तो यहीं था।" सेल्समैन दौड़कर ज्वैलरी शॉप से बाहर निकला और सड़क पर दायें-बायें देखने लगा- "अभी-अभी में वो कहां गायब हो गया।"

पेशाबघर में छिपा कुलभूषण माजरा समझ पाता-तभी उसके देखते ही देखते सेठ दीवानचंद की ज्वैलरी शॉप के सामने एक फियेट धड़धड़ाती हुई आकर रुकी।

फिरफियेट में से एक-एक करके दनादन तीन मवाली बाहर कूदे। दो' के हाथ में हॉकिया थीं।

एक के हाथ में साइकिल की चैन।

नीचे कूदते ही उन्होंने सेठ दीवानचंद और सेल्समैन से धीरे-धीरे कुछबातें कीं-उनके हाव-भाव बता रहे थे कि चर्चा उसी के बारे में हो रही है।

"वह जरूर इधर गया है?' तभी सेल्समेन ने गली में दायीं तरफ उंगली- उठाई।

"तुमने देखा था उसे भागते हुए?" एक गुण्डे ने सेल्समैन से पूछा।

"नं...नहीं।" सेल्समैन सकपकाया- "भागते हुए तो नहीं देखा।"

"फिर क्या गारंटी है कि वो इसी तरफ गया है।" दूसरा गुण्डा बोला-"सम्भव है कि वो इस तरफ गया हो।" गुण्डे ने दूसरी दिशा में उंगली उठाई।

"वडी तुम लोग यूं ही बक-बक किये जाओगे नी।" सेठ दीवानचंद झल्ला उठा- "या फिर दौड़कर उस हरामी को पकड़ोगे भी। भाई सब हर तरफ फैल जाओ-वह जिस दिशा में भी भागा होगा, अपने आप पकड़ा जायेगा।"

सेठ दीवानचंद के तर्क में जान थी।

फौरन वह तीनों मवाली और सेल्समैन अलग-अलग दिशाओं में दौड़ पड़े।

जबकि पेशाबघर में छिपे कुलभूषण का दिमाग सुनसान पड़ी वीरान घाटियां बन चुका था।

उसके मस्तिष्क में रह-रहकर एक ही सवाल डंके की तरह बज रहा था- "सेठ दीवानचंद को उसके पीछे गुण्डे लगाने की क्या जरूरत थी?

"वह इस तरह उसे क्यों ढूंढ रहे थे?"

क्या चक्कर था?

कुलभूषण को लगा-जैसे रहस्य का जाल हर पल उसके चारों तरफ कसता जा रहा हो।

कसता ही जा रहा हो।

उस दिन कुलभूषण चोरों की तरह छिंपता-छिपाता किशनपुरा में दाखिल हुआ-दरीबा कलां से वहां तक का रास्ता उसने दौड़कर पूरा किया था।

इसलिए उसकी सांस बेहद तेज चल रही थी।

आज वो एक नये संकट में फंसते-फंसते बचा था-यह तो ऊपर वाले की कृपा थी कि वह आज शीतल के पास से सिर्फ एक ही नटराज मूर्ति लेकर चला था-वरना आज उन तमाम नटराज मूर्तियों से उसे हाथ धोना पड़ता।

किशनपुरा में आकर कुलभूषण ने चैन की सांस ली-परन्तु उसे कहां मालूम था कि अबचैन उसकी किस्मत से पूरी तरह छिन चुका है।

नकली दाढ़ी-मूंछें वो पेशाबघर में ही उतार चुका था।

तभी उसके साथ एक और धटना घटी।

खतरनाक घटना।

रोजाना की तरह उस दिन भी किशनपुरा में सन्नाटा फैला था। "तभी एकाएक कुलभूषण को अपने पीछे सरसराहट-सी सुनाई दी।

"क...कौन है?"

कुलभूषण जैसे ही बौखलाकर पलटा-तुरन्त उसके मुंह से हृदयविदारक चीख निकल गयी।

एक लम्बे फल वाला चाकू बिजली की तरह चमचमाता हुआ

अंधेरे में कौंधा था और फिर उसके बायें बाजू से रगड़ खाकर दूर जा गिरा।

अगर कुलभूषण से पुलटने में एक क्षण की भी देर हो जाती-तो वह चाकू उसकी पीठ में आर-पार जा धंसना था।

एकाएक हुए इस हमले से कुलभूषण के होड़- फना हो गये।

अंधेरा होने के बावजूद उसने हमलावर को बिल्कुल साफ-साफ पहचाना-चाकू बल्ले

ने चलाया था।

बल्ले!

यानी किशनपुरा का नम्बर एक गुण्डा।

बल्ले, कुलभूषण पर दोबारा हमला करने के लिये पुन: बाबू के ऊपर झपटा।

"क्या हुआ? क्या हुआ?"

उसी क्षण भड़ाक से शीतल के घर का दरवाजा खुला और फिर वह लगभग चीखती-चिल्लाती कुलभूषण की तरफ लपकी।

शीतल द्वारा एकदम से मचायी चीख-पुकार से घबराकर बल्ले भाग खड़ा हुआ।

"क्या अ भूपण-क्या हुआ?"

शीतल दौड़कर कुलभूषण के करीब पहुंची और उसने उसे अपनी बांहों में भर लिया।

"व...वो...वो...।" कुलभूषण की दहशत के मारे बुरी हालत थी।

"क्या हुआ?"

"व... वो...वो...।"वो बल्ले मुझे चाकू मारकर भाग गया।"

"व...वो बल्ले था?" शीतल के मुंह से सिसकारी छूटी। शीतल भी घबरा उठी।

" ह...हां-वो बल्ले ही था।"

"चल-तू जल्दी घर चल भूषण।"

"ल...लेकिन बात क्या है?"

"तूने सुना नहीं।" शीतल गुर्रा उठी- "जल्दी घर चल।

"म...मगर...।"

कुलभूषण के आगे के तमाम शब्द अधूरे रह गये -क्योंकि बुरी तरह दहशत जदां शीतल ने उसकी शर्ट का कॉलर पकड़ा था और फिर वह उसे लगभग घसीटती हुई घर की तरफ ले गयी।

किसी भूसे के बोरे की तरह उसने कुलभूषण को चारपाई पर?

पटका और फिर बेपनाह फुर्ती के साथ दरवाजा बंद करती हुई बोली- "तेरे पीछे यहां पुलिस आयी थी बेवकूफ।"

"प...पुलिस!"

वह 'शब्द' कुलभूषण के दिमाग में इस तरह टकराया-मानो धायं से राइफल की गोली लगी हो।

शरीर क्रीज!

हाथ-पैर सुन्न!

चेहरे का रग उड़ गया।

थर-थर कांपते स्वर में पूछा उसने- "ल...लेकिन पुलिस यहां क्यों आयी थी?"

"तुझे पकड़ने आयी थी।" शीतल ने एक 'और भयंकर धमाका किया- "गिरफ्तार करने आयी थी तुझे।"

"ग...गिरफ्तार करने।" कुलभूषण का जिस्म का एक-एक. रोआ खड़ा हो गया- "य...यह तू क्या कह रही है शीतल?" "वही कह रही. हूं बेवकूफ-जो सच है।" शीतल ने दांत किटकिटाये- "पुलिस की एक पूरी जीप भरकर किशनपुरा में आयी थी-वह तेरे बारे में ही पूछताछ कर रहे थे। कोइ इंस्पेक्टर चक्रधर नाम का बड़ा कड़क पुलिसिया। था वह बोलता था कि तूने चिना पहलवान का खून किया है।"

"ख...खून...च...चिना पहलवान का खून।" कुलभूषण इसे तरह थर-थर कांपने लगा-जैसे जूडीं का मरीज कांपता है।

"उस इंस्पेक्टर ने मौहल्ले वालों सामने तेरे घर का ताला भी तोड़ा और वहां की तलाशी भी ली।"

"फ...फिर मिला उसे कुछ वहां से?"

..."कहां से मिलता?" शीतल गुर्रायी- "मूर्तियां तो तूने मेरे पास रख छोड़ी हैं। भूषण-मैं-तेरे से पहले ही बोलती थी कोई भी अपराधी पुलिस के फंदे से ज्यादा दिन तक नहीं बचा रह सकता। अब देख तैरी तमाम चालाकियों के बावजूद तेरी तमाम योजना के बावजूद

पलिस तरे तक कितनी पहुंच ल।" जल्दी तेरी करतूत का पर्दाफाश हो गया।"

उस हादसे ने कुलभूषण की खोपड़ी और ज्यादा फिरकनी की तरह घुमाकर रख दी।

"ल...लेकिन मेरे एक बात समझ में नहीं आयी।" कुलभूषण

झल्लाकर बोला- "इंस्पेक्टर चक्रधर को इतनी जल्दी यह हकीकत कैसे मालूम हो गयी कि चिनो पहलवान की लाश हम दोनों ने ठिकाने लगायी थी?"

"हम दोनों ने नहीं।" शीतल नागिन की तरह फुफकार उठी- "हम दोनों ने नहीं भूषण-सिर्फ खुद को बोल। मैं तेरे इस बेहद खतरनाक और जानलेवा चक्कर में नहीं पड़ने वाली।"

"मैं ही सही-परन्तु इंस्पेक्टर चक्रधर को यह खबर हुई भी कैसे?" कुलभूषण विचलित मुद्रा में बोला- "उसने यह किस तरह पता लगाया कि चिना पहलवान की हत्या में या उसे कीलाश ठिकाने लगाने में मेरा कैसा भी कोई हाथ था?"

"क्या मालूम-इंस्पेक्टर चक्रधर को किस तरह मालूम हुआ। वालों के अपने सोर्स होते हैं-जांच करने का अपना स्टाइल होता है-जरूर इंस्पेक्टर चक्रधर ने किसी तरह यह सारी हकीकत पता लगा ली होगी।"

कुलभूषण के दिमाग में धमाके होने लगे।

तेज धमाके।

सारी घटनायें इतनी सुपर फास्ट स्पीड से घट रही थीं-जिनकी कुलभूषण ने कल्पना भी न की थी।

हर क्षण वाला था।

हर कदम रहस्य से भरा हुआ।

तभी शीतल ने एक और भयंकर विस्फोट किया।

"जानता है बल्ले कौन है?" शीतल का सनुसनाया स्वर।

"क कौन है?"

"वो चिना पहलवान का सगा भतीजा है।"

"भ भतीजा-...च....चिना पहलवान का भतीजा।"

"हां।"

"क...कमाल है-पहले तो मुझे यह बात मालूम नहीं थी।"

सिर्फ तुझे क्या-किशनपुरा में पहले यह बात किसी को मालूम थी।" शीतल बोली- "एक बात सुनकर तू और हैरन होगा भूषण-चिना पहलवान रहता भी किशनपुरा में ही था-आगे जो कोने वाला मकान है उसी में। "यह कैसे हो सकता है।" कुलभूषण के मुंह से तेज सिसकारी छूटी- "अ...अगर चिना पहलवान किशनपुरा में ही रहता था-तो

वह पहले कभी दिखाई क्यों नहीं दिया। जवकि मैने पहले उसे किशनपुरा में तो क्या पूरी दिल्ली में कहीं नहीं देश था।"

"मैंने खुद पहली कभी उसे किशनपुरा में नहीं देखा था।" शीतल बोली- "दरअसल वह आधी रात के गमय कभी-कभार ही उस घर में आता था" जेंसमें बल्ले रहता हैं-इसलिये हममें से कोई भी उसे न देख सका।"

'ओह।" सचमुच सारी परिस्थितियां बेहद चौंका देने वाली थीं-चौंका देने वाली भी और हद से ज्यादा ससपैंसफुल भी-चिना पहलव। न की लाश का क्या हुआ?"

"वह शाम तक ताबूत मैं बद शवगृह के अंदर रखी थी। इंस्पेक्टर चक्रधर बता रही' था कि लावारिस लाशों को तीन-चार दिन तक इसलिये शवगृह में रखा जाता है कि क्या पता उन्हें कोई हासिल करने वाला आ ही जाये। अगर कोई नहीं आता-तो फिर उन लावारिस लाशों का सरकार ही दाह-संस्कार कर देती है। अगर आज इंस्पेक्टर चक्रधर की बल्ले से मुलाकात न होती तो बहुत मुमकिन था कि चिना पहलवान की लाश को भी लावारिस समझकर सरकार ही उसका दाह संस्कार कर देती।"

" इ...इसका मतलब इंस्पेक्टर चक्रधर भी इस बात रो याकिफ नहीं था।" कुलभूषण भौंचक्के स्वर में बोला- "कि चिना पहलवान बल्ले का चाचा है।"

"नहीं-अगर इंस्पेक्टर चक्रधर इस बात से वाकिफ होता, तो सुबह ही वल्ले को चिना पहलवान की हत्या की इनफॉर्मेशन न दे दी जाती। दरअसल बल्ले को तो अपने चाचा की मौत की खबर तब मिली-जब इंस्पेक्टर चक्रधर तुझे गिरफ्तार करने किशनपुरा आया था।"

" ओह! "कुलभूषण भयभीत मुद्रा में बोला- "तब तो बल्ले बहुत भड़क रहा ठोगा।"

"भड़कता ही। आखिर उसके चाचा की हत्या हुई थी-वह इंस्पेक्टर चक्रधर के सामने हाँ खूब गरज-गरजकर कह रहा था कि अगर कुलभूषण ने उसके चाचा को मारा है-तो वह कुलभूषण को किसी भी हालत में जिंदा नहीं छोड़ेगा-उसे भी मार डालेगा।"

कुलभूषण के शरीर में झुरझुरी दौड़ गयी।

अब सारा माजरा उसकी समझ में आया।

अब वो, समझा कि किशनपुरा में घुसते ही बल्ले ने उसके ऊपर जानलेवा हमला क्यों किया था।

"बल्ले जब चिल्ला-चिल्लाकर मुझे जान से मार डलने के लिये कह रहा था।"

"कुलभूषण अपने शुष्क होठों पर जबान फिराता हुआ बोला- "तो इंस्पेमस्टर चक्रधर ने उससे कुछ नहीं कहा?"

"वह क्या कहता? आखिर चाचा मरा था बल्ले का-एक तरह से उसका यूं आवेश में

गरजना- -बरसना जायज ही था-कौन सदमें की स्थिति में इस तरह के शब्द नहीं बोलता।"

हूं"

"एक बात बोलूं भूषण?" शीतल ने अपलक उसे देखते हुए कहा।

"क्या?"

"जरूर बल्ले बहुत देर से केशनपुरा में तेरे आने का इंतजार कर रहा होगा-जो उसने यूं एकदम से तेरे ऊपर हमला कर दिया।" कुलभूषण के गले की धण्टी जोर सें उछली।'

"ल... लेकिन मुझे यह थोड़े ही मालूम था।" कुलभूषण सकपकाये स्वर में बोला- "कि चिना पहलवान, बल्ले का चाचा है। फिर चिना पहलवान ने भी तो मुझे कल रात. यह बात नहीं बतायी कि वो किशनपुरा में ही रहता है। अगर उसने मुझे यह बात बतायी होती-तो फिर क्या मैं पागल था, जो' उससे मूर्तियां हड़पने की सोचता। फिर यह बात भी बड़ी अजीबोगरीब है कि किशनपुरा में आने के बाद भी चिना पहलवान अपने घर नहीं गया बल्कि मेरे घर आया। वाकई-एक के बाद एक नये-नये मायाजाल जन्म ले रहे हैं।"

"इस बात के पीछे तो एक सॉलिड वजह हो सकती है-जो चिना पहलवान अपने घर नहीं गया।"

"क्या सॉलिड वजह हो सकती है?"

"मत भूलो-चिना पहलवान के पास सोने की छ: बेशकीमती,

थी'। संभव कि उन बहुमूल्य मूर्तियां को लेकर पहलवान-ने अपने भतीजे के पास जाना मुनासिब नै समझा हो-आखिर उसका भतीजा था तो एक गुण्डा हीं-मवाली ही। क्या पता चिना पहलवान को यह शक हो कि अगर वो मूर्तियां लेकर बल्ले के पास गया-तो बल्ले उन मूर्तियों को डकार जायेगा।"

शीतल काफी हद तक ठीक ठीक कह रही थी।

यह बात संभव थी।

"भू...भूषण-अब तू जितनी जल्दी हो सके, यहां से चला जा।" क...क्यों?"

"पागल आदमी!' शीतल दांत किटकिटाकर बोली- "तू नहीं जानता-तुझे गिरफ्तार करने यहां कभी भी इंस्पेक्टर चक्र धर आ सकता है-फिर बल्ले के सिर पर भी खून सवार.है-वो इतनी आसानी से खामोश बैठने वाला नहीं है। इस बार तो उसका वार खाली चला गया-लेकिन बहुत मुमकिन है कि उसका दूसरा वार खाली न जाये। कुलभूषण का पोर-पोर कांप उठा।

"इसलिए जितना जल्द से जल्द हो। "शीतल बोली- "यहां से चला जा।"

ल...लेकिन मैं इतनी रात को कहां जाऊं?"

"कहीं भी जा।" शीतल का स्वर जज्बाती हो उठा- "परन्तु अगर तुझे अपनी जान की थोड़ी-सी भी परवाह हैं-अपने हाथ-पैरों को. हिलते-डुलते देखना चाहता है-तो किशनपुरा में एक सैकिण्ड के लिये भी मत रुक-वरना तू खामखाह अपनी इस जिंदगी से हाथ धो बैठेगा।"

कुलभूषण के शरीर से पसीने की धारायें छूटने लगी।

कैसी विचित्र हालत हो गयी उसकी।

किशनपुरा के अलावा उसका कहीं कोई और ठिकाना भी तो नहीं था-जहा वो जाता।

"अब खड़े-खड़े सोच क्या रहा है?

कुलभूषण मरे-मरे कुदमों से दरवाजे की तरफ बढ़ा।

"और सुन!'

कुलभूषण के कदम ठिठक गये।"

"उस मूर्ति का क्या हुआ-जिसे तू बेचनेगया था?" शीतल जल्दी से उसके सामने पहुंचकर बोली।

'मूर्ति' के नाम कुलभूपण की गर्दन लटक गयी।

"बताता क्यों नहीं-क्या हुआ मूर्ति का? क्या वो बिक गयी?"

"न...नहीं।"

"फिर?"

कुल-भूपण ने फंसे- फंसे स्वर में पूरी घटना शीतल को बता दी। शीतल हैरानी से उसे देखती रह.गयी।

"कोई बात नहीं।" फिर शीतल ने उसकी हिम्मत बंधाई- "मूर्ति गयी तो ग थी जिंदगी बनी रहनी चाहिये। इंसान की जिंदगी सलामत रहे-तो हजार मर्तबा उरसके सामने धनवान बनने के मौके आते हैं।" कुलभूषण चुप रहा।

"अब तू जा-जल्दी जा। तेरा यहां ज्यादा ठहरना ठीक नहीं है।"

कुलभूषण पुन: मरे-मरे कदमों से दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

तभी फिर एक और बेहद हृदयविदारक घटना घटी।

कुलभूपण दरवाजे तक पहुंच पाता-उससे पहले ही इतनी जोर-जोर से दरवाजा भड़भड़ाया गया, मानो कोई उसे तोड़ ही डालेगा।

"कौन है?" शीतल चिल्लायी।

".दरवाजा खोलो।" बाहर से इंस्पेक्टर चक्रधर का कड़कड़ाती। स्वर उभरा- "पुलिस है।'

"प...पुलिस!" रूह कांप गयी कुलभूषण और शीतल की।

दोनों दहल उठे।

"ज...जरूर...जरूर.... बल्ले ने पुलिस को तुम्हारे बारे में इन्फॉर्मेशन दे दी है।" शीतल फुसफुसाई।

"दरवाजा खोला।" इस बार इंस्पेक्टर चक्रधर पहले से भी ज्यादा जोर से हलक फाड़कर चिल्लाया।

साथ हो उसने अपने कंधे की प्रचण्ड चोट भी दरवाजे पर मारी।

मै...भूषण!" शीतल का चेहरा सफेद झक्क पड़ झुका था-"भूषण-तू पिछली खिड़की से कूदकर भाग जा।"

"ल...लेकिन...।"

"बहस मत कर-जल्दी। भाग- जल्दी।"

कुलभूषण फौरन खिड़की की तरफ झपट पड़ा। खिड़की सड़क से चार, साढ़े चार फुट ऊपर थी।

वह एक क्षण के लिये हिंचकिचाया।

"दरवाजा खोलो।" तभी इंस्पेक्टर चक्रधर की खौफनाक आवाज पुन: उसके मस्तिष्क पर हथौडे की तरह पड़ी।

कुलभूषण तुरन्त, खिड़की से-नीचे कूद गया।

कूदते समय उसक कानों में दरवाजा भड़भड़ाये जाने की भी तेज आवाज पड़ी।

लेकिन अब कुलभूषण को मुड़कर कहां देखना था।

कुलभूषण ने बार भागना शुरू किया-तो वह रेस के घोड़े की तरह भागता ही चला गया।

कुलभूषण की जिंदगी में एक ऐसे खतरनाक सिलसिले की शुरुआत हो चुकी थी-जिसका अन्त खुद उसे भी मालूम नहीं था।

वह उस क्षण को कोसने लगा-जेब रातों-रात धनवान बनने की लालसा में नटराज

मूर्तियों हड़पने का ख्याल उसके मन में आया था। थोड़ी ही देर बाद वो डी० टी० सी० के बस स्टॉप शेल्टर के नीचे खड़ा था।

भागने के कारण उसकी सांस धोकनी की तरह चल रही थी। चेहरे पर हवाइयां थीं।

कुलभूषण ने सोचा-वह बच गया।

लेकिन नहीं-बचा तो वह तब भी नहीं।

उसकी किस्मत में तो पूरी खानाखराबी लिखी थी।

वह एक और बड़े 'नरक' में जाकर गिरा।

कुलभूषण की जेब में उस समय सिर्फ बीस रुपये थे-वह भी उसने दरीबा कलां जाने से पहले शीतल से उधार लिये थे। जल्द ही बस

स्टॉप पर एक बस आकर रुकी-वह उसी में चढ़ गया।

इतनी रात के समय भी बस में खूब भीड़भाड़ थी।

अगला सितम कुलभूषण के ऊपर यह टूटकर गिरा कि वह जब टिकिट लेने के उद्देश्य से कण्डक्टर के पास पहुंचा और उसने अपनी जेब में हाथ डाला-तो फौरन उर्सके होश उड़ गये।

जेब साफ थी।

"हे भगवान!" कुलभूषण के शरीर में थरथरी दौड़ गयी-"किसी को जेब भी मेरी ही काटनी थी?"

"मैं ही मिला था उसे?"

लेकिन जिस भगवानके सामने वो दुहाई दे रहा था-उसी भगवान ने उसके सर्वनाश की फुल योजना बना रखी थी।

और सर्वनाश न सही-परन्तु नाश तो कुलभूषण का तभी हो गया।

बस जैसे ही अपने अगले स्टॉप पर जाकर रुकी-तभी उसमें आगे-पीछे से दो टिकिट-चैकर दनदनाते हुए चढ़ गये।

परिणाम!

कुलभूषण को टिकिट न लेने के अपराध में बाकी की सारी रात हवालात के अन्दर गुजारनी पड़ी।

वह रात उसके ऊपर बड़ी भारी गुजरी।

दरअसल रात उसी के साथ-साथ हवालात में एक कत्ल का अपराधी भी बंद हुआ था।

वह बड़ी-बड़ी मूछों वाला विशालकाय जिस्म का मालिक था। उसे जब यह मालूम कि कुलभूषण टिकिट न लेने के अपराध में बंद हुआ है-तो उसने कुलभूषण पर रौब गाठना शुरू कर दिया-उसे धमकाना शुरू कर दिया।

जिसका रिजल्ट यह निकला कि थोड़ी ही देर बाद कुलभूषण बड़ी तन्मयता से उसके हाथ-पैर दबा रहा था।

आधी से ज्यादा रात उसकी हाथ-पैर दबाते हुए गुजरी।

सुबह दस बजे के करीब वहां दो कांस्टेबल आये और उन्हें हवालात में से निकालकर उसी थाने के इंस्पेक्टर के सामने पेश करने के लिये ले गये।

वहां एक और नई आफत कुलभूषण का इंतजार कर रही थी। उसकी दृष्टि इंस्पेक्टर चक्रधर पर पड़ी।

इंस्पेक्टर चक्रधर, स्थानीय थानाध्यक्ष के बिल्कुल पहलू में पड़ी एक कुर्सी पर बैठा था।

चक्रधर को देखते ही कुलभूषण के शरीर में यूं भीषण प्रकंपन हुआ-मानो उसने साक्षात यमराज के दर्शन कर लिये हों। निश्चय ही इंस्पेक्टर चक्रधर ने बड़ी-बड़ी पूछो-वाले उस कत्त के अपराधी को गिरफ्तार किया था और इसी सिलसिले में वो वहां मौजूद था।

तभी टेलीफोन की घण्टी बजी।

फोन स्थानीय थानाध्यक्ष ने रिसीव किया।

कुछ देर वो बड़े ध्यान से कोई आदेश सुनता रहा और हूं-हां करता रहा-फिर उसने रिसीवर वापस क्रेडल पर रख दिया।

"किसका फोन था।" इंस्पेक्टर चक्रधर ने मनपसन्द ब्राण्ड 'फोर स्क्वायर' की सिगरेट सुलगाते हुए पूछा।

"हैडक्वार्टर से फोन था।" थानाध्यक्ष ने बताया- "संग्रहालय से सोने की जो छ: नटराज मूर्तियां चोरी हुई थीं-आज उन्हीं के सिलसिले में दोपहर दो बजे हैडक्वार्टर के अदर एक मीटिंग है।"

नटराज मूर्तियों के नाम से कुलभूषण के कान खड़े हो गये।

"सुना है।" इंस्पेक्टर चक्रधर बोला-उन मूर्तियों की कीमत अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में दो करोड़ रुपये आकी गयी है।"

" ऑफकोर्स-यह सच है।" थानाध्यक्ष थोड़े व्यग्र स्वर मेंबोला-

"और सबसे बडी हैरतअंगेज बात यह है कि दिल्ली को विभिन्न

संग्रहालयों से ऐसी दुर्लभ (एण्टीक) वस्तुओं की लगभग आठ चोरियां हो चुकी हैं-लेकिन चोर आज तक नहीं पकड़ा जा सका।!"

"दिल्ली पुलिस कोशिश तो बहुत कर रही है।" सेक्टर-चक्रधर बोला।

"कोशिश-सिर्फ कोशिश।" स्थानीय थानाध्यक्ष ने कसैला-सा मुंह बनाया-"हमारी उन कोशिशों का आज तक कोई भी रिजल्ट नहीं निकल सका। क्या कर सके हैं हम आज तक-सिवाय यह पता लगाने के कि इन दुर्लभ वस्तुओं की चोरी के पीछे अवश्य ही कोई बड़ा अपराधी संगठन सक्रिय है।"

वह भौंचक्का-सा खड़ा रह गया।

द...दो करोड़!

बाप रे!

तो उन मूर्तियों की कीमत दो करोड़ रुपये है।

उन्हें संग्रहालय से चुराया गया है।

और...और अब दिल्ली पुलिस में उन्हीं मूर्तियों को लेकर इतनी हायतौबा मची है।

इतना हडकम्प मचा है।

कुलभूषण की हवा खुश्क हो गयी।

यही वो पल था-जब स्थानीय थानाध्यक्ष की बड़ी कड़कदार आवाज कुलभूषण के कानों में पड़ी- "इसने क्या किया है?"

फौरन कुलभूषण की विचार-वृंखला टूटी।

"साहब! " वहीं खड़ा एक हवलदार बोला- "यह बस में बिना टिकिट यात्रा कर रहा था-रात ही पकड़ा गया है।"

"क्यों...बे!" थानाध्यक्ष चिंघाड़ा-

"बिना टिकिट यात्रा क्यों कर रहा था?"

"प...पैसे नहीं थे साहब।" उल्लू के पट्ठे!" थानाध्यक्ष व्यालामुखी की तरह फटा- "पैसे नहीं थे-तो बस में ही क्यों चढ़ा था? पैदल चलते टांग टूटती हैं साले?"

कुलभूषण जबड़ा भींचे खड़ा रहा।

वो जानता था कि वहां जेब कटने वाली उसकी बात पर कोई यकीन नहीं करेगा।

अगर उसने वह बात अपनी जबान से बाहर निकाली-तो उसकी धुनाई के चांस बढ़ जाने थे।

वह घुटा हुआ मुजरिम साबित हो जाना था।

"नाम क्या है तेरा?" थानाध्यक्ष ने उसे कोई जैसी फटकार लगायी।

कुलभूषण ने एक सकपकायी-सी नजर चक्रधर पर डाली।

"उधर क्या देख रहा है हरामी!" थानाध्यक्ष पुन: आखें लाल-पीली करके चिंघाड़ा- "इधर देख-नाम क्या है तेरा?"

"क...कुलभूषण।"

"रहता कहां है?"

"यहीं-दिल्ली में।"

"दिल्ली में कहां रहता है मूर्ख।" थानाध्यक्ष गुर्राया- "मौहल्ले का भी कुछ नाम होगा?"

अब...अब कुलभूषण की जान हलक में आ फंसी।

उसे मालूम था कि इधर उसने किशनपुरा' का जान अपनी जबान से बाहर निकाला और उधर इंस्पेक्टर चक्रधर फौरन हरकत में आ जायेगा-एकदम पहचान लेगा उसे-और उसके बाद उसकी खैर नहीं थी।"

"अबे जवाब नहीं दिया।" थानाध्यक्ष ने दांत किटकिटाये- "कहां रहता है।?"

कुलभूषण चुप!

"साले-हरामी-बोलता नहीं है। कुत्ता समझता है मुझे-मुंह में जबान नहीं है तेरे।" आक्रोश में चिंघाड़से हुए थानाध्यक्ष कुर्सी से उछलकर खड़ा हुआ तथा फिर बिजली जैसी फुर्ती से अपरने रूल की तरफ झपटा।

कुलभूषण का पोर-पोर कांप उठा।

"मैं देखता हूं सूअर!" थानाध्यक्ष फिर दहाड़ा- "मैं देखता हूं कि तू कैसे नहीं बोलता-तेरा तो बाप भी बोलेगा। अगर आज मैंने मार-मारकर तेरे जिस्म से चमड़ी अलग न कर दी-तो मैं अपने बाप से पैदा नहीं।"

गुस्से में गरजते हुए थानाध्यक्ष ने झपटकर अपना रूल उठाया-फिर वह जैसे ही उसे मारने के लिए दौड़ा।

"न...नहीं।" कुलभूषण आतंकित होकर चिल्ला उठा- "नहीं।"

"क्या नहीं?"

" म...मारना नहीं-मारना नहीं साहब!" कुलभूषण खौफजदा आलम में बोला- "म...मैं बताता हूं-सब कुछ बताया हूं।"

"जल्दी बता।"

"क...किशनपरा-म में किशनपुरा में रहता हूं साहब।"

और-जिस बात का कुलभूषण को डर था, वही हुआ।

'किशनपुरा' का नाम लेते ही धमाका-सा हो गया।

किशनपुरा का नाम सुनकर थानाध्यक्ष तो न चौंका-परन्तु इंस्पेक्टर चक्रधर जरूर उछल पड़ा।

उसकी आखों में एकाएक अचम्भे जैसे भाव उभरे।

"त...तू किशनपुरा में रहता है.?"

कुलभूषण चुप!

"त...तू वही कुलभूषण है न।" इंस्पेक्टर चक्रधर झटके से कुर्सी छोड्कर उठा और फिर तेजी से उसकी तरफ बढ़ा- "व... 'वही कुलभूषण -जो ऑटो रिक्शा चलाता है?"

कुलभूषण की आंखों में अब खौफ की छाया डोल गयी।

उसने अपने हाथ-पैर ढीले छोड़ दिये-वह समझ चुका था कि तमाम कोशिशों के बावजूद जो आखिरकार चक्रधर के शिंकजे में फंस गयी है।

"जवाब दे।" चक्रधर ने उसका गिरेहबान पकड़कर बुरी तरह झंझोड़ा- "तू ऑटो रिक्शा ड़ाइवर कुलभूषण ही है न?"

"ह...ही।" कुलभूषण भारी मन से बोला- "हां मैं वही हूं।"

"और...और वह भी तू ही थो।" चक्रधर उत्तेजित हो उठा- "जो बुद्धवार की रात को ऑटो रिक्शा ड्राइवरों की हड़ताल के बावजूद रीगल सिनेमा के सामने खड़ा था?"

"व...वो मैं नहीं था।"

"झूठ बोलता है साले!" चक्रधर हिंसक लहजे में बोला-

"झूठ बोलता है। मैंने पूरे केस की खूब अच्छी तरह इंवेस्टीगेशन की है-मेरे पास ऐसी सरकमस्टेंशनल एविडेन्सिज (मौकाए वारदात की गवाहियां) और सबूत हैं-जो साफ-साफ तेरी वहां उपस्थिति साबित करते हैं।"

"आप चाहे कुछ भी कहें साहब!" कुलभूषण दृढ़ लहजे में बोला- ' 'मैं बुद्धवार की रात रीगल सिनेमा के सामने नहीं था-तो नहीं था। फिर पूरे शहर में ऑटो रिक्शा ड्राइवरों की

हड़ताल चल रही है-मुझे क्या अपनी आपात बुलानी थी साहब जो मैं यूनियन के नियम तोड़कर ऑटो रिक्शा के साथ रीगल के सामने जाकर खड़ा होता।"

"यानी तूने नियम नहीं तोड़ा?" चक्रधर ने उसे भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा।

" ब...बिल्कुल भी नहीं साहब।

"झूठ बोलता है हरामी!" चक्रधर ने उसका गिरेहबान पकड़कर और बुरी तरह झंझोड़ा-

"झूठ बोलता है।"

"म....मेरी क्या मजाल सहेब जो मै झूठ बोलूं। आप जैसे बड़े सरकारी अफसर से झूठ बोलूं।"

"यानी तू!" इंस्पेक्टर चक्रधर जहरीले नाग की तरह फुफकारा- "तू बुद्धवार की रात वाकई रीगल सिनेमा के सामंने मौजूद नहीं था?"

"बिल्कुल नहीं।"

"फिर तू रात शीतल के घर से भागा क्यों?" चक्रधर चीखता चला गया-अगर तू बेकसूर था साले।" चक्रधर ने उसे झंझोड़ा- "तूने कुछ नहीं किया था-तो रात मेरी आवाज सुनकर तेरी हवा खराब क्यों हुई?"

"क...कौन कहता है।" कुलभूषण ने पूरे ढीठपने से उत्तर दिया- 'कि मैं रात शीतल के घर से भागा था?"

"मैं कहता हूं।"

"ज...जरूर आपको कोई गलतफहमी हो गयी हैसाहब-म...मैं तो नहीं भागा।"

"झूठ बोलता है-फिर झूठ बोलता है।" आक्रोश में चिंघाड़ते हुए चक्रधर ने अपने लोहे जैसे हाथ का एक ऐसा प्रचण्ड झापड़ कुलभूषण के मुंह पर मारा कि वह हलक फाड़कर चिल्ला उठा। उसकी आखों के गिर्द रंग-बिरंगे तारे धूम गये।

"मुझे झूठा साबित करता है-मेरे से जबानदराजी करता है।" चक्रधर ने धड़ाधड़ दो झापड़ और उसके पर जड़े-फिर चीखता हुआ बोला- "रात बल्ले ने एकदम साफतौर पर मुझे रिपोर्ट दी हैं। कि उसनें तुझे अपनी आखों से शीतल के घर में घुसते देखा है-उसकी रिपोर्ट मिलते ही मैं फौरन भागा-भागा किशनपुरा पहुंचा।"

ब...बल्ले ने जरूर आपसे झूठ बोला होगा साहब!" कुलभूषण कंपकंपाये स्वर में बोला- 'व...वो समझता है कि मैंने उसके चाचा का खुन किया है-इसी वजह से वो मुझसे बदला लेना चाहता है।" इंस्पेक्टर चक्रधर फौरन हवलदार की तरफ घूमा।

रात टिकिट चैकर इसे किस वक्त यहां पकड़कर लाये थे?"

हवलदार सकपकाया।

"जवाब दो-क्या बज रहा होगा उस समय?"

"ए...एकदम कनफर्म तो मुझे नहीं मालूम साहब!"

"फिर भी-अंदाजन?"

"य...यही कोई साढ़े बारह और एक के बीच का समय रहा होगा।"

"सुना-सुना।" चक्रधर फिरकनी की तरह वापस, कुलभूषण की तरफ घुम गया- "सुना-हवलदार क्या कह रहा है।"

"क्या कह रहा है?"

"उल्लू के पट्ठे!" चक्रधर तिलमिलाया- "यह कहता है कि टिकिट चैकर तुझे साढ़े बारह और एक बजे के बीच में यहां लेकर आये-यानी उन्होंनें साढ़े बारह बजे के करीब तुझे बस के अंदर पकड़ा-और बारह बजे के आसपास मैंने बल्ले की इन्क्रॉर्मेशन पर शीतल के घर रेड डाली थी। इन सभी घटनाओं की टाइमिंग से यह बात पूरी तरह साबित होती है कि तूने शीतल के घर से फरार होकर सीधे बस पकड़ी और तभी तू बिना टिकिट यात्रा करने के अपराध में गिरफ्तार भी हो गया।"

"मैं पुलिस से बचकर नहीं भागा।"

"अगर तू पुलिस से बचकर नहीं भागा।" इंस्पेक्टर चक्रधर दांत किटकिटाता हुआ बोला- "तो तूने बस क्यों पकड़ी-इतनी रात त्हो कहां जा रहा था तू?"

"म. मैंने बस ऐसी ही पकड़ ली।"

"ऐसे ही!"

"द... दरअसल मेरा थोड़ा सैर-सपाटा करने को दिल चाहा था।" इतनी रात गये!" चक्रधर ने उसे भस्म कर देने वाली नजरों से धूरा- "इतनी रात गये तेरा सैर-सपाटा करने को दिल चाहा था साले-जेब में एक पैसा नहीं था-और तेरा सैर-सपाटा करने को दिल चाहा था।"

कुलभूषण सकपकाकर दायें-बायें बगलें झांकने लगा।

उसकी खामोशी ने 'चक्रधर के गुस्से पर घी डालने जैसा काम किया-चक्रधर ने आवेश मे फुंफकारते हुए कुलभूषण के शरीर पर लात-घूंसे बरसा डाले।

हाहाकार कर उठा कुलभूषण।

उसके करुणादाई रूदन से कक्ष की दीवारें दहल गयीं।

परन्तु चक्रधर ने उस पर तरस नहीं खाया-उसका कलेजा नहीं कांपा।

तीन-चार मिनट में ही उसने कुलभूषण की वो दुर्गति कर डाली-जो शायद ही उसकी जीवन में पहले कभी हुई हो।

कपड़े शरीर पर तार-तार होकर झूलने लगे।

कुलभूषण अब जमीन पर चारों खाने चित्त पड़ा जोर-जोर से हिचकियां लेकर रो रहा था।

"अभी देखता हूं साले।" चक्रधर ने भड़ाक से उसके सीने पर एक लात जड़ी और फुफकारा- "अभी देखता हूं कि तू कैसे कबूल नहीं करता कि उस रात रीगल सिनेमा के सामने तू नहीं था।"

फिर चक्रधर टेलीफोन की तरफ बढ़ गया।

स्थानीय थानाध्यक्ष जो अभी तक वस्तुस्थिति से अंजान था-उसने जिज्ञासावश पूछा-

"आखिर बात क्या है चक्रधर-इसने क्या किया है?"

"इसने!" इंस्पेक्टर चक्रधर ने हिचकियों में रोते कुलभूषण की तरफ भाले की तरह उंगली उठाई- "इसने चिना पहलवान की हत्या की है।

"च...चिना पहलवान की हत्या!"

वहां मौजूद प्रत्येक व्यक्ति के मुंह सं चिना पहलवान के नाम सिसकारी टी।

खासतौर पर बड़ी-बड़ी मूछो वाला वह हत्यारा तो सन्त ही खड़ा रह गया-जिसने कुलभूषण से सारी रात टांगें दबवाई थीं।

सब दंग!

जबकि कुलभूषण अभी भी जोर-जोर से हिचकियां लेकर रो रहा था।

इंस्पेक्टर चक्रधर ने कहीं फोन किया।

फोन करने के लगभग पंद्रह मिनट बाद जिस व्यक्ति ने पुलिस स्टेशन में कदम रखा-उसे देखते ही कुलभूषण के होश फना हो गये। वह फ्लाइंग स्क्वायड के उस दस्ते का सब-इंस्पेक्टर था- बुद्धवार की रात कुलभूषण की ऑटो रिक्शा को आई० टी० ओ० के ओवर ब्रिज से थोड़ा 'आगे स्पीडिंग के अपराध में रोका था। वहां मौजूद हवलदार और बड़ी-बड़ी मुछों वाला हत्यारा-वह सभी अब कुलभूषण से दहशतजदां नजर आ रहे थे। जैसा कि होनाथा-

फ्लाइंग स्क्वायड दस्ते के सब-इंस्पेक्टर ने आते ही कुलभूषण को पहचान लिया। उसने कहा कि बुद्धवार की रात उसने जिस ऑटो रिक्शा को मण्डी हाउस जाने वाले मार्ग पर रोका-उसका चालक वही था।

उसने यह भी कहा कि इसके ऑटो रिक्शा में एक बड़े मोटे पेट वाली लड़की थी-जिसके फौरन बच्चा होने वाला था।

"तुम उस लड़की को पहचान सकते हो?"

चक्रधर ने सब-इंस्पेक्टर से पूछा।

सब-इंस्पेक्टर थोड़ा हिचकिचाया।

"जवाब दो।"

"स...सॉरी सर!" उस इंस्पेक्टर की आवाज निराशा में डूबी थी- "दर असल रात गहरी थी-फिर सड़क पर बिल्कुल करीब कोई लैम्प भी न जल रहा था-इसलिए मैं लड़की का चेहरा बिल्कुल साफतौर पर न देख सका। मैंने- तो इसकी ऑटो रिक्शा का नम्बर भी इसलिये नोट कर लिया था सर-क्योंकि सभी ऑटो रिक्शा ड्राइवरों की हड़ताल चल रही थी। अगले दिन मुझे जब यह मालूम हुआ कि कोई चिना पहलवान को ऑटो रिक्शा में लेकर फरार हुआ है और चिना पहलवान की लाश इण्डिया गेट पर पड़ी पायी गयी है-तो मैंने इसकी ऑटो रिक्शा का नम्बर आपको सौंपना ज्यादा मुनासिब समझा।"

"ल...लेकिन इससे यह कहां साबित होता है।" पूरी बात सुनकर कुलभूषण के अंदर हौसला जाग गया- "कि चिना पहलवान' को मैं ही रीगल सिनेमा से लेकर भागा था। दिल्ली शहर में हजारों की तादाद में ऑटो रिक्शा हैं साहब-हो सकता, है कि जो चिना पहलवान को रीगल सिनेमा के सामने से लेकर फरार हुआ, वह कोई और ऑटो रिक्शा चालक हो। इस घटना से मेरा अपराध तो साबित नहीं होता।"

"होता है-होता है तेरा अपराध भी साबित।" इंस्पेक्टर चक्रधर गजब के आत्मविश्वास के साथ बोला- "तेरा चिना पहलवान की हत्या में इसलिये अपराध साबित होता है कुलभूषण-क्योंकि तूने बुद्धवार की रात इन सब-इंस्पेक्टर महोदय को जिस लड़की के बारे में यह बताया था कि यह पेट से है-वह लड़की वास्तव में पेट से ही नहीं थी।"

कुलभूषण चौंका।

"य...यह बात आप इतने यकीनके साथ कैसे कह सकते हो?" क्योंकि वह एक बेहद पतली-दुबली लड़की थी।" चक्रधर धमाके पर धमाके करता हुआ बोला-"और उस समय वह एक लाश के ऊपर लेटी थी.।"

"ल...लाश के ऊपर!" कुलभूषण के मुंह से चीख निकली। 1

"हां!" चक्रधर बड़े सहज भाव से बोला- "लाश के ऊपर।"

"क...किसकी लाश के ऊपर?"

"चिना पहलवान की लाश और किसकी लाश।"

कुलभूषण के दिलो-दिमाग पर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी। उसके नेत्र हैरत सं फैल गये।

"य... 'यह आपको कैसे मालूम कि वो लड़की चिना पहलवान की लाश के ऊपर लेटी थी

यह शब्द कहते ही कुलभूषण ने अपने होंठ सी लिये।

"उससे गलती हो चुकी थी-भयंकर गलती।

यह सवाल पूछकर उसने लगभग कबूल कर लिया था कि वो अपराधी है।

जबकि मुस्कराया चक्रधर-बड़े ही खतरनाक ढंग से मुस्कराया। "

मैं तुझे, बताता हूं।" चक्रधर बोला- "कि मुझे यह बात कैसे मालूम हुई-वो लड़की एक लाश के ऊपर लेटी है। दरअसल अगर वह लड़की सचमुच पेट से होती और उसकी हालत वाकई उतनी ही सीरियस होती-जितनी तू बयान कर रहा था-तो तूने उस लड़की को फौरन किसी हॉस्पिटल के मैटरनिटी बार्ड में जरूर भर्ती कराया? होता-बोल, कराया होता या नहीं?"

कुलभूषण चुप!

उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा।

"यही बात तूने बुद्धवार की रात इन सब-इंस्पेक्टर महोदय के सामने भी कही थी।"

चक्रधर आगे बोला- "तूने बेहद बौखलाये हुए अंदाज में कहा था कि लड़की की हालत काफी सीरियस है-दाई ने कहा है कि अगर लड़की की जिंदगी चाहते हो, तो इसे फौरन' किसी बड़े हॉस्पिटल ले जाओ। लेकिन...।"

"ल...लेकिन क्या?"

"तू उस लड़की को किसी हॉस्पिटल में लेकर नहीं गया।" चक्रधर ने झटके के साथ कहा।

"क्या सबूत है आप्के पास।" कुलभूषण बोला-"कि मैं उस लड़की को किसी हॉस्पिटल में लेकर नहीं गया?"

"सबूत-सबूत मांगता है, मुझसे।" इंस्पेक्टर, चक्रधर गर्रा उठा-उसकी आखों में खून उतर आया- "साले-सब-इंस्पेक्टर सें जैसे ही तेरी ऑटो रिक्शा का नम्बर मिला तो फौरन तमाम हास्पिटलों की चैकिंग की थी-वहां के मेटरनिटी वार्डो की भर्ती रजिस्ट्री चैक की थी। और मालूम मेरी उस सारी भागा-दौड़ी का क्या रिजल्ट निकला।"

"क...क्या रिजल्ट निकला?"

"मुझे मालूम हुआ।" चक्रधर दांत पीसता हुआ बोला- "कि बुद्धवार की रात दिल्ली शहर के किसी भी हॉस्पिटल के किसी भी मेटरनिटी वार्ड में उस समय के आसपास डिलीवरी का कैसा भी कोई केस एडमिट नहीं हुआ था।"

कुलभूपण सन्न रह गया।

एकदम सन्न।

वह हैरत से औखें फाड़-फाड़कर इंस्पेक्टर चक्रधर को इस तरह देखने लगा-मानों साक्षात् कुतुबमीनार उसके सामने आकर खड़ी हो गयी हो।

उसने तो कल्पना भी नहीं की थी कि पुलिस इतने मामूली से प्यॉइंट को लेकर, इतनी जल्दी उस तक पहुंच जायेगी।

बहरहाल चक्रधर ने उसके तमाम सपनों को तोड़ दिया था।

चक्रधर ने साबित कर दिया था-कानून के हाथ वाकई बहुत लम्बे होते हैं।

जिनसे कोई नहीं बच सकता।

"अगर तू अब भी: यही कहता है।" इंस्पेक्टर चक्रधर बड़े सब्र के साथ बोला- "कि तेरी ऑटो रिक्शा की पिछली सीट पर चिना की लाश नहीं बल्कि गर्भ धारण किये हुए कोई लड़की ही थी- तू कह सकता है-मुझे कोई ऐतराज नहीं। लेकिन फिर तूमुझे उस हॉस्पिटल का नाम बता-जिसमें तूने गर्भधारण किये हुए उस लड़की को भर्ती कराया था?"

कुलभूषण चुप!"

"इसके अलावा मुझे उस लड़की का भी नाम बता।" चक्रधर बोला-जो गर्भ से थी। उस लड़की का एड्रेस भी बता-ताकि पुलिस उसके घर जाकर उससे पूछताछ कर सके और अपना यह शक दूर

कर सके कि बुद्धवार की रात तेरी ऑटो रिक्शा में गर्भ धारण किये हुए कोई भी लड़की थी भी या नहीं थी।"

कुलभूषण फिर चुप-फिर खामोश!

वह सिर्फ दहशतजदां आखों से बार-बार सबके चेहरे देख रहा था।

वो जानता था-वो एक बड़ी मुश्किल में फंस चुका है।

"इन सब बातों के अलावा इसलिये भी तेरा अपराध साबित होता है।" इस बार फ्ताइंग फ्लाइंग स्क्वायड का सब-इंस्पेक्टर बोला- "क्योंकि बुद्धवार की रात फ्लाइंग स्क्वायड दस्तों नेधूरी दिल्ली में सिर्फ दो बार ऑटो रिक्शा देखी। पहली बार ऑटो रिक्शा रीगल सिनेमा 'के सामने देखी गयी-जबकि दूसरी बार मैंने मण्डी हाउस के करीब देखी। चूंकि रीगल सिनेमा के पास गश्तीदल के गार्डो ने चिना पहलवान को अपने पैरों से दौड़कर ऑटो रिक्शा में सवार होते देखा था-तो इससे यह बात भी खुद-व-खुद ही साबित हो जाती है कि चिना पहलवान ऑटो रिक्शा के बैठने के बाद मरा अरि ऑटो रिक्शा चालक ने ही उसे इण्डिया गेट पर अमर जवान ज्योति के पास फेंका। इसके अलावा एक सबसे महत्वपूर्ण बात ये है। सब-इंस्पेक्टर ने अपने शब्दों पर पूरी तरह जोर दिया- "कि इण्डिया गेट के आसपास गश्त लगाते फ्लाइंग स्क्वायड के और दस्तों ने भी तेरे अलावा किसी दूसरी ऑटो रिक्शा को उस इलाके में नहीं देखा। अगर वो किसी दूसरी ऑटो रिक्शा को देखते-तो हड़ताल होने की वजह से उनका खास ध्यान जरूर उस तरफ जाता। तुझे यह बात सुनकर हैरानी होगी कुलभूषण-इण्डिया गेट के आसपास गश्त लगाते फ्लाइंग स्क्वायड के अभी ऐसे दो दस्ते और हैं-जिन्होंने बुद्धवार की रात तेरी ऑटो रिक्शा उस इलाके में देखी और हड़ताल होने की वजह से उन्होंने तेरी ऑटो रिक्शा का नम्बर भी नोट किया।"

कुलभूषण के मस्तिष्क में अनार-पटाखे, छूटने लगे।

उसे अपना दिमाग अंतरिक्ष में चक्कर काटता महसूस हुआ।

" ल...लेकिन यह जरूरी तो नहीं।" कुलभूषण लगभग हथियार डालता हुआ बोला- "कि चिना पहलवान की हत्या भी उसी ऑटो रिक्शा चालक ने की हो-जो ऑटो रिक्शा में चिना पहलवान को रीगल के पास से लेकर भागा था?"

"बिल्कुल जरूरी है।" चक्रधर दृढ़ लहजे में बोला- "बिल्कुल उसी ऑटो रिक्शा चालक ने ही चिना पहलवान की हत्या की है।"

"क...क्यों जरूरी है?"

"क्योंकि कोई और हत्या कर ही नहीं सकता।" चक्रधर पहले की तरह ही दृढ़ लहजे में बोला- "कोई और प्राइम सस्पैक्ट है ही नहीं। जब चिना पहलवान सही-सलामत अपने पैरों पर भागता हुआ ऑटो रिक्शा में बैठा-तो उसकी हत्या ऑटो रिक्शा चालक के अलावा और कौन कर सकता है। फिर उसी ऑटो रिक्शा चालक ने ही चिना पहलवान की लाश को ठिकाने भी लगाया-यानी दोनों जगह एक ही व्यक्ति मौजूद था-चिना पहलवान की सलामती पर भी और उसके इस दुनिया से कूंचकर जाने के बाद भी। यह सारी हरकत एक ऑटो रिक्शा ड्राइवर की है और वह ऑटो रिक्शा ड़ाइवर तू है-सिर्फ तू।"

"न...नहीं-मैं नहीं।"

"तू झूठ बोल रहा है।"

इंस्पेक्टर चक्रधर ने एकाएक उसे इतनी जोर से मुड़का कि कुलभूषण की सारी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी।

"म...मैं निर्दोष हूं।" फिर भी कुलभूषण ने आर्तनाद किया- "म...मैं बेकसूर हू साहब!"

"तू बेकसूर नहीं-तू निर्दोष भी नहीं।" चक्रधर उसे कहर बरपा करती आखों से घूरता हुआ बोला- "सच्चाई ये है कि तू एक बेहद चालाक अपराधी है-तू आदि मुजरिम है-मुझे तो यही सोचकर हैरानी हो रही है कि तेरे जैसा दुर्दान्त अपराधी आज तक दिल्ली पुलिस की नजरों से बचा कैसे रहा-तेरा नाम तो अपराधियों की लिस्ट में सबसे ऊपर होना चाहिये था।"

"अ...आप मेरे बारे में बहुत खतरनाक अंदाजा लगा रहे हैं साहब-म...मैं ऐसा नहीं।" कुलभूषण थर-थर कांपते स्वर में बोला- "अच्छा-आप मेरे एक सवाल का जवाब दो।"

"पूछ-वह भी पूछ।"

"रीगल सिनेमा के पास वह दो गोलियां किसने चलायी थीं-जिनकी आवाज सुनकर आपके मुताबिक गश्तीदल के दोनों पुलिसकर्मी गली में दौड़े थे?"

"खुद चिना पहलवान ने वो गोलियां चलायी थीं।" चक्रधर ने एकदम से जवाब दिया।

"च...चिना पहलवान ने।" कुलभूषण के दिमाग में एक और बम फटा- "प... पुलिसकर्मियों ने क्या चिना पहलवान को गोलियां चलाते देखा था?"

"नहीं देखा।"

"फ...फिर आप कैसे कह सकते हैं कि वह गोलियां चिना पहलवान ने चलायी थीं? यह भी तो हो सकता है साहब-किसी ने वह गोलियां चिना पहलवान के ऊपर चलायी हों?"

"नहीं-ऐसा नहीं हो सकता।" चक्रधर ने पूरे यकीन के साथ इंकार में गर्दन हिलाई।

"क्यों नहीं हो सकता?" कुलभूषण की आखों में हैरानी के भाव तैरे- "क्या मुश्किल है?"

"क्योंकि अगर किसी ने वह गोलियां चिना पहलवान पर चलाई होतीं-तो चिना पहलवान के ज़िस्म पर खून के धब्बे तो होते। ऐसे कुछ निशान तो होते-जिनसे साबित होता कि उसे गोलियां लगी हैं। जबकि रीगल सिनेमा के सामने गश्ती दल के जिन पुलिसकर्मियों ने चिना पहलवान के शरीर पर खून का कैसा भी कोई धब्बा नहीं था।" कुलभूषण सन्त-सा खड़ा रह गया।

उसे फौरन याद आया कि चिना पहलवान जब उसकी ऑटो रिक्शा में आकर बैठा था-तो खून के धब्बे उसे भी नहीं दिखाई दिये-थे-क्योंकि चिना पहलवान ने ऊपर से नीले रंग की बरसाती जो पहन रखी थी।

"ज...जरूर चिना पहलवान ने वो बरसाती गोलियां लगने के बाद भागते-भागते पहनी होगी। कुलभूषण को अपने हाथ-पैरों की जान निकलती महसूस हुई। उसे लगा जैसे वह किसी भयानक षड्यन्त्र का शिकार होता जा रहा है।

"ल...लेकिन चिना पहलवान ने रीगल सिनेमा के पास वह दो गोलियां क्यों चलायी थीं?"

"जरूर उसने किसी से काले रंग का वह ब्रीफकेस छीनने के लिये उस पर गोलियां चलायी होंगी-जिसे लेकर वह भागते देखा गया।" चक्रधर ने कल्पना की एक नई उड़ान बड़े खूबसूरत ढंग से पेश की। "क्या किसी ने छीना-झपटी की ऐसी कोई रिपोर्ट पुलिस स्टेशन में दर्ज करायी?"

"नहीं।"

"अगर किसी के साथ ऐसा हादसा हुआ था।" कुलभूषण बोला- "तो उसने रिपोर्ट दर्ज क्यों नहीं करायी?"

"मूर्ख आदमी-तुम क्या समझते हो कि गैंगस्टर या मवाली किस्म के लोग ऐसी वारदातों की रिपोर्ट पुलिस स्टेशन में दर्ज कराते हैं?"

"य...यानी आपका मतलब!" कुलभूषण चौंककर बोला- ' 'जिससे चिना पहलवान ने वह भी चिना पहलवान की तरह ही, कोई बड़ा बदमाश था? हिस्ट्रीशीटर मवाली था?"

"ऐग्जेक्टली-वह भी कोई मवाली ही था।" चक्रधेर बोला- "और उस ब्रीफकेस को हथियाने के लिए तुम चिना पहलवान के मददगार के तौर पर उसके साथ थे। चिना पहलवान को ब्रीफकेस छीनना था और तुम्हें चिना पहलवान को ऑटो रिक्शा में बिठाकर घटनास्थल से फ़रार होना था। परन्तु तुमने ऐन मौके पर चिना पहलवान के साथ विश्वासघात कर दिया।"

"व...विश्वासघात वह क्यों?"

"दरअसल चिना पहलवान जो ब्रीफकेस किसी से हथियाकर भागा था-उसमें जरूर कोई बहुत मूल्यवान वस्तु थी।" इंस्पेक्टर चक्रधर बोला- "उस मूल्यवान वस्तु को देखकर तुम्हारी नीयत खराब हो गयी और इसीलिये तुमने उस ब्रीफकेस को हड़पने की खातिर सबसे पहले चिना पहलवान की चुपचाप हत्या कर दी तथा फिर उसकी लाश भी इण्डिया गेट की सुनसान झाड़ियों में डाल दी। यही वजह है कि वो ब्रीफकेस झाड़ियों में चिना पहलवान की लाश के नजदीक न पाया गया और उस ब्रीफकेस का वहां न पाया जाना ही इस बात की शहादत देता है कि उसके अदर जरूर कोई खास वस्तु थी।"

कुलभूषण के दिमाग में और तेज धमाके होने लगे।

जबकि उसके बाद इंस्पेक्टर चक्रधर ने कुलभूषण पर सीधे-सीधे चिना पहलवान की हत्या का इलजाम लगाते हुए जो मनगढंत कहानी सुनायी, उसने कुलभूषण के रहे-सहे होश भी फना कर दिये।

इंस्पेक्टर चक्रधर एक-एक शब्दचबाते हुए बोला-"कुलभूषण-तू बुद्धवार की रात को रीगल सिनेमा के सामने उपस्थित ही इसलिये हुआ था-ताकि तू चिना पहलवान को घटनास्थल से भगाकर ले जा सके-तू चिना पहलवान का पक्का हिमायती था-उसका दोस्त था। इतना ही नहीं-तुम दोनों के बीच पहले से ही सांठ-गांठ थी-तुम दोनों को यह बात एडवांस में ही मालूम थी कि रात के ग्यारह और बारह बजे के बीच में कोई अपराधी मोटा माल लेकर रीगल सिनेमा के पास गुजरागा-इसीलिये तुम दोनों वहां शिंकारी कुत्ते की तरह घात लगाये बाठे थे। तुम दीनों की योजना उस अपराधी को लूटने की, थी-औरजैसा कि हालातों से स्पष्ट है, तुम अपनी योजना में कामयाब हुए। यह बात अलग है कि ब्रीफकेस में मोटा माल देखकर तुम्हारी भी नीयत खराब हो गयी और तुमने उस मोटे माल को अकेले ही हड़प करने की खातिर अपने दोस्त चिना पहलवान को भी ठिकाने से लगा दिया।"

"मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।" कुलभूषण चिल्लाया- ' 'और न ही मैं रीगल सिनेमा के सामने इसलिये मौजूद था-ताकि मैं चिना पहलवान की मदद कर सकूं।"

"यानी तेरा चिना पहलवान के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था?"

"बिल्कुल भी कोई सम्बन्ध नहीं था।" कुलभूषण गुर्राकर बोला- "मैं किशनपुरा में जरूर रहता हूं-लेकिन मैंने पहले कभी चिना पहलवान की शक्ल तक नहीं देखी थी।"

"ठीक है-मैं मानता हूं तेरी बात कि तूने पहले कभी चिना पहलवान की शक्ल तक नहीं देखी थी।" इंस्पेक्टर चक्रधर आवेश में नहले पर दहला मारता हुआ बोला- "तो फिर यह बता मेरे भाई-तू आधी रात के समय रीगल सिनेमा के सामने खड़ा क्या कर रहा था? जब ऑटो रिक्शा ड्राइवरों की हड़ताल चल रही थी-तब तू इतनी रात को वहां क्या मरने गया था? कोई तो काम होगा तुझे वहां?

कुलभूषण फिर चुप!

फिरं खामोश!

वो जानता था कि उसकी उधार चुकाने वाली बात पर 'चक्रधर' जैसा धुरंधर इंस्पेक्टर किसी हालत में यकीन नहीं करेगा।

"और तूने अपनी ऑटो रिक्शा रीगल सिनेमा के सामने अंधेरे में क्यों खड़ी कर रखी थी? "चक्रधर कर्कश लहजे में बोला- "उसके पीछे भी तो कोई वजह होगी? क्या उसकी इकलौती वजह यह नहीं थी कि तू चिना पहलवान के वहां पहुंचने से पहले गश्तीदल की आंखों से छिपना चाहता था? क्या इसीलिये तूने अपनी ऑटो रिक्शा की पिछली नम्बर प्लेट पर मिट्टी भी नहीं पोत रखी थी-ताकि भागते समय गश्तीदल के पुलिसकर्मी तेरी ऑटो रिक्शा का नम्बर भी नोट न कर सकें? क्या-यह सारी बातें झूठी हैं?" चक्रधर आदोलित लहजे में बोला- "क्या इतनी ढेर सारी बातें झूठी हो सकती हैं कुलभूषण? और अगर यह सारी बातें झूठी हैं-तो फिर यह बता कि तेरी ऑटो रिक्शा की नम्बर प्लेट पर मिट्टी किसने पोती?"

कुलभूषण के दिमाग में आधी चलने लगी।

साय-साय आधी!

उफ

कितनी बुरी तरह फंस चुका था वह।

अब कुलभूषण इंस्पेक्टर चक्रधर को कैसे समझाता कि ऑटो रिक्शा रिक्शा की नम्बर फ्लेट पर मिट्टी उसने खुद नहीं पोती थी वह ता इतफाक से ऑटो रिक्शा का खेला पहिया गारा भर गड्ढे में जा गिरा और जरूर इसीलिये खुद-ब-खुद नम्बर प्लेट पर मिट्टी पुत गयी। फिर रीगल सिनेमा के सामने उसने अपनी ऑटो रिक्शा अंधेरे में भी इसलिये खड़ी कर रखी थी-तार्कि यूनियन की हड़ताल चलने की वजह से गश्तीदल के पुलिसकर्मी उसे वहां से भगा न दें।

फिर यह बात भी कुलभूषण से बेहतर और किसको मालूम हो सकती थी कि जिन दो गोलियों की आवाज सुनकर गश्तीदल के पुलिसकर्मी गली में दोड़ थे-वह गोलियां चिना पहलवान ने नहीं चलायी थीं बल्कि वह गोलियां तो किसी ने चिना पहलवान पर चलायी थीं-जो बांद में उसकी का कारण बनीं। अब यह तो भगवान जाने किए चिना पहलवान ने गोलियां लगने के बावजूद भागते-भागते इतनी जल्दी प्लास्टिक की बरसाती कैसे पहन ली?

कुल-पूषण को लग रहा था कि अगर उसने इंस्पेक्टर चक्रधर को सारी हकीकत बता भी दी-तब भी वह उसकी बात पर विश्वास नहीं करेगा।

तब भी वो यही समझेगा कि वह कोई नया 'षड्यन्त्र' रच रहा है।

फिर कुलभूषण के पास अपनी बात को साबित करने के लिये सबूत भी तो नहीं थे-जबकि चक्रधर के पास ऐसे ढेरों तर्क और सबूत थे-जिसके बलबूते पर वह अपनी मनगढ़ंत कहानी को भी अदालत में सच साबित कर सकता था।

कुलभूषण अपनी बेबसी पर झल्ला उठा।

कल रात तक जो बातें उसे अपनी ताकत नजर आ रही थीं-वही अब उसकी कमजोरी बन चुकी थीं।

"इस पूरे ड्रमें में तुझसे गलती हुई कुलभूषण-और बड़ी भारी गलती हुई।" इंस्पेक्टर चक्रधर ने अपनी मनगढ़त कहानी का उसे आखिरी हिस्सा सुनाया- "दरअसल जब तू चिना पहलवान की लाश को किसी लड़की के सहयोग से ठिकाने लगाने जा रहा था-तभी फ्लाइंग स्क्वायड दस्ते द्वारा रोक लिये जाने पर तूने लड़की के बच्चा

"होने वाला जो ड्रामा वास्तव तेरी बर्बादी का कारण बना। उसी ड्रामें की वजह से तू इस वक्त गिरफ्तार है। तुझे अब खुद भी लग रहा होगा कि वह नाटक सचमुच तुझे काफी महगा पड़ा। न तू डिलीवरी होने वाली बात बोलता-न मैं मेटरनिटी वार्डो कीं भर्ती रजिस्ट्री चैक करता-और न तू इस वक्त अपराधी बना हम सबके सम्मुख खड़ा होता।"

कुलभूषण की इच्छा हुई कि वो दहाई मार-मारकर रोने लगे। कितनी खतरनाक आफत उसके गले पड़ चुकी थी।

"अब अगर तू अपनी खैरियत चाहता है।" इंस्पेक्टर चक्रधर ने उसे साफ-साफ धमकी दी- "आगर तू चाहता है कि तेरे ऊपर थर्ड डिग्री का प्रयोग न हों-तेरी धुनाई न हो-तो तू मुझे साफ-साफ यह बता कि काले रंग के उस ब्रीफकेस के अंदर क्या था-जिसे चिना पहलवान रीगल सिनेमा के सामने से लेकर भागा? वह लड़की कौन थी-जिसने चिना पहलवान की लाश ठिकाने तगाने में तुझे सहयोग दिया? और वह व्यक्ति कौन था-जिसमे चिना पहलवान ने काले रंग का के ब्रीफकेस छीना?"

"मैं कुछ. नहीं जानता।" कुलभूषण पागलों की तरह चिल्ला उठा- "मुझे कुछ नहीं मालूम।"

"तुझे सचमुच कुछ नहीं मालूम?" चक्रधर ने उसे एकाएक भस्म कर देने वाली नजर, से घूरा।

"न..."नहीं-मुझे नहीं मालूम।"

इंस्पेक्टर चक्रधर ने फीरन लपककर अपनी फौलाद जैसी मुट्ठी में उसके सिर के बाल कसकर जकड़ लिये-फिरउन्हेंइतना तेज झटका दिया के कुलभूषण् भैंस की तरह डकरा उठा-उसका मुंह झटके से छत की तरफ उठ गया।

"एक बार!" चक्रधर अब साक्षात् दरिन्दा नजर आने लगा था- "एक बार फिर बोल कि तुझे कुछ नहीं मालूम।"

"म...मेरी बात पर यकीन करो।" कुलभूषण दयनीय अवस्था में गिड़गिड़ा उठा-"म...मैं सचमुच कुछ नहीं जानता-कुछ नहीं।"

चक्रधर का गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुंचा।

उसने गुस्से में चिंघाड़ते हुए कुलभूषण पर लात-घूंसों की बारिश कर डाली।

वह उसे रूई की तरह धुनने लगा।

कुलभूषण की चीखों से पूरा पुलिस-कशान थर्रा उठा-उसकी हृदयविदारक और करुणादायी चीखों ने वहां मौजूद प्रत्येक व्यक्ति के दिल-दिमाग को झंझोड़ डाला।

परन्तु चक्रधर रुका नहीं-यह बेहद जुनूनी अंदाज में उसकी धुनाई करता रहा।

वह. सचमुच दरिन्दा बन चुका था।

खूनी दरिन्दा!

तभी. स्टेशन में बल्ले के कदम पड़े।

बल्ले आते ही घटनाक्रम ने फिर एक बड़ा अजीबोगरीब मोड़ लिया।

बल्ले एकदम काला मुर्राट व्यक्ति था-उसके जिस्म की त्वचा ऐसी थी, मानो किसी ने उसके स्याही मल दी हो। उसकी आखें लाल सुर्ख थीं-जो उसके काले पुर्राट चेहरे पर यूं चमकती थीं...मानों दो जलते अंगारे! अगर रात के अंधेरे में कोई बच्चा बल्ले को देख ले-तो इसमें कोई शक नहीं कि वो उसे भूत समझकर चिल्ला उठे।

शक्ल-सूरत में इतना खतरनाक था बल्ले!

उसे न जाने कैसे यह माइ हो गया था कि कुलभूषण को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया हैं-थाने आते ही उसने एक बड़ी घोषणा की।

"इंस्पेक्टर साहब!" बल्ले आते ही इंस्पेक्टर चक्रधर से बोला- "मैं उस लड़की का नाम बता सकता हूं-जिसने .बुद्धवार की रात मेरे चाचा की लाश ठिकाने लगाने मे कुलभूषण की मदद की थी!" बल्ले के उन शब्दों का इंस्पेक्टर चक्रधर पर तुरन्त असर हुआ-कुलभूषण की धुनाई करते उसके हाथ ठिठक गये।

उसने घूमकर बल्ले की तरफ देखा।

पीड़ा से बुरी तरह कराहते कुलभूषण के ऊपर भी बल्ले के वह शब्द गाज की तरह गिरे।

"कौन है वो लड़की?" चक्रधर ने फौरन पूछा।

"उसका नाम शीतल है।"

"श...शीतल!"

"हां इंस्पेक्टर साहब-वह शीतल है।"

"यह झूठ. बोल रहा है।" कुलभूषण एकाएक हलक फाड़कर चिल्ला उठा- "शीतल उस रात मेरे साथ नहीं थी-शीतल का इस पूरे हादसे से कोई वास्ता नहीं है।"

"झूठ मैं नहीं तू बोल रहा है।" बल्ले ने आक्रोश में दांत किटकिटाये- "बुद्धवार की रात शीतल ही तेरे साथ थी-तुम दोनों ने ही मिलकर पूरी घटना का जाल फैलाया।"

"यह' झूठ है।" कुलभूषण चिंघाड़ा-"गलत है।"

दोबारा कुलभूषण की तरफ बढ़ा चक्रधर!

फिर उसने कुलभूषण की शर्ट का कॉलर कसकर अपनी मुट्ठी में जकड़ लिया और बड़ी खूंखार नजरों से उसकी तरफ देखा। कांप गया कुलभूषण!

"यानी बुद्धवार की रात वाकई तेरे साथ शीतल नहीं थी?"

"न...नहीं।" कुलभूषण का कंपकंपाया स्वर- "श...शीतल का इस घटना से कोई वास्ता नहीं।"

"अगर वो शीतल नहीं थी-तो फिर कौन थी?" चक्रधर गुर्राया- "मुझे उस दूसरी लड़की का नाम बता?"

कुलभूषण चुप!

"मै तेरे से कुछ पूछ रहा हूं कुलभूषण!" चक्रधर ने शर्ट का कॉलर पकड़े-पकड़े उसे बुरी तरह झंझोड़ा-मेरे सवाल का जवाब दे। वरना तेरी अभी तो कम धुनाई हुई है-इस बार तेरे जिस्म से हड्डियां तक गायब हो जानी है। बोल-क्या नाम है उस लड़की का?"

"म...मैं उस लड़की का नाम नहीं बता सकता।" कुलभूषण ने हिम्मत करके कहा।

"क्यों नहीं बता सकता।" बल्ले चीखा- "इसलिये नहीं बता सकता-क्योकि वह लड़की शीतल के अलावा कोई थी ही नहीं। इंस्पेक्टर साहब!" बल्ले-उत्तेजना में भरा हुआ चक्रधर की तरफ घूमा- "सिर्फ मुझे ही नहीं बल्कि किशनपुरा के हर व्यक्ति को मालूम है कि शीतल, कुलभूषण के वास्ते कुछ भी कर सकती है। इतनी बड़ी दुनियां में एक वही लड़की ऐसी है-जो इसके लिये अपने आपको बड़े-से-बड़े खतरे में डाल देगी!"

"यह सब झूठ है।"

"चुपकर।" चक्रधर ने फौरन उसे पुड़क दिया-"चुप!"

कुलभूषण ने सहमकर होंठ बंद कर लिये थे।

"यह शीतल तो वही लड़की है न!" चक्रधर, बल्ले से सम्बोधित हुआ- "जिसके घर से यह कल रात फरार हुआ था?"

"हां इंस्पेक्टर साहब-वही लड़की शीतल है।"

इंस्पेक्टर चक्रधर ने फौरन स्थानीय थानाध्यक्ष के माध्यम से एक कांस्टेबल को तलब किया।

कांस्टेबल का नाम चट्टान सिंह था।

"बोलिये सर-क्या काम है?" चट्टान सिंह ने आते ही चक्रधर को जोरदार सेलयूट मारकर पूछा।

"चट्टान सिंह-तुम तुरन्त एक काम करो।" चक्रधर ने आदेश दनदनाया- "किशनपुरा चले जाओ और वहां जाकर शीतल को अपने साथ ले आओ। उससे बोलना-इंस्पेक्टर साहब ने बुलाया है।" ओ० के० सर!" चट्टान सिंह ने तत्परता के साथ कहा- "मैं अभी शीतल को लेकर आता हूं।"

"लेकिन आप शीतल को यहां क्यों बुला रहे हैं साहब!" कुलभूषण एकाएक हलक फाड़कर चिल्ला उठा- "वह बुद्धवार की रात सचमुच मेरे साथ नहीं थी- वह बेकसूर है।"

"बोलता हैं-बोलता है साले!" चक्रधर ने उसे नीचे गिरा दिया तथा फिर अपने फौलादी जूते की उसके मुंह पर धड़ाधड़ कई सारी प्रचण्ड चोटें जड़ी- "जबान चलाता है हरामी!"

कुलभूषण हाहाकर कर उठा।

उसकी हृदयविदारक चीखों से एक बार फिर पूरा पुलिस स्टेशन दहल गया।

आधा घण्टे बाद ही चट्टानसिंह, शीतल को लेकर वहां आ गया। पुलिस स्टेशन में प्रविष्ट होते ही शीतल की नजर कुलभूषण की नाजुक हालत पर पड़ी।

उसके तार-तार हुए कपड़े-गालों पर सुख चुके आसू-बिखरे हुए बाल और चेहरे से टपकती मनहूसियत।

वह सब बातें कुलभूषण के साथ हुए जुल्म की चीख-चीखकर गवाही दे रही थीं।

शीतल का दिल रो पड़ा।

खुद कुलभूषण भी तड़पकर रह गया था।

उसे ऐसा लगा-मानो शीतल की आंसुओं से छलछलाई आखें उससे कह रही हैं- "मैं तेरे से पहले ही कहती थी न भूषण-इस चक्कर में मत पड़-मत पड़-फंस जायेगा।

लेकिन नहीं-तब तो दौलत ने तेरी आखों पर लालच की पट्टी बांध दी थी-तब तो तुझे अपनी किस्मत के बंद कपाट खुलते नजर आ रहे थे-तब तो तुझे ऐसा लग रहा था, मानो साक्षात् लक्ष्मी तेरे दरवाजे पर खड़ी दस्तक दे रही है।"

कुलभूषण सिसककर रह गया।

उसके दिल ने चाहा-वह शीतल से चीख-चीखकर माफी मांगे।

वह वाकई गलती पर था।

उससे सचमुच भयंकर भूल हुई थी।

लेकिन वो कैसे कहता।

उसकी जबान को तो उस पल लकवा मार गया था।

"तुम्हारा ही नाम शीतल है?" तभी इंस्पेक्टर चक्रधर, शीतल से सम्बोधित हुआ।

"ज...जी हां।"

"तुम्हें यह तो मालूम ही होगा।" चक्रधर शालीन शब्दों का प्रयोग करता हुआ बोला-

"कि हमने कुलभूषण को यहां किस अपराध में पकड़कर रखा है-इसलिये उन सब बातों को दोहराने से कोई फायदा नहीं। दरअसल तुम्हे यहां इसलिये बुला या गया है-क्योंकि इन सब-इंस्पेक्टर ने!" चक्रधर न फ्लाइंग स्कावायड के सब-इंस्पेक्टर की तरफ इशारा किया-"बुद्धवार की रात कुलभूषण की ऑटो रिक्शा को मण्डी हाउस जाने वाले मार्ग पर रोका था। इन सब्र-इंस्पेक्टर महोदय का कहना कि उस वक्त कुलभूषण की ऑटो रिक्शा में एक लड़की भी थी-जिसे यह पेट से बता रहा था। तुम्हें सिफ एक सवाल का जवाब देना है और सच-सच देना है-क्या वो लड़की तुम थीं?"

शीतल ने सकपकायी-सी नजरों से कुलभूषण की तरफ देखां।"तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा।" चक्रधर बोला- "जो बात है- बेहिचक बताओ। हम सरकारी गवाह बना लेंगे।"

कुलभूषण ने आहिस्ता शीतलकी तरफ इंकार में गर्दन हिलाई। "साले!" बल्ले चिल्ला उठा- लड़की को बहकाता हैं-उसे झूठ बोलने के लिए कहता है। तेरी तो...।"

"गाली नहीं।" चक्रधर ने उसे बीच में ही घुड़क दिया- "गाली नहीं बल्ले-किसी भी लड़की के सामने गाली नहीं चलेगी।"

"मगर यह लड़की को बहका रहा है साहब!" बल्ले धधकते स्वर में बोला-

"आखों-ही-आखों में उस मना करने के लिये बोल रहा है।"

"मुझे सब मालूम है-सब दिख रहा है मुझे।" चक्रधर, कुलभूषण को आग्नेय नेत्रों से घूरता हुआ फुफकारा- "इसका बाद में इतजाम करूंगा-पहले लड़की से सवाल-जवाब कर लूं।"

बल्ले तिलमिलाकर रह गया।

"देखा शीतल!" चक्रधर, शीतल के साथ पुन: बड़ी शालीनता से पेश आया- "मुझे सच-सच बताओ-बुद्धवार की रात तुम कुलभूषण के साथ थीं या नहीं-कुछ भी बोलने से पहले एक बात का खास ख्याल रखना, पुलिस से कोई भी बात छिपाना संगीन जुर्म होता है-जिसे कानून की जबान में कैसीलमेंट ऑफ फैक्ट्स' कहा जाता है-इस जुर्म को करने पर सख्त-से-सख्त सजा हो सकती है-इसलिये जो भी बात कहना, सोच-समझकर कहना। अब बताओ-तुम इसके साथ थीं 'या नहीं?"

"मैं नहीं थी। "शीतल बेहिचक बोली।

"सच कह रही हो?"

"मैं बिल्कुल सच कह रही हूं। "शीतल की आवाज दृढ़ हो उठी।

"एक बार फिर सोच लौ। में तुम्हें फिर वार्निंग देता हूं कि अगर तुम्हारा झूठ पकड़ा गया-तो कानून को गुमराह करने के ऐवज में तुम्हें बड़ी सख्त सजा दी जा सकती है।"

"मुझे जो कहना था-मैंने कहा दिया।" शीतल थोड़ा झल्लाकर बोली- ' 'मैं अगर बुद्धवार की रात कुलभूषण के साथ नहीं थी-तों नहीं थी। दुनिया की कोई ताकत मुझसे जबरदस्ती कुछ भी नहीं कबुलवा सकती।"

इंस्पेक्टर चक्रधर हैरानी से शीतल को देखता रह गया।

फिर शीतल चली गयी।

परन्तु वह रात कुलभूषण के लिये कहर की रात साबित हुई थी। दिन भर तो चक्रधर ने उससे कुछ भी न कहा-लेकिन रात होते ही वह उसके ऊपर वज्र की तरह टूट पड़ा।

सारे दिन का भूखा-प्यासा था कुलभूषण!

फिर ऊपर से वो भयानक प्रताड़ना।

उसे टॉर्चर-रूम में उल्टा लटका दिया गया।

लात-घूंसों से बेपनाह मारा।

भारी-भरकम लोहे के रूलों से उसकी पिण्डलियों को रौंदा। कुल-पूषण चीखता रहे-चीखता रहा।

लेकिन इंस्पेक्टर चक्रधर उस रात अपनी मर्जी के मुताबिक उससे एक भी शब्द न कबुलवा सका-उस रात कुलभूषण ने पहलीबार अपनी दृढ़ता का परिचय दिया-इस बात का परिचय दिया कि एक आम आदमी भी फौलाद हो सकता है।

उसकी हृदयविदारक चीखें पुलिस स्टेशन की दीवारों को थर्राती रहीं।

वह हिचकियां ले-लेकर रोता रहा।

न जाने कब तक इंस्पेक्टर चक्रधर का कोप उस पर बरसा। कब तक कहर टूटा।

यह खुद कुलभूषण को भी मालूम न था।

लेकिन हां-उसे सिर्फ इतना मालूम था कि जब इंस्पेक्टर चक्रधर उसे मारते-मारते बुरी तरह थक गया-तो उसने आवेश में उसे अपने दोनों बाजुओं में भरकर सिर से ऊपर उठा लिया तथा फिर उसे धडाम् से नीचे पटक डाला।

कुलभूषण के कण्ठ से एक अत्यन्त कष्टदायक चीख निकली। फिर उसकी चेतना लुप्त होती चली गयी।

अगला दिन बड़ा महत्वपूर्ण था-इंस्पेक्टर चक्रधर ने एफ० आई० आर० (प्राथमिक सूचना रिपोर्ट के आधार पर कुलभूषण को लोअर कोर्ट में पेश कर दिया।

कोर्ट की दर्शक दीर्घा उस दिन दर्शकों से खचाखच भरी थी। कुलभूषण विटनेस बॉक्स में खड़ा था।

इंस्पेक्टर चक्रधर ने रात भर उसकी ऐसी जमकर धुनाई की थी कि इस समय तो शक्ल-हरत से ही कोई चोर-चक्का मालूम दे रहा था। आखों के पपोटे सूज-सूजकर मोटे हो गये थे-पूरे शरीर पर दर्जनों जगह खरोंच केनिशान थे-शेव बड़ी हुई-भूख और बेतहाशा कमजोरी के कारण आखों के गिर्द काले गुंजान दायरे थिरकते हुए।

टांगों में इतनी अधिक पीड़ा और कम्पन था कि खुद को विटनेस बॉक्स में खड़ा रखने की कोशिश में ही उसके मुंह से बार-बार कराह निकल रही थी।

तभी एक बेहद रौबीली पर्सनेलिटी वाला जज अपने चैम्बर से निकलकर कुर्सी पर आकर बैठ गया-उसकी आयु चालीस-पैंतालीस के बीच थी।

कुर्सी पर बैठते ही उसने एक भरपूर दृष्टि कुलभूषण पर डाली-पहली नजर में ही उसे कुलभूषण की तेज पीड़ा का अहसास हो गया।

"मिस्टर कुलभूषण!" शायद इसीलिये जज उससे थोड़ा सहानुभूतिपूर्वक पेश आया- "क्या तुमने कोर्ट में अपना डिफेंस (बचाव पक्ष) प्रस्तुत करने के लिये कोरई वकील किया है?"

"न...नहीं मी लॉर्ड!" कुलभूषण ने आहिस्ता से इंकार में गर्दन हिला दी।

"अगर तुम अपना डिफेंस प्रस्तुत करने के लिये कोई वकील" चाहते हो।" जज ने अपना ऐनक दुरुस्त किया- "तो सरकारी खर्चे पर तुम्हारे लिये डिफेंस काउंसल की व्यवस्था हो सकती है।"

"न...नहीं।" कुलभूषण का कंपकपाया स्वर- "म...मुझे ऐसी मेहरबानी की कोई जरूरत नहीं।"

"ओ०के० -जैसी तुम्हारी इच्छा।" जज ने अपने कंधे उचकाये-फिर पब्लिक प्रीसीक्यूटर (सरकारी वकील) से सम्बोधित होकर बोला- "अटैन्ड टू स्टार्ट योअर वर्क मिस्टर प्रॉसीक्यूटर। "थैक्यू योअर ऑनर!' पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने जज के सामने सम्मानपूर्वक गर्दन झुकाई तथा फिर कोर्ट को बुद्धवार की रात से शुरू होने वाले उस बेहद सनसनीखेज घटनाक्रम के बारे में बताना शुरू किया।

जिसमें हर पल नये-नये मोड़ आये थे-बेहद सनसनीखेज और चौंका देने वाले मोड़।

पूरे कोर्ट रूम में सन्नाटा छा गया।

सनसनीखेज सन्नाटा।.

सब स्तब्ध-सी मुद्रा में बैठे शुरू से अंत तक घटे उस घटनाक्रम को सुनने लगे।

पूरा घटनाक्रम इतना दिलचस्प और रोमांचकारी था कि लोग पलकें तक झपकाना भूल गये।

दर्शक दीर्घा की प्रथम पंक्ति में इंस्पेक्टर चक्रधर और बल्ले भी मौजूद थे-लाकन शीतल कहीं नजर न आ रही थी।

पूरा घटनाक्रम सुनाने के बाद पब्लिक प्रॉसीक्यूटर खामोश हो गया।

परन्तु कोर्ट-रूम में अभी भी सन्नाटा था।

सब मन्त्रमुग्ध से बैठे? थे।

"मिस्टर कुलभूषण!" पूरा घटनाक्रम और उस पर लगाये गये सभी आरोप सुनने के पश्चात् जज ने कुलभूषण की तरफ देखा- "क्या

तुम अपना अपराध स्वीकार करते हो कि चिना पहलवान की हत्या तुम्हीं ने की?"

"नहीं।" दर्द से बुरी तरह कराहते होने के बावजूद कुलभूषण ने जज के सवाल का जोरदार शब्दों में खण्डन किया -"चिना पहलवान की हत्या मैंने नहीं की-मैं बेगुनाह हूं- निर्दोष हूं।"

"अगर तुम निर्दोष हो।" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर अपने चिर-परिचित अंदाज में गला फाड़कर चिल्लाया- "अगर तुमने सचमुच चिना पहलवान की हत्या नहीं को-तो तुम हादसे वाली रात यानी बुद्धवार की रात इण्डिया गेट के इलाके में क्या कर रहे थें-जहां फ्लाइंग स्क्वायड की तीन गश्तीदल गाड़ियों ने हड़ताल होने की वजह से तुम्हारी ऑटो रिक्शा का नम्बर नोट किया? इसके अलावा एक सब-इंस्पेक्टर ने उस रात स्पीडिंग के अपराध में तुम्हारी ऑटो रिक्शा को रोका भी मिस्टर कुलभूषण-यह बात अलग कि तुम उसे एक लड़की के पेट से होने का खूबसूरत धोखा देकर वहां से भाग निकलने में कामयाब हों गये। और क्या यह सच नहीं है कि जिस रहस्यमयी लड़की को पेट से बता रहे थे-वह लड़की वास्तव में पेट से नहीं थी। सच्चाई ये है की वो लड़की एक लाश पर लेटी थी और वह लाश!" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने पूरी ताकत से अपना हलक फाड़ा- चिना पहलवान की लाश थी मी लॉर्ड-चिना पहलवान की लाश।"

"यह सब झूठ है।" विटनेस बॉक्स में खडा कुलभूषण भी चिल्ला उठा- "झूठ है-मुझे जबरदस्ती चिना पहलवान की हत्या के इल्जाम में फंसाया जा रहा है।"

"अगर हम तुम्हें चिना पहलवान की हत्या के इल्लाम में जबरदस्ती फंसा रहे हैं मिस्टर कुलभूषण!" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर के होठों पर कुटिल मुस्कान दौड़ी- "अगर हम सब झूठ बोल रहे हैं-तो ठीक है-फिर तुम्हीं बताओ कि आखिर सच्चाई क्या है? क्या है? वो हकीकत-जिसे तुम अभी तक हम तमाम लोगों से छिपाये हुए हो?"

"स...सच्चाई ये है। "कुलभूषण अपनी आवाज में यकीन पैदा करता हुआ बोला- "कि बुद्धवार की रात मेरी ऑटो रिक्शा में सचमुच गर्भ धारण किये हुए एक लड़की मौजूद थी।"

"वो लड़की हंसा पब्लिक प्रॉसीक्यूटर- "जिसकी फौरन डिलीवरी होने वाली थी-जिसे तुम फौरन किसी हॉस्पिटल में भर्ती कराने के लिये ले जा रहे थे। परन्तु इंस्पेक्टर चक्रधर-जो इस केस के आई० ओ० (इंवेस्टीगेशन ऑफिसर) हैं-उनकी इंवेस्टीगेशन यहबताती है मी लार्ड!

" वह पुन: गला-फाडकर चिल्लाया- "कि बुद्धवार की रात दिल्ली शहर के किसी भी हॉस्पिटल के किसी भी मेटरनिटी वार्ड में उस समय के आस-पास डिलीवरी का कोई केस भर्ती नहीं, हुआ। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है मी लॉर्ड!" पब्लिक प्रीसीक्यूटर ने गरजते हुए ही कहा- "कि मिस्टर कुलभूषण कानून को उस लड़की का नाम बताने से भी परहेज कर रहे है -जो बुद्धवार की रात इनकी ऑटो रिक्शा में थी। क्या इसी एक प्वॉइंट से साबित नहीं हो जाता कि मिस्टर कुलभूषण जो कुछ भी कह रहे हैं-वह सिर्फ झूठ का पुलन्दा हैं-बकवास है। मिस्टर कुलभूषण ने इस मनगढंत कहानी की रचना ही इसलिये की है-ताकि यह कानून को धोखा दे सकें-अदालत की, आखों में धूल झोक सकें। जबकि सच्चाई ये है मी लॉर्ड-मिस्टर कुलभूषण इस बात को जानते हैं कि अगर इन्होंने उस लड़की का नाम अदालत को बता दिया तो वह लड़की भरी हुई अदालत के सामने इतने बड़े झूठ को किसी भी हालत में कबूल नहीं करेगी कि उसके कोई बच्चा होने वाला था। क्योंकि लड़की चाहे कोई भी हो-किसी भी धर्म या जाति से सम्बन्धित हो लेकिन वो अपनी इज्जत पर कैसा भी कोई झूठा दाग लगना पसंद नहीं करेगी।"

कुलभूषण खामोश खड़ा सुनता रहा।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की जबान से निकला एक-एक शब्द उसके कानों में पिघले हुए सीसे की तरह गिर रहा था।

"मिस्टर कुलभूषण!" रौबदार पर्सनेलिटी वाला जज एक बार फिर कुलभूषण से सम्बोधित हुआ- "अगर तुम किसी खास वजह से लड़की का नाम गुप्त रखना चाहते हो तो तुम्हें कम-से-कम उस हॉस्पिटल का नाम तो जरूर ही अदालत को बताना पड़ेगा-जिसके मेटरनिटी वार्ड में तुमने: उस रात लड़की को एडमिट कराया था।"

"मैं उस हॉस्पिटल का नाम भी अदालत कों नहीं बता सकता।"

"मी लार्ड!" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर अब क्रोध में चिल्ला उठा- "मुल्जिम जबरदस्ती इस केस को उलझाने की कोशिश कर रहा है-जबकि पूरा केस ओपन एण्ड शट केस है। इसलिये अदालत का मुल्जिम से यह पूछा जाना कि बुद्धवार की रात उसने लड़की को किस हॉस्पिटल में भर्ती कराया था-बिल्कुल बेतुका हैं-तर्कहीन है क्योंकि मी लॉर्ड-दिल्ली पुलिस के बेहद काबिल इंस्पेक्टर मिस्टर चक्रधर पहले ही इस बात की खूब जांच-पड़ताल कर चुके हैं कि बुद्धवार की रात मेटरनिटी वार्डो में उस समय के आसपास कहीं कोई भर्ती हुई ही नहीं थी।

हॉस्पिटल का या उस लड़की का नाम न बताकर एक तरह से मुल्जिम खुद बार-बार यह कबूल रहा है कि वह झूठा है और उसके बयान में कोई जान नहीं।"

जज ने खामोशी के साथ कुर्सी पर पहलू बदला।

"मी लॉर्ड!" पब्लिक प्रीसीक्यूटर पुनः चिल्लाया था- "इंस्पेक्टर चक्रधर की इंवेस्टीगेशन की वजह से पूरा केस आइने की तरह साफ हो चुका है-इसलिये अब मैं अदालत से रिक्वेस्ट करूंगा कि वो मुस्लिम के शब्द जाल में फंसकर अपना बहुमूल्य समय नष्ट करने की बजाय उन ढेरों सवालों की तरफ ध्यान दे-जिनका अभी तक मुस्लिम ने कोई जवाब नहीं दिया है। जैसे सवाल नम्बर एक-चिंना पहलवान ने जिससे रीगल सिनेमा के सामने ब्रीफकेस छीना, वह व्यक्ति कौन था? सवाल नम्बर दो-उस ब्रीफकेस के अंदर क्या था? सवाल नम्बर तीन-वह रहस्यमयी लड़की कौन थी, जो मण्डी हाउस के इलाके में मुस्लिम की ऑटो रिक्शा के अंदर देखी गयी और जिसे मुल्जिम ने पेट से वताया?"

"मैं बताता हूं कि वो रहस्यमयी लड़की कौन थी।"

तभी कोर्ट-रूम में एक गरजती हुई आवाज -गूजी।

बिकुल अजनबी आवाज।

उस आवाज ने सबको चौंका दिया।

सबकी निगह खुद-ब-खुद गेट की तरफ चली गई।

और अगला क्षण-एक और धमाके का क्षण था।

सचमुच उस पूरे कथानक में एक के बाद एक चौंका, देने वाली घटनाओं का जन्म हो रहा था।

कोर्ट-रूम के दरवाजे पर उन सब लोगों ने जिस व्यक्ति को खड़े देखा-उसे देखकर सभी भौंचक्के रह गये।

सबके शरीर का प्रत्येक अंग यूं फ्रीज हो गया-मानो उसे लकवा मार गया हो।

कोर्ट-रूम के दरवाजे पर इस समय दिल्ली शहर का सबसे ज्यादा प्रसिद्ध वकील यशराज खन्ना खड़ा था।

यशराज खन्ना की उम्र सिर्फ तीस-बत्तीस साल के आसपास थी-लेकिन इतनी कम आयु में ही उसने दिल्ली जैसे महानगर में अपनी वकालत के झण्डे गाड़ दिये थे। यशराज खन्ना का फिल्म अभिनेताओं जैसा व्यक्तित्व बरबस ही हर व्यक्ति का मनमोह लेता था।

इस समय भी यशराज खन्ना ने अपने छ: फुट लम्बे कसरती शरीर पर सफेद शर्ट, सफेद पैंट, सफेद टाई और ऊपर से काले रंग का चोगा पहन रखा था।

जिसमें वो विनोद खन्ना' की तरह काफी स्मार्ट लग रहा था।

उसकी आखों पर चढ़ा था-सोने के फ्रेम वाला कीमती आई साइड ऐनक।

यशराज खन्ना को जिस वजह से वकालतकी दुनियां में रातों-रात प्रसिद्धि मिली-वह उसके केस लड़ने का स्टाइल था। यशराज खन्ना का रिकॉर्ड रहा था कि वो अपने जीवन में कभी कोई केस नहीं हारा। उसका क्लायण्ट बेगुनाह हो या गुनाहगार-यशराज खन्ना कोर्ट में पूरे केस को इस तरह तोड़-मरोड़कर पेश करता था कि उसका क्लायण्ट हर हालत में अदालत से बाइज्जत बरी हो जाता था।

यह बात अलग है कि यशराज खन्ना अपने क्लायण्ड से मुंह मांगी फीस लेता था।

दिल्ली का सबसे मंहगा वकील था वो।

बहरहाल-उस समय यशराज खन्ना को कोर्ट-रूम में देखकर सभी चौंक पड़े।

सबका चौंकना वाजिब भी था।

आखिर यशराज खन्ना जैसा धुरंधर वकील किसी भी केस को आसानी से हाथ लगाता ही कहां है।

"और जब हाथ लगाता है-तो करिश्मा होता है।

करिश्मा!

"आपको उस रहस्यमयी लड़की के बारे में जो कुछ भी कहना है मिस्टर खन्ना!' जज भी उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर बोला-"कृपया विटनेस बॉक्स में आकर कहिये।"

"सारी मी लॉर्ड!" मैं इस समय कोर्ट रूम में एक गवाह की हैसियत से उपस्थित नहीं हुआ हूं बल्कि मिस्टर कुलभूषण के डिफेंस काउंसल (बचाव पक्ष) की हैसियत से यहां आया हू।"

"ड...डिफेंस काउंसल!"

बम-सा गिरा कोर्ट रूम में।

चारों तरफ सनसनी दौड़ गयी।

इंस्पेक्टर चक्रधर और बल्ले भी यह सोचकर हैरान रह गये कि कुलभूषण जैसे मामूली ऑटो रिक्शा चालक ने यशराज खन्ना जैसा महंगा वकील कैसे कर लिया?

खुद कुलभूषण भी इस सुखद परिस्थिति पर हैरान था।

विटनेस बॉक्स में खड़े खड़े वो .अपने अंदर एक नई स्कूर्ति का अनुभव कूरने लगा।

दर्शक दीर्घा में मौजूद तमाम लोग भी अब सजग हो-होकर अपनी कुर्सियों पर बैठ गये-उन्हें यह समझते देर न लगी कि जल्द ही केस कोई नया रोमांचकारी मोड़ लेने वाला है।

जबकि यशराज खन्ना ने कुलभूषण से हस्ताक्षर कराने के बाद अपना वकालतनामा जज की तरफ बढ़ा दिया था। जज ने गौर से वकालतनामा देखा, फिर कहा- "आप डिफेंस काउंसल की हैसियत से यह मुकद्मा लड़ सकते हैं। मिस्टर खन्ना।"

"थैक्यू मी लॉर्ड!"

पब्लिक ऑसीक्यूटर ने एक चैलेन्ज भरी दृष्टि यशराज खेला पर डाली-जबकि यशराज खन्ना हलके से मुस्करा दिया।

मुकद्मा फिर- पहले की तरह ही गरमजोशी के साथ शुरू हो गया-बल्कि अब उसमें पहले से भी ज्यादा गरमी थी।

"मी लॉर्ड!" यशराज खन्ना ने अपना काला चोगा दुरुस्त करके बोलना शुरू किया- "सबसे पहले तो मैं मिस्टर कुलभूषण के बचाव पक्ष का वकील होने के नाते यह कहना चाहूंगा कि मेरे बेहद काबिल और जहीन दोस्त पब्लिक प्रॉसीक्यूटर और इंस्पेक्टर चक्रधर ने मिलकर मेरे कलाया, पर चिना पहलवान की हत्या का जो इल्लाम लगाया, है-वहबिल्कुल बेतुका है-झूठा है, मीलॉर्ड।" यशराजखन्ना ने अपनी आवाज थोड़ी तेज की- "सच्चाई ये हैकि अभी तक मेरा भोला-भाला और निर्दोष क्लायण्ट अदालत के शब्द जाल से बचने की कोशिश नहीं करता रहा बल्कि मेरे काबिल दोस्त पब्लिक प्रॉसीक्यूटर साहब खुद इंस्पेक्टर चक्रधर की गलत इंवेस्टीगेशन के कारण दिशा भ्रमित होते रहे हैं।"

"ऑब्जेक्शन मी लॉर्ड!" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर आदत के मुताबिक हलक फाड़कर चिल्लाया- "खन्ना साहब, इंस्पेक्टर चक्रधर जैसे बेहद कर्तव्यनिष्ठ इस्पेक्टर की काबलियत पर उंगली उठा रहे हैं। वो इंस्पेक्टर चक्रधर जो पुलिस में एक मिसाल है।

एक आदर्श है। जिसे देखकर दिल्ली पुलिस के दूसरे जवान प्रेरणा लेते है। और कल्पना करते हैं कि वे भी इंस्पेक्टर चक्रधर की तरह ही बन जायें। यह बड़े अफसोस की बात है मी लार्ड-खन्ना साहब उसी इंस्पेक्टर चक्रधर की कर्तव्यनिषा पर इल्लाम लगा रहे हैं।"

"हां तो मी लॉड!" यशराज खन्ना ने थोड़ा रुककर पुन: बोलना शुरू किया-

"मैं कह रहा था कि मेरे काबिल दोस्त पब्लिक प्रॉसीक्यूटर साहब खुद इंस्पेक्टर चक्रधर की गलत इंवेस्टीगेशन के कारण दिशा भ्रमित हो रहे हैं।-जबकि सच्चाई ये है कि फ्लाइंग स्क्वायड यड दस्ते के सब-इंस्पेक्टर ने जब बुद्धवार की रात को मण्डी हाउस जाने वाले मार्ग पर कुलभूषण की ऑटो रिक्शा रोकी-तो उसमें सचमुच किसी चिना पहलवान की लाश नहीं थी बल्कि उसके अंदर वास्तव में ही एक लड़की थी-जो पेट से थी।"

"लेकिनइ सवाल ये है खन्ना साहब।" अपनी पराजय से बुरी तरह झल्लाया पब्लिक प्रॉसीक्यूटर फिर चिल्ला उठा- "अगर ऑटो रिक्शा, में उस समय लड़की थी-तो वह लड़की कौन थी? फिर अगर वो वास्तवमें ही पेट से थी-तो मिस्टर कुलभूषण ने उसे किसी हॉस्पिटल के मेटरनिटी वार्ड में भर्ती क्यों नहीं कराया? और इन सबसे बड़ा सवाल ये है कि मिस्टर कुलभूषण उस लड़की का नाम बताने से ऐतराज क्यों कर रहे हैं?"

आहिस्ता से मुस्कराया यशराज खन्ना।

"प्रॉसीक्यूटर साहब!" फिर यशराज खन्ना गंभीरतापूर्वक बोला- ' हर खामोशी के पीछे कोई-न-कोई वजह होती है-फर्क सिर्फ इतना है कि कोई उस खामोशी की आवाज को सुन लेता है और कोई नहीं सुन पाता। इस मामले में, मैं शायद आपसे ज्यादा सौभाग्यशाली हूं क्योंकि मैंने खामोशी की वह आवाज सुन ली है। मी लॉर्ड!" यशराज खन्ना, जज की तरफ घूमा- "मैं कुलभूषण की खामोशी की वजह बयान करने से पहले अदालत से प्रार्थना करूंगा कि वो प्रॉसीक्यूटर के ही एक गवाह बल्ले को विटनेस बॉक्स में पेश करने की इजाजत दे।"

"इजाजत है।"

दर्शक दीर्घा में बैठे काले-भुर्राट बल्ले का दिल एकाएक बुरी तरह धड़क उठा।

हालांकि वो काफी हिम्मतवाला इंसान था।

परन्तु यशराज खन्ना जैसे धुरंधर वकील के सामने खड़े होने की कल्पना मात्र से ही उसकी पिण्डलियां कंपकंपा उठीं।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर और इंस्पेक्टर चक्रधर की भी कुछ ऐसी ही हालत हुई-वह नहीं समझ पा रहे थे कि अब क्या होने वाला है।

मरता क्या न करता-काला-भुर्राट बल्ले आखिरकार विटनेस बॉक्स में जाकर खड़ा हुआ।

फिर उसने सबसे पहले 'गीता' पर हाथ रखकर सच बोलेने की सौगन्ध खाई।

उसके बाद कुछ औपचारिक अदालती सवालों के बाद यशराज खन्ना ने बल्ले को घूरते हुए पहला प्रश्न पूछा- "मिस्टर बल्ले-क्या यह सच है कि कुलभूषण की गिरफ्तारी के बाद पुलिस स्टेशन गये थे?"

"हा... हा।" बल्ले ने कंपकपाये स्वर में कहा- "यू...यह सच है।"

"वहां तुम इंस्पेक्टर चक्रधर से भी मिले?"

"हा...हां-यह भी सच है।"

"और क्या यह भी सच है।" यशराज खन्ना थोड़े तेज स्वर में बोला- "कि तुमने पुलिस स्टेशन में घुसकर इंस्पेक्टर चक्रधर के सामने यह घोषणा की थी कि तुम उस रहस्यमयी लड़की को जानते हो-जो हादसे की रात कुलभूषण के साथ मण्डी हाउस जाने वाले मार्ग पर देखी गयी?"

बल्ले ने अब सकपकाकर चक्रधर की तरफ देखा।

"उधर मत देखो।" चिल्लाया यशराज खन्ना- "मेरी तरफ देखो।"

बल्ले ने फौरन चक्रधर की तरफ से निगाह हटा ली।

"जवाब दो-क्या तुमने पुलिस स्टेशन में पहुंचकर ऐसी ही घोषणा की थी?"

"ह...हां-म...मैंने यही कहा था?"

मुस्कराया यशराज खन्ना- "फिर तो तुमने इंस्पेक्टर चक्रधर को उस लड़की का नाम भी जरूर बताया होगा?"

"ह...हां-नाम बताया था।"

"क्या नाम बताया था?"

बल्ले ने अब बेचैनीपूर्वक पहलू बदला।

इतना तो वह समझ ही चुका था कि यशराज खन्ना उसके ही चलाये तीर से कोई शिकार करना चाहता है।

"मिस्टर बल्ले!" यशराज खन्ना ने एक नई चाल चली- "क्या "उस लड़की का ने, अदालत के सामने दोहराने से कोई ऐतराज?

"न...नहीं-म...मुझे भला क्या ऐतराज हो सकता है।"

"तो फिर बोलते क्यों नहीं-क्या नाम था उस लड़की का?"

" श...शीतल-शीतल नाम था।"

"यह नाम नोट किया जाये मी लॉर्ड। "यशराज खन्ना बिजली जैसी तेजी के साथ जज की तरफ घूमा और चिल्लाया- "यह कम अदालत की कारवाई में खासतौर पर दर्ज किया जाये। इसके अलावा मैं अदालत को एक बात और बताना चाहूंगा कि शीतल नाम की यह लड़की किशन-पुरा में ही रहती है तथा एक ऑफिस के अंदर टाइपिस्ट के तौर पर काम करती है।"

दर्शन दीर्धा में सन्नाटा था।

ऐसा सन्नाटा-अगर वहां कोई सुई भी गिरे, तो आवाज हो।

वह नाम अदालत की कार्यवाही में दर्ज कराने के बाद यशराज खन्ना दोबारा बल्ले की तरफ घूम गया था।

बेचारा बल्ले-उसे ऐसा लग रहा था, मानों आज वह किसी शेर के जबड़े में आ फंसा हो।

"मिस्टर बल्ले!" यशराज खन्ना बोला- "अब मैं तुमसे यह पूछना चाहूंगा कि तुमने इंस्पेक्टर चक्रधर के सामने जाकर शीतल का ही नाम कयों लिया? किशनपुरा में तो और भी दर्जनों लड़कियां रहती हैं-तुमने उनमें से किसी का नाम क्यों नहीं लिया?"

" क...क्या मतलब?" बल्ले चौंका।

"मतलब बिल्कुल साफ है मिस्टर बल्ले-क्या तुमने बुद्धवार की रात शीतल को अपनी आखों से चिना पहलवान की लाश के ऊपर लेटे देखा था?"

"नही।"

यशराजखन्ना चिल्ला उठा- " फिर तुमने पुलिसस्टेशन में जाकर यह घोषणा किस आधार पर की कि उस रात शीतल कुलभूषण की ऑटो रिक्शा में थी? तुमने शीतल का ही नाम क्यों लिया? जबकि तुमने शीतल को कुलभूषण की ऑटो रिक्शा में देखा तक नहीं था।"

"ऑब्जेक्शन मी लॉर्ड!" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने एकाएक गला फाड़ा- "डिफेंस काउंसल साहब बल्ले को क्रॉस एग्जामिन कर रहे हैं-वह उसे उलझन और गहरी पेशोंपेश में डालकर होस्टाइल करार

देने की कोशिश कर रहे हैं। वरना इन तमाम-सवालों का केस से क्या ताल्लुक है?"

" ताल्लुक है मी लाई- ताल्लुक है।" यशराज खन्ना ने बिना विचलित हुए अपनी बंद मुट्ठी हवा में लहराई- "मेरे इन तमाम सवालों का कुलभूषण की उस खामोशी से गहरा तालुक हे जो वह बेगुनाह होकर भी विटनेस बॉक्स में एक अपराधी बना खड़ा है। आखिर वह कौन-सा राज है-जिसे एक भोले-भाले इंसान ने अपने सीने मेर दफन कर रखा है। आप सब लोग चिल्ला-चिल्लाकर उस पर यह कहा इल्लाम लगा रहे है कि बुद्धवार की रात उसकी ऑटो रिक्शा के अदर चिना पहलवान की लाश थी-इतना बड़ा झटा इल्लाम लगने के बावजूद वो चुप है-आखिर क्यों चुप है। क्या इस खामोशी की वजह?"

अब!

अब विटेनस बॉक्स में खड़े कुलभूषण की अस्त्रों में भी हैरानी के निशान उभरे।

उसे भी लगा कि यशराज खन्ना सचमुच कोई 'गेम' खेलने वाला है।

"दरअसल मैं बल्ले से जो भी सवाल पूछ रहा हूं मी लॉर्ड।" यशराज खन्ना बोला- "उन सवालों के जवाब न सिर्फ कुलभूषण कोई खामोशी को तोड़ेंगे बल्कि वो पूरे केस को भी एक ही झटके में हल कर देंगे।"

"ठीक है-आप सवाल पूछ सकते हैं।"

"थैक्यू-थैक्यू वैरी मच मी लार्ड।" यशराज खन्ना ने एक बार फिर जज के सामने आदर से गर्दन झुकाई तथा पुन: बल्ले से सम्बोधित होकर बोला-"हां, तो मिस्टर बल्ले-तुमने बिना देखे यह अंदाजा कैसे लगाया कि तीन जुलाई की रात कुलभूषण की ऑटो रिक्शा में शीतल रही होगी?"

बल्ले को जबान बंद?"

"इस तरह की धोषणा करने के पीछे कोई तो वजह होगी?" बल्ले पागलों की तरह इधर-उधर देखने लगा।

"मैं तुमसे कोई सवाल पूछ रहा हूं मिस्टर बल्ले।" खन्ना थोड़ा गुस्से में बोला- "जवाब दो।"

" ए...एक मैं ही क्या-क...किशनपुरा में रहने बाला कोई भी व्यक्ति यह अंदाजा बड़ी आसानी से लगा सकता है कि वो शीतल रही होगी।"

"क्यों-ऐसा अंदाजा क्यों लगा सकता है?"

"क...क्योंकि कुलभूषण और शीतल एक-दूसरे से प्रेम करते हैं-जान छिड़कते है यह एक-दूसरे पर-फिर भला शीतल के अलावा और कौन लड़की इसकी मदद कर सकती है।"

"तुम यह कहना चाहते हो" यशराज खन्ना ने फौरन एक-एक शब्द चबाया- "कि कुलभूषण और शीतल एक-दूसरे के लिये कुछ भी कर सकते हैं।"

"जी हां।"

"मैंने इन दोनों के विषय में एक बात और भी सुनी है।" यशराज खन्ना का व्यक्तित्व एकाएक बेहद रहस्यमयी हो उठा और वो बल्ले के थोड़ा करीब पहुंचकर बोला- "मैं ने सुना हैकि यह दोनों अपने-अपने घर में रहते भी अकेले हैं?"

"आपने बिल्कुल ठीक सुना है साहब!" बल्ले ने इस बार थोड़ा उत्साह के साश जवाब दिया- "शीतल तो बहुत पहले से किशनपुरा में रहती है- शायद बचपन से ही। पहले शीतल के साथ उसकी मां भी रहती थी-जिसका पिछले साल ही देहान्त हो गया-अब वो घर में अकेली है।"

"गुड! और कुलभूषण?"

"कुलभूषण ने तो अभी सिर्फ एक महीना पहले से ही किशनपुरा में रहना शुरू किया है।"

"सिर्फ एक महीना पहले से"

"जी साहब।"

"और इस एक महीने में ही कुलभूषण और शीतल की मोहब्बत इस मुकाम तक पहुंच गयी।" यशराज खन्ना हैरत से नेत्र फैलाकर बोला- "कि यह एक-दूसरे के लिये कुछ भी कर सकते हैं? यकीन नहीं होता एकाएक मिस्टर बल्ले।"

" आप गलत समझ रहे हैं, वकील साहब।" बल्ले बोला-कुलभूषण को किशनपुरा में रहते जरूर एक महीना हुआ है-लेकिन शीतल और कुलभूषण की दोस्ती बहुत पुरानी है। मैंने सुना है कि शीतल पहले कुलभूषण की ऑटो रिक्शा में बैठकर अक्सर ऑफिस जाती थी-बस तभी से उन दोनों के बीच प्रेम हो गया।"

"फिर तो कुलभूषण को किशनपुरा में घर भी शीतल नेही दिलाया होगा?"

"जी हां-उसी ने दिलाया था।"

"वैरी गुड-वाकई काफी जबरदस्त प्रेम है।"

खून अब कुलभूषण की कनपटी पर ठोकरें-सी मारने लगा।

वह समझ नहीं पा रहा था कि यशराज खन्ना वहां उसे बाइज्जत बरी कराने आया है-या उसकी इज्जत के परखच्चे उड़ाने आया है। "मी लॉर्ड-वैसे मैंने यह भी सुना है।" यशराज खन्ना एकाएक चीखता हुआ जज की तरफ घूमा- "कि जिस रात इंस्पेक्टर चक्रधर कुलभूषण को गिरफ्तार करने किशनपुरा में पहुंचा-तो उस समय शीतल के घर में था। जरा कल्पना कीजिये मी लॉर्ड एक नौजवान लड़का एक नौजवान लड़की के साथ घर में अकेला बंद है-रात कां समय है-दरवाजे की उन दोनों ने अन्दर से सिटकनी भी चढ़ा रखी है। एक पूरी ड्रामेटिक सिचुएशन आपके सामने है-क्या यह पूरी सिचुएशन इस बात की तरफ इशारा नहीं करती कि इन दोनों के बीच सिर्फ प्रेम सम्बन्ध ही नहीं थे बल्कि शारीरिक सम्बन्ध भी कायम हो चुके थे। वैसे भी जब दो तपते जिस्म तन्हाई में एक-दूसरे के इतना करीब हों, तो फिर आग लगने? से कैसे बच सकती है।"

"यह सब झूठ है।" कुलभूषण दहाड़ उठा- "झूठ है यह सब-मेरे और शीतल के बीच ऐसे कोई सम्बन्ध नहीं थे।"

"तुम दोनों के बीच सम्बन्ध थे कुलभूषण!" यशराज खन्ना उससे भी ज्यादा पुरजोर अंदाज में चिंघाड़ा- "सम्बन्ध थे। इतना ही नहीं तीन जुलाई, बुद्धवार की रात तुम्हारी ऑटो रिक्शा में जो लड़की देखी गयी-वो भी शीतल ही थी-सिर्फ. और सिर्फ शीतल।"

पूरे कोर्ट-रूम में सब दंग रह गये।

बुरी तरह दंग!

वहां सन्नाटा-सा स्थापित हो गया।

जज से लेकर सरकारी वकील और इंस्पेक्टर चक्रधर तक बेहद भौंचक्की मुद्रा में यह सोचते देखे गये कि आखिर यशराज खन्ना जैसा धुरंधर वकील अपने ही क्लायण्ट के विरुद्ध क्यों जा रहा है?"

क्या वजह है?

क्या कारण है?

बहुत जल्द ही-उस कारण का भी पर्दाफाश हो गया।

ऐसा जबरदस्त बम-विस्फोट कि यही बहुत बड़ा था कि कोर्ट-रूम में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति का संस्पैंस के मारे हार्टफेल न हो गया।

"तो आप भी यह कबूल करते हैं। खन्ना साहब।" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर उत्साह में भरकर बोला- "कि तीन जुलाई, बुद्धवार की रात जो: लड़की चिना पहलवान के ऊपर लेटी देखी गयी-वह शीतल थी?"

"मैंने कब कहा।" यशराज? खन्ना ने फौरन अपने तेवर दिखाये- "मैंने यह कब कहा कि शीतल, चिना पहलवान की लाश के ऊपर लेटी थी? प्रॉसीक्यूटर साहब-मैंने तो सिर्फ ये कहा है कि बुद्धवार की रात जब फ्लाइंग स्क्वायड दस्ते ने कुलभूषण की ऑटो रिक्शा मण्डी हाउस जाने वाले मार्ग पर रोकी-तो उसमें मौजूद रहस्यमयी लड़की कोई और नहीं बल्कि शीतल थी। चिना पहलवान की लाश का तो मैंने अभी तक जिक्र भी नहीं किया है-क्योंकि मैं पहले ही कोर्ट में कह चुका हूं कि ऐसी कोई लाश उस समय ऑटो रिक्शा के अंदर नहीं थी।"

अब सभी के दिमाग में फिरकनी सी घूमी।

"इ...इसका मतलब आप यह कहना चाहते है।" प्रॉसीक्यूटर हैरान होकर बोला-"कि बुद्धवार की रात को शीतल के सचमुच बच्चा होने वाला था और कुलभूषण उसे हॉस्पिटल में ही भर्ती कराने के लिये ले जा रहा था?"

"बिल्कुल-यह सच है।" यशराज खन्ना ने अपने कंधे झटके- "मैं यही कहना चाहता हूं। मी लॉर्ड!" यशराज खन्ना फिर चीखता हुआ जज की तरफ घूमा- " कुलभूषण की ऑटो रिक्शा में उस-रात जो लड़की थी-वह हण्ड्रेड परसेण्ट शीतल थी। इतना ही नहीं-उसके पेट में पलने वाला वह बच्चा, जिसे हमारा समाज ऐसी परिस्थिति में पाप की संज्ञा देता है-वह पाप किसी और का नहीं था मी लार्ड।" यशराज खन्ना कोर्ट-रूस में और बुरी तरह चिंघाड़ा तथा उसने अपनी उंगली भाले की तरह कुलभूषण की तरफ उठाई- "वह पाप इसी का था-कुलभूषण का।"

"य...यह झूठ है।" कुलभूषण दहाड़ उठा- "यह झूठ है मी लॉर्ड। यह मेरे ऊपर और शीतल पर सरासर झूठा इलाम लगा रहे हैं-यह कीचड़ उछाल रहे हैं हम पर। म...मैं कबूल करता हूं मी लार्ड-उस रात चिना पहलवान की लाश मेरी हो ऑटो रिक्शा में थी।" बोलते-बोलते कुलभूषण की आवाज जज्याती हो उठी-"म...मैं यह भी कबूल करता हू कि चिना पहलवान की हत्या मैंने की है-मैं ही हत्यारा हूं। लेकिन भगवान के लिये शीतल पर इतना बड़ा झूठा इल्लाममत लगाओ-उसकी जिंदगी बर्बाद मत करो।" बोलते-बोलतेकुलभूषण इस बार विटनेस बॉकसा मे रो पड़ा।

भरभराकर रो पड़ा।

परन्तु कुलभूषण को ये कहां मालूम था कि उघज उसके सामने यशराज खन्ना जैसा बेहद धुरंधर वकील खड़ा है। यशराज खन्ना ने कुलभूषण द्वारा स्वीकार किये गये हत्या के अपराध से भी फायदा उठाया।

"देखा-देखा आपने मी लॉर्ड। "यशराज खन्ना ने घनगरज की- "देखा-इसके दिल में बसे शीतल के प्रति बेपनाह प्यार को देखा। सिर्फ शीतल के ऊपर कोई कालिख न लग जाये-इसी वजह से यह चिना पहलवान की हत्या का इल्लाम अपने सिर पर लेने को तैयार है-यह फांसी चढ़ने को तैयार है बेवकूफ आदमी! शीतल की इज्जत बचाने के लिये यह इस समय वो कबूल कर रहा है-जो इसने कल इंस्पेक्टर चक्रधर के जबरदस्त टॉर्चर के सामने भी कबूल नहीं किया। यही मोहब्बत इसकी खामोशी की वजह थी मी लोर्ड-यह इसी कारण चुप था कि कहीं इसकी हकीकत का पर्दाफाश न हो आये।"

अदालत में सन्नाटा।

घोर सन्नाटा!

"जबकि हकीकत ये है मी लॉर्ड!" यशराज खन्ना ने सन्नाटे के ऊपर अपनी आवाज से प्रचण्ड चोट की- "कि तीन जुलाई की रात न तो यह रीगल सिनेमा के सामने ही खड़ा था और न ही इसे चिना पहलवान के बारे में ही कुछ पता था। दरअसल बुद्धवार की रात को शीतल के बच्चा होने की बहुत तेज पीड़ा हुई थीं-किसी हॉस्पिटल में ले जाने के लिये कुलभूषण ने शीतल को ऑटो रिक्शा की पिछली सीट पर लिटाया-लेकिन जब यह आई० टी० ओ० का ओवर ब्रिज पार करके मण्डी हाउस जाने वाले मार्ग पर मुड़ रहा था-तभी इत्तफाक से तेज स्पीड के कारण फ्लाइंग स्क्वायड का एक दस्ता इसके पीछे लग गया। जबकि सच्चाई ये है मी लॉर्ड-यह ऑटो रिक्शा इसलिये तेज चला रहा था-ताकि यह शीतल को लेकर जल्द-से-जल्द किसी हॉस्पिटल पहुंचा सके। लेकिन इसकी किस्मत खराब थी-जो फ्लाइंग स्क्वायड के दस्ते ने इसे बीच रास्ते में ही रोक लिया। दस्ते के सब-इंस्पेक्टर से कुलभूषण ने वही कहा-जो सच था-यानी लड़की के बच्चा होने वाला है। मगर तब तक देर हो चुकी थी मी लॉर्ड-बहुत देर।" यशराज खन्ना चीखता चला गया- "कुलभूषण फ्लाइंग

स्क्वायड के दस्ते से निपट कर अभी इण्डिया गेट से थोड़ा आगे पहुंचा ही था कि पिछली सीट पर लेटी शीतल के प्रसव पीडा हो गयी। जीहां मी लॉर्ड-शीतल की डिलीवरी हो गयी। उसके एक बच्चा पैदा हुआ-लेकिन जिन्दा नहीं बल्कि मरा हुआ।"

भावनाओं के प्रवाह में बोलते-बोलते कुछ क्षण के लिये रुका यशराज खन्ना।

उसने अपना सोने के फ्रेम वाला ऐनक दुरुस्त किया।

अदालत में अभी भी सन्नाटा था।

सब चुप बैठे थे।

जबकि कुलभूषण के नेत्र तो हद दर्जे तक फैल गये थे।

उसके बाद यशराज रवन्ना ने अदालतमें उस कहानी का आखिरी हिस्सा सुनाया- "मी लॉर्ड-कुलभूषण और शीतल ने मिलकर वह मरा हुआ बच्चा उसी रात यमुना नदी में बहा

दिया-उसके बाद दोनों ने ही उस मामले में चुप लगाना बेहतर समझा-क्योंकि मामला खुद-ब-खुद ही खत्म हो गया था। वह समाज की उलाहना का शिकार होने से बच गये थे-लेकिन अब इसे इत्तफाक या कुलभूषण की बदनसीबी ही कहा जायेगा कि उसी रात कोई ऑटो रिक्शा चालक चिना पहलवान को रीगल सिनेमा के पास से लेकर फरार हो गया-इतना ही नहीं, फिर उसने चिना पहलवान की लाश भी इण्डिया गेट पर डाल दी। इन दोनों इत्तेफाकों से एक भयानक रिजल्ट यह निकला कि इंस्पेक्टर चक्रधर की गलत इंवेस्टीगेशन शुरू हो गयी। चक्रधर का शक सीधा कुलभूषण पर जा पहुंचा-जबकि कुलभूषण ने इस डर की वजह से कि कहीं बच्चा होने वाली बात का रहस्य न खुल जाये-पुलिस से बचने का भी प्रयत्न किया। लेकिन आखिरकार जैसा कि सब जानते है मी लॉर्ड-वह पकड़ा ही गया। यही वो वजह थी-जो कुलभूषण ने इंस्पेक्टर चक्रधर के इतने खौफनाक टार्चर के सायने भी अपनी जुबान न खोली। और वह जुबान खोलता भी कैसे-उसे तो कुछ मालूम ही न था? कुलभूषण कैसे बताता कि चिना पहलवान के ब्रीफकेस में क्या था? उससे वह ब्रीफकेस किसने छीना या फिर अगर उसकी ऑटो रिक्शा मैं कोई ऐसी लड़की थी-जिसके बच्चा होने वाला था-तो कुलभूषण ने उसे किस हॉस्पिटल में भर्ती कराया आप ही बताओ, मी लॉर्ड-वह किस हॉस्पिटल का नाम बताता? क्योंकि हॉस्पिटल तक पहुंचने की तो नौबत ही न आयी थी। और कुलभूषण कानून के सामने सच्चाई इसलिये जाहिर नहीं करना

चाहता था-क्योंकि इससे शीतल की इज्जत की धज्जियां बिखर जाती। लेकिन अफसोस मी लॉर्ड-अफसोस-इंस्पेक्टर चक्रधर और अदालत ने कुलभूषण की इसी बेबसी को, इसी खामोशी त्ते उसका इकबालिया जुर्म मान लिया। जबकि यह बेकसूर है मी लॉर्ड-बिल्कुल बेकसूर। अगर इसका कोई अपराध है-तो वो ये है कि इसे शीतल से बेपनाह मोहब्बत है "

कोर्ट-रूम में अब बेचैनी-सी फैल गयी।

अब तमाम लोगों की समझ में आया कि यशराज खन्ना जैसा धुरंधर वकील शुरू में क्यों अपने क्लायण्ट के विरुद्ध जा रहा था।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर हिम्मत करके यशराज खन्ना की तरफ बढ़ा। "लेकिन अभी-अभी आपने जो कहानी सुनायी खन्ना साहब!" प्रॉसीब्यूटर बोला- "उसें सच कैसे माना जाये-जबकि खुद आपका क्लायण्ट कुलभूषण भी उस कहानी को मानने से इंकार कर रहा है?

"उसे वो सरासर झूठी कहानी करार दे रहा है?"

मुस्कराया खन्ना।

वह मुस्कान ऐसी थी-जैसे मजाक उड़ाते समय किसी के होठोंपर आ जाती है।

"आपने यह बड़ा बेतुका सवाल पूछा है प्रीसीक्यूटर साहब।"

"क...क्यों?" सकपकाया प्रीसीक्यूट।

"इस सवाल की जगह अगर आपने मुझसे यह सवाल पूछा होता कि मुझे इन तमाम बातों का कैसे पता चला-तो मैं समझता हूं कि आपकी ज्यादा काबलियत जाहिर होती।"

"क क्या मतलब?"

"जाहिर-सी बात है प्रॉसीक्यूटर साहब।" यशराज खन्ना बोला- "किसी भी काबिल वकील के दिमाग में सबसे पहले यही सवाल कौंधेगा कि जिस कहानी को खुद मुस्लिम झूठी करार पै रहा है-तो उस कहानी के बारे में मुल्जिम के डिफेंस काउंसल को किस तरह पता चला।"

"क...किस तरह पता चला?"

"शीतल से"

यशराज छ न्ता ने एक और भयंकर विस्फोट कर दिया था।

"श...शीतल!" विटनेस बाक्स में खड़े कुलभूषण के दिमाग में भी शीतल का नाम सुनकर धमाके से होने लगे-तेज धमाके।

"जी हां-मुझे यह सारी कहानी शीतल ने बतायी थी।" यशराज खन्ना एक बार फिर कोर्ट-रूम में गरजता आ बोला- "इतना ही नहीं-उसीं शीतल को मैं गवाह के तौर पर साथ भी लाया हूं-जो इस समय बाहर बैठी मेरा इंतजार कर रही है।"

अदालत में अब ऐसी हलचल मच चुकी थी-जैसी कभी-कभी चीटियों के झुण्ड में मच जाती है।"

"फौरन ही शीतल को कोर्ट-रूम में बुलाया गया।

विटनेस बॉक्स में खड़े होकर उसने सबसे पहले वही कसम खाई-जो प्रत्येक गवाह को कोर्ट में गवाही देने से पहले खानी पड़ती है।

उसने गीता पर हाथ रखकर कहा- "मैं जो कहूंगी-सच कहूंगी। सच के अलावा कुछ नहीं कहूंगी।"

"तुम्हारा नाम?" वह सवाल शीतल से पब्लिक प्रॉसीस्कर ने पूछा था।

"शीतल।"

"तुम्हारे पिता का नाम"

"स्वर्गीय भीमसिंह।"

"कहां रहती हो?"

"किशनपुरा में।"

"कुलभूषण को जानती हो?"

"जी हा।"

"कब से?"

"यही कोई एक साल हो गया।"

"सुना है।" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की आवाज थोड़ी संकोचपूर्ण

हो गयी- "तुम दोनो आपश मे प्यार भी करते हो?"

"हां।"

"क्या हां?"

"य...यह सच है।"

"सिर्फ प्यार-या कुछ और भी?" शीतल चुप।

"मेरे सवाल का जवाब दो।" पब्लिक प्रीसीक्यूटर इस बार चिल्लाया- "तुम दोनों सिर्फ प्यार करते हो या तुम दोनों का प्यार शरीर की उन सीमाओं को भी लाँघ गया है-जिसे ज्यादातर शादी के बादलांघा जाता है।

मत भूलो-खन्ना साहब ने तुम पर इन्जाम लगाया है कि तुम कुलभूषण के बच्चे की मां बनने वाली थीं?"

'ह...हां।" शीतल ने अपनी नजरें नीचे झुका लीं और वो हिम्मत करके धीमे स्वर में बोली- "य...यह सच है। म...मैं वाकई क....कुलभूषण के बच्चे की मां बनने वाली थी।"

"और क्या यह भी सच है।" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर और जोर से चिल्लाया - "कि बुद्धवार की रात तुम किसी हॉस्पिटल में भर्ती होने के लिये जा रही थीं?"

" ह...हां-यह भी सच है।"

"फिर तुम किसी हॉस्पिटल में 'गयी क्यों नहीं?"

" क क्योंकि बीच रास्ते में ही मेरी डिलीवरी हो गयी थी।" शीतल बोली-

"यह इत्तफाक है किए मेरे पेट से मरे हुए ब...बच्चे ने जन्म लिया-जिसे हमने उसी रात यमुना नदी में बहा दिया।"

"श...शीतल!" कुलभूषण-हिस्टीरियाई अंदाज में चिल्ला उठा-उसके नेत्र अचम्भे से फट पड़े थे-"य...यह तू क्या कह रही हे शीतल-शायद तेरा दिमाग खराब हो गया है।"

"दिमाग मेरा नहीं बल्कि तुम्हारा खराब हुआ है कुलभूषण।" शीतल कोर्ट-रूम में पहली

बार गला फाड़कर चिल्लाई- "जब मुझे अपनी इज्जत की फिक्र नहीं है-तो फिर तुम मेरी इज्जत के लिये अपनी जान की बाजी क्यों लगा रहे हो-क्यों जबरदस्ती फांसी के फंदे पर लटक जाना चाहते हो। तुम इस बात को कबूल क्यों नहीं कर लेते कि हमारे बच्चा हुआ था-आखिर हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं कुलभूषण-और प्यार कोई पाप तो नहीं होता।"

"कुलभूषण की खोपड़ी अंतरिक्ष में चक्कर खाद्यने लगी।

वह हैरान रह गया।

बुरी तरह हैरान।

"क्या आपको मुझसे कोई और सवाल पूछना है?" शीतल ने पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की तरफ देखा।

"न...नहीं-कुछ नहीं पूछना।"

शीतल विटनेस बॉक्स से निकलकर दर्शक दीर्घा मैं जा बैठी।

यह यशराज खन्ना के दिमाग का ही कमाल था-जो अब पूरा केस पलट चुका था।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर के हौसले पस्त हो चुके थे-लेकिन फिर भी उसने कुलभूषण को फंसाने के लिये अपनी तरफ-से एक आखिरी चाल और चली।

"'मी लॉर्ड-इससे पहले कि आप इस केस का कोई फैसला सुनायें। "पब्लिक प्रॉसीक्यूटर जज से सम्बोधित हुआ- "मैं आपसे एक अंतिम दरख्वास्त और करना चाहूंगा।"

"कर सकते हो।"

"मी लॉर्ड।" प्रॉसीक्यूटर पुन: थोड़े आवेश में चिल्लाया- "अभी-अभी केस ने जो नाटकीय मोड़ लिया-और मेरे काबिल दोस्त यशराज खन्ना साहबने जो नई कहानी अदालत के सामने पेश की, उस कहानी के सिर्फ दो चश्मदीद गवाह हैं। पहला गवाह-कुलभूषण! दूसरी गवाह-शीतल। जहां तक कुलभूषण का सवाल है-वह शीतल के बच्चा होने वाली कहानी को पूरी तरह झूठ का करार दे रहा है, जबकि शीतल उसी कहानी को सच बता रही है। यशराज खन्ना साहब ने कुलभूषण की 'इंकार' के पीछे यह जो तर्क दिया है कि वो शीतल की इज्जत बचाने के लिये झूठ बोल रहा है-मैं मानता हूं कि ऐसा हो सकता है। परन्तु एक संदेह फिर भी रह जाता है मी लॉर्ड-और वो सन्देह ये है कि क्या ऐसा नहीं हो सकता-खन्ना साहब और शीतल ने मिलकर कुलभूषण को बचाने के लिये बच्चा पैदा होने वाली कहानी गढ़ ली हो। मी लॉर्ड!" पब्लिक प्रीसीस्कर और बुलन्द आवाज में चिल्लाया-मैं यह कहना चाहता हूं कि अभी-अभी अदालत में जो कहानी सुनाई गयी-वह महज एक बेहद काबिल वकील के तेज दिमाग की उपज भी हो सकती है- कनून की आखों में धूल झौंकने की यह एक साजिश भी हो सकती है। और हकीकत की तह तक पहुंचनेका अब सिर्फ एक उपाय है मी लॉर्ड-सिर्फ एक उपाय।

"क...कौन-सा उपाय?" जज के मुंह से भी संस्पैसफुल स्वर निकला।

"मैडीकल चैकअप।" इस बार सचमुच पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने भी धमाका कर दिया था।

"म...मैडीकल चैक अप!"

"यस मी लॉर्ड!" प्रॉसीक्यूटर चीखता चला गया- "मैं मैडीकल चैकअप की बात कर रहा हूं। मेरी अदालत से दरखास्त है कि शीतल का किसी लेडी डॉक्टर के जरिये से मैडीकल चैकअप कराया जाये। अगर शीतल के सचमुच कोई बच्चा हुआ है-वो प्रेग्नेट हुई है-तोयह बात मैडीकल चैकअप के द्वारा बिल्कुल स्पष्ट हो जायेगी।

कुल मिलाकर दूध का दूध और पानी का पानी करने के लिए इस समय हमारे पास सिर्फ एक हथियार बचा है-और वो हथियार है मैडीकल चैकअप। अदालत जल्द-से-जल्द शीतल का मैडीकल चैकअप कराये और उसके बाद ही इस केस के सम्बन्ध में कोई फैसला करे।"

शीतल के दिल-दिमाग पर सन्नाटा-सा खिंचता चला गया। उसे अपनी सारी कोशिशें बेकार होती नजर आयीं।

यूं लगा-जैसे अब कुलभूषण को फांसी पर लटकने से कोई नहीं बचा सकता।

परन्तु नहीं-पब्लिक प्रॉसीक्यूटर का मुकाबला आज यशराज खन्ना से था।

वो यशराजखन्ना-जो प्रॉसीक्यूटर की उस बात को सुनकर जरा भी विचलित न हुआ।

"मी लॉर्ड।" यशराज खन्ना मुस्कराता हुआ बोला- "मैं जानता था कि प्रॉसीक्यूटर साहब अदालत में इस प्वॉइण्ट को जरूर उठायेंगे-अदालत का कीमती वक्त बर्बाद न हो, इसलिये मैंने ओज सबूत ही कोर्ट आने से पहले ऑल इण्डिया मेडीकल इंस्टीट्यूट की लेडी डॉक्टर मधुसूदन सान्याल से शीतल का मैडीकल चैकअप करा लिया था। यह है लेडी डॉक्टर द्वारा दी गयी वह मैडीकल रिपोर्ट-जिसमें बिस्कूल साफ-साफ लिखा है कि शीतल पिछले दिनों गर्भवती रह चुकी है।"

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने बेहद हैरत अंगेज स्थिति में मैडीकल रिपोर्ट को पढ़ा।

उसमें वही सब कुछ लिखा था-जो यशराज खन्ना ने बयान किया।

जज नें भी वह रिपोर्ट पड़ी।

"मी लॉर्ड!" लेकिन पब्लिक प्रॉसीक्यूटर भी जैसे आज हार न मानने की सौगन्ध खा चुका था- "मैं फिर भी शीतल का एक बार और मैडीकल चैकअप कराना चाहता हूं।"

"क्यों?" यशराज खन्ना ने पूछा- "आप शीतल का दोबारा चैकअप क्यों कराना चाहते हैं?"

"क्योंकि मुझे इस मैडीकल रिपोर्ट पर भी संदेह है मी लॉर्ड। मुझे शक है कि यह रिपोर्ट लेडी डॉक्टर और यशराज खन्ना की मिली भगत का एक नमूना हो सकती है।"

"आई ऑब्जेक्ट मी लॉर्ड।" यशराज खन्ना इस बार इतनी जोर से चिल्लाया कि कोर्ट-रूम की दीवारें तक दहलती-सी लगीं- "पब्लिक प्रॉसीब्यूटर साहब सिर्फ मेरे ऊपर ही नहीं बल्कि एक लेडी डॉक्टर की ईमानदारी और उसके नोबेल प्रोफेशन पर भी इल्लाम लगा रहे हैं। अगर वो सोचते हैं कि यह मैडीकल सार्टिफिकेट जाली है-तो वह खुशी-खुशी शीतल का दूसरा चैकअप करा सकते हैं-मुझे कोई ऐतराज नहीं। लेकिन वो एक बात याद रखें।" यशराज खन्ना की आवाज में एकाएक चेतावनी का पुट आ गया- "अगर दूसरी मैडीकल रिपोर्ट में भी यही बात साबित होती है, तो मैं लेडी डॉक्टर की तरफ से प्रॉसीक्यूटर साहब पर न सिर्फ मान-हानि का दावा दायर करूंगा बल्कि इस वक्त इन्होंने अपने जिस्म पर यह जो काला चोगा पहन रखा है-उसे भी इसी भरी अदालत के अंदर उतरवा लूंगा। मी लॉर्ड-चूंकि इन्होंने यह इलजाम लेडी डॉक्टर की कर्तव्यपरायणता और उसकी ईमानदारी पर लगाया है-इसलिये यह इल्लाम क्षमा के काबिल नहीं-माफी के काबिल नहीं।"

पब्लिक प्रॉसीस्कर के छक्के छूट गये।

उसकी एक सांस ऊपर-तो दूसरी नीचे रह गयी।

"मिस्टर पब्लिक प्रॉसीस्कर!" जज ने सरकारी वकील .की तरफ देखा- "क्या आप अभी भी शीतल का दूसरा मैडीकल चैकअप कराने के इच्छुक हैं?"

"ज...जी नहीं-बिल्कुल नहीं।"

यशराज खन्ना .के होठों पर विजयी मुस्कान दौड़ गयी।

उसके बाद जज ने अपना फैसला सुनाया। "मिस्टर कुलभूषण पर लगाया गया कोई भी अपराध अदालत में साबित नहीं हो सका है-इसलिये ये अदालत मिस्टर कुलभूषण को चिना पहलवान की हत्या के इल्लाम से बाइज्जत रिहा करती है। परन्तु मिस्टर कुलभूषण ने दिल्ली परिवहन निगम की बस में बिना टिकिट यात्रा करके जरूर कानून का उल्लंघन किया है-इसलिये यह अदालत मिस्टर कुलभूषणको एम० वी० एक्ट 1988 की धारा 178 के अन्तर्गत बिना टिकिट यात्रा करने के अपराध में पांच सौ रुपये जुर्माना या पंद्रह दिन बामुशक्कत सख्त कैद की सजा सुनाती है।"

यशराज खन्ना ने फौरन कोर्ट में जुर्माने की राशि जमा कर दी।

इस तरह कुलभूषण कारन के शिकंजे में फंसने के बावजूद बच निकला।

पहली ही पेशी पर बच निकला।

मगर नहीं!

कुलभूषण बचा कहां था।

सच्चाई तो ये है कानून के शिकंजे से निकलने के बाद वो एक और ऐसे भयानक शिकंजे में जा फंसा-कि उस शिकंजे में फंसने से बेहतर तो यही था, वो कानून के शिकंजे में फंसा रहता।

बहरहाल-कुलभूषण के साथ हृदयविदारक और आश्चर्य से भरी घटनाओं का दौर जारी रहा।

आगे भी ऐसी-ऐसी सनसनीखेज घटनायें उसके साथ घटी-जिन्होंने उसे हिलाकर रख दिया।

"यह तुमने क्या किया शीतल।" अदालत के प्रांगण में आते ही कुलभूषण शीतल पर बरस पड़ा था- "इतना बड़ा झूठ क्यों बोला तुमने?"

"तो और क्या करती मैं?" शीतल ने कहा- "अदालत तुम्हें फांसी की सजा सुना देती और मैं चुप रहती-खामोश रहती ?"

ल...लेकिन इतना बड़ा झूठ शीतल।" कुलभूषण की आवाज कंपकंपायी- "अब दुनिया क्या कहेगी-क...कितनी उंगलियां उठेंगी तुम्हारे चरित्र पर?"

"मुझे लोगों की परवाह नहीं भूषण।" शीतल ने अनुरागपूर्ण लहजे में कहा-"मुझे सिर्फ तुम्हारी परवाह है-सिर्फ तुम्हारी। मैं इस दुनिया के बगैर रह सकती हूं-म...मगर तुम्हारे बिना नहीं रह-सकनी।"

"श...शीतल!" कुलभूषण की आवाज कंपकंपा उठी।

"और फिर एक झूठ से जिंदगी कहीं ज्यादा बड़ी होती है। भूषण।"

"ल...लेकिन मैं पूरी तरह निर्दोष कहां था।" कुलभूषण का स्वर आत्मग्लानि से भर गया- " कानूनसे छिपकर लाश ठिकाने लगाना भी तो आखिर एक अपराध ही है।"

"नहीं है अपराध।" शीतल बोली- "ऐसे अपराध-दुनियां करती हे, भूषण।

तुमने सिर्फ लाश ठिकाने लेगायी थी-वह भी दौलत के लिये-धनवान बनने के लिये। दुनिया में ऐसा कौन आदमी है-जो दौलत के लिये पाप नहीं करता।"

कुलभूषण हैरान निगाहों से शीतल को देखने लगा।

"ल...लेकिन तुमने खन्ना जैसे बड़े वकील की फीस कहां से भरी?"

"म...मैंने फीस भरी?" शीतल चौंकी।

"नहीं तो किसने भरी?"

"मुझे क्या पता-किसने भरी।" शीतल की आवाज में साफ-साफ हैरानी थी- "मैंने तो उसे एक पैसा भी नहीं दिया।"

कुलभूषण के दिमाग में पुन: धमाके से होने लगे।

उसे अपने कानों पर एकाएक यकीन न हुआ।

एक नये 'मायाजाल" की शुरुआत हो चुकी थी।

"दरअसल यशराज खन्ना खुद मेरे पास किशनपुरा में आया था।" शीतल ने आगे बताया- "मैं तो उसे जानती भी नहीं थी-उसने मुझसे कहा कि कुलभूषण को अदालत से रिहा कराने के लिये उसे मेरी गवाही की जरूरत है-मैं फौरन तैयार हो गयी-इंकार का प्रश्न ही नहीं था।"

"उसने तुमसे अपनीफीस वगैहरा के बा मेंकोईबातनहीं की?" कुलभूषण का कौतूहल बढ़ता जा रहा था।

"नहीं-उसने मुझसे इस बारे में कोई बात नहीं की। यशराज खन्ना ने बस इतना कहा कि वो तुम्हारा केस लड़ रहा है-मुझे तो उस रिपोर्ट के बारे में भी कुछ मालूम न था, जिसे यशराज खन्ना ने अदालत में पेश किया। मुझे गवाह के तौर पर जो बान देना था-खन्ना ने उस बयान की डिटेल भी मुझे बीच रास्ते में अपनी कार के अंदर बतायी।''

कुलभूषण सन्त रह गया।

बिल्कुल सन्त।

उसे लगने लगा- होने वाला है।

कुछ बेहद चौंका ताने वाला।

तभी कुलभूषण ने यशराज खन्ना को कोर्ट-रूम से बाहर निकलते देखा-वह अपने कुछ वकील मित्रों और प्रशंसकों से घिरा उसी तरफ बढ़ा चला आ रहा था।

कुलभूषण ने उस तरफ तेजी से कदम बढ़ाये।

"वकील साहब!" कुलभूषण यशराज खन्ना के सामने पहुंचकर बोला- "आपने बिना फीस लिये मेरा जो केस लड़ा-यह अहसान मैं आपका जिन्दगी भर नहीं उतार सकता-आप सचमुच फरिश्ते हैं।"

"म...मैंने बिना फीस लिये केस लड़ा " यशराज खन्ना के नेत्र यूं हैरानी से फटे, मानो उसने कोई बहुत चौंका देने वाली बात सुन ली हो- "इस तरह का अहसान तो मैंने आज तक अपनी पूरी लाइफ में कभी किसी पर नहीं किया बंधु-आज से पांच साल पहले जब मैंने जिंदगी में पहली बार वकील का यह काला चोगा पहना था-तभी एक सौगन्ध खाई थी कि में बिना फीस लिये अपने सगे बाप का भी केस नहीं लड़ेगा और अपने उस फैसले पर मैं आज तक अटल हूं।

" इ...इसका मतलब आपको फीस मिल गयी कुलभूषण के मुंह से सिसकारी छूटी।

'बिल्कुल मिल गयी बंधु-अगर मुझे फीस न मिलती या अगर कोई तुम्हारे केस पर अपवाइंट न करता-तो मुझे भला तुम्हारा लड़ने की क्या जरूरत थी?" मैं एक क्रिमनल लॉयर हूं बंधु-कोई समाज सेवक थोड़े ही हूं।"

ल...लेकिन मेरा केस लड़ने की आपको कितनी फीस मिली ?"

"पचास हजार रुपये।"

प...पचास हजार। "कुलभूषण के नेत्र अचम्भे से उबले। "संभल के।" यशराज खन्ना ने उसे फौरन थाम लिया था- "संभाल के बंधु-पचास हजार का नाम सुनकर शायद तुम्हें मिर्गी का दौरा पड़ गया लगता है।"

"ल...लेकिन आपको इतनी मोटी रकम किसने दी साहब? क...किसने आपको मेरे केस पर अप्वॉइंट किया?"

"एक हमारे-तुम्हारे जैसा ही सिम्पल-सा आदमी था बंधु-उसी ने मुझे तुम्हारे केस पर अप्वॉइंट किया था।"

"अ...आप मुझे उस आदमी का नाम बता सकते हो साहब-उसका एड्रेस बता सकते हो?"

"क्या करोगे उसका नाम और एड्रेस जानकर?"

"उ...उसका धन्यवाद अदा करूंगा साहब।" कुलभूषण बोला- "उस फरिश्ते को दण्डवत प्रणाम करूंगा-जो उसने मेरे मामूली आदमी की जिंदगी बचाने के लिए अपने पचास हजार रुपये दांव पर लगा दिये। वैसे भी कम-से कम एक बार मुझे उस फरिश्ते की सूरत तो देखनी ही चाहिये।"

कह तो तुम ठीक रहे हो, बन्धु। यशराज खन्ना ने अपना सोने हे फ्रेम वाला ऐनक दुरुस्त किया।

यही वो पल था-जब किसी वाहन का जोर-जोर सें दो बार हॉरन बजा।

वह हॉरन बेहद खास स्टाइल में बजाया गया था।

यशराज खन्ना और कुलभूषण-दोनों ने चोककर हीरन की दिशा में देखा।

कोर्ट के कच्चे प्रंगण में ही सफेद रंग की एक मारुति वैन खड़ी थी-उसी चेन में बैठे व्यक्ति ने जोर-जोर से उसने दो बार हॉरन बजाये थे।

खन्ना से दृष्टि मिलते ही वह मुस्कराया।

"लो बंधु!" खन्ना के होठो पर भी मुस्कान दौड़ी थी- "तुम अभी मुझसे उस व्यक्ति के बारे में पूछ रहे थे न-जिसने मुझे तुम्हारे केस पर अप्वॉइण्ट किया और फीस के पचास हजार रुपये दिये-यही वो व्यक्ति है।"

कुलभूषण ने आश्चर्यचकित निगाहों से उस व्यक्ति को देखा। वह-एक हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला कद्दावर जिस्म का आदमी था-उसने शरीर पर शानदार थ्री पीस सूट पहना हुआ था और आखों पर काले रंग का सनग्लास चढ़ा रखा था।

कुलभूषण के लिये वह बिल्कुल अजनबी आदमी था।

उसने जीवन में पहले कभी उसकी शक्ल तक नहीं देखी थी।

"इ...इस आदमी ने आपको मेरा केस लड़ने के लिये अप्यॉइंट किया?"

"हां।

" ल...लेकिन मेरा तो इससे कोई वास्ता नहीं।"

"तुम्हारा इससे कोई वास्ता न सही बंधु-मगर हो सकता है कि उसका तुम्हारे से कोई वास्ता हो।"

तभी मारुती वैन में बैठे उस आदमी ने फिर जोर-जोर से दो बार हॉरन बजाया।

"जाओ भई!" खन्ना ने उसका कंधा थपथपाया- "वह तुम्हें ही बुला रहा है।"

" ल...लेकिन...।"

"अब जो सवाल पूछना हो-उसी से पूछना बंधु तुम्हारे सवालों के जवाब वही बेहतर दे सकता है।'

कुलभूषण मरे-मरे कदमों से वैन की तरफ बढ़ा।

न जाने क्यों उसे किसी भारी खतरे का अहसास हो रहा था। "और सुनो।"

खन्ना की आवाज सुनकर कुलभूषण के कदम फिर ठिठके। "मैंने तुम्हें बचाने के लिए कोर्ट में जो मनगढंत कहानी सुनायी थी-मैं समझता हूं कि उसमे तुम्हारी भावनाओं को काफी ठेस पहुंची है-उसके लिये मैं तुमसे माफी चाहता हूं। लेकिन अगर सच पूछते हो-तो तुम्हें बचाने के लिये इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता भी न था। क्योंकि काफी सबूत तुम्हारे खिलाफ अदालत में इकट्ठे हो गये थे...।"

यशराज खन्ना ने आगे भी कुछ कहा-परन्तु वह सब कुलभूषण ने न सुना।

क्योंकि तभी उसने बल्ले को बड़े खतरनाक अंदाज में लम्बे फल वाला चाकू खोलकर खन्ना की तरफ लपकते देख लिया था।

उसके चेहरे पर हैवानियत बरस रही थी।

वह साक्षात दरिन्दा नजर आ रहा था। "खन्ना साहब !" कुलभूषण चीखता हुआ यशराज खन्ना के ऊपर गिद्ध की तरह झपटा- "ब...बचो खन्ना साहब।"

लेकिन वह खन्ना को बचा पाता-उससे पहले ही बल्ले उसके सिर पर जा चढ़ा।

अगले ही पल बल्ले का चाकू हवा में इस तरह कौंधा-जैसे आकाश में बिजली कौंधी हो-फिर वो पलक झपकते ही खन्ना के सीने में जा घुसा।

"न...नहीं।!"

चिंघाड़ उठा खन्ना-वह भैंसे की तरह डकराया।

उसके हाथ में मौजूद फाइल छूट गयी और उसके अंदर दबे कागज हवा में इधर-उधर उड़े।

जबकि बल्ले ने एक ही वार में सब्र नहीं किया था।

वह बेहद जुनूनी अंदाज में एक के बाद एक खन्ना के ऊपर चाकू से वार करता रहा।

खन्ना की दहशतनाक चीखें गूंजती रहीं- गूंजती रहीं।

"साले!" साथ ही साथ बल्ले चिंघाड़ता भी जा रहा था- "मेरे चाचा के हत्यारे को बचाने के लिये झूठ बोलता है-नहीं छोड़ेगा मैं आज तुझे-नहीं छोड़ेगा। तू कानून का फैसला बदल सकता है हरामजादे-लेकिन बल्ले का नहीं। और ले-और ले!" भीषण गर्जना करते हुए बल्ले का चाकू वाला हाथ बिल्कुल मशीनी अंदाज में खन्ना की छाती पर पड़ने लगा।

खून में लथपथ हो गया यशराज खन्ना।

कोर्ट प्रांगण में खड़ा हर व्यक्ति स्तब्ध!

भौंचक्का।

किसी में भी इतनी हिम्मत न हुई-जो वह आगे बढकरर बल्ले को दबोचे।

उधर-झाक्षात को बरा नाग की तरह फुफकारता हुआ बल्ले फिर कुलभूषण की तरफ पलटा।

उफ!

उसकी आखों में खून-ही-खून था।

छक्के छूट गये कुलभूषण के।

जिस्म का एक-एक रोआ खड़ा हो गया।

"साले-हलकट!" बल्ले अर्द्धविक्षिप्तों की भांति चिंघाड? "मैं आज तुझे भी नहीं छोडूंगा-तुझे भी नहीं।"

"न...नहीं-नहीं।"

कुलभूषण हाय-तौबा मचाता वहां से अंजानी दिशा में भागा।

उसके पीछे-पीछे बल्ले लपका।

सचमुच आज उस पर बेपनाह जुनून सवार था।

कुलभूषण को अपना दिल दहलता-सा लगा।

उसकी रूह फना हो रही थी।

"म...मैंने चिना पहलवान का खून नहीं किया।" कुलभूषण भागता हुआ दहशतजदां आलम में चिल्ला रहा था- "म...में बेकसूर हूं-म...मैं निर्दोष हूं।"

उसी क्षण धुंआधम रफ्तार से दौड़ती हुई सफेद रंग की वही मारुति वैन कुलभूषण के नजदीक आकर रुकी।

फिर धड़ाक से उसका स्लाइडिंग डोर खुला।

"अदंर आ जाओ।" साथ ही वही अजनबी शख्स चिल्लाया था। कुलभूषण फौरन लपककर वैन में सवार हो गया।

उसके बाद मारुति वैन जिस तरह धुंआधार रफ्तार से दौड़ती हुई उसके नजदीक आयी थी-वैसी ही धुंआधार रफ्तार से आगे दौड़ती चली गयी।

कुलभूषण ने पीछे मुड़कर देखा-तो पाया कि इंस्पेक्टर चक्रधर एकाएक किसी जिन्न की तरह बेपनाह फुर्ती से दौड़ता हुआ कोर्ट के प्रांगण में प्रकट हुआ था-फिर वो वहशी बल्ले के उपर एकदम गिद्ध की तरह झपटा।

कोई दस मिनट तक सफेद रंग की मारुति वैन दिल्ली की वैन विभिन्न सड़कों पर दौड़ती रही।

कुलभूषण जो थोड़ी देर पहले बुरी तरह हॉफ रहा था-बेहद डरा हुआ था-वह भी अब अपने आपको काफी हद तक संतुलित कर चुका था।

मौत कैसे उसके करीब से गुजर गयी थी।

कैसा वो आज मरते-मरते बचा था।

कुलभूषण के होश जब थोड़े से संतुलित हुए-तो उसने उस अजनबी व्यक्ति को दोखा- देखा-जों ड्राइव कर रहा था।

अगर उस अजनबी के शानदार कपड़ों को नजर अंदाज कर दिया जाये-तो वह कोई धनवान कम तथा कोई गुण्डा मवाली ज्यादा नंजर आता था।

"क्या बात है बिरादर- यूं घूरकर क्या देख रहा है?" अजनबी थोड़े कठोर लहजे में।

"क कुछ नहीं।"

"फिर भी-कुछ तो।"

"द...दरअसल मैं यह याद करने की कोशिश कर रहा हूं साहब-मैंने आपको आज से पहले कहां देखा है-या फिर हमारे बीच क्या सुम्बन्ध है।"

मुस्कराया अजनबी।

" याद आया कुछ?"

"न...नहीं साहब-कुछ याद नहीं आ रहा।"

"मैं तुम्हारी कुछ मदद करूं?"

क...किस मामले में?"

"तुम्हारी याददाश्त वापस लाने में-अपने आपको आइडेण्टीफाई करने में।"

"हां-हां क्यों नहीं। जरूर मदद करो।"

"तो सुनो बिरादर-तुम खामखाह अपने दिमाग पर जोर डाल रहे हो-ख्वामखाह परेशान हो रहे हो।"

"क...क्यों?"

"क्योंकि बिरादर-तुम्हारे और मेरे बीच कोई सम्बन्ध नहीं है-हम दोनों आज से पहले कभी मिले भी नहीं -फिर ऐसी परिस्थिति में तुम अपने दिमाग पर जोर डालकर खामखाह परेशान ही तो हो रहे हो।"

कुलभूषण दंग रह गया।

मारुति वैन अभी भी तूफानी गति से सड़क पर दौड़ रही थी।

"अ...आपके और मेरे बीच सचमुच कोई सम्बन्ध नहीं?" कुलभूषण ने पुन: हैरत अंगेज स्वर में पूछा।

"बिल्कुल भी नहीं बिरादर-हमारे बीच सम्बन्ध क्या खाक होना है-मैं तो आज तुम्हारी सूरत भी पहली तार देख रहा हूं।"

कुलभूषण की कौतूहलता अब अपनी चरम सीमा पर पहुंच गयी।

"अ...अगर हमारे,बीच कोई सम्बन्ध नहीं साहब।" कुलभूषण सनसनाये स्वर में बोला- "तो आपने मुझे छुड़ानेके लिये यशराज खन्ना जैसे महंगे वकील को अम्बाइण्ट क्यों किया-उसे पचास हजार रुपये की विपुल धनराशि फीस के तौर पर क्यों दी?"

"यह दुनियां बड़ी निराली है बिरादर।" अजनबी मुस्कराकर बोल "इस दुनियां के दसतूर बड़े निराले है यहा कब कोन किस पर मेहरबान हो जाये-कुछ पता नहीं चलता।"

"ल...लेकिन मुझे यह तो मालुम पड़े साहब!" कुलभूषण की कौतूहलता बढ़ती जा रही थी- " आपने मेरे ऊपर वह रकम खर्च क्यों की?"

"वजह तो मुझे भी नहीं मालूम-असली वजह तो उसे ही मालूम है-जिसने यह सारा इंतजाम किया है। "

"य...यानी।" कुलभूषण उछल पड़ा- "यानी वह व्यक्ति कोई और है-जिसने मुझे आजाद कराया है?"

"हां।" अजनबी सहज भाव से बोला- "वह व्यक्ति कोई और ही है। मैंने यशराज खन्ना को तुम्हारे केस पर अप्वॉइंट जरूर किया था-लेकिन मुझे उसको अप्वॉइंट करने का आदेश किसी औरु से मिला था। इसी प्रकार मैंने यशराज खन्ना को तुम्हारा केस लड़ने के लिए पचास हजार की रकम दी जरूर-लेकिन वो रकम मेरी जेब से नहींनिकली थी। मैं तो सिर्फ एक माध्यम हूं-मैंने तो महज एक बिचौलिये की भूमिका निभाई है।"

कुलभूषण के दिमाग में जोर-जोर से कोई चक्की-सी चलने लगी।

उसे लगने लगा-अगर हालात ऐसे ही बने रहे, तो उसे पागल होने से कोई नहीं बचा सकता।

"ल...लेकिन फिर वह कौन है साहब।" कुलभूषण बुरी तरह झल्लाये स्वर में बोला- ' "जिसने मेरी मदद की-जिसने मुझे आजाद कराया?"

"सब्र रख बिरादर-थोड़ी देर सब रख। अभी मालूम हो जायेगा कि वो समाज सेवक कौन है-वो महान रहनुमा कौन है।"

यही वो पल था-जब अजनबी ने' मारुति वैन एक् बेहद निर्जन-सी जगह पर ले जाकर रोक दी।

फिर उसने कार के डैश बोर्ड के अंदर से काले रंग की एक चौड़ी पट्टी निकाल कर कुलभूषण की तरफ बढ़ाई- ' लो इस काली पट्टी को अपनी आखों पर बांध लो और खामोशी से सीट पर लेट जाओ।"

"प...पट्टी आखों पर बांध लूं?" कुलभूषण का दिल जोर से घड़ा।

हां।

"लेकिन क्यों? "

"क्योंकि जिस महान समाज सेवक ने तुम्हारी मदद की है-उससे जो भी व्यक्ति मिलता है इसी तरह...मिलता है।"

"अ...आखों पर पट्टी बांधकर?" कुलभूषण के नेत्र और ज्यादा हैरानी से फटे।

"हां।"

"क...किसी से मिलने का यह कौन-सा तरीका हुआ भला?

" बिरादर!" अजनबी एकाएक नाटकीय लहजे में बोला- "बड़े लोगों की हर बात अलग होतीं है-हर तरीका जुदा होता। उनका ऐसा ही तरीका है। चलो-जल्दी से आखों' पैर पट्टी बांधो।"

उस पल कुलभूषण को न जाने क्यों फिर ऐसा अहसास हुआ कि वह किसी नये 'चक्कर' में फंसने जा रहा है।

"चक्कर के नाम से ही उसकी रूह कांप उठी।

"अब जल्दी करो बिरादर।"

"न...नहीं।" कुलभूषण भी शीघ्रतापूवक बोला- "मुझे यह काली पटटी अपनी आखों पर नहीं बांधनी।"

"कंसे नहीं बांधनी पट्टी।" अजनबी इस बार थोड़े सख्त लहजे में बोला- "अगर पट्टी नहीं बांधोगे, तो उस समाज सेवक से किस तरह मिलोगे- जिसने तुम्हारी मदद की?"

"मुझे नहीं मिलना किसी से।" कुलभूषण एकाएक वैन के स्ताइडिंग डोर की तरफ झपटा- " उन्होने मेरी जो मदद की-उसके लिये तुम उनसे मेरा धन्यवाद बोलना।"

कुलभूषण स्लाइडिंग डोर खोलकर वैन से बाहर हो पाता।

"साले-तेरी तो...।

उससे पहले ही अजनबी ने उसे एक बड़ी मोटी, भद्दी सी गाली बकी तथा वह बेपनाह फुर्ती से उसके ऊपर यूं झपटा-जैसे चील मांस के लोथड़े पर झपटती।

पलक झपकते ही कुलभूषण की शर्ट का कॉलर अजनबी के फौलादी शिंकजे में था।

फिर उसने कुलभूषणके शरीर को झटका दिया-तो वह पीछे को उछलकर धड़ाम से वैन की सीट पर जा गिरा।

अजनबी फौरन उसकी छाती पर चढ़ बैठा।

उसने उसके हाथों को मुक्कों से बांध दीं।

"मैं देखता हूं साले।" अजनबी ने उसे भस्म कर देने वांली नजरों से घूरा-"तू इस काली पट्टी को कैसे अपनी आखों पर नहीं बांधता।"

"मुझे नहीं बांधनी पट्टी।" कुलभूषण चिल्लाया-"छोड़ो मुझे।"

"चिल्ला मत-चिल्ला मत।"

"न...नहीं।" कुलभूषण और जोर से हलक फाड़कर चिल्ला उठा- "छोड़ दो मुझे-वरना मैं चीख-चीखकर भीड़ जमा कर लूंगा।" वह अजनबी के शिकंजे में मचल उठा।

उसने हाय-तौबा मचा डाली।

ठीक तभी आवेश में बुरी तरह भिन्नाये अजनबी का हाथ हवा में लहराया तथा फिर धड़ाक से कुलभूषण की खोपड़ी पर पड़ा।

तुरन्त ही कुलभूषण की बोलती बन्द हो गयी।

उसके नेत्र दहशत से फट पड़े और गर्दन दायीं तरफ लुढ़क गयी।

इसमें कोई शक नहीं-तमाशा तो सचमुच अब शुरू हुआ था।

कुलभूषण की चेतना जब धीरे-धीरे लौटनी शुरू हुई-तो उसने महसूस किया कि उसका शरीर टब के पानी मे पड़ा हिचकौले-सा खा रहा है।

उसने आहिस्ता-आहिस्ता पलकें खोल दीं।

फिर वह टब में ही एकदम से उछलकर खड़ा हो गया-फौरन उसके दिमाग को झटका लगा।

शक्तिशाली झटका।

उसके सामने अजनबी के साथ जो दो और व्यक्ति खड़े थे-उन्हें वहां देखकर वो हैरान रह गया।

वह एक काफी बड़ा हॉल था-जिसकी छत डबल हाइट वाली थी और फर्श काले पत्थरों का था।

उस हॉलके बीचों-बीच वो विशाल टब रखा था-जिसमेंवो थोड़ी देर पहले तक किसी लाश की तरह तैर रहा था। हॉल से जुड़े हुए ही वहां कई सारे कमरे भी थे।

"त...तुम।" कुलभूषण अक्ल-सूरत से ही बेहद घाघ नजर आ रहे एक व्यक्ति की तरफ उंगली उठाकर बोला- "त...तुम तो सेठ दीवानचन्द ज्वैलरी शॉप के वही सेल्समैन हो न-जिसके पास मैं उस दिन नटराज की एक मूर्ति बेचने गया था?"

मुस्कराया सेल्समैन-उसकी मुस्कान भी बेहद खतरनाक थी।

"और तुम।" तक्षण कुलभूषण की उंगली चालीस-पैंतालीस साल के एक अन्य व्यक्ति की तरफ उठी- "त...तुम सर्राफों के सर्राफ सेठ दीवानचन्द हो?"

वह भी आहिस्ता से मुस्करा दिया।"

"मै पूछता हूं।" कुलभूषण चिल्ला उठा- "मुझे यहां क्यों लाया गया है-क्यों लाया गया है?" झुंझलाहट में कुलभूषण ने दौड़कर अजनबी का गिरेहबान पकड़ लिया और उसे बुरी तरह झंझोड़ डाला- "जवाब दो-तुम तो उस व्यक्ति के पास ले जाने वाले थे-जिसने मेरी मदद की- कानून के शिकजे से छुड़ाया?"

अजनबी ने कुलभूषण के हाथों से अपना गिरेहबान छुडाया तथा फिर उसे इतना तेज झटकादिया कि वो सीधा सेठ दीवानचन्द के कदमों में जा गिरा।

"सेठ दीवानचन्द ही वह व्यक्ति है। उसी पल अजनबी ने तेज धमाका-सा किया-

"जिन्होंने तुम्हारी मदद की।"

"क...क्या?"

हतप्रभ रह गया कुलभूषण।

आश्चर्यचकित।

'त...तुमने!" वह हैरत अंगेज निगाहों से सेठ दीवानचन्द को देखता हुआ बोला- "तुमने मेरी मदद की-त...तुमने मुझे आजाद कराया?"

"हां।"

"लेकिन क्यों क्यों तुमने मेरी मदद की-क...क्यों मुझे आजाद कराया?"

" वडी तू पागल हुआ है नी।" सेठ दीवानचन्द सिंधी भाषा में ही बोला- "वडी तू अपने आपको आजाद समझ रहा है कुलभूषण साई!"

"क...क्या मतलब?"

"मतलब बिल्कुल साफ है साई-तू आजाद हुआ कहां है? वडी हमारी मेहरबानी से तो सिर्फ जगह बदली हुई है। पहले तू पुलिस का मेहमान था-अब हमारा मेहमान है। फिर इसमें तेरी मदद कहां से हो गयी।"

कुलभूषण के नेत्र दहशत से फैल गये।

"य...यानी तुमने मुझे यहां कैद करके रखा है?"

"बिल्कुल।" सेठ दीवानचन्द के होठों पर मजाक उड़ाने वाली मुस्कान दौड़ी- " वडी कुलभूषण साई-हमने तुझे यह कैद इसलिये दी है-ताकि हम तुझसे उन सवालों के जवाब उगलवा सकें-जिन्हें इंस्पेक्टर चक्रधर भी न उगलवा सका।"

"क...कौन से सवालों के जवाब?" कुलभूषण की आवाज कंपकंपायी।

" वडी यही कि तूने चिना पहलवान जैसे धुरंधर आदमी की हत्या क्यों की? किसने तुझे उसकी हत्या करने के लिये प्रेरित किया? यह काम तेरे जैसा सिंगल सिलेण्डर का आदमी अकेले तो हर्गिज भी नहीं कर सकता-मुझे अपने साथी का नाम बता साई! वडी उस हरामी के बच्चे का नाम बता-जिसने तुझसे यह खतरनाक जुर्म कराया?"

कुलभूषण के पूरे शरीर में सनसनी दौड़ गयी।

वह आतंकित हो उठा। कहने की जरूरत नहीं कि कुलभूषण एक नये 'चक्कर' में फंस चुका था।

"वडी जल्दी बोल साई!' दीवानचन्द की त्यौरियां चढ़ गयी- "जल्दी जवाब दे-किसके कहने पर तूने चिना पहलवान का खून किया नी?"

कुलभूषण झुंझला उठा- " कौन कहता है मैंने चिना पहलवान का खून किया है

"वडी मैं कहता हू।" दीवानचन्द ने बडे रौब से अपनी छाती ठोकी-"हालात कहते है।" "लेकिन यह सब झूठ है।" कुलभूषण चिल्ला उठा- "खुद तुम्हारे वकील यशराज खन्ना ने अदालत मैं साबित किया है कि मेरा चिना पहलवान के खून से कोई वास्ता नहीं था-कोई सम्बन्ध नहीं था। मुझे तो जबरदस्ती उस केस में फंसाया गया था।"

"साले!" दीवानचन्द की आखों में शोले लपलपाये- "मेरी गोली मेरे को ही देता है। वडी यशराज खन्ना ने अदालत में जो कहानी सुनाई-वो झूठी थी-मनगढ़ंत थी। हकीकत ये है साईं-बुद्धवार की रात जो ऑटो रिक्शा रीगल सिनेमा के सामने खड़ी देखी गयी-वह तेरी ऑटो रिक्शा थी। वडी तू ही चिना पहलवान को वहां से लेकर भागा-तूने ही उसका खून किया। हमें सब मालूम है कुलभूषण साई-उस रात शीतल के कोई बच्चा नहीं होने वाला था। जब फ्लाइंग स्क्वायड दस्ते ने तेरी ऑटो रिक्शा मेण्डी हाउस जाने वाले मार्ग पर रोंकी-तो उसमें शीतल, चिना पहलवान की लाश के ऊपर लेटी थी।

"यह सब झूठ है।" कुलभूषण हलक फाड़कर चीखा-"झूठ है।"

"वडी यह सब सच है हरामी-सच है।" दीवानचन्द उससे भी ज्यादा जोर से चिल्लाया था।

"ल...लेकिन अगर यह सब सच है।" कुलभूषण गले का थूक सटकता हुआ बोला-"तो यशराज खन्ना ने मेरे लिये अदालत में झूठ क्यों बोला? आखिर वो तुम्हारा वकील था-तुमने उसे अप्वॉइंट किया था।"

"कुलभूषण साईं-खन्ना ने वह झूठ हमारे कहने पर बोला।"

"त...तुम्हारे कहने पर?"

"हां।" सेठ दीवानचन्द ने दांत किटकिटाये- "वडी तभी तो तू पुलित की कैद से आजाद होकर हम तक पहुंच सकता था नी। साई-तुझसे सारी हकीकत उगलवाने के लिये तेरा पुलिस कस्टडी से रिहा होना बेहद जरूरी था।"

"ल...लेकिन तुम चिना पहलवान की हत्या के बारे में इतनी गहन पूछताछ क्यों कर रहे हो-तुम्हारा उससे क्या सम्बन्ध था।"

"सम्बन्ध!" दीवानचन्द कापेहरा एकाएक धधकता ज्वालामुखी बन गया- "वडी तू मेरे और चिना पहलवान के सम्बन्धों के बारे में पूछता है नी! साई-चिना पहलवान ताकत था मेरी-वो मेरा साथी था-मेरी दायां बाजू था।"

" स...साथी!" कुलभूषणके मुंह से सिसकारी छूटी- "च...चिना पहलवान तुम्हारा साथी था?"

"न सिर्फ साथी था बल्कि वो मेरा दोस्त भी था वडी वो मेरी हर योजना को कामयाब बनाता था।" की आखों में आतंक की छाया डोल गयी।

और अब उसे समझते ते न लगी कि सेठ दीवानचन्द क्यों चिना पहलवान के हत्यारे के पीछे पड़ा था-यह बात भी तीर की तरह उसके दिमाग में हलचल मचाती चली गयी कि सेठ दीवानचन्द ने यशराज खन्ना को पचास हजार रुपये की धनराशि उसके लिये नहीं दी थी बल्कि चिना पहलवान की रहस्यमयी मौत की गुत्थी सुलझाने की राह में उसने वो धनराशि खर्च की थी।

तुरन्त ही कुलभूषण के मानस-पटल पर उस दिन का दृश्य भी कौंधा-जब वह सीना चौड़ाकर दरीबा कलां में सेठ दीवानचन्द की दुकान पर मूर्ति बेचने गया था। उसे वह क्षण भी याद आये-जब उसने सेल्समैन के सामने चिना पहलवान का नाम ले दिया था-चिना पहलवान का नाम सुनते ही उसके शरीरे कैसी बिजली दौड़ी थी-कितनी तेजी से वो मूर्ति लेकर अंदर की तरफ भागा था।

जरूर इसीलिये तब उन्होंने अपने गुण्डे साथियों को वहां बुलाया था-क्योंकि उसने चिना पहलवान का नाम लिया था।

कुलभूषण के शरीर से पसीने की धारायें बहने लगीं।

कितंने बड़े चक्रन्छ में फंसता जा रहा था वो।

कैसे इतफाक हो रहे थे उसके साथ।

वह मूर्ति भी बेचने गया था-तो सेठ दीवानचन्द की दुकान पर।

उसीं की दुकान पर जिसका चिना पहलवान साथी था।

दाता!

दाता!!

"ल...लेकिन इससे ये कहा साबित होता है।" कुलभूषण थोड़ी हिम्मत करके बोला- "कि चिना पहलवान का खून मैंने किया है?"

"कुलभूषण साई मॅ सेठ दीवानचन्द ने उसे फिर भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा-

"वडी यह अदालत नहीं है-जहां कुछ भी साबित करने के लिये गवाहों की जरूरत होती है-सबूतों की जरूरत होती है। वडी हमें जो भी साबित करना होता है-जिससे जो भी कबूलवाना

तो झापड़ों मे कबूल लेते।"

कुलभूषण के पूरे शरीर में खौफ की लहर दौड़ गयी।

"ल...लेकिन...।"

"यह ऐसे कुछ नहीं बोलेगा बॉस!" अजनबी ने उसकी बात बीच में ही काट दी- "यह बड़ा गुरु-घंटाल आदमी है-यह चेहरे से जितना शरीफ दिखाई देता है-वास्तव में उतना ही चलता पुर्जा है-उतना ही खुराफाती है।"

"अच्छा!"

"बिल्कुल बॉस!" अगर यह भला मानस होता तो इंस्पेक्टर चक्रधर के सामने ही सब कुछ न बक देता-तुम मुझे इजाजत दो बॉस! उसने थोड़ी व्यग्रता प्रदर्शन की- "मैं अभी इसकी ऐसी धुनाई करतार हूं कि यह सब कुछ बकता हुआ नजर आयेगा।"

"रहने दे-रहने दे।" सेठ दीवानचन्द मीठी जबान में बोला- "वडी तू क्यों मार-पिटाई करता है-क्यों झगड़ा-फसाद करता है। यह बहुत भला-मानस आदमी है-यह ऐसी ही सब कुछ बता देगा।"

"यह इस तरह नहीं बतायेगा।"

"ठीक है-मैं ट्राई करके देखता हूं।" अगर यह प्यार-मोहब्बत से कुछ न बताये तो फिर तुम इसका जो मर्जी आये करना। कुलभूषण साई! "फिर सेठ दीवानचन्द ने बड़ी शहद मिश्रित जबान में उसे पुकारा।

तुरन्त कुलभूषण के गले की घण्टी जोर से उछली।

उसे अपने देवता कूच करते महसूस दिये।

"वडी तू काहे को अपनी धुनाई करवाना चाहता है साई-क्यों अपने इस जिस्म का पलस्तर उधड़वाना चाहता है। वडी तू कबूल क्यों नहीं कर लेता कि तूने ही चिना पहलवान का खून किया है।"

"म मैंने चिना पहलवान का' खून नहीं किया।"

"फिर झूठ!"

अजनबी ने गुस्से में चिंघाड़ते हुए उसका गिरेहबान पकड़ लिया- "फिर झूठ!"

अजनबी ने धड़ाधड़ उसके मुंह पर झापड़ों की बारिश कर डाली। इस बार सेठ दीवानचन्द ने भी कोई हस्तक्षेप न किया।

फिर पिटाई का वह बेहद खौफनाक सिलसिला शुरू हो गया-जो पिछले कई दिन से कुलभूषण का शायद नसीब बन चुका था।

कुलभूषण चिल्लाता रहा।

हाहाकार करता रहा।

डकराता रहा।

लेकिन अजनबी ने उसकी दुर्दान्त धुनाई का रूटीन जारी रखा। "मैं देखता हूं साले-तू आज कैसे कुछ नहीं कबूलता।" अजनबी जब कुलभूषण की धुनाई करते-करते बुरी तरह हांफने लगा था-तो वह घसीटता हुआ पब्लिक टेलीफोन बूथ जैसे शीशे के एक केबिन के पास ले गया- "इस केबिन को? देख रहा है-यह टॉर्चर केबिन है। मैं जब तुझे इस केबिन के अंदर बंद करूंगा-तो तू मौत मांगेगा। तू इस तरह तड़पेगा-जैसे रेगिस्तान की गरम रेत पर मछली तड़पती है।"

अजनबी ने वह शब्द गुर्राते हुए कहे और उसके बाद कुलभूषण को शीशे के उसी केबिन के अदर धकेल दिया।

इतना ही नहीं-उसे धकेलते ही उसने धड़ाक से दरवाजा भी बंद कर दिया था।

केबिन के दायीं तरफ प्लाईबोर्ड पर एक पैनल भी लगा था-फिर अजनबी ने पैनल पर लगा एक स्विच भी दबा दिया।

फौरन ही केबिन के अंदर लगे एक इंच व्यास के दो पाइपों के अंदर से पीले रंग की गैस निकलकर केबिन में भरनी शुरू हो गयी। वह ज्वलनशील गैस थी।

कुछ ही देर बाद केबिन की स्थिति यह हो गयी कि उसके अंदर मौजूद कुलभूषण दिखाई देना बंद हो गया।

अब केबिन में सिर्फ गैस-ही-गैस दिखाई दे रही थी।

पीली गैस!

तब अजनबी ने पैनल में लगा एक दूसरा स्विच दबाया। फौरन ही वो अन्य पाइप केबिन में गैस को वापस खींचने लगे थे-जितनी तेजी से केबिन के अंदर गैस थी, उतनी ही तेजी से वो वापस हटने लगी।

जल्द ही सारी गैस केबिन के अंदर से गायब हो गयी थी। गैस के हटते ही केबिन में बंद नजर आया।

उस थोड़ी देर में ही उसकी जीर्ण- जीर्ण हालत स गयी।

वह गठरी-सी बना पड़ा जोर-जोर से खास रहा था।

फिर अजनबी ने केबिन का दरवाजा खोलकर उसे बाहर घसीट लिया।

कुलभूषण जैसे ही बाहर के वातावरण में आया और जैसे ही बाहर के वातावरण में मौजूद ऑक्सीजन उसके शरीर से टकराई तो वह आर्तनाद कर उठा।

उसे यूं लगा-मानों उसकी नस-नस सुलग उठी हो।

अंग-अंग जलने लगा हो।

वह चीखने लगा-वह सचमुच मछली की तरह छटपटाने लगा और अपने जिस्म के एक-एक अग को झंझोड़ने लगा।

"कुलभूषण साई" सेठ दीवानचन्द अपने जूते ठकठकाता हुआ उसके करीब पहुचा-"वडी अब तो तेरी अक्ल ठिकाने आयी नी या अभी भी नहीं आयी। तू क्यों अपनी जान का दुश्मन बनता है। कुलभूषण साई-क्यों अपनी हड्डी-पसली बराबर कराता है। वडी अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा-बोल पड़-बोल पड़। वरना हमारे पास तेरे जैसे मच्छर की जबान खुलवाने के ऐसे-ऐसे नायाब हथकण्डे हैं कि तू तो तेरे फरिश्ते भी घबराकर बोल पड़ेंगे।

फिर एक और ऐसीं घटना घटी-जिसने कुलभूषण को और अधिक चौंकाकर रख दिया।

दरअसल सेठ दीवानचन्द ने अपनी जेब से एक मूर्ति निकाली थी-फिर उसे कुलभूषण की पीड़ा से छटपटाती आखों के गिर्द नचाता हुआ बोला- "साई पहचानता है इस मूर्ति को?"

कुलभूषण ने फौरन वो मूर्ति पहचान ली।

वह वही नटराज मूर्ति थी जिसे वो हड़बड़ाहट में ज्वैलरी शॉप पर छोड़ आया था।

"बडी तू कुछ बोलता क्यों नहीं?" सेठ दीवानचन्द गुर्राया- "पहचानता है इस मूर्ति को?"

"ह...हां।" कुलभूषण की गर्दन बड़ी मुस्किल से हिली- "हां।"

"यह मूर्ति तेरे पास कहां से आयी?"

"म...इसे चुरायी थी।"

"तूने!" सेठ दीवानचन्द हिस्टीरियाई अंदाज में चिंघाड़ उठा-

"इसे तूने चुराया?"

"ह...हा।"

"कुलभूषण साई!" दीवानचन्द ने दांत किटकिटाये- "वडी क्यों तेरी खाल मसाला मांग रही है-क्यों तू मरना चाहता है? वह मूर्ति तूने चुरायी कंजर-तूने! है तेरे अंदर इतना दम-जो तू इस मूर्ति को चुरा सके।"

कुलभूषण ने अपने होंठ सख्ती से भींच लिये।

"वडी तू यही बात इंस्पेक्टर चक्रधर के सामने बोल देगा-अपने बयान से फिरेगा तो नहीं तू?"

कुलभूषण बगलें झांकने लगा।

एक बात वो अब तक भली-भांति समझ चुका था-सेठ दीवाचन्द सिर्फ दिल्ली शहर के सर्राफों का सर्राफ ही नहीं है बल्कि वह कोई बड़ा गैंगस्टर भी है-रैकेटियर भी है।

"साले!" सेठ दीवानचन्द ने गुस्से में उसके बाल पकड़कर बुरी तरह झंझोड़े- "जिस मूर्ति को तू अपने द्वारा गयी बता रहा है-वडी वो इण्डियन म्यूजियम की चोरीशुदा है। और उन मूर्तियों को तूने नहीं बल्कि चिना पहलवान के साथ मिलकर हमने चुराया था-हम सबने। उन मूर्तियों की संख्या छः थी कुलभूषण साई-जिन्हें चिना पहलवान हादसे वाली रात हमारे सुपर बॉस डॉन मास्त्रोनी को सौंपने जा रहा था। लेकिन बीच रास्ते में ही तूने चिना पहलवान की हत्या करके उससे वह सभी छः नटराज मूर्तियां हड़प लीं। अब यह बता वह सभी छः नटराज मूर्तियां कहां है?"

छः नटराज मूर्तियां।

कुलभूषण के नेत्र अचम्भे से फैले।

उसे ऐसा लगा-मानो सेठ दीवानचन्द कोई भारी मजाक कर रहा था। एक नटराज मूर्ति तो खुद सेठ दीवानचन्द के हाथ में थी-फिर भी बाकी मूर्तियों की सख्या छः कैसे संभव थी? कुलभूषण साई।" सेठ दीवानचन्द ने उसके बाल और बुरी तरह झंझोड़े- "वडी जल्दी बोल-छः नटराज मूतियां कहां है?"

"ल...लेकिन अभी भी उन नटराज मूर्तियों की संख्या छः कैसे हो सकती है साहब?"

"यह बता-उन मूर्तियों की संख्या छः कैसे नहीं हो सकती।" क...क्योंकि साहब!' कुलभूषण डरते-डरते बोला- "एक मूर्ति तो तुम्हारे हाथ में ही है।"

"यह!" दीवानचन्द चिंघाड़ा- "यह तुझे मूर्ति दिखाई देती है?"

अब!

अब कुलभूषण के नेत्र और ज्यादा हैरानी से फैले।

उसने अपनी पलकें फड़फड़ाकर मूर्ति को देखा-लेकिन वो शत-प्रतिशत मूर्ति ही थी।

नटराज जी अपनी चिताकर्षक मुद्रा में विद्मामान!

"म...मुझे तो यह मूर्ति ही दिखाई देती है साहब!"

फौरन सेठ दीवानचन्द के भारी-भरकम हथौड़े जैसे हाथ का एक ऐसा झन्नाटेदार झापड़ उसके मुंह पर पड़ा कि वो खड़े-खड़े फिरकनी की तरह धूम गया।

उसकी आखों के गिर्द रंग-बिरंगे तारे झिलमिला उठे।

"साले-कंजर!" सेठ दीवानचन्द ने मूर्ति फिर उसकी आखों के गिर्द नचायी- "वडी क्या तेरे को यह अब भी वही मूर्ति नजर आती है?"

"ह...हां-यह...यह वहीं मूर्ति है।"

धड़ाधड़ दो झापड़ और उसके मुंह पर पड़े।

कुलभूषण की रूलाई छूटते-छूटते बची।

"हरामजादे-यह नटराज मूर्ति जो तू हमारी ज्वैलरी शॉप पर' बेचने आया था-यह पीतल की मूर्ति है-सिर्फ पीतल की। इस पर सोने का पानी चढ़ा है।"

कुलभूषण सन्त रह गया।

उसके दिल-दिमाग पर बिजली-सी गड्रगड़ाकर गिरी।

इ...इसका मतलब जिन मूर्तियों के लिये इतना बड़ा हंगामा हुआ। जिनकी वजह से उसकी इतनी धुनाई हुई।

व... वही मूर्तियां पीतल की हैं।

दाता!

दाता!!

कुलभूषण का दहाड़े मार-मारकर रोने को दिल चाहा।

"वडी कुलभूषण साई।" सेठ दीवानचन्द ने उसके सिर पर हाथ फेरा-लेकिन उस हाथ फेरने में भी धमकी जैसा अहसास था- "अब तो तेरी समझ में आया कि इन मूर्तियों के अलावा भी तेरे पास छ: और नटराज मूर्तियां कैसे हो सकती हैं। साई-अब तू सीधे-सीधे मुझे यह बता कि तूने असली सोने की मूर्तियों कहां छिपाकर रख छोड़ी हैं? इसके अलावा यह भी बता कि तूने यह सारा नाटक किसलिये किया?

किस वास्ते चिना पहलवान से शुद्ध सोने की मूतियां हड़पकर यह नकली पीतल की मूर्तियां बनवाई फिर इन्हें हमारी ज्वैलरी शॉप पर ही क्यों बेचने आया-इसके पीछे भी जरूर कोई गहरा चक्कर है। वडी यह तेरे अकेले का काम तो हर्गिज भी नहीं हो सकता नी-जरूर तेरे साथ हमारा कोई दुश्मन भी मिला है। कुलभूषण साई!' सेठ दीवानचन्द ने उसके सिर पर हाथ फेरते-फेरते उसके बालों को अपनी मुट्ठी में कसकर जकड़ लिया- "अगर तू आज अपनी खैरियत चाहता है-अगर तू अपनी बॉडी के कलपर्जो को टुटवाना नहीं चाहता तो चुपचाप मुझे मेरे दुश्मन का नाम बता दे। सोने की मूर्तियों का एड्रेस बता दे-वरना आज तेरी खैर नहीं साई। फिर तो तू अपनी जिंदगी की किश्ती को डूबा समझ।"

कुलभूषण दहशत से पीला पड़ गया।

उसे दूर-दूर तक अपने छुटकारे के आसार नजर नहीं आ रहे थे।

"क्या तूने सोने की मूर्तियां शीतल के पास रख छोड़ी हैं?"

"न...नहीं।" कुलभूषण के जिस्म का रोआं नोआं खड़ा हो गया।

"फिर किसके पास रख छोड़ी हैं? वडी कहीं तूरने उस आद्मी के पास तो असली मूर्तियां नहीं रख छोड़ी-जिसने इस पूरे प्रकरण में हमारे खिलाफ तेरी मदद की?"

"ऐसा कोई आदमी नहीं है।" कुलभूषण चिल्लाया- "यकीन मानो-ऐसा कोई नहीं है।"

"फिर यह करिश्मा कैसे हो गया साई-वडी असली मूर्तियां किधर गयीं?"

"मेरे पास नहीं हैं।"

"वही तो मैं पूछ रहा हूं नी-अगर तेरे पास नहीं हैं तो किसके पास हैं। उसका एड्रेस क्यों नहीं बता देता तू?"

कुंलभूषण ने अपने आपको विचित्र-सी दुविधा में फंसा महसूस किया।

"द...देखो साहब!" कुलभूषण लगभग पराजित स्वर में बोला-

"म...मैं स्वीकार करता हू कि मैंने चिना पहलवान के ब्रीफ़केस से मूर्तियां हथियाई थीं-ल...लेकिन मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हैं ने उसका खून-नहीं किया - मैंने...मैं खूनी नहीं।...और जो मूर्तियों चिना पहलवान के ब्रीफकेस से हथियाई थीं-वो भी यही मूर्तियां थीं।"

"य...यह!" दीवानचन्द बोला- "पीतल की मूर्तियां?"

"हां-यही नकली मूर्तियां साहब! अगर मुझे पहले से इस बात का पता होता कि यह मूर्तियां पीतल की हैं, तो यकीन जानो-मैं कभी इस चक्कर में न पड़ता।"

"सेठ दीवानचन्द सहित सेल्समैन और अजनबी की आंखों में भी अब हैरानी के निशान उभर आये।

उन्होंने सवालिया निगाहों से एक-दूसरे की तरफ इस प्रकार देखा मानो वह इस बात की तस्वीक करना चाहते हों कि कुलभूषण की बात पर यकीन किया जाये या नहीं?

"कहीं तू यह बात तो साबित नहीं करना चाहता बिरादर!" इस बार अजनबी बोला- "कि असली मूतियां तो चिना पहलवान का हत्यारा ले गया और वो उन असली मूर्तियों की जगह ब्रीफकेस में नकली पीतल की मूर्तियां रख गया"

कुलभूषण की आखों में तेज चमक कौंध उठी।

लेकिन जल्द ही उसकी आखों से वो चमक भी गायब हो गयी। "नहीं।" कुलभूषण की गर्दन इंकार में हिली- "यह नहीं हो सकता।"

"क्या नहीं हो सकता?"

"यही कि जिसने चिना पहलवान का खून किया-वही उन मूर्तियों को भी ले उड़ा?"

"क्यों?" सेठ दीवानचन्द की आखों में सस्पैंस के भाव पैदा "वडी तेरे को यह बात कैसे मालूम कि वही उन मूर्तियों को न ले ले उड़ा?"

"क्योंकि साहब-हत्यारे की दो गोलियां लगने के बावजूद भी चिना पहलवान अपने पैरों पर दौड़ता हुआ मेरी ऑटो रिक्शा में आकर बैठा था-उस वक्त वह पूरे होश-हवास में था-अगर हत्यारे ने उसके ब्रीफकेस में से मूर्तियां निकालने की कोशिश की होती, तो उसकी तरफ से जबरदस्त विरोध जरूर होना था। फिर तुम लोगों को अखबार के माध्यम से इतना तो मालूम हो ही गया होगा कि गोलियां चलने की आवाज सुनते ही फ्लाइंग स्क्वायड की गश्तीदल गाड़ी फौरन तूफानी गति से गली के अंदर दौड़ी थी। अगर यह मान भी लिया जाये कि हत्यारे ने मूर्तियों को बदलने की हौसलामंदी दिखाई थी-तब भी वह इतनी जल्दी तो अपना काम हर्गिज भी अंजाम नहीं दे सकता था कि गभीदुल की गाड़ी गली में पहुंचने से पहले ही उसने मूर्तियां भी बदल दीं और वो वहां से फरार भी हो गया।"

तीनों हैरतअंगेज नजरों से कुलभूषण को देखने लगे।

"साहब!" कुलभूषण वातावरण को अपने पक्ष में होते देख बोला- "हत्यारा मूर्तियों को न ले उड़ा हो-इसका एक और बड़ा पुख्ता सबूत मेरे पास है।"

"क...कैसा सबूत?"

"जब चिना पहलवान मेरी ऑटो रिक्शा में आकर बैठा था।" कुलभूषण उन्हें एक-एक बात अच्छी तरह समझाता हुआ बोला- "तो उसने ब्रीफकेस बड़े कसकर अपने सीने से चिपटा रखा था। अगर हत्यारे ने उसके ब्रीफकेस के अंदर से असली मूर्तियां निकाल ली थीं-तो चिना पहलवान को क्या जरूरत थी कि वह गोलियां लगने के बावजूद भी उन ब्रीफकेस को अपने सीने से चिपटा रख था। लेकिन मैंने खुद अपनी आखों से देखा था साहब-उसने न सिर्फ तब ब्रीफकेस को अपने सीने से चिपटा रखा था बल्कि अपने जीवन की आखिरी सांस तक भी वह उस ब्रीफकेस को अपने सीने से चिपटाये हूए था।"

कुलभूषण की बात सुनकर उस हॉल बड़े कमरे में सन्नाटा छा गया।

"वडी इस पूरे घटनाचक्र से तो एक और बांत भी साबित होती है।" दीवानचन्द बोला।

"कौन-सी बात?

"यही कि उन मूर्ति को कम-से-कम चिना पहलवान ने भी नहीं बदला था।"

"वो क्यों?"

"वडी अगर उसने वो मूर्तियां बदली हौतीं-तब भी उसे क्या जरूरत पड़ी थी, जो वह उस ब्रीफकेस को अपने जीवन की आखिरी सांस तक बच्चे की तरह सीने से चिपटाये रखता। उसके द्वारा आखरी सांस तक ब्रीफकेस को अपने सीने से चिपटाये रखना ही इस बात को साबित करता है कि चिना पहलवान नकली मूर्तियों की तरफ से पूरी तरह अंजान था।"

सेठ दीवानचन्द के तर्क में वाकई जान थी।

उस तर्क ने सभी को प्रभावित किया।

अब सवाल ये था कि अगर वह मूर्तियां चिना पहलवान ने भी नहीं बदली थीं-तो फिर किसने बदलीं?

और बदली भी इस ढंग से कि चिना पहलवान को कानों-कान भनक तक न हुई।

"कुलभूषण!"तभी सेल्समैन, कुलभूषण से सम्बोधित हुआ- "एक बता बतायेगा?"

"पूछो।"

"तू बुद्धवार की रात अपनी ऑटो रिक्शा लेकर रीगल सिनेमा के सामने क्यों खड़ा

था-जबकि यूनियन की हड़ताल चल रही थी?" कुलभूषण ने सारा घटनाक्रम बता दिया।

"यानी...यानी तू वहां सिर्फ इसलिये खड़ा था-ताकि नाइट शो खत्म-होने पर तू वहां से कोई सवारी ले जा सके और अपनी उधारी चुकता कर सके?"

"हां।"

"इसके अलावा कोई और वजह नहीं?"

"बिल्कुल नहीं।"

"वडी तेरे को यह भी मालूम है।" एकाएक सेठ दीवानचन्द दांत किटकिटाकर बोला- "कि अगर तेरे को वहां खड़ा ऑटो रिक्शा वाला तेरा कोई भाई-बंद देख लेता-तो यूनियन में तेरी क्या गत बनती?"

कुलभूषण ने अपने होंठ सी लिये।

"कुलभूषण साई-वह हड़ताल तोड़ने के जुर्म में तेरे खिलाफ कोई सख्त कदम उठा सकते थे-तुझे यूनियनकी मेम्बरशिप से बर्खास्त कर सकते थे। इतना ही नहीं-वह तेरा दिल्ली शहर में ऑटो रिक्शा भी चलाना बंद करा सकते थे।"

"म...मैं जानता हूं।"

"सब कुछ जानते-बूझते तूने ऐसा किया नी-वडी बता सकता है क्यों?"

"क्योंकि मैं उस समय नशे में था।" कुलभूषण बोला- "उस वक्त मुझे मालूम नहीं था कि मैं क्या करने जा रहा हू-उस वक्त तो मेरे ऊपर एक ही भूत सवार था मैं किसी भी तरह दारू की उधारी चुका दूं।"

"बकता है साला!" अजनबी उसे फिर मारने को दौड़ा।

"रहने दे-रहने दे।" दीवानचन्द ने उसे बीच में ही पकड़ लिया।

"आप नहीं जानते बॉस!" अजनबी गुर्राया-यह साला देखने में जरूर डेढ़ पसली का है-लेकिन पक्का हरामी है-पक्का घाघ है। देखा नहीं-पहले ही कैसी शानदार कहानी गढ़ के लाया है कंजर!"

उसने गुस्से में झुंझलाते हुए कुलभूषण के पेट में एक लात जड़ दी।

पुन: हलक फाड़कर डकराया कुलभूषण!

"कुलभूषण साई!" सेठ दीवानचन्द ने उसे कहर बरपा करती नजरों से घूरा- "पडी मैं तेरे को आखिरी वार्निंग दे रहा हूं-जो बात है, सच-सच बता दे। क्योंकि हमारी निगाह में और कोई ऐसा शख्स नहीं-जो मूर्तियां बदलने की जुर्रत कर सके-या जिसे बदलने का मौका हासिल हो। वडी सारे हालात चीख-चीखकर ही अपराधी ठहरा रहे हैं और कह रहे हैं कि असली मूर्तियां अभी भी तेरे पास हैं।!"

"मेरे पास मूर्तियां नहीं हैं-नहीं हैं।" कुलभूषण हलक फाड़कर डकरा उठा- "अगर मेरे पास असली मूर्तियां तो मुझे क्या जरूरत थी, जो मैं पीतल की मूर्तियां बनवाता? फिर उन मूर्तियों को बनवाकर मैं तुम्हारी ही ज्वैलरी शॉप पद बेचने भी जाता? मैंने जो कहना था साहब कह दिया। अगर-आप लोग अब भी मुझे अपराधी मानते हो-अब भी मुझे कसूरवार समझते हो। तो लो-मेरा जो मर्जी आये करो-मार डालो मुझे।"

कहने के साथ कुलभूषण वहीं फर्श पर हाथ-पैर फैलाकर लेट गया तथा धीरे-धीरे सुबकने लगा।

तीनों की हालत अजीब हो गयी।

तीनों स्तब्ध!

क्या करें?

"साई !" तभी सेठ दीवानचन ने उसकी पीठ थपथपाई- "चल अब खड़ा हो।"

कुलभूषण खड़ा न हुआ।

"बडी अब खड़ा भी हो नी-क्यों नखरे करता है।"

दीवानचन्द ने उसे जबरदस्ती खड़ा किया।

कुलभूषण सुबकियां लेता हुआ अपने स्थान से उठा।

"चल अब यह रोना-धोना बंद कर-और चुपचाप हमें यह बता कि तूने इसके साथ की? बाकी पांच मूर्तियां कहां छिपा रखी हैं?"

"श...शीतल के पास।"

"वह मूर्तियां हमें लाकर देगा?"

कुलभूषण ने सुबकते हुए ही स्वीकृति में गर्दन हिला दी। यह मालूम होने के बाद कि वह नटराज मूर्तियां वास्तव में सोने की नहीं बल्कि पीतल की हैं-अब उसे उनका करना भी क्या था।

अजनबी का नाम कान्ति पाण्डे था।

कान्ति पाण्डे ही कुलभूषण को सफेद रंग की मारुती वैन में बिठाकर वापस किशनपुरा तक ले गया।

वैन उसने किशनपुरा के बाहर ही खड़ी कर दी।

फिर वह कुलभूषण की आखों से काली पट्टी खोलता हुआ बोला- "जा-तू शीतल से मूर्तियां लेकर आ-मैं यहीं खड़ा हूं।" कुलभूषण बड़ा हैरान हुआ।

कान्ति पाण्डे ने उसके जाने और वापस आने की बात कुछ ऐसे यकीन के साथ कही थी-मानों उसे इस बात का पूरा भरोसा था कि वह लौट ही आयेगा।

फरार नहीं होगा।

कुलभूषण हैरान-सी मुद्रा में चुपचाप किशनपुरा की तरफ बढ़ा। "और सुन!"

कुलभूषण के कदम ठिठके।

"अगर साले!" पाण्डे दांत किटकिटाकर बोला- "तूने सेठ जी के सम्बन्ध में शीतल के

सामने या किसी के सामने एक शब्द भी जबान से बाहर निकाला-तो तेरी खैर नहीं।"

"चल अब फूट यहां से और जल्दी लौटकर आ।"

कुलभूषण तेज-तेज कदमों से किशनपुरा की तरफ बढ़ गया।

उस वक्त पूरे किशनपुरा में गहन अंधकार व्याप्त था।

रात के बारह या एक बजे का वक्त रहा होगा।

कुलभूषण शीतल के घर के सामने पहुंचा और उसने दरवाजा थपथपाया।

"कौन?" अंदर से फौरन शीतल की आवाज उभरी।

"मैं-भूषण!"

तुरन्त सांकल खुलने की आबाज हुई तथा फिर झट से दरवाजा खुल गया।

"तू!" आ-अंदर आ।" कुलभूषण को देखते ही शीतल का चेहरा खिल उठा था।

कुलभूषण ने अंदर कदम रखा।

घर में काजली अंधेरा व्याप्त था।

"तू यहीं ठहर-मैं रोशनी का इंतजाम करती हूं।"

शीतल तेजी के साथ पेट्रोमेक्स की तरफ बड़ी और जल्द ही उसने पेट्रोमेक्स जला दिया।

पेट्रोमेक्स जलते ही चारों तरफ रोशनी के, गयी थी।

कुलभूषण एकदम से तड़प उठा-रोशनी फैलते ही उसने देखा कि शीतल के साफ-सुथरे कपोलों पर आसुओं की ढेर सारी बूंदें जमीर हुई थीं।

जरूर शीतल उसके वहां आने से पहले काफी देर तक रोती रही थी।

"ए-इस तरह क्या देख रहा है?" शीतल बोली।

"क...कुछ नहीं।"

"कुछ तो?"

"लाइट को क्या हुआ?" एकाएक कुलभूषण विषय बदलकर बोला- "बाहर तो सबकी लाइट आ रही है।"

"शीतल का चेहरा सुत गया।

"अ...अपनी लाइट नहीं आयेगी भूषण!" शीतल बोली।

"क...क्यों?"

"आज दोपहर कट गयी।"

"ल...लाइट कट गयी।" कुलभूषण इस तरह चौंका, मानो उसे बिच्छू ने काटा हो- "म... मगर क्यों?"

"तू इस बात को छोड़ू भूषण!" तू मुझे यह बता कि आज सुबह से कहां गायब था-मैं सारा दिन परेशान होती रही।"

"मैं तेरे हर सवाल का जवाब दूंगा शीलल-लेकिन पहले मुझे यह बता कि लाइट कैसे कटी?"

"कैसे कटती।" शीतल थोड़ा कुपित होकर बोली- "मैने पिछले दो महीने से बिजली का बिल नहीं भरा था-इस बृहस्पतिवार को बिल जमा करने की आखिरी तारीख थी-जिसे मैं नहीं जमा कर सकी। इसीलिये आज बिजली विभाग के दो- कर्मचारी आये और लाइट काट गये।"

"ब...वृहस्पतिवार बिल जमा करने की आखिरी तारीख थी?" कुलभूषण के मुंह से सिसकारी छूटी।

"हां।"

"कहीं...कहीं तूने बिल की रकम से ही तो मेरी उधारी नहीं चुका दी शीतल?"

शीतल नजरें झुकाये खड़ी रही।

जबकि कुलभूषण तड़प उठा था।

"ल...लेकिन तू अपने ऑफिस के साथियों से भी तो रुपये लेकर बिल जमा कर सकती थी शीतल?"

"वो अब मुझे कभी रुपये नहीं देंगे।"

"क. क्यों?"

"क्योंकि आज जब ऑफिस के बीस को यह मालूम हुआ कि मैं तुम्हारे बच्चे की कुंवारी मां बनी थी-तो उन्होंने मुझे नौकरी से भी निकाल दिया।"

हे भगवान!

कुलभूषण का सीना छलनी होता चला गया।

कैसा कहर टूट रहा था उसके ऊपर।

"अब तू इन सब बातों को छोड़ भूषण!" शीतल बोली- "और मुझे यह बता कि अदालत में जब बल्ले ने तेरे ऊपर हमला किया था-तो तू जखी तो नहीं हुआ। कैसा खतरनाक दरिन्दा बन गया था बल्ले एकाएक-तेरे वकील यशराज खन्ना को तो उसने वहीं जान से मार डाला।"

"ख...खन्ना मर गया?" कुलभूषण के नेत्र दहशत से फटे।

"तुझे क्या लगता है-वो इतने चाकू लगने के बाद भी जिंदा रह सकता था? मैंने खुद उसकी लाश देखी थी।"

"अ...और बल्ले का क्या हुआ?"

"वह तो तभी इंस्पेक्टर चक्रधर को धक्का देकर फरार हो गया था।"

"तब तो पुलिस बल्ले के पीछे लगी होगी?"

"वह तो लगी है-लेकिन बल्ले आज दोपहर मेरे पास भी आया था।"

"त...तुम्हारे पास-क्यों?"

"बोलता था-अगर उसने एक सप्ताह के अंदर-अंदर कुलभूषण का खून न कर दिया-तो वह अपने बाप से पैदा नहीं।"

कुलभूषण के शरीर में खौफ की लहर दौड़ गयी।

उसके गले की फटी जोर से ऊपर उछली।

"ल...लेकिन जो आदमी तुझे अदालत से लेकर भागा था भूषण!" शीतल ने पूछा- "वह कौन था? और आज तू सारा दिन कहां रहा?"

कुलभूषण ने उस दिन घटी तमाम घटनायें शीतल को बता दीं।

"हे मेरे परमात्मा!" शीतल के नेत्र हैरत से फटे- "न...नटराज की वो मूर्तियां पीतल की हैं?"

"हां।"

"दाता! दाता !" शीतल सिर पकड़कर घम्म से वहीं चारपाई पर बैठ गयी- "यह भगवान हमारी कैसी परीक्षा ले रहा है-कौन से पापों की सजा दे रहा है हमें"

"अब इस तरह मातम मनानेसे कुछ नहीं होगा। कुलभूषण बोला-"तू जल्दी से मुझे मूर्तियां लाकर दे-बाहर कान्ति पाण्डे खड़ा मेरा इंतजार कर रहा है।"

"तू...तू मूर्तियों लेकर अब वापस सेठ दीवानचन्द के पास जायेगा?"

"हां।"

"तू पागल हुआ है।" शीतल गुर्रा उठी- "दिमाग खराब हो गया है तेरा। वह भले लोग नहीं हैं भूषण-तुझे अब वहां किसी भी हालत में लौटकर नहीं जाना चाहिये।"

"ल...लेकिन।"

"मैं जैसा कह रही हूं-वैसा कर भूषण! इसी में तेरी भलाई हैं एक बात बोलूं?"

"क्या?"

"मुझे तो ऐसा लगता है-जैसे बुद्धवार की रात सेर आज तक तुम्हारे साथ जितनी भी घटनायें घटी हैं-वो सब इत्तफाक नहीं है भूषण! वह जरूर किसी की साजिश का एक हिस्सा है-कोई किसी चक्रमह में फांसना चाह रहा है तुझे।"

"लेकिन कौन! कौन फांसेगा मुझे।"

"यह तो मैं भी नहीं जानती। लेकिन मेरा दिल चीख-चीखकर गवाही दे रहा है कि एक के बाद एक यह सनसनीखेज घटनायें ऐसे ही नहीं धट रही भूषण-इन घटनाओं के पीछे जरूर कोई गहरी साजिश है। मुझे तो इस सारी साजिश में अब सबसे बड़ा हाथ उस सेठ का नजर आता है।"

"च...सेठ दीवानचन्द का?"

"हां-वही।"

कुलभूषण सोच में डूब गया।

पिछले एक घण्टे से यही बात उसके दिमाग में घूम रही थी।

"लेकिन फिलहाल मुझे वो मूर्तियां लेकर तो सेठ के पास जरूर जाना पड़ेगा।"

"क्यों?"

"वरना कान्ति पाण्डे यहीं न आ जायेगा।"

"उसका भी एक तरीका है।"

"क्या?"

"हम अभी किशनपुरा छोड़कर कहीं भाग जाते हैं।"

"न...नहीं।" कुलभूषण सहेम गया- 'य...यह नहीं हो सकता शीतल! तू उन लोगों को नहीं जानती-वह बड़े खतरनाक लोग हैं-मैं, यहां से भागकर चाहे कहीं भी जा मुझे जरूर ढूंढ निकालैगे। इतना ही नहीं-इस समय वो मेरे ऊपर थोड़ा-बहुत जों यकीन कर रहे हैं-फिर वो भी नहीं करेंगे।"

शीतल का चेहरा रूई की तरह सफेद गया।

"फिर क्या करेगा तू?"

"मुझे मर्तियां देने जाना ही होगा।"

"ठीक है। "शीतल बोली- "अगर- मूर्तियां देना इतना ही जरूरी है-तो तू कान्ति पाण्डे को दे आ। उसके साथ सेठ दीवानचन्द के अड्डे तक किसी हालत में नहीं जाना।"

"कुलभूषण ने शीतल की वह बात मांन ली।

अगले ही पल शीतल बाहा बरामदे में बनी छोटी-सी क्यारी को जल्दी-जल्दी खोदकर उसमें से नटराज मूर्तियां निकला रही थी।

वह पांचों नटराज मूतियां कुलभूषण ने अपनी पैंट की बेल्ट के नीचे अच्छी तरह कसकर बांध लीं और ऊपर से शर्ट ढक ली।

नटराज मूर्तियां दिखाई देनी बिल्कुल बंद हो गयीं।

फिर कुलभूषण ने शीतल के घर से बाहर कदम रखा।

"म...मैं भी तुम्हारे साथ चुलूं?" शीतल बोली।

नहीं तू यही रह। मैं कान्तिं पाण्डे को मूर्तियां देकर अभी दो मिनट में आता हूं।"

" ल...लेकिन...।"

"चिन्ता मत कर-मुझे कुछ नहीं होगा।"

कुलभूषण लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ सड़क पर चल दिया। शीतल उसे डरी-डरी 'आखों से तब तक- जाते देखती रही-जब तक वह नजरों-से पूरीं तरह ओझल न हो गया।

यह बड़ी हैरानी की बात थी कि बुद्धवार की रात के बाद से हर- पल, हर सैकिण्ड कोई-न-कोई नई घटना घट रही थी।

और हर घटना ऐसी होती-जिससे कुलभूषण षड्यन्त्र के 'चक्रवयूह' में और अधिक उलझ जाता।

फिर एक घटना घटी।

दरअसल कुलभूषण ने जैसे ही किशनपुरा की पहली सडक का मोड़ काटा था-तभी उसके शरीर में बिजली-सी दौड़ी।

वह यूं कांपा-मानों किसी 'शैतान' के दर्शन कर लिये हों।

सामने बुलेट मोटरसाइकिल पर इंस्पेक्टर चक्रधर खड़ा था। "'हैलो कुलभूषण।"

"अ...आप!" चक्रधर को देखते ही कुलभूषण के शरीर में आतंक की लहर दौड़ी- "अ... आप इतनी रात को यहां क्या कर रहे हैं साहब

"तुम्हारा ही इंतजार कर रहा हूं कुलभूषण।"

"म...मेरा इंतजार-म...मुझसे क्या फिर कोई गलती हो गयी?"

"तुम्हें अभी, इसी वक्त मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलना है।"

"ल...लेकिन मेरा अपराध क्या है साहब?" कुलभूषण शुष्क लहजे में बोला-" चिना पहलवान की हत्या के इल्जाम से तो कोर्ट ने मुझे सुबह ही बरी किया है।"

"मै तुम्हें चिना पहलवान की हत्या के इल्लाम में गिरफ्तार नहीं कर रहा।"

"फ...फिर

"मुझे अभी-अभी चंद मिनट पहले ही टेलीफोन पर एक 'गुमनाम टिप' मिली हैं-मुझे बताया गया है कि दिल्ली शहर में संग्रहालयों की दुर्लभ वस्तुओं की चोरी करने वाला जो गिरोह सक्रिय हैं-तुम उस गिरोह कई मैम्बर हो।"

"म...मैं!' ' कुलभूषण के मुंह से चीख-सी खारिज हुई- "मैं उस गिरोह का मैम्बर हूं?"

"हां-और इसीलिये में तुम्हें मेटीरियल विटनेस शक की- बिना पर पुलिस हिरासत में ले रहा हूं-ताकि मामले की आगे जांच-पड़ताल कर सकूं। क्योंकि दुर्लभ वस्तुओं की चोरी का मामला काफी संगीन

मामला है। और आजकल इस तरह की चोरियो को लेकर दिल्ली पुलिस में काफी हड़कम्प मचा है।!

कुलभूषण की जान हलक में आ फंसी।

उसे फौरन उन पांच नटराज मूर्तियों का ख्याल आया, जो उसकी बेल्ट की नीचे बंधी थी दाता!

दाता!!

कौन उसके पीछे हाथ धोकर पड़ गया था।

उह वक्त उसे वो मूर्तियां टाइम-बम लगीं। ऐसा टाइम-बम जो किसी भी क्षण फट सकता था।

स...साहब! "कुलभूषण ने आर्तनाद-सा करते हुए कहा- "जरूर किसी ने आपको गलत टिप दी है। मेरा किसी गिरोह से कोई सम्बन्ध नहीं-म...मैं किसी गिरोह का मैम्बर नहीं।"

"तुम्हें अब जो...कहना है।" इंस्पेक्टर चक्रधर सख्ती से बोला- "पुलिस स्टेशन जाकर कहना।"

"ल...लेकिन...।"

"बकवास बंद!" चक्रधर ने उसे जबरदस्ते फटकार लगायी। फिर वह उसके हाथों में हथकड़ियां पहनाने के उद्देश्य से जैसे ही बुलेट से नीचे उतरा-उसी क्षण गली मे तूफानी गति से दौड़ती हुई मारुति वैन प्रकट हुई थी।

उसकी हैडलाइटों की तीखी रोशनी सीधी चक्रधर के चेहरे पर पड़ी।

इंस्पेक्टर चक्रधर दुर्घटना का कोई अनुमान लगा पाता-उससे पहले ही मारुति वैन धुआधार रफ्तार से दौड़ती हुई चक्रधर के एकदम नजदीक जा पहुंची।

चक्रधर आतंकित मुद्रा में पलटकर भागा।

लेकिन वो कहां तक भागता?

किधर भागता?

उसका शरीर धड़ाक की तेज आवाज करता हुआ मारुती वैन के अगले हिस्से से इस तरह टकराया-जैसे सड़क पर पड़ा कोई पत्थर टकरा गया हो।

टकराते ही चक्रधर का शरीर जमीन से कई फुट ऊपर हवा में उछला।

फिर वो तेज धयनि करता हुआ सड़क पर जा गिरा।

नीचे गिरते ही इंस्पेक्टर चक्रधर' के कण्ठ से एक ऐसी हृदयविदारक और बेहद करुणादायी चीख खारिज हुई कि वह उस रात के संन्नाटे में 'नगाड़े' की तरह दूर-दूर गूंजी।

उसी पल मारुती वेन के ब्रेक चरमराये।

उसके पहिये चीखते हुए रुके।

फिर धड़ाक से वैन का स्लाइडिंग डोर खुला।

स्लाइडिंग डोर खुलते ही कुलभूषण एकदम चीते की तरह जम्प लगाकर वैन के अंदर घुस गया था।

फौरन मारती वैन की ड्राइविंग सीट पर बैठे कान्ति पाण्डे ने क्लच दबाया और वैन को गियर में डाल दिया।

तत्काल मारुती वैन बंदूक से छूटी गोली की तरह किशनपुरा से? भाग खड़ी हुई।

खून में बुरी तरह लथपथ इंस्पेक्टर चक्रधर की जब बेहोशी टूटी-तो उसने खुद को राक चारपाई पर लेटे पाया।

उसके शरीर पर जगह-जगह पट्टियां बंधी थीं।

चक्रधर ने हड़बड़ाकर खड़े होने की कोशिश की तो फौरन किसी ने उसकी बांह पकड़ ली।

"लेटे रहो इंस्पेक्टर साहब-डॉक्टर ने थोड़ी देर आराम करने के लिये कहा है।"

चक्रधर की दृष्टि खुद-ब-खुद आवाज की दिशा में उठ गयी।

और!

अगले पल उसके जिस्म में करण्ट-सा प्रवाहित हो गया था। सामने 'बल्ले' खड़ा था।

"त...तुम!"

"क्यों!" मुस्कराया बल्ले- "मुझे देखकर हैरानी हुए रही है साहब?"

"ल...लेकिन में यहां आया कैसे?" चक्रधरने पूछा- "म...मेरा तो एक्सीडेंट हुआ था"

"दरअसल जिस वक्त आपका एक्सीडेंट हुआ-ठीक उसी वक्त मैं भी किशनपुरा में आया था। आपको खून से लथपथ सड़क पर पड़े देखा-तो मुझसे रहा न गया-मैं फौरन आपको अपने घर ले आया।"

त...तुम!" चक्रधर की हैरानी और बढ़ी- "तुम मुझे उठाकर लाये?"

"हां।"

"लेकिन तुम कानून के मुजरिम हो। यशराज खन्ना के खूनी हो और इस समय पूरी दिल्ली की पुलिस तुम्हारे पीछे है।" इंस्पेक्टर चक्रधर के चेहरे पर दुविधा के भाव उभर आये थे- "मुझे बचाते समय तुमने यह नहीं सोचा बल्ले-होश में आते ही मैं तुम्हें अरेस्ट भी कर सकता हूं?"

"सोचा था साहब-सोचा था।" बल्ले ने गहरी सांस ली- "आपको देखकर मेरे दिमाग में सबसे पहले यही सवाल कौंधा था। लेकिन आपकी हालत इतनी नाजुक थी कि मुझसे रहा न गया और मैं आपको उठाकर ले आया।"

चक्रधर अचरज से बल्ले को देख रहा था।

"इंस्पेक्टर साहब!" बल्ले भावनाओं के प्रवाह में बोला- "मैंने यशराज खन्ना का खून किया जरूर है-लेकिन आवेश में किया है-जुनून में किया है। और यकीन मानो-अभी मेरे दिमाग में जुनून उतरा नहीं है इंस्पेक्टर साहब! मेरे अंदर आग धधक रही है-ज्वालामुखी दहक रहा है। कुलभूषण ने सिर्फ मेरे चाचा का ही खून नहीं किया बल्कि उसने उस इंसान का खून किया है-जिसने बचपन से आज तक मेरी परवरिश की थी अपनी गोद में खिलाया था उसने मुझे। चिना पहलवान ही वो इकलौता इंसान था इंस्पेक्टर साहब-जिसने मेरे मां-बाप के स्वर्गवासी होने के बाद सारी दुनिया का प्यार -मेरे ऊपर न्यौछावर कर दिया। इसीलिये मैं हर खून माफ करसकता हूं। ले किन चिना पहलवानका खून माफ नहीं कर सकता। मेरे अंदर धधकती यह आग अब उसी दिन बुझेगी -जिस दिन मैं कुलभूषण के खून से अपने हाथ रंग लूंगा और दावा है कि ऐसा करने से अब दिल्ली पुलिस भी मुझे नहीं रोक सकती।"

चक्रधर फटे-फटे नेत्रों से बल्ले को देखता रह गया।

डॉक्टर उसके होश में आने से पहले ही जा चुका था और इस समय उस पूरे घर में इंस्पेक्टर चक्रधर तथा बल्ले के अलावा कोई न था।

चक्रधर कुछ देर आरामकरता रहा-फिर वो आहिस्ता से बिस्तर छोड़कर उठा- "मेरी मोटरसाइकिल कहां है?"

"बाहर ही खड़ी है।" बल्ले बोला- "मैं उसे भी ले आया था।"

चक्रधर संभल-संभलकर दरवाजे की तरफ बढ़ा।

"मुझे गिरफ्तार नहीं करोगे इंस्पेक्टर साहब?"

चक्रधर के कदम ठिठक गये।

वह आहिस्ता से पलटा।

"एक पुलिस इंस्पेक्टर होने के नाते यह मेरा फर्ज बनता है बल्ले!" चक्रधर बोला- "कि मैं तुम्हें अभी और इसी वक्त गिरफ्तार कर लूं। लेकिन अफसोस-इस समय मेरे सामने वकील यशराज खन्ना का हत्यारा नहीं बल्कि सिर्फ एक इंसान खड़ा है। एक ऐसा इंसान-जिसके सीने में भावनायें हैं-जज्बात हैं-और जिसने अभी-अभी एक आदमी की जान बचायी है। मैं नहीं जानता बल्ले-तुम्हारा यह रूप सच्चा है या फिर तुम यह कोई नाटक खेल रहे हो। हां, एक बात जरूर कहूंगा-मैं तुम्हारे इस रूप से प्रभावित जरूर हुआ हूं लेकिन एक बात का ख्याल जरूर रखना बल्ले!" एकाएक चक्रधर की आवाज में चेतावनी का पुट आ गया- "आज के बाद तुम्हें इंस्पेक्टर चक्रधर कहीं भी मिले-तो इस गलतफहमी में हर्गिज मत रहना कि वह तुम्हें बख्श देगा। इंस्पेक्टर चक्रधर का कहर तुम्हारे ऊपर बिल्कुल उसी तरह टूटेगा-जिस तरह किसी अपराधी के ऊपर इंस्पेक्टर का कहर टूटता है। क्योंकि तुम्हारे और मेरे बीच सिर्फ एक ही रिश्ता हो सकता है-और वो रिश्ता है, अपराधी और इंस्पेक्टर के बीच का रिश्ता!"

"मुझे उस पल का बेसब्री से इंतजार रहेगा इंस्पेक्टर साहब! "बल्ले ने भी बे-खौफ जवाब दिया- "जब कानून के एक रखवाले से मेरी मुलाकात होगी-फिलहाल जाते-जाते अपनी एक अमानत ले जाइये।"

"अ...अमानत!"

"हां-अमानत!"

बल्ले ने वहीं स्टूल पर रखी एक नटराज मूर्ति उठाकर चक्रधर की तरफ बढ़ाई।

'नटराज मूर्ति' को देखते ही.चक्रधर के दिमाग में धमाका हुआ।

"य...यह मूर्ति तुम्हारे पास कहां से आयी?"

"किशनपुरा में जिस जगह आपका एक्सीडेण्ट हुआ था-वहीं यह मूर्ति भी पड़ी थी।"

"ओह!"

"लेकिन बात क्या है-आप इस मूर्ति को देखकर इतना चौंके क्यों?"

"जानते हो।" चक्रधर के होठों पर हल्की-सी मुस्कान दौड़ी-. 'यह मूर्ति किस धातु की बनी है?"

"नहीं-किस धातु की है?' '

"इस सवाल का जवाब तुम्हें आज नहीं बल्कि कल देश के तमाम अखबारों में छपा मिलेगा-खे सकता है कि तब तुम्हें इस बात का सख्त अफसोस भी हो कि तुमने मुझे यह मूर्ति सौंपी तो क्यों सौंपी।"

वह शब्द कहने के बाद मुड़ा इंस्पैक्टर चक्रधर!

फिर मूर्ति लेकर तेज-तेज कदमों से बाहर खड़ी बुलेट मोटरसाइकिल की तरफ बढ़ गया।

बल्ले के होठों पर अब मुस्कान थी।

जहरीली मुस्कान!

सेठ दीवानचन्द के अड्डे परपहुंचने के बाद भी कुलभूषण कितनी ही देर तक यूं हांफता रहा था-जैसे सैकड़ों मील लम्बी दौड़ में हिस्सा लेकर अभी-अभी वहां आया हो

उसकी आखों में दहशत-ही-दहशत थी।

वहां कुलभूषण का सबसे पहले सेल्समैन से सामना हुआ।

उसका नाम दशरथ विलीमोरिया था-वह पूना का रहने वाला था और एकदम ओरिजिनल मराठा था। लेकिन पिछले पांच साल से वो दिल्ली शहर में आकर बस गया था और अब दिल्ली के कुछ ऐसे गाढ़े रंग में रंग चुका था कि अपने सभी महाराष्ट्रियन संस्कारों को भूल चुका था।

यहा तक कि वो जबान भी अब दिल्ली' वाली बोलता था। अब तो उसकी जिंदगो में एक ही चीज का महत्व था-पैसा-पैसा और पैसा।

कुलभूपण को इतनी बुरी तरह हांफते देख दशरथ बिलीमोरिया भी चौंका।"

"क्या हुआ-तुम यूं हांफ क्यों रहे हो?"

तभी सेठ दीवानचन्द भी वहां आ गया।

दीवानचन्द के आते ही कान्ति पाण्डे ने उन्हें आज इंस्पेक्टर चक्रधर से हुई मुठभेड़ के बारे में बता दिया।

सेठ दीवानचन्द के नेत्र आश्चर्य से फैले।

"व...वडी इंस्पेक्टर चक्रधर इसे गिरफ्तार क्यों करना चाहता था नी?"

"साहब-वह बोलता था।" कुलभूषण ने भाव-विहल स्वर में बताया- "कि दिल्ली में आजकल दुर्लभ वस्तुओं की चोरी करने वाला जो गिरोह सक्रिय है-मैं उस गिरोह का सक्रिय- सदस्य हूं। किसी ने उसे यह बात फोन पर गुमनाम टिप देकर बतायी थी।"

"ग...गुमनाम टिप!" सेठ दीवानचन्द चौंका- "व...वडी उसे यह गुमनाम टिप किसने दी?" "यह तो चक्रधर को भी नहीं मालूम। लेकिन वह शख्स चाहे जो भी है साहब-वही इस

सारे फसाद की जड़ है।" कुलभूषण ने आन्दोलित- लहजे में कहा- "उसी ने मेरी हंसती-खेलती जिंदगी में यूं षड्यन्त्र रच-रचकर नरक के हवाले कर दिया है।"

'धीरज रख कुलभूषण साई!" दीवानचन्द ने उसकी पीठ थपथपाई- "धीरज रख-वडी यूं आदोलित होने से, यूं परेशान होने से कुछ नहीं होनें वाला नी। तू यह बता-मूर्तियां लेकर आया।"

"ह....हां।"

"निकाल उन्हें।"

कुल-गुण ने पांचों मूर्तियां निकालने के मकसद से शर्ट ऊपर की।

फिर उसकी नजर जैसे ही नटराज मूर्तियों पर पड़ी-वह सन्न् रह गया।

एकदम सन्न्

उनमें से एक मूर्ति गायब थी।

"य...यह तो सिर्फ चार मूर्तियां हैं। दशरथ बिलीमोरिया के मुंह से सिसकारी छूटी।

कुलभूषण पसीनों से लथपथ हो गया।

"ह...हां-ल...लेकिन मैं शीतलके घर से पांच मूर्तियां ही लेकर चला था।"

"वडी फिर एक मूर्ति किधर है नी?" सेठ दीवानचन्द झुंझला उठा- "साई-एक मूर्ते को तेरा पेट निगल गया नी या फिर हवा खा गयी?"

"ज...जरूर!" तभी कुलभूषण आतंकित मुद्रा में बोला- "जरूर वह मूर्ति किशनपुरा मे उसी जगह गिर पड़ी है-जहां इंस्पेक्टर चक्रधर और हमारी मुठभेड़ हुई थी।"

"हे दाता!" कान्ति पाण्डे के शरीर में भी खौफ की लहर दौड़ गयी- "अगर वह मूर्ति चक्रधर के हाथ लग गयी-तब क्या होगा?" सब स्तब्ध रह गये।

अगले दिन एक ऐसी हृदयविदारक घटना घटी-जिसने कुलभूषण के रहे-सहे हौंसले भी पस्त कर दिये।

सुबह का वक्त था।

रात कुलभूषण ने अड्डे में ही गुजारी थी।

उस अड्डे के बारे में कुलभूषण को अभी इतना ही मालूम हो सका था कि वो किसी इमारत के बेसमेंट में बना था।

उसेमें आठ विशालतम हॉल कमरे थे-बड़े-बड़े गलियारे थे-चार अटेच्ड बाथरूम थे-एक किसी भी सब्जैक्ट पर कतचीत करने के लिये कॉफ्रेंस हॉल था-कुल मिलाकर वहां सुख-सुविधा के तमाम साधन मौजूद थे।

दशरथ विलीमोरिएया और कान्ति पाण्डे वहीं सोते थे-जबकि सेठ दीवानचन्द की अशोक विहार के इलाके सें बड़ी भव्य कोठी थी।

उस वक्त तक सेठ दीवानचन्द भी वहां आ चुका था।

तभी अखबार हाथ में लिये कान्ति पाण्डे वहां भागा-भागा आया।

उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। उसका हाल बुरा था।

"क्या बात हैं-बडी घबरा क्यों रहा है नी?"

"अ...आपने आज का अखबार पढ़ा बीस?"

"नहीं-अखबार तो नहीं पढ़ा-कोई खास खबर छपी है साई?"

"खबर नहीं बल्कि तोप का गोला समझा बॉस-जो भी पड़ेगा, उसी के चेहरे पर मेरी तरह हवाइयां उड़ने लगेंगी।"

"वडी ऐसी भी क्या खबर छप गयी साई-मैं भी तो देखूं।"

सेठ दीवानचन्द, दशरथ बिलीमोरिया और कुलभूषण-उन तीनों की दृष्टि तेजी से अखबार के कवर रोज की तरफ उठी।

वहां उन्होंने जो खबर छपी देखी-उसे देखकर वह तीनों वाकई बुरी तरह उछल पड़े।

अखबार के कवर पेज पर ही मोटी-मोटी सुर्खियों में छपा था:

दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाले संगठन का सुराग पता चला कुलभूषण के पास से एक मूर्ति बरामद दिल्ली। कल आधी रात के समय किशनपुरा की एक गली के अंदर इंस्पेक्टर चक्रधर और कुख्यात अपराधी कुलभूषण के बीच हुई भीषण भिड़न्त में दिल्ली पुलिस को सोने की एक नटराज मूर्ति बरामद हो गयी।

उल्लेखनीय है कि इण्डियन म्यूजियम से पिछले दिनों सोने की छ: बेशकीमती नटराज मूर्तियां चोरी हो गयी थीं-जिनकी अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में दो करोड़ रुपये कीमत थी। जो नटराज मूर्ति बरामद हुई-वह सोने की छ: नटराज मूर्तियों में सें ही एक है।

बताया जाता है कि कल रात इंस्पेक्टर चक्रधर को टेलीफोन पर एक गुमनाम टिप मिली थी-जिसमें किसी अज्ञात व्यक्ति ने इंस्पेक्टर चक्रधर को बताया कि कुख्यात अपराधी कुलभूषण दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाले गिरोह का सक्रिय सदस्य है और वा थोड़ी देर बाद ही सोने की नटराज मूर्तियां लेकर किशनपुरा से फरार होने वाला है।

टिप मिलते ही इंस्पेक्टर चक्रधर ने फौरन किशनपुरा पहुंचकर कुलभूषण को जा दबोचा-लेकिन- -चक्रधर उसे गिरफ्तार कर पाता, उससे पहले ही कुलभूषण अपने एक साथी की मदद से उस पर हमला करके भाग खड़ा हुआ।

सर्वविदित है कि विभिन्न संग्रहालयों से दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाला यह संगठन पिछले दो साल से दिल्ली शहर में सक्रिय है। इतना ही नहीं-यह संगठन अब तक लगभग बाईस करोड़ रुपये मूल्य की अनेक ऐतिहासिक वपुएं चोरी कर चुका है।

इंस्पेक्टर चक्रधर कुलभूषण से बरामद मूर्ति पुरातत्व संग्रहालय को सौंप दी है। एण्टीक रिसर्च सेण्टर मै प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर यह साबित हो चुका है कि बरामद मूर्ति संग्रहालय से चोरी गयी असली नटराज मूर्ति ही है। दिल्ली पुलिस अब पूरी सरगमी से कुलभूषण की तलाश कर रही है -इसके अलावा दिल्ली पुलिस ने कुलभूषण को गिरफ्तार कराने वाले किसी भी व्यक्ति को एक लाख रुपये का नगद इनाम देने की भी घोषणा की है।

उस खबर को पढ़कर सभी भौंचक्के रह गये।

कुलभूषण को तो जैसे सांप सूंघ गया था-वह दहशत से थर-थर कांपने लगा।

"एक बात मेरी समद्र में नहीं आयी।" दशरथ बिलीमोरिया बोला

"क्या?"

"यह कैसे संभव है कि जो पांच मूर्तियां कुलभूषण ने हमें लाकर दीं-वह पीतल की है। जबकि जो नटराज मूर्ति इंस्पेक्टर चक्रधर के हाथ लगी-वो सोने की है?"

सब हैरान निगाहों से एक-दूसरे का चेहरा देखते रहे।

कोई कुछ न बोला।

"पाण्डे साई! "सेठ दीवानचन्द ने उस सन्नाटे को भंग किया।

"जी बॉस!"

" डी तू जल्दी से वो सभी नटराज मूर्तियां और कसौटी लेकर आ।"

कान्ति पाण्डे तुरन्त वहां से दौड़ पड़ा।

जल्द ही जब वो वापस लौटा-तो उसके हाथ में नटराज मूर्तियां ओर एक कसौटी थी।

सेठ दीवानचन्द ने एक-एक करके उन सभी पांचों मूर्तियों को कसौटी पर धिसा।

लेकिन निराशा!

घोर निराशा!

वह सभी मूर्तियां पतल की थीं।

"म...मैं पहले ही बोलता था साहब कुलभूषण उत्तेजित होकर बोला- "कोई मुझे फंसाने की कोशिश कर रहा है- कोई मेरे चारो तरफ जाल बिछा रहा है।"

"लेकिन कौन?" दीवानचन्द झल्ला उठा- "वडी कौन हरामी तेरे को फंसाने की कोशिश कर रहा है नी? वडी कौन, तेरे चारों तरफ जाल बिछा रहा है? मुझे उसका पता-ठिकाना तो बता-और यह मूर्ति वाला करिश्मा कैसे हो गया? कुलभूषण साई-अखबार में एकदम साफ-साफ लिखा है कि बरामद मूर्ति ही सोने की असली नटराज मूर्ति है। उसमें शक-शुबहे की तो कोई गुंजाइश ही नहीं बची।"

"मेरे दिमाग में एक बात आ रही है साहब!"

"क्या?"

"जरूर!" कुलभूषण पुन: उत्तेजित हो उठा- "जरूर इंस्पेक्टर चक्रधर के पास नहीं है-जो मेरे बेल्ट के पीछे से निकलकर गिरी थी।"

"फिर वो कौन-सी मूर्ति है साई?"

"जरूर मेरे पास से मूर्ति नीचे गिरने और इंस्पेक्टर चक्रधर द्वारा मूर्ति उठाये जाने के बीच किसी ने वह मूर्ति बदल दी।"

"व...वडी!" दीवानचन्द के नेत्र फैल गये- "वडी तू यह कहना चाहता है कि किसी ने पीतल की वह मूर्ति उठाकर इसकी जगह असली सोने की मूर्ति रख दी?"

"हां-म मैं...बिल्कुल यही कहना हूं साहब!"

"लेकिन एसा कौन करेगा साई-वडी किसी को ऐसा करने क्या जरूरत पड़ी है नी?"

"जरूरत पड़ी है साहब!" कुलभूषण बोला- "यह हरकत जरूर उसी रहस्यमयी व्यक्ति ने की है-जिसने इंस्पेक्टर चक्रधर को मेरे बारे में गुमनाम टिप दी। इतना ही नहीं साहब-मुझे तो अब एक और रहस्य की गुत्थी भी सुलझती दिखाई दे रही है।"

"कैसी गुत्थी?"

"जरा सोचो साहब-जब उस रहस्यमयी व्यक्ति के पास सोने की एक नटराज मूर्ति है-

तो बाकी मूर्तियां भी उसी के पास होंगी। इसका मतलब उसी नई वो मूर्तियां हथियाई-उसी रहस्यमयी व्यक्ति ने चिना पहलवान का भी खून किया।"

कुलभूषण की बात सुनकर तीनों के दिमाग में धमाके हुए

"बॉस!" दशरथ बिलीमोरिया शुष्क लहजे में बोला- "तो उस रहस्यमयी व्यक्ति से ज्यादा इस सारे फसाद की जड़ यह कुलभूषण नजर आ रहा है। जबसे इसके कमबख्त कदम पर पड़े हैं-तभी से हमारे साथ भी अजीब-अजीब किस्म के हादसे हो रहे हैं। जरा सोचो बॉस-अगर कोई ऐसा रहस्यमयी व्यक्ति है भी-तो वह जरूर इससे अपनी पुरानी दुश्मनी निकाल रहा है-हम क्यों इसके चंक्कर में पड़े। पहले ही नटराज मूर्तियां गायब होने की वजह से हमें दो करोड़ रुपये का थूक लग चुका है। हमारे हक में अब यही अच्छा है बॉस-हम इसे फौरन यहां से निकालकर बाहर खड़ा करें। यह भी दाता का लाख-लाख शुक्र है-जो इसने अभी हमारे अड्डे का गुप्त रास्ता नहीं देखा।"

"दशरथ ठीक कहता है बॉस!" कान्ति पाण्डे ने भी दशरथ बिलीमोरिया की बात के प्रति समर्थन जाहिर किया- 'इसका अब सचमुच यहां ज्यादा देर रुकना ठीक नहीं-दिल्ली पुलिस वैसे ही इसका सम्बन्ध दुर्लभ वस्तु बुराने वाले गिरोह से जोड़ रही है फिर इसके ऊपर एक लाख रुपये का इनाम भी रख दिया गया है-ऐसी परिस्थिति में यह ज्यादा दिन पुलिस के शिकंजे से बचा नहीं रहने वाला। यह पकड़ा जाये-उससे 'पहले ही हमें इससे पल्ला झाड लेना चाहिये।"

कुलभूषण बेचैन हो उठा।

एक साथ कई सारी बातें उसके दिमाग में कौंधी।

अगर इस वक्त उन लोगों का आसरा उसके ऊपर से उठ गया-तो फिर उसे दिल्ली पुलिसे के फंदे में फंसने से दुनिया की कोई ताकत नहीं बचा सकती।

उसके अड्डे से' बाहर निकलते ही पकड़े जाना है।

वह एक खतरनाक अपराधी साबित हो चुका है।

उसके ऊपर एक लाख का इनाम घोषित है।

एक लाख!

कुलभूषण के शरीर में सिंहरन दौड़ गयी।

एक लाख का इनाम हासिल करने के. लालच में तो दिल्ली शहर का एक-एक आदमी उसे पुलिस के हवाले करना चाहेगा।

अपनी मौजूदा स्थिति और होने वाले अपने खौफनाक अंजाम की कल्पना करके कुलभूषण का पूरा शरीर कांप गया।

उसने सेठ दीवानचन्द की तरफ देखा।

दीवानचन्द जो दशरथ बिलीमोरिया और कान्ति पाण्डे की बातें सुनकर किसी गहरी सोच में डूब गया था।

"वडी तुम दोनों शायद ठीक ही कहते हो।" फिर-सेठ दीवानचन्द काफी सोचने-विचारने के बाद हुंकार-सी भरकर बोला- "वाकई अब इसका और ज्यादा देर यहां रुकना हमारी सेहत के लिये ठीक नहीं है।"

"य...यह आप क्या कह रहे हैं साहब?" कुलभूषण दहल उठा।

"वडी यह हम सिर्फ कह नहीं रहे बल्कि यह हमारा अटल फैसला भी है-कान्ति पाण्डे तुम्हें अभी वापस किशनपुरा छोड़ आयेगा।"

"न...नहीं साहब-म...मेरे ऊपर रहम करो साहब!"

कुलभूषण गिड़गिड़ा उठा- "अगर ऐसी परिस्थिति में, मैं किशनपुरा पहुच गया-तो समझो मैं जेल पहुंच गया साहब! वहां के गुण्डे-मवाली बहुत डेन्जर हैं-वह इनाम के लालच में मेरे ऊपर इस तरह झपटेंगे-जैसे चील मांस के लोथड़े पर झपटती है। मैं बेगुनाह होकर भी मारा जाऊंगा-इ...इसलिये मेरे ऊपर रहम करो।"

"वडी लेकिन हम तेरे ऊपर कैसे रहम करें न?" सेठ दीवानचन्द बोला- "अगर तू ज्यादा दिन तक यहां रहा-तो हम सब लोगों का यहां बिस्तरा गोल हो जाना है।"

"नहीं होगा साहब!" कुलभूषण पुन: गिड़गिड़ाया- "आप में से किसी का भी यहां से बिस्तरा गोल नहीं होगा। आप जैसा कहोगे-मैं बिल्कुल वैसा-वैसा करूंगा। मैं आप लोगों का गुलाम बनकर रहूंगा-लेकिन भगवान के लिये मुझे दिल्ली पुलिस के मुंह में मत धकेलो साहब!"

कुलभूषण की आखों में आसू छलछला आये।

जबकि सेठ दीवानचन्द के चेहरे पर हिचकिचाहट के भाव उभरे थे।

"म...मैं उस रहस्यमयी व्यक्ति. के षड्यन्त्र का शिकार हो चुका हूं साहब!" कुलभूषण खून के आसू रोता हुआ बोला- मै मेरे सामने अब कोई रास्ता नहीं-कोई मंजिल नहीं-मैं अब सिर्फ कानून से भागा हुआ एक खतरनाक अपराधी हूं।"

सेठ दीवानचन्द ने दशरथ बिलीमोरिया और कान्ति पाण्डे की तरफ देखा।

उन दोनों के चेहरे पर भी हिचकिचाहट के भाव थे।

"ठीक है साई!" दीवानचन्द ने यूं धीरे-धीरे गर्दन हिलाई, जैसे उस पर बड़ा भारी अहसान कर रहा हो-"वडी हम सलाह-मशवरा करने के बाद कल तेरे बारे में कोई फैसला करेंगे।"

"ल...लेकिन...।"

"चिन्ता मत कर कुलभूषाग साई-जो होगा, अच्छा होगा। अब तू जाकर आराम कर।"

कुलभूषण के चेहरे पर संतोष के भाव उभर आये।

लाकिन उसे कहां मालूम था-अभी उसके ऊपर से बुरे, ग्रहों की छाया हटी नहीं है।

हर लम्हां मौत और खौफ के साये में जिंदगी बसर करते हुए कुलभूषण की वो पांचवीं रात थी।

"अड्डे के अंदर ही एक सर्वेण्ट क्वार्टर जैसा छोटा-सा कमरा था-जो सेठ दीवानचन्द ने उसके लिये खोल दिया था।

दशरथ बिलीमोरिया ने उसे बिछाने के लिये एक दुतई और ओढ़ने के लिये एक पतला-सा कम्बल दे दिया था।

रात के दो बज रहे थे।

लेकिन कुलभूषण खी आखों में नींद का दूर-दूर तक नामों निशान न था-वह अपने कमरे में सिकुड़ा-सिमटा सा पड़ा था और उसकी आखों के गिर्द रह रहकर शीतल का चेहरा धूम रहा था!

न जाने कहां-कहां तलाश कर रही होगी उसे वो।

कितनी परेशान होगी उसके लिये शीतल।

उफ्! उस छोटी-सी उधारी चुकाने के फितूर ने उसे कितने बड़े जंजाल में फंसा दिया था।

अपनी आवारा कुत्ते जैसी हो चली हैसियत पर गौर करके कुलभूषण कम्बल ओढ़े-ओढ़े ही अपने कमरे से निकलकर बाहर गलियारे में आ गया।

नींद न् आने की वजह से उसका थोड़ा चहलकदमी करने को दिल चाह रहा था।

कुलभूषण चंद कदम ही चला होगा-तभी वह एकाएक बुरी तरह चौंका।

कांफ्रेंस हॉल के अंदर से बातचीत करने की आवाजें आ रही थीं।

कुलभूषण लपककर कॉफ्रेंस हल के नजदीक पहुचा।

वह एक बहुत बड़ा हॉल कमरा था। कॉफ्रेंस हॉल बीचों-बीच एक लम्बी आयताकार मेज पड़ी थी-जिसके इर्द-गिर्द लगभग बीस के करीब कुर्सियां मौजूद थीं।

पूरे कॉफ्रेंस हॉल में गहन अंधकार फैला था।

सिर्फ छत में लटके एक साठ वाट के ग्लोब का फोकस मेज के बीचों-बीच पड़ रहा था।

कुलभूषण ने बंद दरवाजे की झिर्री में-से अंदर का नजारा देखा।

इतनी रात को भी सेठ दीवानचन्द वहां मौजूद था।

उसके सामने दशरथ बिलीमोरिया और कान्ति पाण्डे बैठे थे-वह तीनों उस समय डकैती की किसी बहुत महत्वपूर्ण योजना पर बातचीत कर रहे थे।

कुलभूषण दरवाजे से कान लगाकर उनकी वार्ता सुनने लगा।

सेठ दीवानचन्द थोडी गरमजोशी से भरी आवाज में कह रहा था- "वडी मुझे आज ही सुपर, बॉस डॉन मास्त्रोनी का न्यूयार्क से एक संदेश-पत्र मिला है।"

"क्या लिखा है उन्होंने?" दशरथ बिलीमोरिया ने पूछा।

"साई-वो नटराज मूर्तियों के आश्चर्यजनक ढंग से गायव हो जाने की वजह से बड़े नाराज हैं उन्होंने लिखा है कि वह बुद्धवार को दिल्ली के होटल मेरीडियन में चिना पहलवान का बड़ी बेसब्री से इतजार

कर रहे थे कि वह कब मूर्तियां लेकर उनके पास आये-लेकिन सुबह जब उन्होंने चिना पहलवान की मौत का समाचार सुना तो वह फौरन वापस न्यूयार्क के लिये कूच कर गये। बिलीमोरिया साई-उन्होंने यह भी लिखा है कि जिस पार्टी से उन्होंने नटराज मूर्तियों का सौदा किया था-वह पार्टी मूर्तियां हासिल न होने के कारण बहुत नाराज हो रही हैं-उन्होंने बड़ी मुश्किल से उस पार्टी को काबू मै किया है।"

"और कुछ लिखा सुपर बॉस ने?" कान्ति पाण्डे बोला।

"हां।" सेठ दीवानचन्द की आवाज थोड़ी गंभीर हो उठी- "इस बार सुपर बॉस ने हमें एक ऐसी डकैती की योजना के सम्बन्ध में बताया है कि अगर हम उस योजना में कामयाब हो गये-तो हमारे वारे-न्यारे हो जायेंगे। वडी उस डकैती में हमारे हाथ इतना मोटा रोकड़ा लगेगा कि हमारी पचास पुश्तें ठाठ से बैठकर खा सकती हैं।"

"ऐसी क्या योजना है?"

"ध्यान से सुनो।" सेठ दीवानचन्द उन्हें विस्तारपूर्वक सब कुछ समझाता हुआ बोला-

"कल यानी सोमवार को पूर्व सोवियत संघ के एक गणराज्य कजाखिस्तान से किसी महाराजा का एक दुर्लभ ताज दिल्ली शहर में प्रदर्शन के लिये आ रहा है-और उस ताज में पचास ऐसे बेशकीमती. हीरे लगे हुए है कि उन जैसे हीरे आज पूरी दुनिया में कहीं नहीं हैं। इतना ही नहीं वह ताज ऐतिहासिक दृष्टि से भी बहुत मूल्यवान है-उस ताज के बारे में कहा जाता है वो ताज ईसा से पूर्व उस दौर का है-जब इंसान ने सभ्यता की सीढ़ियां चढ़नी ही शुरू की थीं। उसी दौर मैं कजाखिस्तान के एक राजा ने अपने राज्य के बेहतरीन कारीगरों से इस ताज का निर्माण कराया था- वडी उस राजा को ज्योतिष विद्या पर भी बहुत यकीन था-उसने हीरे के गुण-दोष के पारखी कैई विद्वानों से सैकड़ों हीरो में से वह पचास हीरे चुनवाये। उन विद्वानों का मानना था कि वो हीरे राष्ट्र की उन्नति, शान्ति और खुशहाली के प्रतीक थे।"

बोलते-बोलते रुका सेठ दीवानचन्द।

दशरथ बिलीमोरिया और कान्ति पाण्डे उसकी बातें बेहद गौर से सुन रहे थे।

जबकि दरवाजे से कान लगाये खड़े कुलभूषण की भी एकाएक उस दुर्लभ ताज में दिलचस्पी जाग उठी थी।

"सुपर बीस ने आगे लिखा है।" सेठ दीवानचन्द थोड़ा रुककर पुन: बोला- "कि हीरों से जड़े उस दुर्लभ ताज के बारे में यह कहानी भी बड़ी प्रसिद्ध है कि जिस दिन से उस राजा ने वह ताज पहनना किया था उसी दिन से उसके राज्य का विस्तार भी होना शुरू हो गया था। वरनी उससे पहले कजाखिस्तान के इलाके में अनेक जंगली कबोले विद्रोह का बिगुल बजाते रहते थे-लेकिन ताज का निर्माण होते ही चारों तरफ शान्ति और खुशहाली का माहौल बन गया-जो सोवियत संघ के टूटने के बावजूद कजाखिस्तान में आज तक बरकरार है।"

दशरथ बिलीमोरिया ने थोड़ा केवेनीपूर्वक पहलू बदला।

"कुछ भी कहो बॉस!" दशरथ बिलीमोरिया बोला- "एकाएक ऐसी बाते पर यकीन नहीं होता-यह तो दन्त कथाओं जैसी कहानी मालूम होती है।"

"वडी हमें इस बात से क्या लेना-देना नी।" सेठ दीवानचन्द बोला- "कि उस ताज के साथ

जुड़ी यह कहानी सच्ची है या झूठी-वडी हमें अपने रोकड़े से मतलब होना चाहिये-अपने नावे से मतलब होना चाहिये। वडी आज की तारीख में उस ताज को हासिल करने के लिये दुनिया के कई बड़े-बड़े देश जी-तोड़ कोशिश में लगे हैं-जिनमें अमरीका सबसे आगे है। सुपर बस का कहना है कि हमें उस ताज के बदले में अमरीका सरकार एक अरब रुपये तक दे सकती है।"

" एक अरब रुपये!" कान्ति पाण्डे के मुंह से सिसकारी छूटी।

" हां-एक अरब रुपये। वडी अभी तक वों ताज कजाखिस्तान के एक म्यूजियम में भारी हिफाजत के साथ रखा हुआ था-उसकी वहां सिक्योरिटी कितनी जबरदस्त है-इस बात का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि उस ताज को चुराने की अभी तक एक दर्जन से भी ज्यादा बार कोशिशें हो चुकी हैं-लेकिन हर कोशिश नाकाम रही-चोरों को हर बार असफलता का मुंह देखना पड़ा।"

"जब उस ताज की इतनी जबदस्त सिक्योरिटी है।" कान्ति पाण्डे बोला- "तो हम लोग ही उसे किस तरह चुरा पायेंगे?"

"वडी तू पागल है नी।" सेठ दीवानचन्द भुनभुनाया- "पाण्डे साई-आज से पहले उस दुर्लभ ताज को चुराने की जितनी भी कोशिशें -वो सब कजाखिस्तान में हुई थीं यह पहला मौका है-जब वो ताज दूसरे देश में प्रदर्शन के लिये आ रहा है-और इसे हमें अपनी समझना चाहिये कि उस दुर्लभ ताज की प्रदर्शनी कहीं नहीं बल्कि हमारे ही शहर के इण्डियन म्यूजियम में लगेगी। वडी वही इण्डियन म्यूजियम-जहां से हम लोग पहले ही नटराज मूर्तियां पार कर चुके हैं।"

"यह बात आपको कैसे मालूम?" दशरथ बिलीमोरिया ने उत्सुकतापूर्वक पूछा-"कि उस ताज की प्रदर्शनी इण्डियन म्यूजियम में ही लगेगी?"

"वडी सुपर वीस ने ही यह बात अपने संदेश-पत्र में लिखकर भेजी है-और मुझे कैसे मालूम होता?"

"ए...एक बात पूछू बॉस?" दशरथ बिलीमोरिया इसबार थोड़ा हिचकिचाता हुआ बोला।

"पूछो।"

"सुपर बीस को न्यूयार्क में बैठे-बैठे हर बात कैसे मालुम हो जाती है?"

"वडी अगर यह मेरे को मालूम होता।" सेठ दीवानचन्द तिक्त स्वर में बोला- "तो मैं यहां लोगों के साथ बैठकर अपना दिमाग खराब क्यों करता-फिर तो मै सुपर बॉस डॉन मास्त्रोनी की तरह न्यूयार्क के किसी आलीशान होटल में पड़ा अपनी अगली योजना के पत्ते न फैला रहा होता।"

दशरथ बिलीमोरिया ने फौरन अपने होंठ सी लिये।

"दशरथ साई!" दीवानचन्द एक-एक शब्द चबाकर बोला- "हमें इस तरह की बेकार बातों में अपना दिमाग खराब करने की बजाये इस तरफ ज्यादा ध्यान देना चाहिए कि हम उस ताज को चुराने में किस तरह कामयाब होंगे-बडी हमें दौलत कमाने का, इतना शानदार मौका किसी भी हालत में खोना नहीं है। यूं समझो-हमारी किस्मत खुद अपने पैरों से चलकर कजाखिस्तान से यहां आ रही है।"

"लेकिन बॉस!" कान्ति पाण्डे बोला-"उस दुर्लभ ताज को चुराना हमारे लिये इतना आसान भी न होगा-जितनी आसानी से हमने नटराज मूर्तियां ली थी।–

"क्यों- दुर्लभ ताज चुराना इतना आसान क्यों नहीं होगा?"

"क्योंकि यह आपको भी मालूम है बॉस-वह ताज पहली बार किसी दूसरे देश में प्रदर्शन के लिये लाया जा रहा है-ठीक?"

"बिल्कुल ठीक।"

"इससे यह साबित होता है।" कान्ति पाण्डे आगे बोला- "कि कजाखिस्तान गणराज्य की नजर में उस दुर्लभ ताज का बहुत ही खास महत्व है।

मेरे इस तर्क को इस बात से भी और ज्यादा बल मिलता है कि उस दुर्लभ ताज को चुराने की कजाखिस्तान में ही कई छोटी-बड़ी कोशिशें हो चुकी हैं-लेकिन हर बार चोरों को नाकामी का मुंह देखना पड़ा। यानी कजाखिस्तान गणराज्य ने उस ताज की सिक्योरिटी का बहुत ही पुख्ता इंतजाम कर रखा है-अगर ऐसा न होता तो चोर उसे न जाने कब के उड़ा ले गये होते-इस दुनिया में एक से बढ़कर एक शातिर मौजूद है।"

"बडी, तुम कहना क्या चाहते हो?"

"मै सिर्फ यह कहना चाहता हूं बॉस-जिस ताज की सिक्योरिटी का कजाखिस्तान गणराज्य ने इतना पुख्ता इंतजाम कर रखा है-वह कजाखिस्तान अपने उस दुर्लभ ताज को ऐसे ही तो भारत नही भेज देगा। स्वाभाविक-सी बात है कि भारत में भी उस ताज के जरबदस्त इंतजाम किये गये होंगे।"

सेठ दीवानचन्द गंभीर हो उठा।

कान्ति पाण्डे काफी हद तक सही कह रहा था।

"पाण्डे साई!" दीवानचन्द धीरे-धीरे गर्दन हिलाता हुआ बोला-"बडी तेरी बात में जान है-कजाखिस्तान गणराज्य में भारत सरकार की मदद से यहां भी सिक्योरिटी के इंतजाम तो जरूर किये होंगे।"

"सिर्फ इंतजाम नहीं बॉस-बल्कि बहुत खास इंतजाम किये होंगे।" कान्ति पाण्डे बोला- "सिक्योरिटी की इंतजाम तो नटराज मूर्तियों के लिये भी किया गया था-लेकिन क्या हुआ उस इंतजाम का? सारा इंतजाम ढाक के तीन पात की तरह रखा रह गया और हम मूर्तियां चुराकर भी फरार हो गये। देख लेना बॉस-भारत सरकार हमारे द्वारा की जाने वाली दुर्लभ वस्तुओं को चोरी से भी भरपूर सबक लेगी और इसलिये उस दुर्लभ ताज का और ज्यादा खास, ज्यादा स्पेशल सिक्योरिटी इंतजाम किया जायेगा।"

"मैं मानता हूं पाण्डे साई।" सेठ दीवानचन्द दृढ़ लहजे में बोला- "तेरी हर बात ठीक है। वडी लेकिन फिर भी हम लोगों को उस ताज को चुराकर दिखाना है-हमने साबित कर देना है कि बड़ी-बड़ी सिक्योरिटी। भेदने की क्षमता हम लोगों के अंदर है।"

"इसके लिये हमें सबसे पहले दुर्लभ ताज को देखना होगा।"

"बिल्कुल ठीक।"

"ताज को देखने के लिये इण्डियन म्यूजियम में दर्शकों की ऐंट्री कब से शुरू होगी?"

"परसों से।" सेठ दीवानचन्द ने बताया- "कल वह दुर्लभ ताज कजाखिस्तान से दिल्ली लाया जायेगा-वह किस फ्लाइट से दिल्ली आ रहा है-यह बात अभी तक पूरी तरह गुप्त रखी गयी है। निःसन्देह दोनों सरकारों? इस बात का खतरा है कि अगर कहीं यह बात लीक. ही गयी-तो कहीं कोई अपराधी संगठन उस दुर्लभ ताज को हासिल करने के लिये पूएर प्लेन को ही हाईजैक न कर ले।"

"ओह!"

"बहरहाल!' दीवानचन्द उस मीटिंग का पटाक्षेप कूरता हुआ बोला- "उस दुर्लभ ताज को हासिल करने की दिशा में हमारा सबसे पहला काम यह पता-लगाना होगा कि भारत सरकार ने उसकी सिक्योरिटी के क्या-कया इंतजाम किये हैं। साई-सिक्योरिटी के इंतजामों की फुल जानकारी कर लेने के बाद. ही हम किसी योजना की रूपरेखा तैयार करेंगे-ऑल राइट?"

"ऑल राइट।"

दशरथ बिलोमोरिया और कान्ति पाण्डे की गर्दनें एक साथ स्वीकृति में हिलीं।

मीटिंग उसी क्षण बर्खास्त हो गयी।

कुलभूषण जो कॉफ्रेंस हॉल के दरवाजे से कान लगाये खड़ा वार्तालाप का एक-एक शब्द रहा था--वह हतप्रभ-सी स्थिति में वापस अपने कमरे की तरफ।

कमरे में घुसतें ही उसने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया फिर दुतरई पर लेटकर लम्बी-लम्बी सांसें लेने लगा।

उसके होश गुम थे।

उसके कानों में घण्टियां बज रही थी।

दिमाग मानो सुनसान पड़ी वीरान घाटियां बन चुका था-जिसमें रह-रहकर एक ही आवाज गूंज रही थी- "हे दाता-हे मेरे भगबान-क्या यह सचमुच उस दुर्लभ ताज को चुराने में सफल हो जायेंगे?"

"क्या दिल्ली शहर में एक और चौंका देने वाली चोरी होगी?"

अगले दिन उस दुर्लभ ताज के सम्बन्ध में एक अखबार के अंदर आधे पेज की प्रचार सामग्री छपी।

प्रचार सामग्री में दुर्लभ ताज का पूरा वर्णन था और उसे शान्ति तथा खुशहाली का प्रतीक भो बताया गया था।

इतना ही नहीं-दर्शकों का ध्यान आकर्षिक करने के लिये अखबार के अन्दर कई बड़ी दिलचस्प बातें भी छपी थीं।

जैसे अखबार में लिखा था-रूडोल्फ यूबे नामक जिस राजा ने उस दुर्लभ ताज का निर्माण कराया

-वह एक सौ बीस वर्ष का होकर मरा।

अपने पूरे जीवनकाल में उसे या उसके राज्य को किसी भी परेशानी का सामना नही करना पड़ा।

आगे लिखा था--बह दुर्लभ ताज अपनी खुद करता है। जिसने भी उस दूर्लभ ताज को चुराने की कोशिश की-इतिहास-साक्षी है कि वह बर्बाद हो गया या फिर मारा गया।

ऐसी ही ढेरों किस्मत की बातें उस ताज के सम्बन्ध में अखबार के अन्दर छपी थी।

साथ ही बेहद लुभावने शब्दों में लिखा था:

अब यह रहस्यपूर्ण ताज राक सप्ताह के लिये-आपके शहर दिल्ली में आ पहुंचा है। ताज को देखने का यह शानदार मौका किसी भी हालत में न खोयें। कल मंगलवार से उस दुर्लभ ताज के दर्शन हेतु आप सब इण्डियन म्यूजियम के हॉल नम्बर चार में पहुंचे।

चार नम्बर हॉल के खुलने और बंद होने का समय-

सुबह दस बजे से शाम छ: बजे तक

विशेष नोट -दर्शक अपने साथ किसी भी तरह का कोई सामान न लाये-क्योंकि यह सुरक्षा की दृष्टि से ठीक नहीं है।

उस प्रचार सामग्री से एक बात तरह साबित हो गयी। वो यह कि सुपर बॉस डॉन मस्त्रोनी उस दुर्लभ तारन के सम्बन्ध में जो-जो बातें अपन संदेश-पत्र में लिखी थीं-वह सब सच थीं।

मंगलवार को सुबह ग्यारह बजे सेठ दीवानचन्द, कान्ति पाण्डे के साथ उस दुर्लभ ताज को एक नजर देखने और उसकी सिक्योरिटी का मुआयना करने इण्डियन म्यूजियम पहुंचा।

वहा दर्शकों की खूब भीड़ थी।

लगभग सौ सुरक्षा कर्मियों ने इण्डियन म्यूजियम को चारों तरफ से घेर रखा था।

दस-बारह सुरक्षाकर्मीयो ने सेल्फ लोडिंग राइफल (एस० एल० आर०) लिये म्यूजियम छत पर अलग-अलग दिशाओं में खड़े थे।

म्यूजियम में प्रवेश करने के लिये लोहे के दो बड़े-बड़े एन्ट्रेंस डोर थे।

लेकिन अब उन दोनों में-से एक एन्ट्रेंस डोर को सात दिन के लिये सील कर दिया गया था सिर्फ मुख्य सड़क से जुड़े एन्ट्रेंस डोर द्वारा ही दर्शक आ-जा रहे थे।

वहीं दो मेटल डिटेक्टर भी लगे थे।

प्रत्येक दर्शक को उन मेटल डिटेक्टरों के ऊपर से गुजरकर अन्दर प्रवेश करना होता था।

हालांकि यह विशेष नोट अखबार में ही छाप दिया गया था कि कोई भी दर्शक अपने साथ कैसा भी कोई-सामान न लाये-लेकिन फिर भी कुछ दर्शक भूल से अपने साथ हैण्ड बैग, वेनिटी बैग या ब्रीफकेस जैसी साधारण चीजें ले आये थे-एन्ट्रेंस डोर पर खड़े सुरक्षाकर्मी अब उन चीजों को अपने पास ही जमा कर रहे थे और बदले में उन्हें एक स्लिप दे रहे थे।

वापसी पर दर्शक वह स्लिप सुरक्षाकर्मियों को लौटा देते और उन्हें उनका सामान मिल जाता।

सेठ दीवानचन्द और कान्ति पाण्डे ने भी मेटल डिटेक्टर के ऊपर से गुजरकर म्यूजियम में प्रवेश किया।

एन्ट्रेंस डोर के बाद म्यूजियम का मेन गेट था।

वहां भी छः सुरक्षाकर्मी खड़े थे-जो प्रत्येक दर्शक को अपने हाथों से टटोल-टटोलकर तलाशी लेने के बाद ही अंदर जाने दे रहे थे। दीवानचन्द और कान्ति पाण्डे की भी तलाशी ली गयी।

जेबों का सामान निकालकर देखा गया।

पीठ और सीने से लेकर, पैंट की बेल्ट और जांघ तक को सुरक्षाकर्मियों ने खूब थपथपाकर देखा कि कहीं उन्होंने कोई प्राणघातक हथियार वहां तो नहीं बांधा हुआ है। तलाशी का ऐसा ही एक और सिलसिला म्यूजियम के विशाल गलियारे के अंदर भी चला।

फिर वह न जाने कितने इंफ्रारेड कैमरों के सामने से गुजरकर हॉल नम्बर चार में दाखिल हुए।

हॉल नम्बर चार की महिमा ही अलग थी।

वहां का सारा माहौल तिलस्मी थीं।

फॉल सीलिंग की छत और लगभग एक फुट चौड़ी प्लास्टर पेरिस की परत चढ़ी दीवार में दो दर्जन से भी ज्यादा रंग-बिरंगे बड़े-बडे हैरीजन बल्ब लगे हुए थे-जिनका तीखा प्रकाश आपस में एकाकार होकर माहौल में विचित्र-सा माधुर्य बिखेर रहा था।

उस छोटी-सी रंगीन दुनिया के बीचों-बीच एक चार फुट ऊंचे डायस पर शीशे के बॉक्स में बन्द वह दुर्लभ ताज रखा था।

डायस से चार-चार फुट दूर लोहे के पाइप की बेरकेट्स लगायी गयी थीं।

उन्हीं बेरकेट्स के सहारे आगे बढ़ते हुए दर्शकों को उस दुर्लभ ताज के दर्शन करने थे।

सेठ दीवानचन्द और कान्ति पाण्डे दर्शकों की बेरकेट्स वाली लाइन में लग गये।

फिर वो धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए उस दुर्लभ ताज को देखने लगे। उनकी आखें अपलक उसी ताज पर चिपककर रह गयीं थीं। क्या लाजवाब चीज थी।

बेहद अद्भुत

बेहद आश्चर्यजनक!

वह ताज जितना पुराना था

-उतनी ही उसमें चमक थी।

उसके अन्दर जड़े पचास बेशकीमती हीरे इस तरह जगमगा रहे थै-

जैसे उन हीरो में लाइटें फिट कर दी गयी हों।

वाकई वह एक नायाब चीज थी।

दुर्लभ ताज को देखते ही सेठ दीवानचन्द और कान्ति पाण्डे के मुंह में पानी भर आया।

जितनी देर वह हॉल नम्बर चार में रहे-उतनी देर उनकी एक सैकिण्ड के लिये भी दुर्लभ ताज के ऊपर से नजर नहीं हटी।

दस मिनट बाद जब वह दोनों म्यूजियम से बाहर निकले तो बुरी तरह मुत्रमुक्घ थे

उसके के मन में यह धारणा अब और पक्की हो चुकी थी कि चाहे कुछ भी हो जाये।

चाहे कितनी ही मुश्किलों का उन्हें सामना करना पड़े-लेकिन बह उस ताज को हर हालत में हासिल करके रहेंगे।

उसी रात सेठ दीवानचन्द ने अपनी फियेट में सवार होकर इण्डियन म्यूजियम के आगे से दो चक्कर काटे।

यह देखने के लिये कि रात के समय वहां सिक्योरिटी का क्या इंतजाम रहता है।

परन्तु यह देखकर उसे भारी निराशा हुई कि रात के समय वहां सिक्योरिटी और बढ़ा दी गयी थी।

दिन में जहां इण्डियन म्यूजियम के चारों तरफ सौ पुलिसकर्मी फैले थे-वहीं अब दो सौ के आसपास थे।

लेकिन फिर भी सेठ दीवानचन्द ने हिम्मत नहीं हारी।

अड्डे पर लौटते ही उसने कांफ्रेंस हॉल में मीटिंग बुलायी।

हमेशा की तरह उस मीटिंग में तीन व्यक्ति शामिल हुए-खुद सेठ दीवानचन्द, दशरथ बिलीमोरिया और कान्ति पाण्डे।

अपने सर्वेण्ट क्वार्टर जैसे कमरे में लेटा कुलभूषण, जो बहुत देर से उसी पल का बेसब्री से इंतजार कर रहा था-वह भी कम्बली ओढ़े-ओढ़े दवे पांव दौड़ता हुआ कांफ्रेंस हॉल के दरवाजे पर जा पहुंचा-फिर वो अंदर होने वाले वार्तालाप को बड़े ध्यान से सुनने लगा। इसमें कोई शक नहीं साई! सेठ दीवानचन्द बोला- "वह दुर्लभ ताज वाकई बड़े कमाल की चीज है-उस पर एक नजर डालते ही लगता है कि वो कोई मूल्यवान वस्तु हो सकती है। कुल मिलाकर जितना शानदार वो दुर्लभ ताज है-भारत सरकार ने उतनी ही शानदार उसकी सिक्योरिटी कर रखी है।"

सिक्योरिटी तों उसकी वैसे भी शानदार होती बॉस।" दशरथ बिलीमोरिया बोला- "आखिर भारत सरकार की नाक का: सवाल है। अगर कहीं वो दुर्लभ ताज चोरी हो गया-तो यहां की सरकार कजाखिस्तान के अधिकारियों को अपना क्या मुंह दिखायेगी? क्या कहेगी उंनसे आखिर उन लोगों ने यकीन के बलबूते पर ही तो अपनी इतनी महत्वपूर्ण चीज को प्रदर्शन के लिये इण्डिया भेजा है।"

"सेठ दीवानचन्द एकाएक हो-हो करके हंसने लगा।

"वड़ी दशरथ साई!" दीवानचन्द हंसते हुए ही बोला- "इण्डिया की नाक तो अब कटनी ही कटनी है।"

"क्यों"

"क्यों क्या! वडी जब ताज ही चोरी हो जायेगा-तो फिर नाक भी कैसे बची रहेगी नी?"

दशरथ बिलीमोरिया के होठों पर भी मुस्कान थिरक उठी।

"पाण्डे साई!" सेठ दीवानचन्द ने कान्ति पाण्डे की तरफ देखा- "वडी क्या बात है-तू कैसे खामोश है नी? कुछ बोलता बालता क्यों नहीं?"

"ऐसे ही।"

"कोई बात तो जरूर है साई-वरना खामोश बैठने वाले आदमियां में तो नहीं तू।"

"बॉस" कान्ति पाण्डे थोड़ा शुष्क स्वर में बोला- "न जाने क्यों मेरा दिल उस दुर्लभ ताज को चुराने के लिये गवाही नहीं दे रहा है।"

"क्यों-गवाही क्यों नहीं दे रहा?"

"मुझे लगता है बॉस-अगर हमने उस दुर्लभ ताज को चुराने की योजना बनायी, तो यह तो ईश्वर जाने कि हम अपनी योजना में कामयाब हो पायेंगे या नहीं-लेकिन हमें बर्बाद जरूर हो जाना है-हमारा सर्वनाश जरूर हो जाना है।"

"वडी यह क्या बकवास कर रहा है तू?" दीवानचन्द गुर्रा उठा- "खोपड़ी खराब हो गयी है तेरी?"

कांति पाण्डे ने दोबारा खामोशी धारण कर ली।

"पागल आदमी-वडी यह बात तेरे दिमाग में आयी भी कैसे?"

सेठ दीवानचन्द उसे फटकार-सी लगाता हुआ बोला- "तुझे यह सुझा भी कैसे कि अगर हमने इस योजना पर काम किया-तो हमारा सर्वनाश हो जायेगा? वडी इन्द्रलोक सें तेरे कीं आकाशवाणी हुई या फिर जो मुंह में आया-बक गया।"

"नहीं।" कान्ति' पाण्डे ने धैर्यपूर्वक जवाब दिया- "मेंने ऐसे ही कुछ भी नहीं बका।"

"यानी तुझे सर्वनाश होता दिखाई दे रहा है?"

"हां।"

"कैसे?"

"आपने दुर्लभ ताज के उस विज्ञापन को तो पढा ही था-जो अखबार के अंदर छपा था।"

"बिल्कुल पढ़ा था-सबने पड़ा था।"

"फिर तो आपने विज्ञापन में यह भी जरूर पड़ा होगा।" कान्ति पौण्डे बोला- "कि वह दुर्लभ ताज अपनी सिक्योरिटी खुद करता है-ऐसी कितनी ही कहानियां उस ताज के बारे में प्रसिद्ध हैं कि जब-जब किसी ने उस ताज को चुराने का प्रयास किया, तब-तब वही बर्बाद हुआ।"

" बडी तू कहना क्या चाहता है साई-एकदम साफ-साफ बोल।"

"भैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं- कि हमें आज से पहले घटी उन घटनाओं से कुछ सीखना चाहिये-कोई सबक लेना चाहिये!"

"और सबक हम यह लें साईं!" सेठ दीवानचन्द ने कान्ति पाण्डे को कहर बरपा करती आखों से धूरा- "कि हम उस दुर्लभ ताज को चुराने का ख्याल भी अपने दिमाग से निकाल दें। वडी तू यही कहना चाहता है नी-हम अपने हाथों से अपनी किस्मत फोड़ ले। कुल्हाड़ी चला ले अपनी गर्दन पर।"

कान्ति पाण्डे थोड़ा बौखलाया-सा नजर आने लगा।

"जवाब दे पाण्डे साईं-बड़ी तू चुप कैसे हो गया नी?"

" म...मैं सिर्फ यह कहना चाहता हू बॉस।" कान्ति पाण्डे शुष्क स्वर में बोला- "किस्मत तो हमारी तभी बदलेगी-जब हमारे हाथ वह दुर्लभ ताज लगेगा। कहीं ऐसा न हो कि हमारे हाथ दुर्लभ ताज भी न लगे और हम बर्बाद भी हो जायें।"

"तू गधा है।" दीवानचन्द गुर्रा उठा-"वडी तू बिकल एक नम्बर का पग्गल आदमी है। यह हैरानी की बात है साईं-तू कजाखिस्तान सरकार द्वारा रचा गया इतना-सा नाटक नहीं समझ सका।"

"न...नाटक-कैसा नाटक?"

"बडी आज के सुबह के अखबार में उस दुर्लभ ताज के बारे में जो कुछ छपा था-वह सब झूठ-र्हो-झूठ है। किसी प्रोफेशनल राइटर द्वारा लिखी गयी वो एक ऐसी मनगढंत कहानी है-जिसे पढ़कर हर कोई आकर्षित हो सके। इतना ही नहीं-अगरकोई अपराधी उस दुर्लभ ताज को चुराने की कल्पना करे, तो उस सनसनीखेज स्टोरी को पढ़कर उसके हौंसले पस्त हो सकें-वो आतंकित हो जाये। तुझे नहीं मालूम पाण्डे साइं-आज सुबह के अखबार में जो स्टोरी छपी वो उस दुर्लभ ताज की सबसे बड़ी सिक्योरिटी है।"

"स...सिक्योरिटी।" कान्ति पाण्डे के साथ-साथ अब दशरथ बिलीमोरिया की आखों में भी हैरानी के भाव उभरे- "वो कैसे?"

"वडी जब अपराधियों को यह मालूम होगा कि आज तक जिसने भी उस दुर्लभ ताज को चुराने का प्रयास किया-वही बर्बाद हो गया-फिर दुर्लभ ताज को चुराने का दुस्साहस ही कौन करेगा नी? बडी जैसे उस बात को सोच-सोचकर अब तेरी पतलून गीली हो रही है-जैसे ही और अपराधियों की भी तो पतलून गीली हो रही है-वह भी तो घबरा रहे होंगे। ऐसी परिस्थिति में वो स्टोरी उस दुर्लभ ताज की सबसे बड़ी सिक्योरिटी कि नहीं हुई?"

दशरथ बिलीमोरिया शान्ति पाण्डे-दोनों दंग रहे गये।

दोनों के नेत्र हैरत से फैल गये।

कितनी दूर की सूझी थी सेठ दीवानचन्द को।

लेकिन अहम् सवाल थी सेठ दीवानचन्द को।

लेकिन अहम् सवाल ये था क्या उतनी दूर की कजाखिस्तान के अधिकारियों को भी सूझी थी?

क्या उन्होंने सचमुच उस दुर्लभ ताज के बारे में वो भ्रमजाल फैलाया था?

"लेकिन वो दुर्लभ ताज एक ऐतिहासिक वस्तु है बॉस।" दशरथ बिलीमोरिया कुछ सोचकर बोला-"क्या किसी ऐतिहासिक वस्तु के बारे में इस तरह का झूठा प्रचार किया जा सकता है?"

"क्यों नहीं किया जा सकता?" सेठ दीवानचन्द फौरन बोला- "वडी वो झूठा प्रचार उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के लिये किया जा रहा है-उसकी हिफाजत के लिये किया जा रहा है-फिर इसमें गलत क्या है?"

दशरथ बिलीमोरिया चुप हो गया।

बात सही थी।

वाकई इसमें गलत क्या था नहीं।

लेकिन एक आशंका कान्ति पाण्डे और दशरथ बिलीमोरिया के दिल में आखिर तक नगाड़े की तरह बजती रही-अगर वह प्रचार कोई झूठी कहानी न होकर सच्चाई की जीती-जागती तस्वीर हुआ-तब क्या होगा?

तब क्या वो बर्बाद हो जायेंगे?

तब क्या उनका सर्वनाश निश्चित था?

उन दोनों ने उस सब्लैक्ट पर जितना सोचा-उतनी ही उनके दिमाग में उलझनें बढ़ीं।

"बडी तुम लोग अब क्या सोचने लगे नी?"

"इसका मतलब उस दुर्लभ ताज को चुराना अब पूरी तरह तय है?" दशरथ बिलीमोरिया।

"वडी मैं तुम लोगों को क्या मूर्ख दिखाई देता हूं।" सेठ दीवानचन्द काले नाग की तरह फुफकारा- "अगर ताज चुराना तय न होता-तो क्या मैं तुम लोगों के साथ यहां बैठा अपनी रात ही काली करता।"

दशरथ बिलीमोरिया ने सकपकाकर पहलू बदला।

"साई-ताज चुराना तो गड्रेंड परसेण्ट तय है-वडी अब हम लोगों को सिर्फ यह सोचना है कि वो ताज चोरी कैसे होगा- उसकी सिक्योरिटी को किस तरह भेदा जायेगा।"

"जब हम लोग ताज बुराने का फैसला कर ही चुके हैं।" तभी दशरथ बिलीमोरिया ने अपने बुद्धिमान होने कस् परिचय दिया- "तो क्यों न हम सबसे पहले ताज की सिक्योरिटी के कुल इंतजाम का पता करें।"

"सिक्योरिटी का बंदोबस्त तो हम आज ही देख आये साई।"

"वह ऊपरी बंदोबस्त था बॉस।" दशरथ बिलीमोरिया बोला-"वह वो बंदोबस्त था-जो पहली नजर में ही दिखाई दे जाता हैं जबकि वास्तव में भारत सरकार ने उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के वास्ते ऐसे कई सीक्रेट इंतजाम किये हो सकते हैं, जो हमें पहली नजर में दिखाई नहीं देते। ऐसे गुप्त सुरक्षा इंतजाम न सिर्फ ज्यादा शक्तिशाली होते हैं-बल्कि हम जैसे अपराधियों के लिये ऐसे इंतजाम ही ज्यादा खतरनाक भी साबित हो सकते हैं बॉस।"

सेठ दीवानचन्द के चेहरे पर थोड़ी हिचकिचाहट के भाव उभरे।

"वडी तू कैसे गुप्त इंतजामों की बात कर रहा है दशरथ साई-जरा साफ-साफ बोल।"

"जैसे उदाहरण के तौर पर ऐसी जगह सेफ्टी अलार्म लगा दिया जाता है।" दशरथ बिलीमोरिया बोला- " जैसे ही कोई व्यक्ति गलत तरीके से वहां घुसता है-तो वह सेफ्टी अलार्म खुद-ब-खुद नजदीक के पुलिस स्टेशन में पुलिस कण्ट्रोल रूम में या फिर बाहर मौजूद सुरक्षा कर्मियों के नजदीक बज उठता है। वह तुरन्त भांप जाते हैं कि वहा अंदर कुछ गड़बड़ है-क्लट्रौल रूम से फौरन यही रिपोर्ट वायरलेस द्वारा तमाम पुलिस पेट्रोलिंग वेन्स को सर्कुलेट कर दी जाती है जिसका नतीजा यह निकलता है कि अपराधी घटनास्थल पर ही चूहे की तरह फंस जाता है और पुलिस उसे रंगे हाथों गिरफ्तार कर लेती है। इसके अलावा मूल्यवान वस्तु क आसपास ऐसी वायर बिछाकर उनमें करण्ट प्रवाहित कर दिया जाता है-जो वायरें एकाएक नजर नहीं आतीं। इतना ही नहीं-मेरे कहने का मकसद है कि भारत सरकार ने उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के लेये और भी ऐसे इंतजाम किये-होसकते। इसलिये जब तक हमें उन तमाम गुप्त इंतजामों के बारे में कुल जानकारी हासिल नहीं हो जाती-तब तक हमारा उस दुर्लभ ताज को चुराने के बारे में सोचना भी बेवकूफी है। अगर हमें उस दुर्लभ ताज को चुराना है-तोसबसे पहले हमारा काम यह होनो चाहिये। कि हम उन गुप्त इंतजामों कं बारे में कुल जानकारी हासिल करें।

"सेठ दीवानचन्द दशरथ बिलीमोरिया की बातों से बड़ा प्रभावितहुआ।

"लेकिन दशरथ साई-हमें इतनी महत्वपूर्ण जानकारी हासिल कैसे होगी नी?"

"जानकारी हासिल करने का सिर्फ एक रास्ता है।"

"कौन-सा रास्ता?"

"हमें किसी तरह 'इनसाइड हेल्प' हासिल रिनल करनी होगी-हमें इण्डियन म्यूजियम के किसी ऐसे सिक्योरिटी ऑफीसर को अपने साथ मिलाना होगा-जो दुर्लभ ताज की फुल सिक्योरिटी कीजानकारी रखता हो।"

अब!

अब दीवानचन्द के नेत्र फट पड़े।

"नडी तेरा दिमाग तो ठिकाने है दशरथ साई!" दीवानचन्द गुर्राया- "साई-तुझे मालूम है?" तु क्या बक रहा है?" ऐसा भी कहीं हो सकता. है

"बिल्कुल हो सकता है।"

"कैसे?"

"मैं बताता हूं।" तभी कान्ति पाण्डे बीच में बडे उत्साह के साथ बोला- "मेरे पास एक ऐसी योजना है-जिससे इण्डियन म्यूजियम के किसी सिक्योरिटी ऑफीसर से मदद ली जा सकती है।"

अब सेठ दीवानचन्द ने हैरान निगाहों से कान्ति पाण्डे को देखा।

"क...क्या योजना है?"

"अभी बताता हूं योजना।"

कान्ति पाण्डे फौरन लपककर वहीं कॉफ्रेंस हॉल में एक स्कूल पर पड़ा पिछले दिन का 'सांध्य टाइम्स' अखबार उठा लाया।

फिर कान्ति पाण्डे ने उस अखबार का पन्ना खोला-जिस पर वर्गीकृत विज्ञापन छपे रहते है।

"इस विज्ञापन को पढ़ो बॉस!" कान्ति पाण्डे ने अखबार सेठ दीवानचन्द के सामने रखकर एक छोटे से विज्ञापन को उंगली से ठकठकाया-"इस विज्ञापन को पढ़ते ही सारा माजरा खुद-ब-खुद आपकी समझ में आ जायेगा।"

दीवानचन्द ने- के साथ-साथ दशरथ बिलीमोरिया ने भी उस विज्ञापन को बड़ी उत्सुकता के साथ पड़ा।

लिखा था :

आवश्यकता है

आवश्यकता है एक ऐसी गवर्नेस की-जो छ: माह के एक बच्चे की अच्छी तरह देखभाल कर सके। शैक्षिक योग्यता जरूरी नहीं-लेकिन आवेदनकर्ता के अपना कोई छोटा बच्चा न हो। मासिक आय तीन अंकों में-इच्छुक औरत/लड़की नीचे लिखे पते पर फौरन सम्पर्क करें।

-जगदीश पालीवाल

(मुख्य सुरक्षा अधिकारी-इण्डियन म्यूजियम)

4/17बी, न्यू फ्रेण्डस कॉलोनी

नई दिल्ली

उस बिज्ञापन को पढ़कर सेठ दीवानचन्द ने थोड़ी भौंचक्की निगाहों से कान्ति पाण्डे की तरफ देखा।

"वडी इस विज्ञापन में क्या खास बात है?"

"आपको कोई खास बात नहीं दिखाई दी?"

"नहीं।"

"यह तो इस विज्ञापन से आप समझ ही गये होंगे।" कान्ति पाण्डे बोला- "कि जगदीश पालीवाल नाम का यह व्यक्ति इण्डियन म्यूजियम का चीफ सिक्योरिटी ऑफिसर है और उसे अपने छ: महीने के बच्चे की देखभाल के लिये एक गवर्नेस की जरूरत है। अब आप जरा मेरे इस आइडिये पर कल्पना कीजिये बॉस-अगर हम जगदीश पालीवाल के घर में अपनी तरफ से किसी लड़की को गवर्नेस बनाकर भेज दें-तब कैसा रहेगा?"

"उससे क्या होगा?"

"उससे यह होगा कि हमारे द्वारा भेजी गयी लड़की सबसे पहले जगदीश पालीवाल को अपने प्रेमजाल में फांसेगी-उसे अपने संगमरमरी जिस्म का दीवाना बनायेगी।

और जब जगदीश पालीवाल उसके इक्क में पूरी तरह गिरफ्तार हो चुका होगा-जब उसे उस लड़की के अलावा इस दुनिया में कुछ नजर नहीं आयेगा, तब वो उससे बड़ीसहूलियत के साथ दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के बारे में सब कुछ उगलवा लेगी।"

"वडी लेंकिन इस बात की क्या गारण्टी है कि पालीवाल उस लड़की की मोहब्बत में गिरफ्तार होगा ही होगा?"

"गारण्टी है।" कान्ति पाण्डे दृढ़तापूर्ववक बोला- "अगर लड़की कोई स्वर्ग की अप्सरा हो-अलिफ के किस्से-कहानियों की छ हो-मर्द को फांसने में हुनरमंद हो-तो उस बेचारे जगदीश पालीवाल की तो औकात ही क्या है-एसी लड़की के सामने तो बड़े-बड़े देवताओं का भी ईमान डोल जाना है।

सेठ दीवानचन्द हक्का-बक्का सा कान्ति पाण्डे को देखता रह गया।

"वडी तू कहता तो ठीक है साई।" दीवानचन्द बोला-"लेकिन सवाल ये है कि हमें जन्नत की ऐसी हूर कहां मिलेगी-जो हमारे लिये यह सब कुछ करे।"

"वह हमें मिलेगी नहीं बॉस-बल्कि मिल चुकी है।"

"क...क्या मतलब?"

दीवानचन्द के साथ-साथ दशरथ बिलीमोरिया भी चौंका।

"आपने शीतल को देखा है बॉस?"

"श...शीतल-कौन शीतल?"

कुलभूषण की प्रेमिका शीतल! वही शीतल जो किशनपुरा में रहती है और जिसके साथ कुलभूषण का बड़ा जबरदस्त रोमांस चल रहा है।"

"नहीं-वडी मैंने तो उसे नहीं देखा।"

"बॉस-अगर उस लड़की को देखोगे 'तो बस देखते रह जाओगे। वह कीचड़ में खिला कमल है। वह महलों की वह शहजादी है-जिसने गलती से किशनुपरा जैसी बस्ती में जन्म ले लिया है। वा साक्षात स्वर्ग की अप्सरा है-जन्नत की दूर है। उसका सरू-सा लम्बा कद-उसक्त छरहरा बदन-उसकी तनी हुई सुडौल भरपूर छातियां उसके गोरे-चिट्टे हाथ-पांव-उसके भारी नितम्ब-बॉस!" बोलते-बोलते कान्ति पाण्डे की सांसें तेज-तेज चलने लगीं-वह जब चलती है-तो उसके पैरों की धमक से उसके कुर्कों में ऐसी थिरकन पैदा होती है-जैसे वो चल नहीं रही हो बल्कि संगीत की ताल पर थिरक रही हो।"

"बस-बस।" सेठ दीवानचन्द ने उसें फौरन टोका-"वडी पाण्डे साई-तूने तो उस लड़की के जिस्म का पूरा भूगोल ही नाप डाला नी।"

"वह लड़की है ही इसी काबिल बॉस-बेपनाह तारीफ के काबिल।.

"लेकिन जब वो इतनी खूबसूरत है-तो कुलभूषण के फंदे में कैसे फंस गयी?"

"बस फंस गयी बाँस-इस कुलभूषण की किस्मत किसी और मामले में तेज हो या न हो, लेकिन कम-से-कम लड़की के मामले में बड़ी किस्मत तेज है।"

"बहरहाल अब तू यहचाहता है साई।" दीवानचन्द बोला- "कि शीतल को गवर्नेस बनाकर जगदीश पालीवाल के यहां भेजा जाये।" बिल्कुल बॉस-मेरी गारण्टी है कि जगदीश पालीवाल उसके प्रेमजाल में फंसेगा ही फंसेगा-शीतल को देखते ही उसके सदाचार की चिता जल जानी है-और बस वो भूखा कुत्ता बन जाना है। यह वो हथियार है बॉस-जिसका निशाना किसी हालत में खाली नहीं जायेगा।"

"वडी पाण्डे साई-लेकिन शीतल हमारे लिये काम क्यों करेगी?"

"क्यों नहीं करेगी बॉस!" कुलभूषण कहेगा, तो वह करेगी-हजार मर्तबा करेगी।"

" कुलभूषण कहेगा उससे?"

" कैसे नहीं कहेगा।" कान्ति पाण्डे के चेहरे पर एकाएक बड़े खूंखार भाव उभरे- "अगर उसने नहीं कहा-तो हमें उसे यहां से बाहर नहीं निकाल देना है-उस हरामी को जहनुम नहीं पहुंचा देना है।" बात सेठ दीवानचन्द के दिमाग में भरी।

"बडी तू कहता तो ठीक है।" दीवानचन्द बोला- "अगर यह बात है-तो तू बुलाकर ला ला को कुलभूषण को।!'

कुलभूषण-जो दरवाजे कान लगाये खड़ा सारी बातचीत सुन रहा था-एकाएक उसके हाथ-पांव फूल गये।

सांसें उसे अपने गले में फंसती महसूस हुई।

वह वापस बड़ी तेजी से अपने कमरे की तरफ भागा।

जल्द ही कुलभूषण अपने कमरे में इस 'तरह लेट चुका था-जैसे गहरी नींद सो रहा।

तभी वहां कान्ति पाण्डे के कदम पड़े।

कुलभूषण फिर भी सोने का अभिनय करता रहा।

कान्ति पाण्डे ने उसे झंझोड़कर उठाया।

"क कौन है?" कुलभूषण हड़बड़ाकर उठा।

"जल्द खड़ा हो-तुझे बीस बुला रहे हैं।"

"ब....बॉस!" कुलभूषण की आवाज कांपी-"ल...लेकिन क्यों?"

"अब हिलेगा भी-बाकी कहानी तुझे वही बतायेंगे, क्या बात है।"

कुलभूषण भीगी बिल्ली बना खामोशी से उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।

उसे ऐसा महसूस हो रहा था-जैसे वो बलि का बकरा हो-और उसे. अब कुर्बानी के लिये ले जाया जा रहा था।

कुलभूषण जैसे ही कांफ्रेंस हॉल में दाखिल हुआ-तो सेठ दीवानचन्द की एक भरपूर नजर उसके ऊपर पड़ी।

कांप उठा कुलभूषण।

"अ...आपने मुझे याद किया साह?"

"हां...मैंने तुम्हें याद किया कुलभूषण साई-आओ-मेरे पास आओ।"

कुलभूषण कंपकंपाते कदमों से चलता हुआ सेठ दीवानचन्द के नजदीक पहुंचा।

"तुमने हमसे यह विनती की थी न कुलभूषण साई-तुम्हें कुछ दिन के लिये यहीं रहने दिया जाये।"

"ह...हां साहब-म...मैंने विनती की थी।"

"वडी हमने तुम्हारी इस विनती पर अच्छी तरह सलाह-मशवरा किया है।" सेठ दीवानचन्द बोला- "और साई-खूब सलाह-मशवरा करने के बाद हम लोग इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि तुम यहां रह सकते हो-लेकिन तुम्हें उसके बदले में हमारी एक शर्त पूरी करनी होगी।

"क...कैसी शर्त?" कुलभूषण फंसे-फंसे स्वर में बोला।

उसे ऐसा लग रहा था-जैसे कोई दानव उसके सीने को अपनी मुट्ठी में जकड़कर जोर से भींच रहा हो।

"दशरथ साई!" दीवानचन्द, दशरथ बिलीमोरिया की तरफ घूमा-बड़ी तू इसकी शर्त के बारे में बता-इसे यह बता कि इसने क्या करना है नी?"

दशरथ बिलीमोरिया ने गला खंखारा।

फिर, उसने कुलभूषण को सबसे पहले दुर्लभ ताज की चोरी के बारे में बताया।

फिर उसे यह बताया किउस चोरी में शीतल को उन लोगों की किस प्रकार मदद करनी थी।

कुलभूषण सकते जैसी स्थिति में खड़ा रहा।

खून उसकी कनपटी पर ठोकरें-सी मारने लगा।

कितने घटिया इंसान थे वो।

कितने नीच।

एक लड़की को-एक लड़की की आबरू को-वह अपने मतलब के लिये दांव पर लगा देना चाहते थे।

"कुलभूषण साईं!" सेठ दीवानचन्द कुछ रुककर बोला- "वडी तूने अभी तक जवाब नहीं दिया-तू शीतलको गवर्नेस बनाकर जगदीश पालीवाल के घर भेजेगा या नहीं?"

"म...मैं उसे कहीं भी कैसे भेज सकता हू साहब।" कुलभूषण डरे-डरे लहजे में बोला- "कहीं भी जाने या न जान का फैसला तो खुद शीतल ही कर सकती है।"

"वडी बकवास मत कर!" सेठ दीवानचन्द एकाएक नाग की तरह फुफकार उठा- "हम लोग कोई दूध पीते बच्चे नहीं हैं कंजर! याद रख-पुलिस तेरे पीछे भूखे कुत्ते की तरह घूम रही है। तू पुलिस के हत्थे चढ़ा और फौरन तेरी लुटिया डूबी-फौरन तेरी जिंदगी का दीया बुझा। इस समय तेरे ऊपर खतरा-ही-खतरा है-और ऐसी स्थिति में शीतल तुझे खतरे से बचाये रखने के लिए कुछ भी कर सकती है-वडी वो प्रेमिका है तेरी-लवर है तेरी। फिर उसे मोहब्बत का एक नाटक ही तो करना होगा-एक ड्रामा ही तो खेलना होगा।"

कुलभूषण चुप खड़ा रहा।

"साईं!" दीवानचन्द ने उसे साफ-साफ चेतावनी दी- "अगर तू हमारी छत्रछाया में रहना चाहता है-अगर तू चाहता है कि तू पुलिस के हत्थे न चढ़े-तो बडी तेरे को शीतल से यह काम कराना ही होगा।"

कुलभूषण फिर चुप।

"यह सोचने का समय नहीं है कुलभूषण।" इस बार दशरथ बिलीमोरिया गरजा- "जल्दी से हां या ना में जवाब दो-अगर ना करते हो तो दफा हो जाओ, यहां से। हम लोग पागल नहीं हैं-जो तेरे जैसे दिल्ली पुलिस में वाण्टेड, इनामशुदा और इश्तिहारी मुजरिम को अपने यहां शरण दें तथा ख्वामखाह किसी बड़े झमेले में फंसे।"

कुलभूषण के चेहरे पर कशमकश के भाव छाये रहे।

वीं फेसला नहीं कर पा रहा था कि उसे क्या करना चाहिये।

"पाण्डे साई!" एकाएक सेठ दिवानचन्द चिंघाड़ उठा।

"यस बॉस!" कान्ति पाण्डे ने फौरन तत्परता से कहा।

"बडी तू क्यों हम लोगों का भेजा खराब कराता है नी-तू इस कमीने को वापस किशनपुरा छोड्कर आ-यह हमारे किसी मतलब की चीज नहीं है।"

"न...नहीं कुलभूषण आतंकित हो उठा- "म...मै किशनपुरा नहीं जाऊंगा।"

"कैसे नहीं जायेगा।" कान्ति पाण्डे ने अपनी शर्ट की बाहें चढ़ाई और रौद्र रूप में उसकी तरफ बढ़ा-तेरा तो बाप भी जायेगा साले।"0

कुलभूषण के पूरे शरीर में खौफ की लहर दौड़ गयी।

वो जानता था कि वह उनके कई रहस्यों से वाकिफ हो चुका है।

इसलिये ऐसी परिस्थिति में कान्ति पाण्डे उसे किशनपुरा नहीं बल्कि कहीं और ही छोड्कर आने वाला था।

शायद दूसरी दुनियां में।

ऐसी दुनियां में-जहां से वापसी को कोई रास्ता नहीं।

इस- बीच काखि पाण्डे नं उसकी बांह कसकर पकड़ ली थो-फिर वह उस बुरी तरह घसीटता हुआ बोला- "बाहर निकल-बाहर निकल।"

"स...सुनो।" कुलभूषण चिल्ला उठा- "स...सुनो।"

कान्ति पाण्डे ठिठक गया।

"म...मैं तैयार हूं साहब।" कुलभूषण सेठ दीवानचन्द की तरफ देखता हुआ अछूत स्वर में बोला- "म...मैं तैयार हूं–से आज ही? शीतल के पास जाकर इस बात की कोशिश करता हूं कि वो गवर्नेस बन जाये।"

"कोशिश नहीं।" दिवानचन्द चिंधाडा- "वडी कोशिश नहीं-तूने यह काम हर हालत मे करना है-अगर शीतल, पालीवाल के घर गवर्नेस बनकर नहीं गयी-तो समझ तेरा और हमारा रिश्ता खत्म। वडी फिर हम तुझे नहीं जानते और तू हमें नहीं जानता।"

"और उसे वहां जाकर सिर्फ बच्चा ही नहीं खिलाना है।" तभी दशरथ चिलीमोरिया भी गुर्राया- "बील्कि उसने वहां जाकर-बच्चे के बाप की देखभाल करनी है-उससे दुर्लभ ताज की? सिक्योरिटी के बारे में सारे राज उगलवाने हैं-तभी हमारा काम मुकम्मल होगा।"

"म...मैं समझ गया।" कुलभूषण ने बेबसी की स्थिति में अपनी गर्दन हिलाई-स...सब कुछ समझ गया।"

उसकी हालत अब ऐसी हो रही थी-जैसे किसी ने शेर की मूछें पकड़ ली हों।

जिन्हें वो न छोड़ सकता था और न ज्यादा देर तक पकड़े रह सकता था।

रात के उस समय बारह बज रहे थे-जब कुलभूषण छिपता-छिपाता किशनपुरा पहुंचा।

किशनपुरा में घुसते हुए वो बेहद सावधान था-बल्ले का डर उसके दिमाग में बैठा हुआ था।

बल्ले के खौफ की वजह से ही वो शीतल के धर में पीछे से खिड़की कूदकर अंदर घुसा।

शीतल तब बेखबर पड़ी सो रही थी।

"कुलभूषण ने उसे झंझोड़कर जगाया।

"त...तुम!" शीतल, कुलभूषण को देखते ही चौंक पड़ी-

"त... तुम।" फौरन उसकी आखों से नींद उड़ गयी।

"सब कुछ ठीक तो है न शीतल?"

"त...तुम्हें यहां नहीं आना चाहिये था भूषण।" एकाएक शीतल के चेहरे पर आतंक के भाव उभर आये थे।

"क क्यों?"

" इंस्पेक्टर चक्रधर तुम, तलाश करता धूम रहा है – भूषण-वह सुबह से दो बार किशनपुरा में आ चुका है। यही हाल बल्ले का है-वह चक्रधर के खौफ की वजह से खुलेआम तो नहीं धूम रहा-लेकिन मुझे खबर है कि वह अपने चाकू से तुम्हारे पेट की अंतड़ियां फाड़ डालने के लिये बेहद व्याकुल है। इसके अलावा तुम्हारे लिये एक और बड़ी बुरी खबर है भूषण।"

" क...क्या?"

सिर्फ यही दोनों तुम्हारी तलाश में नहीं लगे हुए-बल्कि जबसे दिल्ली पुलिस ने तुम्हारे ऊपर एक लाख का इनाम घोषित किया है-तब से इनाम झसिल करने के लालच में किशनपुरा के कई दूसरे गुण्डे भी तुन्हारी तलाश में लग गये हैं। इसीलिये तो मैंने तुमसे कहा-तुम्हें यहां नहीं आना चाहिये था। तुम नहीं जानते भूषण-आज पूरे दिल्ली शहर में तुम्हारे नाम की चर्चा है-हर गली में, हर चौराहे पर, हर नुक्कड़ पर बारे में बातें हो रही हैं। लोग तुम्हें लॉटरी का टिकिट समझ रहे हैं. भूषण-कोई तुम्हें गिरफ्तार कराकर एक लाख कमाने का इच्कछ है।"

दाता!

दाता!!

कुलभूषण को अपने हाथ-पैर बर्फ होते महसूस हुए।

वह दिन-ब-दिन कैसे भयानक जाल में फंसता जा रहा था।

"भूषण!"

"हूं!" कुलभूषण के अचेतन मस्तिष्क पर हथौड़े जैसी चोट पड़ी-हूं।"

"सुबह जब यहां इंस्पेक्टर चक्रधर आया था।" शीतल थोड़े सकुचाये स्वर में बोली- "तो उसके साथ पूरी पुलिस पलटन भी थी।"

"फिर?"

"व...वह तुम्हारे घर का सारा सामान कुर्क करके ले गया-यहां तक कि उसने तुम्हारी ऑटो रिक्शा भी नहीं छोड़ी।"

"हे देवा!"

कुलभूषण के मुंह से सिसकारी छूट गयी।

फिर कुलभूषण वहीं बैड पर धम्पू से बैठ गया था।

उसके चेहरे से पसीने की धारायें बहने लगीं।

शीतल भी उसी के नजदीक ही बैठ गयी और बड़ी अजीब नजरों से उसे देखती हुई शुष्क लहजे में बोली- "तुम कल से कहा थे-मैं तुम्हारे बारे में सोच-सोचकर परेशान हो रही थी?"

"स...सेठ दीवानचन्द के अड्डे पर ही। था।"

"वह लोग अब तुम्हारे साथ किस तरह का व्यवहार करते हैं?"

"ठ...ठीक ही करते हैं।" कुलभूषण ने विचलित स्वर में कहा- "उन्होंने मुझे वहीं रहने के लिये एक छोटा-सा कमरा दिया हुआ है।"

"अगर यह बात है-तो फिर तुम इस खतरनाक जगह पर क्यों आय हो? यहां तौ तुम्हारे लिये मौत-हीऔत है।"

कुलभूषण के चेहरे पर अब हिचकिचाहट के भाव उभरे।

"जवाब क्यों नहीं देते?"

"म...मैं इस समय एक बड़ी भारी मुसीबत में फंसा हुआ हूं शीतल।"

"मुसीबत!" शीतल का दिल जोर से उछला- "कैसी मुसीबत"

कुलभूषण ने अपना चेहरा दोनों हथेलियों में छिपा लिया।

"म... मुसीबत भी ऐसी है-जिससे सिर्फ तुम .ही मुझे छुटकारा दिला सकती हो।"

"म मैं!"

"हां-तुम।"

"ऐसी भी...क्या मुसीबत है?" शीतल की आखों में अश्चर्य के भाव उभरे।

कुलभूषण की उससे फिर भी कुछ कहने की हिम्मत न हुई।"

भूषण-आखिर तुम कुछ बोलते क्यों नहीं-क्या बात है?" कुलभूषण ने बेहद डरते-डरते सारी बात शीतल को बता दी।

उसे यह भी बताया कि उसने किस तरह गवर्नेस बनकर जगदीश पालीवाल को अगने पलीवल में फांसना था।

और यह भी बताया कि अगर उसने वो काम न किया-तो उसका क्या अंजाम होना था।

शीतल सन्त बैठी रह गया।

फिर वह उसके पास से उठी और खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गयी। "क्या बात है शीतल!" कुलभूषण फौरन उसके पीछे-पीछे खिड़की के पास पहुंचा- "क्या तुम मुझसे नाराज हो गयीं?"

शीतल ने अपना चेहरा खिड़की के पल्ले से सटा लिया।

"तुम कुछ बोलती क्यों नहीं शीतल?"

कुलभूषण नें शीतल का चेहरा झटके से अपनी तरफ किया-तो उसके दिल-दिमाग पर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी।

वो रो रही थी-उसका चेहरा आसुओं से तर था।

"श...शीतल!" तड़प उठा कुलभूषण-मैं जानता हूं कि मैंने यह बात कहकर तुम्हारा दिल दुखाया है-ल...लेकिन तुम्हीं बताओ-मैं और क्या करता शीतल।" कुलभूषेण की आखों में भी आसू छलछला आये-"उन शैतानी ने मुझे मजबूर किया कि मैं तुमसे आकर यह बात कहूं-लेकिन चिन्ता मत करो-अब अगर उनकी छत्रछाया मेरे ऊपर से उठती है-तो उठ जाये-मुझे परवाह नहीं-मुझे किसी बात की परवाह नहीं।"

"न...नहीं भूषण!" शीतल ने जल्दी से अपने आसू साफ किये थे- "नहीं। इस समय तुम्हें उन लोगों की मदद की बहुत जरूरत है-आर उन लोगों की छाया तुम्हारे से उठ गयी-तो तुम नहीं जानते कि तुम और कितने बड़े संकट में फंस जाओगे।"

"ल...लेकिन...।"

"बेफिक्र रहो भूषण।" शीतल कसकर उसके सीने से लग गयी- "मैं तुम्हारे लिये यह काम करूंगी-तुम्हारी खुशियों के लिये यह काम करूंगी।"

"य...यह बात तुम दिल से कह रही हो शीतल?"

"ह...हां...।' ' शीतल की आवाज भावनाओं के वेग से कंपकंपायी-"द...दिल से ही तो कह रही हूं।"

रो पंडा कुलभूषण।

शीतल भी उसके सीने से लिपटी धीरे-धीरे सुबक रही थी।

उस रात कुलभूषण जब वापस सेठ दीवानचन्द के अड्डे पर लौटा-तो उसका मन भारी-भारी था।

उस दिन भी कान्ति पाण्डे किशनपुरा की आखों पर पट्टी बांधी और तब वो उसे अपने अड्डे पर लेकर गया।

उन लोगों का अड्डा कहां है-इस राज से कुलभूषण अभी तक अंजान था।

उसने कई बार रात को चोरी-छिपे अड्डे का गुप्त रास्ता पता लगाने का प्रयास किया-लेकिन हर बार उसे अपने मकसद में नाकामी मिली। बेपनाह कोशिशों के बाद उसे सिर्फ इतना मालूम हो सका कि वह लोग कॉफ्रेंस हॉल के अंदर ही .कहीं से प्रकट होते हैं। तथा फिर वहीं से गायब हो जाते हैं।

यानी आने-जाने का रास्ता उसी कॉफ्रेंस हॉल के अदर से था।

बहरह हाल-उस रात के बाद से शीतल की परीक्षा की घड़ी शुरू हुई।

वह अगले दिन ही इण्डियन म्यूजियम की चीफ सिक्योरिटी ऑफीसर जगदीश पालीवाल की कोठी पर जा पहुंची थी।

पहला झटका तो उसे यही देखकर लगा कि वहां उससे पहले ही तीन लडकियां मौजूद थीं।

शीतल का दिल धाड़-धाड़ करके बजने लगा।

उसे वो नौकरी किसी भी हालत में चाहिये थी।

किसी भी कीमत पर।

चाहे कुछ भी ड्रामा क्यों न करना पड़े।

शीतल का दिमाग एकाएक काफी तेजी. से चलने लगा।

एक-एक करके तीनों लड़कियों को ड्रइंग हॉल में बुलाया गया। सबसे आखिर में शीतल की बारी आयी।

शीतल डरती-डरती ड्राइंग हॉल में दाखिल हुई-वह काफी भव्य ढंग से सजा हुआ एक ड्राइंग हॉल था-जिसमें सामने दो अलग-अलग कुर्सियों पर मिस्टर एण्ड मिसेज पालीवाल बैठे थे।

दोनों जवान थे-खूबसूरत थे-उनकी उम्र तीस-बत्तीस के आसपास थी और वह शक्ल- सूरत से ही काफी सभ्य नजर आ रहे थे।

मिसेज पालीवाल की गोद में एक गोरा-चिट्टा बच्चा पड़ा किलौल-सी कर रहा था-वह भी अपने मम्मी-डैडी की तरह खूबसूरत था।

"नमस्ते!"

उन दोनों को ही देखते ही शीतल ने अपने हाथ जोड़ लिये।

"नमस्ते!"

उन दोनों के हाथ भी 'नमस्ते" की मुद्रा में जुड़े।

"बैठो।" फिर जगदीश पालीवाल ने कहा।

शीतल सिकुड़ी-सिमटी सी एक कुर्सी पर बैठ गयी।

"तुम्हारा नाम क्या है? पहला सवाल मिसेज पालीवाल ने पूछा था।

"स...संध्या-संध्या शर्मा।" उसने जानबूझकर नकली नाम बताया।

"तुम्हारी शदी हो गयी?"

जी नहीं।"

"ओह!" मिसेज पालीवाल ने राहत की सांस ली- "फिर तो किसी छोटे बच्चे के होने का भी सवाल नहीं उठता-कहां तक पढ़ी हो?"

"वी० ए० फाइनल।"

"गुड-रहती कहा हो?"

यही वो पल था -जब शीतल ने ड्रामा किया।

मिसेज पालीवाल के उस सवाल के पूछते ही शीतल की आखों में औसू छलछला आये।

उसने दोनों हथेलियां से अपना चेहरा छिपा लिया और जोर से सुबक उठी।

हड़बड़ा उठे पालीवाल दम्पत्ति।

जबकि जगदीश पालीवाल तो कुर्सी से उछलकर खड़ा हो गया था।

' क...क्या वात है?" जगदीश पालीवाल बौखलाये स्वर में बोलू- "क...क्या हम लोगों ने कोई गलत सवाल पूछ लिया।

"न... नहीं साहब!" शीतल ने सुबकते हुए ही कहा- "आप लोगों ने कोई गलत सवाल नहीं पूछा।"

"फ फिर तुम रो क्यों रही हो?"

"जिसकी किस्मत में ही रोना लिखा हो साहब।" शीतल भाव-विहल स्वर में बोली- "वह रोने के अलावा और कर भी क्या सकती है। यूं तो यह दुनिया इतनी बड़ी है साहब-लेकिन इस इतनी बड़ी दुनिया में मेरा कोई घर नहीं-कोई ठिकाना नहीं।"

"यह कैसे हो सकता है।" पालीवाल दम्पत्ति चौके- "कि इतनी बड़ी दुनिया में तुहारा कोई घर नहीं -कोई ठिकाना नहीं?"

"ऐसा ही साहब।"

"तुम्हारे मां-बाप नहीं?"

"नहीं।"

"बहन-भाई-कोई नहीं?" जगदीश पालीवाल के स्वर में हैरत उमड़ी।

"नहीं साहब।"

"कमाल, है-एकाएक यकीन नहीं आता।"

" खुद भी यकीन नहीं आता साहब।" शीतल नौकरी हासिल करने के शानदार ड्रामा करती हुई बोली- "क्योंकि आज से सिर्फ तीन महीने पहले मेरे पास सब कुछ था-सब कुछु। मेरे मां-बाप थे-एक बड़ा भाई था। मैं चण्डीगढ़ की रहने वाली हूं-वहीं मेरे पिताजी का कपड़े का बड़ा अच्छा कारोबार था। नीचे दुकान थी और ऊपर मकान।"

उ...उस रात मैं अपनी रक सहेली के घर गयी हुई थी-जिसकी अगले दिन बारात आने वाली थी। और और उसी रात सव कुछ तबाह हो गया-सब कुछ।"

"क...क्या हुआ था?" जगदीश पालीवाल के चेहरे पर जबरदस्त सस्पैंस झलका।

"द...दरअसल उस रात पंजाब पुलिस से बचकर भागते हुए दो आतंकवादी हमारे घर में आये थे उन्होंने जब हमारे घर में शरण चाही, तो पिताजी और भैया ने उनकी विरोध किया-बस इसी बात से क्रोधित होकर आतंकवादियों ने मम्मी सहित मेरे पिताजी और भैया की हत्या कर दी। इतना ही नहीं-उन्होंने हमारे घर और दुकान में भी आग लगा डाली।"

"ओह-वैरी सैड!" पालीवाल दम्पत्ति सन्त रह गये।

जबकि शीतल अब पहले से भी ज्यादा जोर-जोर से सुबक रही थी।

शीतल के उस हामें का मिसेज पालीवाल पर और भी गहरा असर हुआ।

वह अपने बच्चे कों गोद में उठाये-उठाये शीतल के नजदीक आ गयी तथा फिर उसके कंधे पर स्नेह से हाथ रखा- "धीरज रखो संध्या-धीरज रखो। इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारे साथ बहुत भयंकर घटी है-लेकिन भगवान बहुत बड़ा है -वो सबकी मदद करता।"

शीतल फिर भी धीरे-धीरे सुबकती रही।

"हमारी सहानुभूति तुम्हारे साथ है संध्या।" जगदीश पालीवाल ने भी उसे ढांढस बधाया- "तुम्हें चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं।"

"इ...इसका मतलब आपने मुझे नौकरी दे दी साहब?"

क्यों नहीं-और यह नौकरी देकर मैं तुम्हारे ऊपर कोई अहसान नहीं कर रहा संध्या।" जगदीश पालीवाल बोला - ' बल्कि यह नौकरी करके तुम मेरे ऊपर अहसान कर रही हो-मुझे अपने आप पर गर्व है कि मैं तुम्हारे जैसी किसी बेसहारा लड़की के काम आ सका।"

"थैंक्यू-थैंक्यू पालीवाल साहब।" शीतल ने जल्दी-जल्दी अपनी आखों के औसू पोंछे।

"और हां।" तभी मिसेज पालीवाल बोली- "आज से तुम इसी कोठी में रहोगी-हमारे साथ-अब यही तुम्हारा घर है।"

"...ल...लेकिन।" शीतल के चेहरे पर हिचकिचाहट के भाव उभरे।

"प्लीज संध्या-इंकार मत करना-अब तुम इसी घर की एक सदस्य हो।"

"ठ...ठीक है" वह शब्द कहते हुए शीतल ने उन दोनों के सामने अपनी गर्दन झुका ली थी।

इस तरह शीतल, जगदीश पालीवाल के यहां न सिर्फ गवर्नेस की नौकरी पाने में सफल ही गयी बल्कि उसी कोठी के 'अंदर उसे रहने के लिये एक बैडरूम-भी मिल गया।

जगदीश पालीवाल कें जिस बच्चे की शीतल को देखभाल करनी थी-उसका नाम गुड्डू था।

यह बात शीतल को बाद में पता चली कि मिसेज पालीवाल कृषि मंत्रालय में सचिव थीं।

वह अपने गुड्डू बेटे को शीतल के हवाले करके उसी दिन सरकारी काम से एक सप्ताह के लिये उदयपुर चली गयीं।

शीतल का काम अब और भी आसान हो गया।

अब वो और ज्यादा सहूलियत से जगदीश पालीवाल की अपने फंदे में फांस सकती थी।

उसी रात से शीतल का "खेल' शुरू हुआ।

रात के लगभग ग्यारह बज रहे थे-जब शीतल की हृदय विदारक चीख से पूरी कोठी दहल गयी।

जगदीश पालीवाल उस समय तक जाग रहा था-और अपने बैडरूम में लेटा एक जासूसी नॉवल पढ़ रहा था।

शीतल की हृदयविदारक चीख सुनते ही उसने नॉवल एक तरफ रखा तथा फिर अद्रितीय फुर्ती के साथ शीतल के बैडरूम की तरफ झपटा।

बैडरूम का दरवाजा खुला था।

वह दनदनाता हुआ अंदर दाखिल हो गया।

वह- जैसे ही अंदर घुसा-फौरन शीतल बेहद दशतजादा अवस्था में चीखती हुई उसके शरीरसे आ लिपटी तथा बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगी।

वह अभी भी नींद के आगोश में थी।

संध्या! संध्या!!" पालीवाल ने उसे बुरी तरह झझोड़ा।

शीतल ने चौकने का जबरदस्त अभिनय किया।

उसकी आखें खुली।

फिर वो एकदम झटके से पीछे हटी।

उसके वक्ष उत्तेजना के वेग से ऊपर-नीचे उठ गिर रहे थे-सांसों में तूफान था-कपड़े अस्त-व्यस्त थे।

"संध्या-क्या हुआ संध्या?" पालीवाल ने उसे हैरान निगाहों से देखा- चिल्लाई क्यों थीं?

जवाब की बजाय शीतल धम्म से बैडपर बैठ गयी और अपनी सांसों को संतुलित करने का प्रयास करने लगी।

"तुमने क्या कोई बुरा सपना देखा था संध्या?"

"ह...हां।" शीतल हांफते हुए ही बोली- "म...मैंने बुरा सपना ही देखा था।"

"कैसा सपना?"

"वही सपना!" शीतल की आखें उदास हो गयीं- "हमारे घर में आग लग रही है-मेरे मम्मी, डैडी और भाई का खून बहाया जा रहा है-खून के छींटे उड़ रहे हैं-उनकी चीखें गूंज है। म... मझे यह सपना अक्सर दिखाई देता है साहब-और जब भी मैं इस सपने को देखती हू-तो इसी तरह चिल्लाकर उठ बैठती हूं।" बोलते-बोलते शीतल की आखों में आसुओं का समंदर तैर गया।

उसने जोर से एक सुबकी ली।

"धीरजरखो।" जगदीश पालीवाल ने उसे ढांढस बंधाया - "वक्त के साथ-साथ हर जख्म भर जायेगा।"

"सॉरी साहब!" शीतल ने अपने आसू साफ किये-मेरी वजह से आपको इतनी रात को परेशानी उठानी पड़ी।"

"इसमें परेशानी की कोई, बात नहीं-पैसे भी अभी तो मैं जाग ही रहा था।"

"म...मैं आपसे एक विनती करूं साहब?"

"क्यों नहीं-जों कहना है, बे-हिचक कहो।"

"दरअसल जिस रात यह सपना दिखाई देता है उस रात अगर में अपने कमरे में सोती हूं तो यह सपना मुझे बार-बार आता है।"

"क्या मतलब?"

"अगर आप इजाजत दें साहब-तो आज की रात मैं आपके कमरे 172n में सोना चाहती हूं। म...मैं जमीन पर ही सो जाऊंगी-वरना यह सपना बार -बार मुझे परशान करता रहेगा।

"ल...लेकिन...।" जगदीश पालीवाल, शीतल के उस प्रस्ताव पर हक्का-बक्का रह गया।

"लेकिन क्या?"

पालीवाल चुप।

"शायद आपको कोई ऐतराज है साहब?"

"नहीं-नहीं-ऐतराज जैसी कोई बात नहीं।"

"फिर?"'

पालीवाल को सूझा नहीं-वो उस लड़की को क्या कहे?

"ठीक है साहब-मैं यहीं सो जाऊंगी।"

"नहीं-नहीं-अगर तुम्हें-सपने की वजह से ज्यादा परंशानी होती है-तो मेरे बैडरूम में ही सो जाओ।"

"थैंक्यू साहब।"

शीतल तुरन्त जगदीश पालीवाल के बैडरूम में एक चटाई पर जाकर लेट गयी थी।

गुड्डू थोड़ी देर पहले तक उसके साथ सो रहा था-शीतल ने अब उसे जगदीश पालीवाल के बिस्तर पर सुला दिंया।

बेचारा पालीवाल!

वो अपने अंदर अजीब-सी बेचैनी महसूस कर रहा था।

उस रात लाख कोशिश करने के बावजूद भी उसे नींद न आ सकी।

वह बिस्तर पर लेटा करवटत्पर-करवट बदलता रहा।

उसकी आखें बार-बार शीतल के जिस्म पर जाकर-टिक जाती थीं।

शीतल!

जो सचमुच जन्नत की छ थी।

स्वर्ग की अप्सरा थी।

वह रात पालीवाल पर बड़ी भारी गुजरी।

शीतल के रूप का जादू उसके ऊपर चल चुका था।

और!

इस राज से नावाकिफ शीतल भी नहीं थी।

वह बंद पलकों की झिर्री में से जगदीश पालीवाल कीं प्रत्येक हरकत देख रही थी।

अगले दिन-सुबह के वक्त।

जगदीश पालीवाल इण्डियन म्यूजियम जाने के लिये तैयार हो रहा था-तभी उसने देखा कि शीतल भी गुड्डू को तैयार कर रही है।

"क्या बात है।" जगदीश पालीवाल थोड़ा हँसकर बोला- "आज सुबहू-ही-सुबह इस शैतान को दूल्हा कैसे बनाया जा रहा है?"

"सोचती हूं-थोड़ी देर के लिये इसे कहीं बाहर घुमा लाऊं।"

'ख्याल तो अच्छा है-लेकिन कहां जाओगी?"

"आप ही बताओ न कि कहां ले जाऊं?" मैं क्या बता सकता हूं।"

"फिर भी कोई तो आइडिया दीजिये।"

पालीवाल सोच में डूब गया।

"तुमने इण्डियन म्यूजियम देखा है?" एकाएक पालीपाल बोला।

"इण्डियन म्यूजियम-नहीं तो।"

"मैं म्यूजियम में राउण्ड पर जा रहा हूं।" जगदीश पालीवाल. अपनी बेल्ट कसता हुआ बोला- "अगर तुम चाहो-तो तुम भी गुड्डू को लेकर मेरे साथ चल सकती हो-इसी बहाने सैर भी हो जायेगी। वैसे भी आजकल म्यूजियम में कजाखिस्तान से एक बेशकीमती ताज प्रदर्शन के लिये आया हुआ है।"

"ठीक है-फिर तो वहीं चलते है।" शीतल ने उत्साहित होकर कहा- " वहां आपका साथ भी रहेगा।"

"गुड मस्करा दिया पालीवाल।

जबकि शीतल भी मन-ही-मन अपनी सफलता पर प्रसन्न हो रही थी।

कुछ ही दर पश्चात् वो जगदीश पालीवालके साथ 'सिएलो' गाड़ी' में सवार होकर इण्डियन म्यूजियम पहुंची।

वहां उपस्थित तमाम सुरक्षा कर्मियों ने फौरन एड़ियां बजा-बजाकर पालीवाल को सेल्यूट मारा।

फिर पालीवाल ने तीन-चार सुरक्षा कर्मियों से सिक्योरिटी के सम्बन्ध में कुछेक सवाल पूछे थे।

उसके बाद वो आगामी आधा घण्टे तक राउण्ड लगाने के साथ-साथ शीतल का म्यूजियम के-अलग-अलग हिस्सों में घुमाता रहा।

सबसे ज्यादा टाइम उन्होंने नम्बर चार में गुजारा।

हॉल नम्बर चार- यानी म्यूजियम का वह हॉल कमरा, जहां दुर्लभ ताज प्रदर्शन के लिये रखा था।

उस ताज की भव्यता देखकर शीतल भी भौंचक्की रह गयी। उसके दिमाग में अंधड़ से चलने लगे।

जबकि जगदीश पालीवाल इस बीच शीतल को उस दुर्लभ ताज से जुड़ी अनेक रहस्यमयी गाथायें सुनाता रहा था।

सारा समय इसी तरह गुजर गया।

लौटते वक्त।

"क्या सोच रही हो संध्या?" कार ड्राइव करते समय जगदीश पालीवाल ने शीतल की तरफ देखा।

"कुछ भी नहीं।"

"कुछ तो!"

"मैं दरअसल उस दुर्लभ ताज के बारे में सोच रही हूं।"

"क्या सोच रही हो?"

"यही कि वह कितना सुंदर है-कितना अद्रितीय-वह तो मूल्यवान भी बहुत होगा साहब?"

"एकदम सही कहा -वह न सिर्फ मूल्यवान-है बल्कि बेहद मूल्यवान है।" जगदीश बोला- "अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में उस दुर्लभ ताज की कीमत कई अरब रुपये है।"

"क...कई अरब रुपये!" शीतल के नेत्र फैल गये।

"हां।"

"तब तो उसे कोई भी चुराने की कोशिश कर सकता है।"

"बिल्कुल कर सकता है-आज से पहले भी कजाखिस्तान में कई बार उस दुर्लभ ताज को चुराने की कोशिशें हो चुकी हैं-लेकिन हर बार चोरों को असफलता का मुंह देखना पड़ा।"

"क्यों?"

"क्योंकि उस ताज के बारे में-प्रसिद्ध है कि वो अपनी सिक्योरिटी खुद करता है-जिस किसी ने भी उस दुर्लभ ताज को चुराने की कोशिश की, वह ताज तो न चुरा सका-हां पूरी तरह बर्बाद जरूर हो गया।

उदाहरण के तौर पर रूस के एक ग्लासतोनोत नामक नौजवान ने उस ताज को चुराने की कोशिश की थी-वह ताज चुराने में तो कामयाब न हुआ -हां पुलिस के हत्थे जरूर चढ़ गया। फिर किसी तरह अपने हथकण्डों की बदौलत वो पुलिस के शिंकजे से भी बचकर भाग निकला था-लेकिन उसी रात जब वो छिपता-छिपाता अपने किसी परिचित के यहां जा रहा था-तभी उसका ट्रक से इतना जबरदस्त एक्सीडेंट हुआ कि ट्रक के अगले-पिछले दोनों पहिये उसके ऊपर से गुजर गये। बहरहाल अगले दिन उसका क्षत-विक्षिप्त शव पुलिस को सड़क पर पड़ा मिला।"

"ओह!" शीतल के शरीर में सनसनी-सी दौड़ गयी।

"ऐसी ही एक घटना और सुनो।" जगदीश पालीवाल कार ड्राइव करता हुआ बोला- "एक दूसरे चोर ने भी उस दुर्लभ ताज को चुराने का प्रयास किया था-वह अपने मकसद में तो कामयाब न हो सका-लेकिन असफल होकर जब वो अपने घर लौटा तो उसी रात उसके घर बाड़ी भयंकर आग लगगयी-जिसमें उस चोर के साथ-साथ उसका पूरा परिवार जलकर खाक हो गया।"

शीतल भौचक्की-सी बैठी रह गयी।

दाता!

दाता!!

इतना हंगामाखेज है वो ताज?

फ...फिर कुलभूषण का क्या होगा?

क...क्या उसके साथ भी ऐसा ही कोई हादसा पेश आना था?

शीतल के जिस्म का एक-एक रोआ खड़ा हो गया।

फिर शीतल ने थोड़ा रुककर पूछा- "साहब-उस दुर्लभ ताज को चुराने कीं जैसी कोशिशें कजाखिस्तान में हो चुकी हैं-ऐसी ही कोई कोशिश इधर दिल्ली शहर में भी तो हो सकती है।"

"बिल्कुल हो सकती है।" जगदीश पालीवाल बोला-हमें खुद इस बात का पूरा शक है कि ऐसी कोई कोशिश यहां होगी-संभव है कि किसी संगठन ने इस दिशा में अपनी कोशिशें भी शुरू कर दी हों। इसीलिये भारत सरकार ने उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के खास इंतजाम किये हैं-तुमने देखा नहीं, इण्डियन म्यूजियम पर कितने ढेर सारे सिक्योरिटी गार्ड तैनात थे-इसके अलावा प्रत्येक दर्शक की कितनी सजगता से तलाशी ली जा रही थी।"

"क्या सुरक्षा का सिर्फ वही इंतजाम है?"

"क्यो?" जगदीश पालीवाल चौंका- " क्या वो इंतजाम कम है?"

"यह बत नहीं-मैं यह पूछना चाहती हूं कि दुर्लभ ताज के लिये कुछ गुप्त सिक्योरिटी भी तो की गयी होगी।"

"ग...गुप्त सिक्योरिटी!"

पालीवाल के दिमाग में धमाका-सा हुआ।

उसके हाथ कार के स्टेयरिंग पर कांप गये।

"क्यों-क्या हुंआ?"

"क...कुछ नहीं। वह जल्दी से संभला- "कुछ नहीं। तुमने सही कहा-हमने गुप्त सिंक्योरिटी का बंदोबस्त भी किया है।"

"क्या है वो बंदोबस्त?"

"सॉरी!" जगदीश पालीवाल के होठों पर हलकी-सी मुस्कान दौड़ी- "गुप्त सिक्योरिटी के बारे में किसी को कुछ नहीं बताया जा सकता।"

"क्यों?"

"क्योंकि हमें यह आदेश भारत सरकार की तरफ से मिले हुए है।"

बड़े दिलफरेब अंदाज में मुस्कराई शीतल- "लेकिन मुझे बंताने में क्या फर्क पड़ता है।"

"फर्क पड़ता हैं भुई!" पालीवालने थोड़े शरारती अंदाज में उसकी औखें में झांका- "हो सकता है कि तुम भी अपराधियों से मिली हुई होओ।

शीतल की 'मुस्कान' भक्क् से उड़ गयी।

उसका दिल जोर से उछला।

जबकि कार अपनी रफ्तार से दौड़ती रही थी।

जल्द ही कार कोठी के लॉन में जाकर रुकी।

शीतल, नन्हें गुड्डू को अपनी गोद में संभाले बाहर निकली थी और उसके पीछे-पीछे ही जगदीश पालीवाल भी कार को लॉक करके बाहर निकला।

"संध्या-कल मैं तुमसे एक सवाल पूछना तो भूल ही गया था।"

"कैसा सवाल?"

"तुम्हारे पिताजी का क्या नाम था?"

"द...दीनदयाल- दीनदयाल मिश्रा जी!"

"ओह! थैंक्स थैंक्स अ लॉट! "

"ल...लेकिन आपने पिताजी का नाम क्यों पूछा साहब?"

"यूं ही!" जगदीश पालीवाल मुस्कराया- "मधुर स्मृति के लिये।"

शीतल का दिल धाड़-धाड़ करके बजने लगा।

जरूर कोई और वजह थी।

उसी दिन-आधी रात के समय जब पूरा पालीवाल भवन गहन सन्नाटे में डूबा था-चारों

तरफ गहन खामोशी थी-तभी किसी ने शीतल के दरवाजे पर बड़े सांकेतिक अंदाज में तीन बार दस्तक दी। शीतल फौरन बिस्तर से उछलकर खड़ी हो गयी।

उसने लपककर दरवाजा खोला-फिर झट से बोली- "त...तुम यहां क्यों आये हो?"

"अंदर तो आने दो। "काला साया सरसराये लहजे में बोला- "फिर सब कुछ बताता हूं।"

शीतल दरवाजे से एक तरफ हट गयी।

फौरन साये ने अंदर कदम रखा-वह कुलभूषण था।

"त...तुम्हें यहां आते किसी ने देखा तो नहीं? "शीतल ने जल्दी से दरवाजा वापस बंद किया।

"न...नहीं-किसी ने नहीं देखा।" कुलभूषण सरसराये लहजे में बोला- "लेकिन तुम इतना घबरायी हुई क्यों हो-कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं हो गयी?"

"अभी तक तो नहीं हुई-लेकिन आने वाले समय में हो सकती

"क...क्या मतलब?' कुलभूषण का दिल उछला- "त...तुम कहना क्या चाहती हो-क... कैसी गड़बड़ हो सकती है?"

शीतल हिचकिचाई।

"तुम कुछ बोलती क्यों नहीं?"

शीतल ने दबी-दबी जबान में उसे शाम वाली घटना के बारे में बताया।

"य...यानी तुम यह कहना चाहती हो।" कुलभूषण बोला- "कि जगदीश पालीवाल को तुम्हारे ऊपर शक हो गया है-इसलिये उसने तुमसे तुम्हारे पिताजी का नाम पूछा।"

"और नहीं तो क्यों पूछा?"

"ऐसे भी तो पूछा हो सकता है-फिर जगदीश पालीवाल ने वजह भी तो बयान की थी-उसने कहा था कि वो मधुर स्मृति के लिये पूछ रहा है।"

"यह सब बेकार की बातें हैं भूषण "शीतल आन्दोलित लहजे में बोली- "यह कोई ठोस वजह नहीं में गारण्टी से कहती हूं कि पालीवाल के उसे साधारण सवाल के पूछने के पीछे जरूर कोई महत्वपूर्ण वजह थी।"

कुलभूषण भी सोच में डूब गया।

"म...मुझे डर लग रहा है भूषण-म...मुझे लग रहा है, जैसे कोई अनर्थ होने वाला है।"

"इम पागल हो गयी हो।"

"मैं पागल नहीं हुई भूषण!"

"लेकिन यह तुम्हारे दिल का वहम भी तो हो सकता है शीतल-जगदीश पालीवाल को आसमान से आवाज तो नहीं आने वाली कि तुम किन्हीं अपराधियों से मिली हुई हो और...।" कुलभूषण की जबान से निकलने वाले शब्द पूरे हो पाते-उससे पहले ही किसी ने बाहर से दरवाजा थपथपाया।

कुलभूषण के शब्द हलक में ही घुट गये।

"क...कौन?" शीतल ने कंपकंपाये स्वर में पूछा।

"मैं हूं-जगदीश पालीवाल।" बाहर से बड़ी कड़कदार आवाज उभरी- "दरवाजा खोलो शीतल!"

दोनों के शरीर में करेंट-सा प्रवाहित हो गया।

दोनों घबरा उठे।

शीतल ने डरते-डरते दरवाजा खोला-सामने रौद्र रूप में जगदीश पालीवाल खड़ा था।

उसकी कनपटी की नसें तनी हुई थीं-नथने फूल-पिचक रहे थे। कुलभूषण उसके दरवाजा खोलने से पहले ही बैड के नीचे जा छिपा था।

"अ...आप!" जगदीश पालीवाल का वो रौद्र रूप देखकर शीतल कांप गयी- "अ...आप इस वक्त!"

"पीछे हटो।" पालीवाल गुर्राया।

शीतल सहमकर पीछे हो गयी।

उसके हाथ-पैर 'छी' के मरीज की तरह कांपने लगे।

"कौन हो तुम अंदर...आते ही पालीवाल चिंघाड़ा।

"सु...संध्या-म...मैं संध्या हूं।"

"नहीं।" जगदीश पालीवाल कहर भरी नजगें से उसे घूरता हुआ धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ा- "तुम संध्या नहीं हो तुम संध्या नहीं हो सकतीं।"

'क...क्यों?" संध्या के शरीर में झुरडारी दौड़ी- "म...मैं संध्या क्यों नहीं हो सकती?

"क्योंकि तुम किसी अपराधी संगठन की मैम्बर हो।

"पालीवाल चीखकर बोला- "और...और तुम्हारा यह नाम भी नकली है।"

"शीतल हक्की-वक्की रह गयी।

उसके दिमाग में भयंकर विस्फोट हुआ।

जबकि जगदीश 'पालीवाल ने उसी क्षण आश्चर्यजनक फुंर्ती के साथ रिवॉल्वर निकालकर शोतल के उनपर तान दी थी।

पसीनों में लथपथ होती चली गयी शीतल!

"यह झूठ है।" वो हलक फाड़कर डकरायी- "म...मैं किसी अपराधी संगठन की मैम्बर नहीं-मैं अपराधी नहीं।"

मुझे बेवकूफ मत बनाओ।" जगदीश पालीवाल ने दांत किटकिट हुए शीतल के माथे पर रिवॉल्वर रखी- "बहुत हो चुका अव यह नाटक-मैं तुम्हारी तमाग हरकतों से वाकिफ हो चुका हू चालाक लड़की। मुझे मालूम हो चुका है कि तुमने गवर्नेस की यह नौकरी भी किसी षड्यन्त्र क तहत हासिल की है।"

"क...कौन कहता हे। "

शीतल ने हिम्मत करके पूछा - "कि मैंने गवर्नेस की यह नौकरी किसी षड्यन्त्र के त हत हासिल की है?"

"मैं कहता हूं।" पालीवाल डकराया- "हालात कहते हैं तुम्हारी वह झूठी कहानी कहती है-जो तुमने मुझे इण्टरव्यू के धौरन सुनायी।"

"कौन-सी कहानी?"

"यही कि तुम चण्डीगढ़ के किसी कपड़ा व्यापारी की लड़की हो-र्जिसका नाम दीनदयाल मिश्रा था-जिसके परिवार की आतंकवादियों ने हत्या कर दी थी-तुम्हारी वह तमाम बातें-तमाम तर्क झूठे हैं लड़की-सब कुछ मनगढ़ंत है।"

"झूठ बोल रहे हैं आप!" शीतल बिफरकर वोली- "इस तरह का आरोप लगाकर आप एक निर्दोष और न्दुमजबूर लड़की के अकेलेपन का नाजायज फायदा उठाने की कोशिश कर रहे हैं।"

"शट अप।"

चिंघाड़ा जगदीश पालीवाल-फिर उसके हाथ का एक ऐसा झन्नाटेदार झापड़ शीतल के गाल पर पड़ा कि उसके मुंह से चीख निकल गयी-आंखो के गिर्द रंग-विरंगे तारे झिलमिला उठे।

"यू शुड बी अशेम्ड ऑफ यो अर सैल्फ पालीवाल चीखता चला गया- "खबरदार जो ऐसा वाहियात इल्लाम मेरे ऊपर लगाया तो।"

"ल...लेकिन आपके पास इस बात का क्या सबूत है।" शीतल बोली-कि मेरी कहानी झूठी है? मनगढ़त है?"

"सबसे पहला और सबसे बड़ा तो यही सबूत है। जगदीश पालीवाल दांत किटकिटाकर बोला- "कि तुम न तो चण्डीगढ़ की रहने वाली हो और न दीनदयाल मिश्रा नामक किसी कपड़ा व्यापारी की लड़की हो।"

"आपको कैसे मालूम?"

"बताता हूं-सब कुछ बताता हूं।" जगदीश पालीवाल रिवॉल्वर हिलाता हुआ बोला- "इसमें कोई शक नहीं कि तुमने पूरा ड्रामा बड़े ही शानदार ढंग से किया था-मुझे शायद सात जन्म तक भी तुम्हारे ऊपर शक न हो पाता। लेकिन आज सुबह इण्डियन म्यूजियम से लौटते समय काफी हद तक तुम्हारी हकीकत का पर्दाफाश हो गया।

"क...क्यों-उस समय मैंने ऐसा क्या बोल दिया था-जों पर्दाफाश हो गया।"

"तुम्हें याद है।" पालीवाल बोला- "इण्डियन म्यूजियमसे लौटते समय तुम्हारे दिल-दिमाग पर एक ही चीज हावी थी-ताज और दुर्लभ ताज! उस बेहद मूल्यवान ताज के बार तुमने मुझसे एक ऐसा सवाल पूछा-जितने तुम्हारी हकीकत की सारी कलई खोल दी। याद है तुम्हें-तुमने मुझसे उस ताज की गुप्त सिक्योरिटी के बारे मे- पूछा था और तुम्हार मुंह से उस सवाल को सुनते ही मैं उछल पड़ा।"

"क्यों-उछल क्यों पड़े तुम

"क्योंकि आमतौर पर साधारण आदमियों गुप्त सिक्योरिटी के बारे में कोई जानकारी नहीं होती-वो यही समझते हैं कि जो दिखाई दे रही है-वही सारी सिक्योरिटी है। इसके पीछे महत्वपूर्ण वजह भी है-क्योंकि गुप्त सिक्योरिटी के बारे में न तो लोगों को कोई जानकारी है होती है और न इस तरह की सिक्योरिटी कि पब्लिसिटी ही की जाती है। ऐसी परिस्थिति में एक बेहद सामान्य लड़की के मुंह से गुप्त सिक्योरिटी की बात सुनकर भला कौन ऑफीसर न चौंक पड़ेगा। फौरन

मेरे दिमाग में यह बात खलबली मचाती चली गयी कि जरूर कहीं-न-कहीं कुछ गड़बड़ है-जरूर तुम, कोई खतरनाक खेल, खेल रही हो। मैंने फौरन तुम्हारी हकीकत पता लगाने का फैसला किया और इसी दिसा में मैंने सबसे पहले तुमसे तुम्हारे पिताजी का नाम पूछा।"

शीतल भौंचक्की निगाहों से पालीवाल को देखने लगी।

"प...पिताजी का नाम क्यों पूछा तुमने?"

"बताता हूं-वह भी बताता हूं।" जगदीश पालीवाल एक के बाद एक धमाका करता हुआ बोला-दरअसल तुमसे. तुम्हारे पिताजी का नाम मालूम करके मैंने चण्डीगढ़ के पुलिस हैडक्वार्टर फोन किया-वहां के कमिश्नर को मैंने तुम्हारे पिताजी का नाम बताया और सुनाई गयी पूरी कहानी बतायी।मैंने वहां के कमिश्नर से आग्रह किया कि वे जांच-पड़ताल करकर मुझे रिपोट कर सकते थे?”

"ल....लेकिन जब उन्हें मेरे चण्डीगढ़ के घर का एड्रेस ही मालूम नहीं था।" शीतल बोली- "तो वह मेरे बारे में जांच-पड़ताल कैसे कर सकते थे?"

"एड्रेस पता लगा लेना बहुत मामूली काम है।" जगदीश पालीवाल रिवॉल्वर हाथ में लिये-लिये बोला- "तुम्हें शायद मालूम नहीं है कि लगभग सभी शहरों में वस्त्र व्यापारी सघं के नाम से कपड़ा व्यापारियों का एक संगठन होता है-और छोटे-बडे सभी कपड़ा व्यापारी उस संगठन के मैम्बर होते: ऐसा ही एक वस्त्र व्यापारी संघ चण्डीगढ में भी है-मैंने जैसे ही चण्डीगढ़ के पुलिस हैडक्वार्टर को तुम्हारे बारे में रिपोर्ट भेजी-तो फौरन हैडक्वार्टर के एक सब-इंस्पेक्टर ने चण्डीगढ़ के वस्त्र व्यापारी संघ से सम्पर्क स्थापित किया-संघ के पास शहर के सभी व्यापारियों की एक लिस्ट होती है। सब-इंस्पेक्टर ने जब तुम्हारे द्वारा बताया गया कथित दीनदयाल मिश्रा का नाम संघ के संचालक को बताया-तो फौरन तुम्हारे ड्रामे का पर्दाफाश हो गया। क्योंकि दीनदयाल मिश्रा नाम के कपड़ा व्यापारी तो चण्डीगढ़ में कई थे-लेकिन उनमें ऐसा कोई न था-जिसका परिवार आतंकवादियों के हाथों मारा गया हो या जिसके सर दुकान में आतंकवादियों ने आग लगायी हो। बहरहाल थोड़ी देर पहले ही चण्डीगढ़ के पुलिस हैडक्वार्टर से मेरे पास रिपोर्ट आ चुकी है और साबित हो गया है कि तुम्हारे द्वारा सुनायी गयी कहानी पूरी तरह झूठी है।"

शीतल को अपने दिमाग में अनार छूटते हुए लगे।

उसका चेहरा सफेद झक्क् पड़ गया।

"अब अगर अपनी जिंदगी चाहती हो" जगदीश पालीवाल ने बेहद हिंसक अंदाज में रिवॉल्वर से उसका माथा ठकठकाया- "अगर चाहती हो कि तुम्हारा यह खूबसूरत जिस्म एक लाश में न बदल जाये-तो सच-सच बताओ, कौन हो तुम? तुम्हें यहां किसने भेजा है?" तभी उस धटना ने बड़े अप्रत्याशित ढंग से करवट बदली।

"उस लड़की सें क्या पूछते हो साहब!" बैडरूम में धमाका-सा करती एक नई आवाज गूंजी थी- "मैं बताता हूं कि यह कौन है और इसे यहां किसने भेजा है।"

जगदीश पालीवाल के दिल-दिमाग पर बम-सा गिरा।

वह झटके से उस दिशा में घूमा-जिधर से आवाज आयी थी। अगले पल उसके होश उड़ गये।

उसके सामने पौने छ: फुट लम्बा सामान्य से बदन वाला कुलभूषण खड़ा मुस्करा रहा था-कुलभूषण की गोद में गुड्डू था-जिसकी कनपटी पर उसने रिवॉल्वर रखी हुई थी।

"क...कौन हो तुम?" जगदीश पालीवाल के मुंह से सिसकारी छूटी।

"दुश्मन का कोई नाम नहीं होता साहब-वह किसी भी रूप में, सामने आ सकता है।"

"पहेलियां मत बुझाओ।" पालीवाल गुर्राया- "सच-सच बताओ-कौन हो तुम?"

"फिलहाल तुम्हारे लिये इतना ही जानलेना काफी है कि मैं संध्या का सहयोगी हूं

"ओह!"

"यह नाटक न जाने कितना लम्बा चलता मिस्टर!" कुलभूषण बोला- "इसलिये ये अच्छा ही हुआ कि इस नाटक का यहीं अंत हो गया।"

"लेकिन यह नाटक रचा क्यों क्या?"

"वही बताने जा रहा हूं-मगर उससे पहले अपनी यह रिवॉल्वर मेरे हवाले कर दो।"

पालीवाल हिचकिचाया।

"जल्दी करो ऑफीसर-वरना तुम्हारे बेटे की जान को नुकसान पहुंच सकता है-जिसके लिये फिर मैं जिम्मेदार नहीं होऊंगा।"

जगदीश पालीवाल ने खून का-सा घूंट पीते हुए कुलभूषण को रिवॉल्वर सौंप दी।

"गुड!" मुस्कराया कुलभूषण- "काफी समझदार हो-हमारा अच्छा साथ निभेगा।"

"मैं तुम्हारी कोई बकवास नहीं सुनना चाहता।" पालीवाल फुफकारा- "मुझे सिर्फ यह बताओ कि तुम लोग कौन हो।"

"वही बता रहा हूं। पहली बात-तुम्हारा यह अंदाजा

सही है कि संध्या किसी अपराधी संगठन के लिंये काम कर रही।" दूसरी बात-तुम्हारा यह अंदाजा भी बिल्कुल सही है कि संध्या ने तुम्हें जो कहानी सुनायी वह बिल्कुल मनगढ़ंत है। दरअसल वह कहानी तुम्हें इसलिये सुनायी गंयी थी-ताकि तुम्हारी हमदर्दी हासिल करके इस कोठी के अदर घुसा जा सके।"

"लेकिन इस सारे ड्रामें के पीछे. वजह क्या थी?".

"वजह!" मुस्कराया कुलभूषण- "वजह सुनोगे, तो उछल जाओगे ऑफीसर!"

"मैं उछलना ही चाहता हूं।"

"ठीक है-तो सुनो।" कुलभूषण के चेहरे पर अब थोड़ी कठोरता उभर आयी- "तुमने दिल्ली शहर में सक्रिय उस संगठन के बारे में तो सुना ही होगा-जो दुर्लभ वस्तुओं की चोरी करता है।"

"उस संगठन के बारे में कौन नहीं जानता।"

"वैरी गुड-अगर उस संगठन के बारे में जानते हो-तो अब वही संगठन उस दुर्लभ ताज को भी चुराना चाहता है।"

"परन्तु तुम दोनों का उस संगठन से क्या सम्बन्ध है?"

"हमारा सम्बन्ध!" कुलभूषण ने गले का थूक सटका- "हम उस संगठन के मैम्बर हैं।"

जगदीश पालीवाल के नेत्र अचम्भे से फैल गये।

"तुम...तुम उस संगठन के मैम्बर हो?"

"हां।'

"लेकिन तुम यहां क्या कर रहे हो?"

"दरअसल हमारे संगठन को उस दुर्लभ ताज की गुप्त सिक्योरिटी के बारे में मालूम नहीं है।"

"और तुम्हारा संगठन यह सोचता है।" पालीवाल गुर्राया- "कि मैं तुम्हें उस सिक्योरिटी से वाकिफ करा दूंगा।"

"बिल्कुल।" कुलभूषण ने दृढतापूर्वक कहा-हमारा संगठन जो सोचता हें-वही होता है।"

"अफसोस-बेहद अफसोस! इस बार तुम्हारा गलत व्यक्ति से वास्ता पड़ गया है-मैं किसी भी कीमत पर तुम्हें उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के बारे में नहीं बताऊंगा।"

"इस नन्ही-सी जान की कीमत पर भी नहीं?"

"क...क्या मतलब?" बौखला गया जगदीश पालीवाल! मतलब यह कि मैं और संध्या फिलहाल तुम्हारे इस बेटे को अपने साथ लेकर-जा रहे हैं-हमारे जाने के बाद पूरी रात तुम्हारे पास होगी- खूब अच्छी तरह हमारे प्रस्ताव पर गौर, करना-अगर तुमने गुप्त सिक्योरिटी के बारे में बता दिया-तो तुम्हारे बेटे को छोड़ दिया जायेगा। वरना....।"

"वरना क्या?"

"वरना हमारा संगठन सिर्फ इतना करेगा।" कुलभूषण खूंखार लहजे में बोला- "कि तुम्हारे इस मासूम बेटे की गर्दन धड़ से अलग करके तुम्हारे पास भेज देगा-ताकि तुम और सरकार दोनों ही उस कटे हुए सिर पर दुर्लभ ताज की ताजपोशी कर सको।"

"न...नहीं। जगदीश पालीवाल दहल गया- "नहीं। तुम ऐसा नहीं करोगे।"

"हम ऐसा ही करेंगे।" कुलभूषण सख्त लहजे में बोला- "अभी तो मैंने सिर्फ तुम्हे उस दृश्य के बेरे मे बताया है-लेकिन जरा क्लपना करो कि कल जब तुम्हारे मासुम बेटे का कटा हुआ सिर साक्षात तुम्हारी आखों के सामने रखा होगा, तब तुम पर क्या बीतेगी। उस समय क्या तुम पागल नहीं हो जा ओगे-चीखने नहीं लगोगे-और तुम्हारी पत्नी!" कुलभूषण ने दांत किटकिटाये- चुम्हारी पत्नी क्या उस दृश्य को देखकर जिन्दा रह सकेगी ऑफीसर?"

"नहीं-नहीं।" जगदीश पालीवाल चिंघाड़ उठा- "तुम दरिंदे हो-वहशी हो।"

कुलभूषण के होठों पर मुस्कान खेलती रही।

"फिलहाल हम जा रहे है। ऑफीसर!" कुलभूषण सहज स्वर में बोला- "कल तुमसे फिर किसी जरिये से सम्पर्क स्थापित किया जायेगा-तब तक अपना फैसला सोचकर रखना।"

"सुनो-सुनो।" पालीवाल चीख उठा।

लेकिन वह नहीं रुके।

जगदीश पालीवाल चीखता रहा और वो चले गये।

उसके गुडडू को लेकर चले गये।

अगले ही पल एक सनसनीखेज घटना का जन्म हुआ।

उस वक्त जब उन्होंने बैडरूम से निकलकर कोठी के गलियारे में कदम रखा-तभी उनके

कानों में किसी के भागते कदमों की आवाज पड़ी।

एक क्षण-सिर्फ एक क्षण के लिये कुलभूषण की नजर साये पर पड़ी-क्योंकि अगले ही क्षण वो काला साया गलियारे का मोड़ काटकर अंधेरे में गायब हो चुका था।

और!

उसी एक क्षण में कुलभूषण साये को पहचान गया।

वो काला भुजंग बल्ले था।

बल्ले!

खौफ से कांप गया कुलभूषण।

शरीर में एक साथ हजारों चीटियां रेंगती चली गयीं।

ब...बल्ले वहां क्या करने आया था?

उ...उसे यह कैसे पता चला कि वो वहां है?

कुलभूषण और शीतल ने बल्ले के बारे में जितना सोचा-उतनी ही उनकी रूह कांपी।

बल्ले, जगदीश पालीवाल की कोठी से निकलकर भागता चला गया।

जल्द ही वो एक टेलीफोन बूथ के अंदर जा घुसा था।

उसने रिसीवर उठाया-फिर बड़ी तेजी से कुछ नम्बर डायल किये।

शीघ्र ही दूसरी तरफ घण्टी जाने लगी थी।

कुछ देर बेल बजती रही-बजती रही।

हैलो! "फिर लाइन पर एक उनींदा-सा स्वर उभरा- "इंस्पेक्टर चक्रधर स्पीकिंग!"

"इंस्पेक्टर साहब!" बल्ले ने फौरन कीयन-हॉल में एक रुपये का सिक्का डाल दिया- "मैं बोल रहा हूं-पहचाना मुझे?"

"कौन?"

"यानी नहीं पहचाना?"

एक पल के लिये खर्मिएशी छा गयी।

"त तुम बल्ले हो। "चक्रधर की नींद अब पूरी तरह उड़ चुकी थी।

"बिकुल ठीक।" बल्ले चहका- "वाकई आपकी तारीफ करनी होगी इंस्पेक्टर साहब-जो मुझे सिर्फ आवाज से ही पहचान लिया।"

"इसमें तारीफ जैसी कोई बात नहीं।" इंस्पेक्टर चक्रधर खुंरदुरे लहजे में बोला- "हम पुलिस वाले है बल्ले-ओर अपराधियों को सिर्फ आवाज से पहचान लेना ही हमारी फितरत होती हैं। खैर यह बताओ-तुमने इतनी रात को मुझे फोन किसलिये किया है? क्या वकील यशराज खन्ना की हत्या करने के इल्लाम में अपने आपको कानून के हवाले करना चाहते हो?"

"नहीं-हर्गिज नहीं।" बल्ले की आवाज में सख्ती उभर आयी- "मैंने आपसे पहले भी कहा था इंस्पेक्टर साहब- आज फिर कहता हूं-मैं तब तक अपने आपको कानून के हवाले करने वाला नहीं, जब तक मैं कुलभूषण से अपने चाचा के खून का बदला नहीं चुका लेता।"

"फिर फोन क्यों किया है।?

"मैं कुलभूषण के बारे मैं आपको एक बड़ी सनसनीखेज जानकारी देना चाहता हूं।"

"कैसी जानकारी?"

"कुलभूषण आजकल एक बेहद खतरनाक योजना पर काम कर रहा है इंस्पेक्टर साहब!" बल्ले की आवाज हद दर्जे तक सस्पैंसफुल हो उठी- "वह योजना इतनी खतरनाक है कि अगर वो इत्तफाक से भी कामयाब हो गयी-तो न सिर्फ दिल्ली पुलिस के अंदर बल्कि पूरे हिन्दुस्तान की पुलिस में जबरदस्त हड़कम्प मच जायेगा।"

"ए...ऐसी क्या योजना है?"

"योजना के बारे में, मैं अब आपको नहीं बताऊंगा।" बल्ले ने और ज्यादा सस्पैंस क्रियेट किया- मैने आपको जो बताना था-बता दिया। एक पुलिस इंस्पेक्टर होने के नाते अब आगे की इंवेस्टीगेशन करने आपका काम है-हां, मैं आपको इंवेस्टीगेशन करने के लिये एक हिंट जरूर दे सकता हूं।"

"क...कैसा हिंट?" "शीतल भी उस योजना मे कुलभूषण की मदद कर रही है-अब बंदे को इजाजत दीजिये-नमस्ते!"

"बल्ले-बल्ले!" इंस्पेक्टर चक्रधर चीखता रहे गया।

जबकि वल्ले- बड़े निर्विकार अंदाज में टेलीफोन का रिसीवर हुक पर लूटका चुका था।.

उसके होठों पर मुस्कान खेल रही थी।

वो मुस्कान-जो किसी बेहद चालाक व्यक्ति के होठों पर उस समय खेला करती है, जब वो अपने दो दुश्मनों को लड़ाने के लिये कोई बढ़िया चाल चल दे।

सुबह के दस बजने जा रहे थे।

उस दिन का मौसम पिछले दिन के मुकाबले ज्यादा गरम था। एक बार फिर सब लोग कॉफ्रेंस हॉल में जमा थे। सेठ दीवानचन्द आयताकार मेज के एक कोने पर ऊंची पुश्त वाली रिवॉल्विंग चेयर पर विराजमान था-उसने आज अपने चेहरे को नकाब से ढका हुआ था-जिसमें से उसकी सिर्फ दो आखें बाहर झांक रही थी।

साफ लगता था-आज कोई खास बात है।

कॉफ्रेंस हॉल की अन्य कुर्सियों पर दशरथ बिलीमोरिया कान्तिपाण्डे, कुलभूषण, शीतल और उन सबके अलावा, उस दिन का सबसे ज्यादा खास मेहमान जगदीश पालीवाल भी वहां बैठा था। जगदीश पालीवाल की तहां उपस्थिति निःसंदेह चौंका देने वाली थी।"

पालीवाल की वहां उपस्थिति से एक बात और भी साबित होती थी कि उसने अपने मासूम बच्चे की जिंदगी वचानें के लिये उन शैतानों के सामने घुटने टेके दिये हैं।

"आज उसने अपने उसूलों की अपने आदर्शो की बलि दे दी है।

इसके अलावा एक बाप और कर भी क्या सकता है?

सिर्फ एक घण्टास पहले की बात है।

जगदीश पालीवाल उस समय अपनी कोठी के ड्राइंग हॉल में बेचैनी पूर्वक टहल रहा था।

उसकी आखों में आतंक. की छाया थी।

होंठ खुश्क!

जब से वह दोनों गुडूडू का अपहरण करके ले गये थे-तब से उसका यही हाल था।

कभी वो इस कमरे में दहलकदमी करता-तो कभी उस कमरे में।

सारी रात सिगरेट-पर- सिगरेट फूंकते हुए गुजरी।

कई बार उसके दिमाग में यह ख्याल भी आया कि वह उदयपुर टेलीफोन करके उस घटना की अपनी पत्नी को सूचना दे दे।

लेकिन फिर वो रुक गया।

उसे सूचना देने से ही क्या हीना था-वह परेशान और होती। रह-रहकर पालीवाल की आखों के गिर्द अपने मासूम बेटे का मुखड़ा चक्कर काट जाता।

एक बाप कै बेताब बाहें अपने जिगर के टुकड़े को कलेजे से लगाने के लिये मचल रही थी।

और!

तभी गरम लोहे पर चोट हुई। मारुति वैन में सवार होकर कान्ति पाण्डे उसकी कोठी पर पहुंचा था।

जगदीश पालीवाल को एक टाइपशुदा पत्र दिया-जिसमें सिर्फ चंद लाइनें लिखी थीं।

"अगर अपने बेटे की जिंदगी के लिये हमारी शर्त मंजूर है-तो फौरन पत्र वाहक के साथ वैन में बैठकर आ जाओ-इसी में तुम्हारी भलाई है।"

तुम्हारे बेटे का शुभचिन्तक

गुमनाम संगठन

पत्र पढ़ते ही जगदीश पालीवाल ने गुस्से में उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालें।

"और अगर मै तुम्हारे साथ न गया।" जगदीश पालीवाल ने झपटकर कान्ति पाण्डे का गिरेहबान पकड़ लिया तथा हलक फाड़कर चिंल्ला उटा- "तौ तुम क्या कर लोगे-क्या कर लोगे?"

खतरनाक ढंग से मुस्कराया कान्ति पाण्डे!

उसकी मुरत्हान को बर्फ की तरह जमा देने वाली थी। गिरहवान पकड़ने का उसने जरा भी बुरा नहीं माना।

"अगर तुम मेरे साथ न गये-तो वह हो जायेगा ऑफीसर!"

कान्ति पाण्डे कुंफकारता -सा बोला- "जिसकी कल्पना भी तुम्हारे लिये दुश्वार हैं-तुम्हारे गुड्डू कें खून के छीटें दूर-दूर तक उड़ेंगे-दूर-दूर तक। और हमारी उस दरिंदगी के जिम्मेदार तुम होगे-सिर्फ तुम।

तत्काल कान्ति पाण्डे का गिरेहबान पालीवाल के हाथ से छूट गया।

सारी गर्मी जाती रही।

वह अपनै आपको सौ साल के वृद्ध की तरह कमजोर महसूस करने लगा।

रात भर की बेचैनी और विवशता के कारण उसमें इतना भी साहस न बचा था-जो ज्यादा विरोध कर सके।

वह एक हारे हुए जुआरी की तरह निर्जीव कदमों से चलता हुआ चुपचाप मारुति वैन में सवार हो गया।

उसे आंखों पर पट्टी बांधकर अड्डे पर लाया गया था।

वहां जब उसकी आखों से पट्टी खोली गयी-तो उसने अपने आपको उसी कॉफ्रेंस हॉल में पाया-जिसमें इस वक्त बैठा था।

"पालीवाल साई!" सेठ दीवानचन्द उसे काली नकाब के पीछे से घूरता हुआ बोला- "वडी हमें खुशी है कि तुमने ज्यादा हील-हुज्जत किये-बिना हमारा प्रस्ताव कबूल कर लिया-पड़ी तुम तो वाकई बहोत समझदार आदमी निकले नी।"

"गुड्डू कहां है?" जगदीश पालीवाल ने बेचैनीपूर्वक पहलू बदला।

" साइं वो जहां है, कुशल-मंगल है और फिर वैसे भी ज्यादा फिक्र नहीं करनी-आखिर उसकी देखभाल के वास्ते तुम्हारी गवर्नेस तो हमारे पास है ही।"

वह बात कहकर बड़े खतरनाक ढंग से हंसा दीवारचन्द।

"म...मैं फिर भी गुड्डू को एक बार देखना चाहता हूं।" जगदीश पालीवाल अपने बेटे को देखने के लिये व्याकुल हुआ जा रहा था।
"इतनी जल्दी भी क्या है साई!" दीवानचन्द बोला- "देख लेना उसे भी। बारह घण्टे में उसकी सूरत थोड़े ही बदल जानी है। मेल-मिलाप का यह सिलसिला भी चलेगा-लेकिन पहले तुम हमें दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के बारे में बताओ।"

"देखो।" जगदीश पालीवाल सब के साथ बोला- "तुम लोग जिस गुप्त सिक्योरिटी की जानकारी के लिये इतने व्याकुल हो रहे हो-मेरा दावा है कि उस सिक्योरिटी को जानने के बाद भी तुम लोग कुछ नहीं कर पाओगे-उस दुर्लभु ताज को चुराना बिकुल नामुमकिन है।"

"क्यों है नामुमकिन?"

"क्योंकि उस ताज की सिक्योरिटी बहुत परफैक्ट है-बहुत अभेध है।"

मुस्कराया सेठ दीवानचन्द-फिर बोला- "वडी पालीवाल साई-भारत सरकार हर एण्टीक आइटम की ऐसी ही परफैक्ट सिक्योरिटी करती है- भारत सरकार हर वार यही सोचती है कि इस दुर्लभ वस्तु को दुनिया की कोई ताकत नहीं चुरा सकती। लेकिन होता क्या है-कोई चालाक अपराधी सुरक्षा के सारे तामझाम को रेत के ढेर की तरह भेदता हुआ दुर्लभ वस्तु चुरा ले जाता है। भारत सरकार को तब मालूम होता है कि वास्तव वो सिक्योरिटी कितनी परफैक्ट थी-कितनी सिक्केबंद थी- वडी मैं ठीक कह रहा हूं या नहीं?"

"बिल्कुल ठीक कह रहे हो। "जगदीश पालीवाल ने कबूल किया- "लेकिन अगर तुम लोग दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी को भी ऐसी ही कमजोर सिक्योरिटी समझ रहे हो-तो यह तुम्हारी बहुत बड़ी भूल है-बहुत बड़ी गलतफहमी है। उसकी सिक्योरिटी वाकई बहुत परफैक्ट है।"

"वडी वो चाहे कितनी ही परफैक्ट सिक्योरिटी है-हम उसके बारे में फुल जानकारी चाहते हैं।"

"जैसी तुम लोगों की इच्छा।" जगदीश पालीवाल बोला- "ओपन सिक्योरिटी से तो आप लोग वाकिफ होंगे ही?"

"हम किसी भी चीज से वाकिफ नहीं साई! तुमने हमें जो बताना है-सिरे से बताओ। यह सोचकर बताओ कि हम सिक्योरिटी के बारे में कुछ नहीं जानते-इसके अलावा एक बात और अच्छी तरह सुन लो।"

"क्या?"

"अगर तुमने हमारे साथ कोई चालाकी खेलने की कोशिश की।" सेठ दीवानचन्द ने दांत किटकिटाये- "अगर तुमने हमें पुलिस के किसी पचड़े में फांसने का प्रयास किया तो फिर तुम्हारी खैर नहीं। फिर हम तुम्हारे साथ-साथ तुम्हारे बच्चे के भी ऐसी ढोल-तासे बजायेंगे कि तुम तमाम उम्र कलपोगे-तमाम उम्र खून के आसू रोओगे। एक बात और-जब तक हम अपनीयोजना में कामयाब नहीं हो, जाते-तब तक तुम्हारा बेटा भी: यहीं हमारे कब्जे में रहेगा?"

जगदीश पालीवाल का चेहरा सफेद झक्क् पड़ गया।

"वडी तुम्हें अब जो कहना है-कहो।"दीवानचन्द बोला-"सबसे पहले यह बताओ-इण्डियन म्यूजियम में आजकल दिन में क्या सिक्योरिटी रहती है?"

"पालीवाल ने बेचैनीपूर्वक पहलू बदला।

हालात उसे अच्छे नजर नहीं आ रहें थे।

"द...दिन में लगभग सौ सिक्योरिटी गार्ड म्यूजियम के चारों तरफ तैनात रहते हैं।"

जगदीश पालीवाल ने खून का सा सूट पीते हुए उन लोगों को सिक्योरिटीके बारे में वताना शुरू किया- "लेकिन रात के समय उन्हीं सिक्योरिटी गार्डो की संख्या बढकर दो गुनी हो जाती है।"

"यनि। दो सौ!"

"हां।"

"ठीक है-आगे बोलो।"

" इसके अलावा इण्डियन म्यूजियम की आसपास की इमारतों पर भी चौथीस घण्टे लगभग तीस-चालीस सिक्योरिटी गार्ड तैनात रहते हैं।"

"एक मिनट!" दीवानचन्द ने उसे रिकर टोका- "म्यूजियम के आसपास की इमारतों पर सिक्योरिटी गार्ड्स को किसलिये तैनात किया गया है?"

"अच्छा सवाल है। दरअसल उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी करने से पहले भारत में ज्यूरी के मेम्बरों की एके मीटिंग हुई थी बेहद खास मीटिंग-उस मीटिंग में उन केस फाइलों का अध्ययन किया गया, जिनमें ऐसी ही दुर्लभु वस्तुओं की लूट के बारे में कई रिपोर्ट दर्जे थीं। प्रत्येक केस फाइल में यह ब्यौरा बड़े विस्तार से लिखा था कि फलां दुर्लभ वस्तु का सिक्योरिटी सिस्टम यह था और उप्से अपराधियों ने चुराने के लिये यह यौजना बनायी।"

"फिर-फिर

"ज्यूरी के मैम्बरों ने दुनिया भर की ऐसी दर्जनों केस फाइलों का अध्ययन।या-उन फाइलों का अध्ययन किया यह फायदा था कि दुर्लभ ताज को एक बहुत परफैक्ट सिक्योरिटी की रूपरेखा बनायी जा सकती थी। फाइलों का अध्ययन करते-करते ही जूरी के मैम्बरों के हाथ में एक एसी फाइल लगी-जिसमें न्यूयार्क के एक सर्राफा बाजार की लूट का मामला दर्ज था।

लिखा था-संर्राफा बाजार की सिक्योरिटी के लिये स्थानीय पुलिस प्रशासन ने वडे जबरदस्त सुरक्षा इंतजाम कर रखे थे-सर्राफा वाजार के चारों तरफ सैकड़ों की संख्या मैं हमेशा सिक्योरिटी गार्ड तैनात रहते थे-उनकी बिना आज्ञा के एक चूहा तक सर्राफा बाजार में नहीं घुस सकता था। लेकिन इतनी पावरफुल सुरक्षा के बावजूद सर्राफा बाजार में डकैती पड़ी-और ऐसी डकैती पड़ी कि पूरा सर्राफा बाजार लूट लिया गया, लेकिन बाहर-खड़े उन सिक्योरिटी गार्डो को कानों-कान भनक तक न लगी।"

"वह कैसे दशरथ बिलीमोरिया ने हैरान होकर पूछा।

"दरअसल अपराधियों ने सर्राफा बाजार को लूटने के लिये जो योजना बनायी-वह गजब की योजना थी।" जगदीश पालीवाल बोला- "उन्होंने सर्राफा बाजार को लूटने के लिये उसकी बगल की एक इमारत का इस्तेमाल किया। वह सबके सब लूट में काम आने वाला अपना साज-सामान लेकर उस बगाल वाली इमारत की छत पर पहुंच गये-सर्फा बाजार और उस इमारत के बीच में चार-साढ़े चार फुट चौड़ी एक पतली-सी गली थी। अपराधियों ने उस बगल वाली इमारत की छत से सर्राफा बाजार की छत तक लोहे की मजबूत सीढ़ी डाली-फिर वो एक-एक करके उसी सीढ़ी पर चलते हुए बगल वाली इमारत की छत से सर्राफा बाजार की छत पर पहुंच गये।"

"वेरी गुड!" कान्ति पाण्डे भी चहका- "फिर?"

"सर्राफा बाजार की छत पर पहुंचने के बाद उन्होंने ड्रिल मशीन की मदद से सर्राफा बाजार की छत में एक बीस इंच व्यास का काफी चौड़ा छेद बनाया-फिर वो उसी छेद में से होकर सर्राफा. बाजार के अंदर घुस गये-उसके बाद उन्होंने अंदर ही अंदर बड़े इत्मीनान से पूरा सर्राफा बाजार लूटा-फिर वापस छेद में से होकर ऊपर पहुंचे तथा सीढ़ी द्वारा ही दूसरी इमारत की छत पर पहुंचकर वहां से फरार हो गये। सर्राफे में इतना बड़ा काण्ड हो गया-वह सर्राफा बाजार पूरा-का पूरा लुट गया-लेकिन नीचे पहरा देते सिक्योरिटी गार्डो के कानों पर जू तक न रेंगी-उन्हें भनक तक न पड़ी कि क्या हो गया था। बहरहाल भारत के जयूरी मैम्बरो ने उस डकैती से प्रेरणा ली-और इण्डियन म्यूजियम के आसपास की इमारतों पर भी इसीलिये सिक्योरिटी गार्ड तैनात कर दिये-ताकि कोई अपराधी संगठन बिल्कुल उसी तरह की योजना बनाकर दुर्लभ ताज न ले उड़े।"

"ओह!"

सभी के मुंह से सिसकारी छूटी।

सभी सर्राफा बाजार लूटने की उस योजना से बड़े प्रभावित हुए।

"इस तरह इण्डियन म्यूजियम के अंदर दाखिल होने के फिलहाल सभी रास्ते पूरी तरह बंद हैं।" जगदीश पालीवाल बोला- "न तो कोई अपराधी म्यूजियम के मेन गेट से ही अंदर घुस सकता है और न किसी अगल-बगल बाली इमारत को ही जरिया बनाकर। अगर किसी ने नीचे-ही-नीचे लम्बी सुरंग खोदकर भी म्यूजियम के हॉल नम्बर चार तक पहुंचने का प्रयास किया-तब भी वो सफल नहीं हो पायेगा। क्योंकि म्यूजियम में जगह-जगह ऐसे इलैक्ट्रॉनिक संयंत्र लगाये गये हैं-जो सुरंग खोदने की पोजीशन में एक विशेष ध्वनि पैदा करके सिक्योरिटी गाडी को खतरेका संकेत दे देंगे-जिससे पुलिस अपराधियों को फौरन पकड़ लेगी।"

सब स्तब्ध से बैठे रहे।

"अब आगे।" जगदीश पालीवाल बोला- "अगर कोई अपराधी जादू के से या किसी करिश्मे की बदौलत फिर भी म्यूजियम के अंदर में कामयाब हो जाता है-तो वह सबसे पहले म्यूजियम के अंदर घुसने में कानयाब हो जाता है-तो वह सबसे पहले म्यूजियम के लॉन मे पहुंचेगा।

वहां भी मौत मुंह फाड़े उसका इंतजार कर रही होगी-क्योंकि न सिर्फ म्यूजियम के लॉन में बल्कि म्यूजियम के प्रत्येक गलियारे के अंदर भी हर समय बड़ी संख्या में सिक्योरिटी गार्ड तैनात रहते हैं। जिनकी प्रत्येक आठ घण्टे के बाद ड्यूटी बदल जाती है।"

"इसके अलावा और क्या इंतजाम है?"

".और भी कई महत्वपूर्ण बंदोबस्त हैं।" जगदीश पालीवल ने पर बैठे-बैठे पहलू बदला-

"सबसे पहले तो उन्हीं सुरक्षा प्रबंधों भेदकर म्यूजियम के अंदर घुसना नामुमकिन है-लेकिन अगर फिर भी कोई इन सुरक्षा प्रबंधों को भेदने में सफल हो जाता है-तो वह जैसे ही हॉल नम्बर चार की दीवार को छुएगा, तो फौरन उससे कनेक्टिड सेफ्टी अलार्म की घण्टी नजदीक के तीन पुलिस स्टेशनों के साथ-साथ पुलिस हैडक्वार्टर में भी जोर से बज उठेगी। उस घण्टी के बजते ही क्या होगा-इसका अंदाजा तुम लोग बखूबी लगा सकते हो।

फौरन पूरे दिल्ली शहर में दौड़ती पुलिस पेट्रोलिंग वैनों को हैडक्वार्टर से वह खतरे की सूचना सर्कुलेट कर दी जायेगी-पलक झपकते ही पेट्रोलिंग वैने इण्डियन म्यूजियम की तरफ भागने लगेगी-म्यूजियम के आसपास के सारे रोड ब्लॉक कर दिये जायेंगे-सीमा चौकियां सील कर दी जायेंगी और बड़ी संख्या में पुलिस इण्डियन म्यूजियम पर पहुंचकर उसे चारों तरफ से घेर लेगी। इससे तुम आसानी के साथ अंदाजा लगा सकते हो कि सैफ्टी अलार्म बजते ही म्यूजियम के आसपास. कितना हंगामाखेज माहौल बन जायेगा। ऐसी परिस्थिति में अपराधियों के लिये वहां से दुर्लभ ताज चुराकर भागना तो बहुत बड़ी बात हैं-उनके लिये अपनी जान बचाना भी मुश्किल काम होगा।"

"सेफ्टी अलार्म की जो बेल बजेगी।" दशरथ बिलीमोरिया एक-एक प्वॉइण्ट पर अच्छी तरह गौर करता हुआ बोला-क्या उसकी आवाज म्यूजियम के अंदर या बाहर खड़े सिक्योरिटी गार्डो को भी सुनायी देगी?"

"बिल्कुल देगी।"

"वडी वो नी?"

"दरअसल दिल्ली पुलिस ने सभी गार्डो को एक-एक खास किस्म की रिस्टवॉच दी है।" जगदीश पालीवाल ने बताया- "और वो रिस्टवॉच सेफ्टी अलार्म से कनेक्टिड है-इसलिये अलार्म बजने की वो तीखी ध्वनि रिस्टवॉच पर बिकुल साफ-साफ सुनाई देगी।"

"ओह!"

"एक बात और बताओ।" कान्ति पाण्डे बोला।

"पूछो।"

"अगर कोई दिन में हॉल नम्बर चार की दीवार को छुएगा, तो क्या तब भी अलार्ग बज उठेगा?"

"नहीं।" जगदीश पालीवाल गहरी सांस लेकर बोला- "दिन के समय सेफ्टी अलार्म डैड रहता है। लेकिन अगर तुम लोग उस दुर्लभ ताज को दिन-दहाड़े लूटने की योजना बना रहे हो-तब भी तुम्हारी योजना सिरे नहीं चढ़ने वाली।"

"किसलिये?"

"क्योंकि दिन में प्रत्येक दर्शक को कड़ी जांच-पड़ताल के बादही अंदर म्यूजियम में घुसने दिया जाता है-यहां तक कि दर्शकों को मेटल डिटेक्टर के ऊपर से भी गुजरना होता है। ऐसी परिस्थिति में तुम लोग हथियार लेकर म्यूजियम के अंदर नहीं घुस सकते और अगर तुम लोग गोलियों की बौछार करते हुए जबरदस्ती अंदर घुसने कोशिश करोगे तब भी मैं समझता हू कि तुम्हें नाकामी ही हए लगेगी-क्योंकि स्वचालित हथियारों से लैस इतने सारे सिक्योरिटी गर्डो का सामना तुम लोग किसी हालत में नहीं कर पाओगे।"

कॉफ्रेंस हॉल में सन्नाटा छा गया।

सनसनीखेज सन्नाटा!

सेठ दीवानचन्द महित सबके चेहरों पर गंभीरता की परत पुत गयी।

शीतल के ता उस सिक्योरिटी के विषय में सुनतें ही हाथ-पांव फूल गये है।

उसे साफ-साफ लग रहा था कि वह लोग अपने मकसद में सफल होने वाले नही।

शीतल मन-ही-मन प्रार्थना करने लगी- "हे भगवान इन लोगों को सद्बुद्धि दे।"

"अक्ल दे।"

"यह दुर्लभ ताज को चुराने का ख्याल भी अपने दिमाग से निकाल दें।"

लेकिन भगवान भी उन्हें सद्बुद्धि कहां से देता-उनके दिमाग पर तो लालच ने पर्दा डाल दिया था।

लालच!

जो उनका सर्वनाश कुरने पर तुला था।

जगदीश, पालीवाल गला खंखार कर बोला- "दुर्लभ ताज की जो सिक्योरिटी की गयी है-उस सिक्योरिटी के सम्बन्ध में मेंने लोगों को लगभग पूरी डिटेल बता दी है। अब इस पूरे परफैक्ट इंतजाम के बाद एक आखिरी सिक्योरिटी और है, जो उस दुर्लभ ताज के लिये की गयी है।"

"क...क्या?" सेठ दीवानचन्द के नेत्र अचम्भे से फट पड़े- "वडी क्या अभी कोई और सिक्योरिटी भी बची है?"

"हां।" जगदीश पालीवाल सहज स्वर में बोला- "अभी एक आखिरी सिक्योरिटी बची है-और मैं समझता हूं कि वो सिक्योरिटी इन तमाम सिक्योरिर्टी से ज्यादा परफैक्ट है-ज्यादा सिक्केबंद है।"

"वडी ऐसी क्या सिक्योरिटी है वो।" सेठ दीवानचन्द जबरदस्त सस्पैंस के बीच झूलता हुआ बोला-उसके बारे में भी बता।"

"अब उसी के विषय में बताने जा रहा हूं। दरअसल ज्यूरी के मैम्बरो ने दुर्लभ ताज की सुरक्षा व्यवस्था के लिये जो चक्रव्यूह रचा है-वह सिक्योरिटी उस चक्रव्यूह का सबसे आखिरी और सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। यूं तो म्यूजियम में जितने भी सुरक्षा प्रबन्ध किये गये हैं-वह सब अपने आग में कम्पलीट हैं जोर उन्हें भेद पाना असंभव है। लेकिन...।"

"लेकिन क्या?"

"सुरक्षा रूपी चक्रव्यूह? के उस आखिरी हिस्से को भेदने की बाबत सोचना भी, मैं समझता हू पागलपन होगा -क्योंकि वहां ज्यूरी के मैम्बरों ने इतना जबरटस्त मीयाजाल बिछाया है कि अगर उस मायाजाल को भेदने के लिए आज के युग में अर्जन, अभिमन्यू, भीम, नुकुल सहदेव या युधिष्ठिर जैसे महान योद्धा भी आ जायें-तो उन्हें भी असफलता का मुह देखना पड़ेगा। सुरक्षा रूपी चक्रव्यूह का वे आखिरो चरण 'हॉल नम्बर चार' है। उस हॉल की सिक्योरिटी यह सोचकर की गयी है कि अगर कोई अपराधी किसो तरह तमाम सिक्योरिटी को भेदता हुआ 'हॉल नम्बर चार' तक पहुंचने में साफल हो जाता है-तो फिर उसके हाशों से दुर्लभ ताज को किस तरह बचाया जाये।"

"क...किस तरह बचाया जायेगा नी?"

"मान लो।" जगदीश पालीवाल बोला- "जो अपराधी तमाम सिक्योरिटी सिस्टम को भेदकर हॉल नम्बर चार तक पहुंचने में सफल होता है-वह अपराधी तुम हो। अब तुम मुझे यह बताओ कि वहां पहुंचने के बाद तुम क्या करोगे?"

"वडी और क्या करता-अंदर घुसने की कोशिश करूंगा नी।"

"ऐग्जेक्टली!" जगदीश पालीवाल चहक उठा- "तुम अंदर ही की कोशिश करोगे-लेकिन सवाल ये है कि तुम अंदर ही घुसोगे कैसे? क्योंकि हॉल नम्बर चार के दरवाजे पर तौ बड़े भार-भरकम ताले और चोर ताले लगे हुए हैं-जिन्हें 'मास्टर की' कि सहायता से, भी नहीं खोला जा सकता।"

"पालीवाल साई!" सेठ दीवानचन्द थोड़ा झुंझलाकरबोला- "वडी अगर ताला खुल नहीं सकता-तो टूट तो सकता है नी। और अगर ताला टूट भी नहीं सकता-कम-से-कम दरवाजा तो टूट-ही-टूट सकता है।"

"आई एण्टायरली ऐग्री विद यू।" जगदीश पालीवाल पहले की तरह ही चहककर बोला-

"मैं तुमसे बिकुल सहमत हूं-बल्कि मैं खुद भी यही कहना चाहता हूं कि प्रत्येक अपराधी की उस अवस्था में यही मोनोपली होगी क्योंकि जो व्यक्ति इतने पावरफुल सिक्योरिटी सिस्टम को भेदकर हॉल नम्बर चार तक पहुंचेगा-उसे वहां पहुंचकर खाली हाथ लौटना तो किसी भी हालत में गंवारा न होगा। चाहे उसे कुछ भी क्यों न करना पड़ेगा-कैसा भी जायज या नाजायज तरीका इस्तेमाल क्यों न करना पड़े। अपराधी की इसी मोनोपली को ध्यान में रखकर भरी के मैम्बरों ने हॉल नम्बर चार की सुरक्षा व्यवस्था की है। अगर. तुममें से कोई फिलहाल इण्डियन म्यूजियम के हॉल नम्बर चार में गया है-तो उसने वहां जाकर देखा भी हागा कि उस हॉल की छत और दीवारें फल सीलिंग तथा प्लास्टर पेरिस की बनी हुई हैं। जिनकी मोटाई लगभग एक फुट के करीब है-दीवार तथा छत को इतनी मोटाई में डेकोरेट करने के पीछे एक खास कारण है।"

"कैसा कारण?"

"दीवार और छत-दोनों जगह स्वचालित गने छिपी हुई हैं। कोई भी अपराधी जैसे ही किसी गलत नरीके से हॉल में घुसेगा-तभी दीवार तथा छत में छिपा हुई स्वचालित गने हरकत में आ जायेंगी और वो हॉल के हर हिस्से पर हर ऐंगल पर गोलियों की बौछार करना शुरू कर देगी। यानी अपराधी हॉल में चाहे किसी भी जगह क्यों न खड़ा हो-गोलिया उसे वहीं आकर लगेंगी और वो पलक झपकते ही एक लाश में बदल जायेगा।"

सेठ दीवानचन्द सहित सब के चेहरों पर कालिख पुत गयी। "और अगर अपराधी किसी तरह उन गोलियों से भी बच गया।" जगदीश पालीवाल बोला-जोकि बिल्कुल नामुमकिन काम है-तब मी वो उस दुर्लभ ताज को-नहीं चुरा पायेगा।"

"क...क्यों?" दशरथ बिलीमोरिया के दिमाग पर बिजली-सी गिरी-"फिर उस ताज को चुराने में क्य मुश्किल है?"

"बहुत बड़ी मुश्किल है। क्योंकि अपराधी उस ताजको निकालने के लिये जैसे- ही उसके शीशे के बॉक्स .को छुएगा-तभी उस बॉक्स के अंदर बंद दुर्लभ ताज बीस फुट नीचे एक कुए जैसी गहराई-में चला जायेगा। अपराधी बॉक्स से हाथ हटायेगा तो वह फिर ऊपर आ आयेगा.। हाथ लगायेगा-तो फिर नीचे चला जायेगी। बस यही नाटकीय और बेहद तिलिस्मी प्रक्रिया चलती रहेगी-लेकिन दुर्लभ ताज अपराधी के हाथ नहीं लगेगा।"

"साई!" दीवानचन्द सनसनाये स्वर में बोला-इसका मतलब वह तिलिस्मी सिस्टम तो शीशे के बॉक्स में ही फिट हुआ-क्योकि उसे हाथ लगाते ही दुर्लभ ताज ऊपर-नीचे होता है।"

बिल्कुल ठीक।"

और अगर हम शीशे के उस बॉक्स खो ही तोड़ डालें-तो क्या होगा?"

"कुछ नहीं होगा-उस पोजीशन में वो दुर्लभ ताज बीस फुट नीचे चला जायेगा तथा फिर ऊपर नहीं आयेगा। फिर तो वही इंजीनियर उस दुर्लभ ताज को बीस फुट नीचे से निकाल सकते हैं-जिन्होंने वहां वो सारे सिक्योरिटी डेवायसिज फिट किये हैं।"

"ओह!"

वहां पुन: शमशान घाट जैसा सन्नाटा छा गया।

सब स्तब्ध थे।

बिल्कुल मौन!

"पालीवाल साई!" सेठ दीवानचन्द नकाब के पीछे से उसे देखता हुआ हिचकिचाये स्वर में बोला- "वडी यह तो वाकई बड़ा जबरदस्त इतजाम है।"

"मैं पहले ही कहता था।" जगदीश पालीवाल के होठों पर मुस्कान दौड़ी- "कि उस दुर्लभ ताजको चुराना आसान नहीं है-उसका सिक्योरिटी सिस्टम बेइन्तिहां मजबूत है। शायद भारत में पहली बार किसी स्टीक आइटम के लिये इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी की गयी है।"

"वडी इसमें कोई शक नहीं।" दीवानचन्द बोला- "कि सिक्योरिटी वाकई बहुत पावरफुल है-लेकिन एक बात मैं फिर भी कहूंगा।"

"क्या?"

"सिक्योरिटी चाहे कितनी भी जबरदस्त हो-लेकिन उसे तोड़ा जा सकता है। साई-दिमाग के ब्लेड से हर धांसू सिक्योरिटी की काट पैदा की जा सकती है।"

"य...यानी!" कुलभूषण के नेत्र हैरत से फटे- "यानी तुम यह कहना चाहते हो कि तुम इस सिक्योरिटी को भेदने की कोई योजना बना लोगे?"

"मैं अभी कोई दावा नहीं कर रहा-लेकिन, पालीवाल साई, मेरा यह मानना है कि दुनिया का कोई काम मुश्किल नहीं-कोई काम असंभव नहीं। जरूरत है तो इंसान के अंदर बस लगन की-हौंसले की-और एक तंदरुस्त दिमाग की।"

"म...मुझे तो नहीं लगता कि कोई अपराधी यह करिश्मा कर पायेगा।"

"वडी तुम हमें चैलेन्ज दे रहे हो नी?"

पालीवाल सकपकाया।

. "साई-'अगर तुम हमें चैलेन्ज दे रहे हो, तौ हमें तुम्हारा यह चैलेन्ज कबूल है।"

ठीक है-आप इसे मेरा चैलेन्ज ही समझें। क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि इस परफैक्ट सिक्योरिटी को दुनिया का कोई व्यक्ति नहीं भेद सकता।"

बढ़िया बात है।" सेठ दीवानचन्द ने गरमजोशी के साथ कहा- "वडी हम तुम्हें यह करिश्मा करके दिखायेंगे।"

फिर वो मीटिंग वहीं बर्खास्त हो गयी।

जगदीश पालीवाल को जिस तरह ऑखों पर पट्टी बांधकर वहां लाया गया था। उसी तरह वहां से विदा कर दिया गया।

लेकिन जाने से पहले वो अपने बेटे गुड्डू से मिला और बड़े ही जज्बाती होकर मिला।

"मैं तुमसे एक विनती करना चाहता हूं मैडम।" फिर उसने जाने से पहले शीतल से कहा था।

"क...कहिये।" शीतल का स्वर कांप उठा।

"तुम एक स्त्री हो।" जगदीश पालीवाल की आवाज भावनाओं से भरी हुई थी- "मै जानता हूं कि तुम चाहे कितना ही इन अपराधियों से मिली हुई हो ओ-लेकिन फिर भी तुम उतनी कठोर नहीं हो सकतीं-जितना यह सब हैं-इसीलिये मैं यह विनती करने की हिम्मत कर पा रहा हूं। गुड्डू मेरा इकलौता है-इसकी अच्छी तरह देखभाल करना।"

शीतल भी जज्बाती हो उठी।

वह एकदम गुड्डू की तरफ झपटी और उसने उसे अपनी छाती से चिपटा लिया।

"इ...इसे कुछ नहीं होगा।" शीतल बोली- "ज...जब तक मैं जिन्दा हूं-इसके ऊपर कोई आंच नहीं आयेगी पालीवाल साहब।"

"मुझे तुम पर भरोसा है।" जगदीश पालीवाल की आखें भीग गयीं- "हालांकि तुमने मुझे धोखा दिया-लेकिन फिर भी न जाने क्यों मुझे तुम्हारे ऊपर ऐतबार करने को दिल चाहता है।"

तड़प उठी शीतल।

जबकि पालीवाल फिर वहां से चला गया था।

कुलभूषण की जिंदमी अब एक बिकल नया मोड़ ले चुकी थी। कल का ऑटो रिक्शा ड्राइवर हालात की चक्की मे पिसकर अब पूरी तरह एक अपराधी बन चुका था।

"सेठ दीवानचन्द ने उसे अपने संगठन का मेम्बर बना लिया था।

इतना ही नहीं-उसे अऐ हुए सै बाहर आने-जाने की इजाजत भी सेठ दीवानचन्द ने दे दी थी।

तब कुलफूल को पहली बार यह मालूम हुआ कि वो अड़ा सेठ दीवानचन्द की विशाल ज्वैलरी शॉप के नीचे तहखाने में बना हुआ था!

लेकिन उस अड्डे में आने का रास्ता राक तीन मंजिले मकान के अंदर से था-वह मकान ज्वैलरी शॉप के बिल्कुल पीछे वाली गली में था। वह पुराना-सा मकान भी सेठ दीवानचन्द की मिल्कियत था-वह ढाई सौ वर्ग गज में फैला था और उस मकान के तहखाने से होकर एक छोटी-सी सुरंग पार करते हुए अड्डे तक पहुंचा जाता था।

वह सुरंग सीधे कांफ्रेंस हॉल में खुलती थी।

दरअसल कॉफ्रेंस हॉल में एक अर्द्धनग्न लड़की की विशाल पेटिंग लगी थी-उस पेटिंग के बराबर में एक नन्हा-सा लाल बटन था जब वह बटन दबाया जाता, तो वह पेटिंग किसी स्वाइडिंग डोर की तरह एक तरफ सरक जाती।

फिर उस पेंटिंग के पीछे स्टेयरिंग वहील जैसा लोहे का एक चक्कर नजर आता।

इस चक्के को घुमाने पर ही दीवार का एक बड़ा भाग दायीं तरफ सरकता था। और तब कहीं सुरंग का दहाना दिखाई देता।

वह अड़ा उस विशालकाय ज्वैलरी शॉप के नीचे जरूर बुना हुआ था-लेकिन उस अड्डे में ओने-जाने का रास्ता पिछली गली में बना वही पुराना मकान था।

कुलभूषण ने जब पहली बार दशरथ बिलीमोरिल के साथ उस रास्ते के दर्शन किये-तो वह उस पूरे सिस्टम से बड़ा प्रभावित हुआ। हद से ज्यादा प्रभावित हुआ।

ऐसे करिश्मे तो उरसने सिर्फ कभी-कभार फिल्मों में ही देखे थे। आम जिन्दगी में भी इस तरह का कुछ होता है-यह तो उसने सोचा भी न था।

बहरहाल-फिर दुर्लभ ताज चुराने के लिये योजना पर काम शुरू हुआ।

सेठ दीवानचन्द, दशरथ बिलीमोरिया और कान्ति पाण्डे-वह तीनों उस ताज को चुराने का दृढ़ संकल्प ले चुके थे।

हालांकि सिक्योरिटी वाकई बहुत पावरफुल थी-लेकिन वो निराश नहीं थे।

उन्हें लग रहा था कि वो वाकई कोई 'करिश्मा' कर डालेंगे।

उस सिक्योरिटी को भेदने के लिए उन्होंने खूब दिमाग लड़ाया।

उसी शाम उन तीनों के बीच उस सब्जेक्ट पर दक मीटिंग हुई।

काफी देर तक उन्होंने विचार-विमर्श किया।

लेकिन 'नतीजा' कुछ न निकला।

वह सारा दिन और सारी रात उस सिक्योरिटी को भेदने की कोशिश करते रहे।

प्रत्येक दो-दो घण्टे के बाद उनके बीच मीटिंग होती। इन दो घण्टे में जिसने जो कुछ सोचा होता-वह अपना आइडिया एक-दूसरे के सामने रखता।

कुल मिलाकर उनके बीच सात मीटिंगें हुई।

लेकिन नतीजा फिर भी जीरो ही रहा।

उनके द्वारा खूब दिमाग भिड़ाकर सोचारगया आइडिया कड़े का ढेर साबित हुआ।

शनिवार-सुबह दस बजे।

वह तीनों कॉफ्रेंस हॉल में पुन: सिर-से-सिर जोड़े बैठे थे। लेकिन इस समय उनके चेहरे पर ऐसी फटकार बरस रही थी-जैसी सारी रात किसी ने उनकी जमकर धुनाई की हो।

कल का उत्साह अब निराशा में बदल चुका था।

कुलभूषण भी उनके बीच 'बिल्कुल खामोश काठ का उल्लू बना बैठा था।"

बॉस-अब उस दुर्लभ ताज को वापस कजाखिस्तान लौटने में तीन दिन रह गये हैं।" दशरथ बिलीमोरिया शुष्क स्वरमें बोला- "सिर्फ तीन दिन! और अभी तक हमारे पास उस दुर्लभ ताज को चुराने की कोई सालिड योजना नहीं है।"

"मैं एक बात कहूं बांस?" कुलभूषण बोला।

"वडी तू भी बोल-तू ही क्यों खामोश रहता है नी।"

"उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी वाकई बहुत मजबूत है बीस।" कुलभूषण बोला- "हमें उसे चुराने का ख्याल भी अपने दिमाग से निकाल देना चाहिये।"

"वडी पागल है" सेठ दीवानचन्द भड़क उठा- "साई, तू क्या समझता अगर अभी तक योजना नहीं बनी, तो आगे भी नहीं बनेगी? ऐसा भो कहीं होता है? साईं-हमें निराशा से भरी बातें अपने दिमाग में नहीं लानी। इंसान वो होता है-जो हारने के बावजूद दिल से अपनी हार कबूल नहीं करता-बल्कि वो और संघर्ष करता है-और लड़ाई लड़ता है। वडी ऐसे ही लोगों की जिंदगी में करिश्में होते हैं-ऐसे ही लोगों को फतेह मिलती है।"

"ल...लेकिन...।" कान्ति पाण्डे ने कुछ कहना चाहा।

"कुछ नहीं-कुछ नहीं सुनना मुझे।" दीवानचन्द भुनभुना उठा- "वडी हमने वो ताज चुराना है-हर हालत में चुराना है-अण्डरस्टेण्ड?"

सब खामोश हो गये।

तभी एक बेहद सनसनीखेज घटना घटी।

ऐसी घटना-जिसने सबको चौंकाकर रख दिया।

लम्बे फल वाला एक चाकू बड़े अकस्मात् ढंग से सनसनाता हुआ कॉफ्रेंस हॉल में घुसा था-और फिर वह खचाक की तेज आवाज करता आयताकार मेज के बीचों-बीच जा धंसा।

चारों? उछल पड़े।

हलचल-सी मच गयी।

सबके सब बिजली जैसी रफ्तार से दौड़ते हुए कॉफ्रेंस हॉल से बाहर निकले।

पूरा गलियारा सुनसान पड़ा था।

कहीं कोई नहीं।

उन चारों ने पूरा अड्डा छान मास-लेकिन उस व्यक्ति के कहीं दर्शन न हुए जिसने-वाक् फेंककर मारा था।

आखिरकार वो थक-हारकर वापस कांफ्रेंस हाल में लौटे।

चारों बुरी तरह डरे हुए थे।

वापस कॉफ्रेंस हॉल में लौटते ही एक और धमाका हुआ।

तेज धमाका!

उनकी नजर मेज में धंसे चाकू पर पड़ी थी-उन्होंने देखा कि उस चाकू की नोंक में एक कागज भी फंसा हुआ है।

जरूर किसी ने वो कागज उन तक पहुंचाने के लिये ही चाकू वहां फेंककर मारा था।

कान्ति पाण्डे बेपनाह फुर्ती से चाकू की तरफ झपटा।

जल्द ही उसने चाकू की नोंक में फंसा कागज निकाल लिया और फिर उसे खोलकर जल्दी -जल्दी पढने लगा।

जैसे-जैसे उसने कागज पढ़ा-ठीक वैसे-वैसे उसकी आखें हैरत से फटती चली गयी।

कागज के अन्त तक पहुंचते-पहुंचते उसकी औखें अचम्भे के मारे अपनी कटोरियों से

बाहर निकलने को तैयार थीं।

"ब...बॉस!" पूरा कागज पढ़ते ही पाण्डे खुशी से चिल्ला उठा- "बॉस-ह...हमें योजना मिल गयी-हमें दुर्लभ ताज चुराने की मास्टरपीस योजना मिल गयी।"

"वडी तू क्या कह रहा है?" सेठ दीवानचन्द भी बौखलाया-सा उसकी तरफ झपटा-क्या कह रहा है?"

"य...यह देखो बॉस!" कान्ति पाण्डे ने वह कागज उन सबके सामने लहराया-उसका खुशी सेबुरा हाल था-य...यह देखो-एकाएक हमारे हाथ कितनी जबरदस्त योजना लग गयी है।"

"लेकिन यह योजना आयी कहां से साई-बड़ी किसने भेजी?" कान्ति पाण्डे ने फौरन उस कागज पर लिखे आखिरी दो शब्द पढ़े-तत्काल उसके चेहरे पर गंभीरता छा गयी।

"वही क्या हुआ-चुप क्यों हो गया?"

"इ...इस पर तो डॉन मास्त्रोनी का नाम लिखा है बॉस।"

"ड डॉन मास्त्रोनी!" कांप उठी दीवानचन्द की भी आवाज-"य...यानी सुपर बॉस!"

सबके नेत्र हैरत से फैल गये।

जबकि सेठ दीवानचन्द ने कान्ति पाण्डे के हाथ केअब वो कागज झपट लिया था-फिर वो एक ही सांस में पूरी योजना पड़ता चला गया।

ज्यों-ज्यों उसन ने योजना पड़ी-ठीक उसी अनुपात में उसकी आंखो की चमक बढ़ती चली गयी।

पूरी योजना पढ़ते ही उसकी आखें भी कई-कई हजार वाट के बल्ब की मानिन्द जगमगाने लगी थी।

"स...साई-पाण्डे साईं!" दीवानचन्द ने हर्ष नाद-साकिया- "वडी यह तो सचमुच बड़ी धांसू योजना है।"

"हां बॉस-हां।"

इस बोच दशरथ बिलीमोरिया भी योजना को पढ़ गया था। "अगर हम इस योजना पर काम करें साईं।" दीवानचन्द पागलों की तरह बोला- "तो हमें ताज चुराने से कोई नहीं रोक सकता-फिर तो हमने हर हालत में कामयाब होना ही है।"

"अ...आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं बॉस!" दशरथ बिलीमोरिया भी खुशी से कंपकंपाये स्वर में बोला- म...मुझे तो अब यह सोच-सोचकर हैरानी हो रही है कि इतनी साधारण-सी योजना हमारे दिमाग में क्यों नही आयी-सुपर बॉस के दिमाग में ही क्यों आयी।" च

"वडी मैं पहले ही बोलता था।" दीवानचन्द ने कहा- "पहले ही बोलना था कि इस दुनिया में हर चीज की काट माजूदा है। वडी देखा तुमने-देखा- ज्यूरी के मैम्बर जिस सिक्योरिटी को समझ रहे थे-सिक्के बंद समझ रहे थे-सुपर बॉस ने उस सिक्योरिटी को भेदने की योजना भी बना डाली। वडी जब ज्यूरी के मैम्बरों को यह पता चलेगा कि दुर्लभ ताज इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी के बावजूद यूं आसानों से चोरी हो गया-तो वह अपना माथा पीठ लेंगे-कलप कर रह जायेंगे।"

वह शब्द कहते हुए जोर-जोर से खिलखिलाकर हंसने लगा दीवानचन्द-और जोर-जोर से-ऐसा लग रहा था जैंसे उसके ऊपर खुशी का दौड़ा पड़ गया हो।

थोड़ी देर बाद ही कॉफ्रेंस हॉल में फिर एक मीटिंग हुई।

उस मीटिंग में इण्डियन म्यूजियम क्र चीफ सिक्योरिटी ऑफीसर जगदीश पालीवाल भी मौजूत था।

यह सुनकर पालीवाल के दिमाग में बम-सा फटा कि उन्होंने दुर्लभ ताज को चुराने की कोई मास्टरपीस योजना बना ली है।

वाकई वो अचम्भे की बात थी।

"ल...लेकिन योजना क्या हैं?" जगदीश पालीवाल ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

मुस्कराया दीवीनचन्द।

उसने इस समय भी अपने चेहरे पर नकाब धारण की हुई थी। "पालीवाल साईं!" दीवानचन्द अपनी चिर-परिचित 'सिन्धी' भाषा में बोला- "वडी हमने सुना है कि कल शाम पांच बजे बंगलुरू से हवाई जहाज द्वारा दो ताबूतों में शेर और चीते की खालें दिल्ली लायी जा रही हैं-जिनमें पहले भूसा भरा जायेगा और फिर उन्हें प्रदर्शनी के लिये म्यूजियम में रखा जायेगा।"

"पालीवाल चौंका।

"त...तुम्हें यह सब कैसे मालूम?"

"वडी हमें तो यह भी मालूम है नी।" सेठ दीवानचन्द मुस्कराया- "कि जिन ताबूतों में यह खालें लायी जायेंगी-उन ताबूतों को एअरपोर्ट पर रिसीव करने भी तुम जाओगे।"

"यह झूठ है-गलत है।"

"वडी यह सच है। " दीवानचन्द उससे भी ज्यादा, जोर से चिल्लाया- "साईं-हमें सब मालूम है-हमसे कुछ नहीं छिपा।"

"लेकिन...।"

"वडी हमें तो यह भी मालूम है।" दीवानचन्द पालीवाल की बात काटकर बोला- "कि उन ताबूतों को रिसीव करने का एक अथॉरिटी लैटर तुम्हें मिल भी चुका है।"

जगदीश पालीवाल भौंचक्का रह गया।

वह हक्का-बक्का-सा सेठ दीवानुचन्द की नकाब में छुपी सूरत को देखने लगा।

"ल...लेकिन तुम ताबूतों के सम्बन्ध में इतनी छानबीन क्यों कर रहे हो-कहीं तुम्हारा मकसद उन खालों को चुराने का तो नहीं है?"

"नहीं पालीवाल साईं!" वडी जब दुर्लभ ताज जैसी बेशकीमती चीज आंखों के सामने हो-तो चिड़िया की बीट हाथ लगाना कौन पसन्द करता है।"

"फिर तुम ताबूतों के बारे में इतने सवाल-जवाब क्यों कर रहे हो"

"दरअसल वह दोनों ताबूत दुर्लभ ताज चुराने की दिशा में हमारी बहुत बड़ी मदद करनें वाले हैं।"

"त...ताबूत मदद करने वाले हैं।" जगदीश पालीवाल की आखें औ?र ज्यादा आश्चर्य से फैल गयीं-"व...वो कैसे?"

"वडी-मैं तुम्हें पूरी योजना बताता हूं-दरअसल कल शाम ठीक पांच बजे वह दोनों ताबूत सफदरजंग एअरपोर्ट पहुंचेंगे-ठीक?"

"ठीक।"

"उन ताबूतों को रिसीव करने तुम इण्डियन म्यूजियम की एक स्टेशन वेगन लेकर एअरपोर्ट जाओगे-उस स्टेशन वेगन को एक ड्राइवर चला रहा होगा। सफदरजंग एअरपोर्ट न, ही खालों के वह ताबूत कोन में लाद दिये जायेंगे तथा फिर वो स्टेशन वेगन जिस तरह बिना कहीं रुके म्यूजियम से एअरपोर्ट पहुंची थी। फिर वो उसी तरह सफदरजंग एअरपोर्ट से वापस इण्डियन म्यूजियम पहुंचेगी।"

जगदीश पालीवाल बड़ी उत्सुकता से सेठ दीवानचन्द की एक-एक बात सुन रहा था।

"बडी तभी एक घटना घटेगी।" सेठ दीवानचन्द योजना की रूपरेखा समझाता हुआ वोला- "स्टेशन वेगन ताबूतों को लेकर अभी सफदरजंग एअरपोर्ट से थोड़ी ही दूर आयेगी कि तभी तुम्हारे सिर में एकाएक बड़ा तेज दर्द उठेगा।"

"म...मेरे सिर में दर्द उठेगा?" पालीवाल चौंका।

"हां।"

"क्यों उठेगा?"

"वडी तुमने एक स्पॉट पर पहुंचकर सिरदर्द का नाटक करना है-जानबूझकर स्टेशन वेगन के ड्राइवर के सामने ऐसा शो करना है जैसे तुम्हारे सिर में बहुत तेज दर्द उठ रहा हो।"

"ल...लेकिन मुझे नाटक करने की क्या जरूरत है?".

"क्योंकि यही हमारी योजना है पालीवाल साई।"

"मैं तुम्हारी किसी योजना पर काम करने वाला नहीं।" एकाएक जगदीश पालीवाल गुस्से में बोला।

"काम तो तुम करोंगे।"

"नहीं करूंगा।"

"वडी अगर नहीं करोगे।" दीवानचन्द ने दांत किटकिटाये- "तो तुम्हारी खैर नहीं-तुम्हारे मासूम बच्चे की खैर नहीं।"

बच्चे के नाम सुनते ही प्रालीवाल का सारा गुस्सा हवा हो गया। "तुम लोग जबरदस्ती कर रहे हो।" पालीवाल आन्दोलित लहजे में बोला-तुमने गुडूडू की जान के बदले में मुझसे सिक्योरिटी की जानकारी मांगी थी-वह जानकारी मैंने तुम्हें दे दी-किस्सा खत्म। अब मैं तुम्हारी कोई बात मानने के लिये बाध्य नहीं हूं।"

वडी तुम्हें अपने बच्चे की जान प्यारी है या नहीं?"

पालीवाल सकपकाया।

"वडी मुझे मेरे सवाल का जवाबदो।" दीवानचन्द चिंघाड़ा-तुम्हें बच्चे की जान प्यारी है या नहीं?"

"अ...अपने बच्चे की जान किसे प्यारी नहीं होती।"

"अगर उसकी जान प्यारी है पालीवाल साई-तो तुम्हें वही करना होगा, जो हम. कहेंगे-हमारी हर बात माननी होगी।"

जगदीश पालीवाल कसमसाकर रह गया।

"वडी अब आगे सुनो।" दीवानचन्द बोला- "तुमने स्टेशन-वेगन के ड्राइवर के सामने भयंकर सिरदर्द का नाटक इसलिये करना है-ताकि तुम ड्राइवर को टेबलेट लेने किसी केमिस्ट की दुकान पर भेज सको। इस पूर ड्रामें का अभिप्राये सिर्फ इतना है कि ड़ाइवर को कुछ देर के लिये स्टेशन वेगन से थोड़ा दूर भेजा जा सके। अब यह पूछो कि ड्राइवर को स्टेंशन वैगन से दूर भेजने. की क्या जरूरत है।"

"क...क्या जरूरत है?"

"साई-जिस समय तुम्हारी स्टेशन वैगन सफदरजंग एअरपोर्ट से चलेगी-उसी क्षण तुम देखोगे कि एक फियेट स्टेशन वेगन के पीछे लगी हुई है। वडी वो फियेट, हमारी फियेट होगी और उसमें हमारे आदमी सवार होंगे। एक पूर्व निर्धारित तन्हा-सी जगह पर पहुंकर जैसे ही तुम सिरदर्द का ड्रामा करोगे और ड्राइवर को टेबलेट के लिये भेजोगे-उसी क्षण फियेट के अंदर से निकलकर हमारा एक आदमी तेजी से तुम्हारे पास। वडी हमें यह भी मालुम है कि इण्डियन म्यूजियम की स्टेशन दो पोर्शन में बंटी हुई?। आगे वाला जोकि ड्राइविंग पोर्शन है-सिर्फ चार फुट का है। जबकि पिछला पीर्शन, जिसे बॉक्स पोर्शन कहा जाता हैं-उसकी लम्बाई पंद्रह फुट है। बॉक्स पोर्शन में ही ताबूत जैसे आइटम रखे जाते हैं और उसके लोहे के मजबूत दरवाजे पर हमेशा एक भारी-भरकम ताला झूलता रहता है। एनी वे-उस दिन भी दोनों ताबूत स्टेशन वेगन की उसी बॉक्स पोर्शन में होंगे और उसके दरवाजे पर ताला लगा होगा। लेकिन ड्राइवर जैसे ही स्टेशन वेगन खड़ी करके टेबलेट लेने कैमिस्ट की कान की तरफ जायेगा-तभी हमारा आदमी तुम्हारे पास पहुंचेगा और तुमने उसे फौरन बॉक्स पोर्शन के ताले की चाबी दे देनी है।"

"च...चाबी दे देनी है-क्यों?"

"वही बता रहा हूं साई। ताले की चाबी, मिलते ही हमारा आदमी आनन-फानन में बॉक्स पोर्शन का दरवाजा खोलेगा-दरवाजा खुलते ही हमारे और दो आदमी जो फियेट में बैठे होंगे, वह डकैती डालने वाले थोड़े से साज-सामान के साथ फुर्ती से स्टेशन वेगन के बॉक्स पोर्शन में दाखिल हो जायेंगे। उसके बाद हमारे बॉक्स पोर्शन का ताला वापस लगायेगा-चाबी तुम्हें देगा-और उसके बाद फियेट लेकर पहले कि तरह ही टेबलेट लेकर लौटने से पहले ही कम्पलीट हो जाना है।"

"ल...लेकिन तुम्हारे दो आदमी बॉक्स पोर्शन में घुसकर क्या करेंगे?" जगदीश पालीवाल ने जिज्ञासावश पूछा।

"दरअसल उन दोनों का काम बड़ा महत्वपूर्ण है।"

दीवानचन्द बोला-वडी उन्होंने ही ताज की चोरी करनी है। बॉक्स पोर्शन में पहुंचने के बाद उन दोनो का सबसे पहला काम ताबूतों के अंदर घुसना होगा। वडी इस बात से तो तुम भी अच्छी तरह वाकिफ हो ओगे कि ताबूतों में खाल रखे जाने के बाद साधारणतया इतनी जगह जरूर बची रहती है कि उस खाली जगह में एक आदमी आ जाये-ताबूतों में वह खाली जगह छोड़ने के पीछे भी एक साइंटिफिक रीजन होता। वडी ताबूत में वो खाली जगह इसलिये छोड़ी जाती है-ताकि खाल को हवा सही तरह मिलती रहे और खाल मसाला लगी होने की वजह से खराब न हो।"

जगदीश पालीवाल पूरी योजना बड़े विस्मय से सुन रहा था। "लेकिन यह तो तुमने अभी बताया ही नहीं।" जगदीश पालीवाल बोला-"कि तुम्हारे वह दोनों आदमी ताबूतों में घुसकर क्या करेंगे?"

"साई-यह बात भी तुम्हें योजना में आगे चलकर मालूम होगी कि उन दोनों आदमियों ने ताबूतों में घुसकर क्या करना है। फिलहाल लिये इतना समझ लेना ही काफी है कि बॉक्स पोर्शन में पहुंचने बाद उनका एकमात्र उद्देश्य ये होगा-कि वो जल्द-सें-जल्द उन ताबूतों के अंदर इस तरह घुस जायें कि बाहर से देखने पर किसी को इस बातकी भनक तक न मिले-उन ताबूतों के साथ कैसी भी छेड़खानी की गयी है।"

"वो इस तरह ताबूतों में कैसे घुस सकते हैं?"

"क्यों नहीं घुस सकते नी?"

"क्योंकि ताबूत सीलबन्द होते हैं-उन पर सरकारी मुहर लगी होती है।"

"साई-हमारे आदमी सील नहीं तोड़ेंगे-उसे हाथ भी नहीं लगायेंगे।" दीवानचन्द बोला- ' "वडी वो ताबूत के नीचे से तख्ते उखाड़ कर उसके अंदर घुसेंगे और अंदर घुसते ही ताबूत के तख्ते ठीक उसी तरह वापस ठोंक देंगे-जैसे वो पहले ठुके थे। इस तरह ताबूतों की सील भी लगी रहेगी-ताला भी पड़ा रहेगा-और हमारे दोनों आदमी अपने पूरे साज-सामान कै साथ ताबूत के अंदर भी धुस जायेंगे।"

पालीवाल हक्का-बक्का रह गया।

"उ...उसके बाद क्या होगा?" पालीवाल ने सस्पैंसफुल स्वर में पूछा।

"वडी उसके बाद स्टेशन वेगन इण्डियन म्यूजियम पहुंचेगी। म्यूजियम में हॉल नम्बर चार हित कुल छ: हाल कमरे हैं पालीवाल साई। यहां एक बात ध्यान देने के काबिल है- म्यूजियम के बाकी सभी पांच हॉल शाम के पांच बजे ही बंद हो जाते हैं। सिर्फ चार नम्बर हॉल ही एकमात्र ऐसा हॉल है-जो शाम के छ: बजे तक खुला रहता है। जबकि शेर-चीते की खास के जो ताबूत बंगलुरू से दिल्ली आ रहे हैं-उनके सफदरजंग-एअरपोर्ट पहुंचने का टाइम भी शाम के पांच बजे का ही है। तुम क्या समझते हो-उन ताबूतों को एअरपोर्ट से इण्डियन म्यूजियम तक पहुंचने में कितना समय लग जायेगा?"

"लगभग आधा घण्टा!"

"आधा घण्टा!" दीवानचन्द बोला- "और वडी कल चूंकि स्टेशन वेगन बीच रास्ते में भी रुकेगी-इसलिये उसका इण्डियन म्यूजियम पीने छ: बजे तक ही पहुंचना मुमकिन होगा। करेक्ट?"

"करैक्ट।"

"साई-पौने छ: बजे इण्डियन म्यूजियम पहुंचनेके बाद तुम दोनों ताबूत किस हॉल कमरे में रखोगे?"

"तीन नम्बर हॉल- में। '

"लेकिन तब तक तो वह हॉल बंद हो चुका होगा?"

"नि:सन्देह तब तक वह हॉल बंद हो चुका होगा।" जगदीश पालीवाल बोला- "लेकिन हॉल नम्बर तीन और चार की चाबियां हमेशा म्यूजियम के हेड सिक्योरिटी गार्ड सरदार गुरचरन सिंह के पास रहती है-जो चौबीस घण्टे म्यूजियम में मिलता है। दरअसल इण्डियन म्यूजियम की बैक साइड का एक क्वार्टर सरदार गुरचरन सिंह के नाम अलॉट किया गया है-इसलिये वह या तो म्यूजियम में मिलेगा या फिर अपने क्वार्टर में मिलेगा।"

"और बडी बाकी हॉल कमरों की चाबियां किसके पास रहती हैं?"

"वह अलग-अलग हॉल कमरों के अलग-अलग चीफ एग्जीक्यूटिव के पास रहती है।"?

"यानी अगर तुम कल शाम पौने छः बजे एकदम से उन हॉल कमरों की चाबियां हासिल करना चाहोगे, तो वह चाबियां तुम्हें हासिल नहीं होंगी।"

"हां।"

"वैरी गुड!" दीवानचन्द की आखों में खुशी की चमक दौड़ी-साई-अब मैं योजना को दोबारा आगे बढ़ाता हूं। वडी कल शाम पौने छः बजे जब तुम्हारी स्टेशन वेगन इण्डियन म्यूजियम पहुंचेगी-तो सरदार गुरचरन सिंह ताबूतों को रखवाने के लिये हॉल नम्बर तीन का दरवाजा खोलना चाहेगा लेकल उस हॉल का दरवाजा नहीं खुलेगा पालीवाल साई।"

"क्यों?" पालीवाल के दिमाग में धमाका-सा हुआ- "कल उस हॉल का दरवाजा क्यों नहीं खुलेगा?"

"क्योंकि कल मैं म्यूजियम जाऊंगा-और खुद अपने हाथों से हॉल नम्बर तीन का ताला खराब करके आऊंगा।"

"वो कैसे?"

"वडी यह कोई बड़ी बात नहीं। मुझे मालूम हुआ है कि हॉल नम्बर तीन-पूरे म्यूजियम में सबसे ज्यादा तन्हा जगह पर है। इतना ही नहीं-पेशाबघर भी उसके काफी नजदीक है। मैंने कल किसी भी वक्त पेशाब करने के बहाने उस तन्हा जगह पर जाकर हॉल नम्बर तीन के ताले में चाबी डालनी है और उसे कसकर इधर-उधर हिला देना है। वह चाबी चूंकि उस ताले की नहीं होगी-इसलिये कसकर इधर-उधर हिलाने से उस ताले के अंदर के कलपुर्जे हिल जायेंगे तथा फिर थोड़ी देर बाद गुरचरन सिंह के खूब कोशिश करने पर भी वो ताला नहीं खुलेगा?"

"इससे क्या फायदा होगा?"

"वडी सारा फायदा ही इससे होगा-पूरी योजना ही इस छोटी-सी घटना पर टिकी है।"

"वो कैसे?"

" पालीवूराल साई!" दीवानचन्द- "वडी जब हॉल नम्बर तीन का दरवाजा तो सरदार गुरुचरन सिह से खुलेगा नहीं और बाकी हॉल कमरों की चाबियों उसके पास होंगी नहीं-तो तुम्हीं बताओ साई वह उन दोनों ताबूतों को किस हॉल में रखवायेगा?"

पालीवाल सकपका उठा।

पलक- झपकते ही सारी योजना उसकी समझ में आ गयी।

"जवाब दो साई।" दीवानचन्द मुस्कराकर बोला- "वडी वो उन ताबूतों को किस हॉल कमरे में रखवायेगा नी?"

"ए...ऐसी परिस्थिति में तो सरदार गुरचरन सिंह को वह ताबूत हॉल नम्बर चार में ही रखवाने होंगे।"

"सही-बिल्कुल सही कहा तुमने।" दीवानचन्द पफुलित हो उठा।" और वडी यही हम लोग चाहते हैं-यही हमारी है। पालीवाल साई-सिर्फ वह ताबूत ही हॉल नम्बर चार में बंद नहीं होंगे बल्कि हमारे दोनों आदमी भी उन ताबूतों के साथ-साथ निर्विघ्न उस हाल में बंद हो जायेंगे। उस हॉल नम्बर चार में-जिसकी सिक्योरिटी के इतने जबरदस्त इंतजाम भारत सरकार ने किये हैं। जिस सिक्योरिटी पर जूरी के मैम्बरों को गर्व है। हमारे दोनों आदमी जिस तरह नीचे से तख्ते उखाड़कर ताबूत में घुसे थे-वह हॉल बंद होने के बाद उसी प्रकार तख्ते उखाड़कर ताबूतों से बाहर निकल आयेंगे। अब एक दूसरी बात सुनो-ऐसी परिस्थिति में फॉल्स सीलिंग की छत और प्लास्टर पेरिस की दीवारों में छिपी स्वचालित गने भी हमारे आदमियों का कुछ नहीं बिगाड़ पायेंगी। क्योंकि वह स्वचालित गने भी उसी वक्त हरकत में आती हैं-जब हॉल बंद होने के बाद उसमें कोई गलत तरीके से घुसता है। बिल्कुल यही स्थिति शीशे के तिलिस्मी बॉक्स में बंद दुर्लभ ताज की है-वडी वह बॉक्स भी ताज को ऊपर-नीचे ले जाने -वाला करामाती प्रदर्शन तभी दिखाता है, जब कोई हॉल में गलत तरीके से घुस जाये-वरना साधारण स्थिति में वो दुर्लभ ताज अपनी जगह फिक्स ही रहता है। पालीवाल साई-अब तुम अदाजा लगा सकते हो कि वो ताज, वह युगों पुराना कजाखिस्तान का दुर्लभ ताज कितनी आसानी से हमारे हाथ लग जायेगा।"

जगदीश-पालीवाल भौंचक्की-सी अवस्था में दीवानचन्द का नकाबशुदा चेहरा देखता रह गया।

उसे अभी भी अपने कानों पर यकीन नहीं आ रहा था।

वो विश्वास नहीं कर पा रहा था कि उन अपराधियों ने इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी को भेदने की कोई योजना बना ली है।

वो वाकई करिश्मा था।

करिश्मा!

"पालीवाल साई!" दीवानचन्द खुश होता हुआ बोला- "वडी ज्यूरी के मैम्बर उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी करने में बस एक ही जगह मात खा गये-उन्होंने नम्बर चार में तिलिस्मी मायाजाल तो बिछाया साई, लेकिन उस मायाजाल में बस एक ही लूज प्सॉइण्ट छोड़ दिया कि वो सिक्योरिटी सिस्टम तभी हरकत में आयेगा-जब कोई उस हॉल में गलत तरीके से प्रवेश करें-वरना सब कुछ सामान्य रहेगा। अगर इस सिक्योरिटी सिस्टम में यह लूज प्सॉइण्ट न होता-शायद आज हम किसी भी हालत में उस दुर्लभ ताज को चुराने की योजना न बना पाते। लेकिन इसमें ज्यूरी के उन मैम्बरों की भी क्या गलती है साई-बड़ी उन्हें यह कोई ख्वाब थोड़े ही चमका होगा कि कोई इस तरह भी हॉल में घुस सकता है।"

जगदीश पालीवाल सकते जैसी अवस्था में बैठा।

"साई!" दीवानचन्द दोबारा बोला- "मुझे अब शायद यह कहने की जरूरत नहीं कि मुझे जो चैलेन्ज दिया था-उसमें मैं जीत चुका हूं। वडी इस परफैक्ट योजना से साबित हो चुका है कि सचमुच इस दुनिया में कोई काम नामुमकिन नहीं।"

"एक बात बताओ।" पालीवाल शुष्क स्वर में बोला।

"पूछो।"

"मैं मानता हूं। कि तुम्हारे दोनों आदमी, उस दुर्लभ ताज को आसानी से चुरा लेंगे-लेकिन फिर वो उस दुर्लभ ताज को लेकर हॉल नम्बर चार से किस तरह बाहर निकलेंगे? क्योंकि हॉल नम्बर चार के दरवाजे पर बाहर से ताला पड़ा है और म्यूजियम में चप्पे-चप्पे पर सिक्योरिटी गार्डो का पहरा है।"

सेठ दीवानचन्द ने उनके हॉल नम्बर चार से बाहर निकलने की भी योजना बतायी।

वह योजना हॉल में घूसने वाली योजना से भी ज्यादा जबरदस्त थी।

पालीवाल हतप्रभ रह गया।.

पूरी योजना में कहीं सूई की नोंक के बराबर भी लूज पवाइंट नहीं था।

"इसमें कोई शक नहीं।" फिर जगदीश पालीवाल थोड़ा रुककर प्रभावित स्वर में बोला- "कि तुमने इतने मजबूत विश्वस्तर के सिक्योरिटी सिस्टम को भेदने की एक मास्टर पीस योजना बना ली है-लेकिन इस योजना को बनाते समय तुम एक बहुत महत्वपूर्ण बात भूल गये।"

"वो क्या?"

दीवानचन्द के साथ-साथ सब चौंके।

सब हैरान हुए।

"दुर्लभ ताज तो तुम बुरा लोगे-लेकिन उस ताज के बारे में कहा जाता है कि वो अपनी सुरक्षा खुद करता। और यह सच भी है-आज तक जिसने भी उस दुर्लभ ताज को चुराने का प्रयास किया-वही किसी-न-किसी दुर्घटना में मारा गया या बर्बाद हो गया। आज तक ऐसी दर्जनों कहानियां उस दुर्लभ ताज 'के साथ जुड़ चुकी हैं-जब अपराधियों ने तुम्हारी तरह ही बड़े जोर-शोर के साथ उसे चुराने का प्रयास किया-लेकिन वो अपने मकसद मैं सफल न हुए।"

"वडी इस बार हम सफल होंगे।" दीवानचन्द ने दृढ़ शब्दों में कहा- "यह सब कहानियां. सिर्फ कहानियां हैं-जिसमें सच्चाई नहीं-हकीकत नहीं। इन कहानियों को सिर्फ इसलिये गढ़ा गया है-ताकि हमारे जैसे अपराधियों के दिलों में खौफ पैदा किया जा सके और उन्हें दुर्लभ ताज चुराने से रोका जा सके।"

पालीवाल कुछ न बोला।

वो भांप गया कि उन्हें समझाना बेकार है।

वह अब कोई-न-कोई गुल खिला कर रहेंगे और अपने मासूम बच्चे की जिंदगी के लिये उसे भी मजबूरन उनकी योजना में शामिल होना पड़ेगा।

बहरहाल फिर जगदीश पालीवाल को कुछ जरूरी निर्देश देकर वहां से विदा कर दिया गया।

उसे विदा करते ही सेठ दीवानचन्द ने आनन-फानन योजना में काम आने वाले सामान की एक लिस्ट बनायी।

एक फ़ायर ब्रिगेड वैन।

चार अग्निशमन कर्मचारियों की खाकी वर्दियां।

गैस मास्क।

गैस टैंक।

हेलमेट।

.32या.38 कैलीबर की स्मिथ एण्ड वैसन या कोल जैसी बेहद उम्दा किस्म की चार रिवॉल्वरें-जो खतरे के समय में सुरक्षा कवच का काम अंजाम दे सकें।

दुर्लभ ताज से ही मेल खाता एक नकली पीतल का ताज।

दस-दस लीटर वाली कैरोसीन ऑयल की दो केने।

हथौड़ा।

कीलें।

ओदि-ओदि।

सामान की लिस्ट तैयार होते ही वह सब फौरन सामान जुटाने के काम में लग गयें।

शनिवार की रात दस बजे तक उन्होंने लगभग सारा सामान एकत्रित कर लिया।

सबसे ज्यादा परेशानी फायर बिग्रेड वैन के हासिल होने में पेश आयी।

लेकिन आखिरकार उन्हें प्राइवेट संस्थान द्वारा बेची जा रही बिल्कुल चालू हालत में फायर ब्रिगेड पच्चीस हजार रुपये में मिल गयी। अग्निशमन कर्मचारियों का सामान बेचने वाली एक रिटेल शॉप से उन्होंने अग्निशमन कर्मियों की चार सिली सिलाई वर्दियां, बेज, गैस मास्क, गैस टैंक और हेलमेट वगैहरा सब खरीद लिये।

दुर्लभ ताज से ही मेल खाता एक नकली पीतल का ताज उन्हें जामा मस्तिद के मीना बाजार से हासिल हो गया-उसमें थोड़ी बहुत जो कमी थी, वो दशरथ बिलीमोरिया ने ठीक कर दी।

बाकी इंग्लिश रिवॉल्वरे, कैरोसीन ऑयल, कील, हथौड़ा जैसी बेहद साधारण चीजें भी उन्हें आसानी से उपलब्ध हो गयी।

वह फिर इकट्ठे हुए।

इस बार सेठ दीवानचन्द ने सबको यह बताया कि किसने क्या-क्या करना था।

हॉल नम्बर तीन के ताले को खराब करने की जिम्मेदारी सेठ दीवानचन्द ने खुद संभाली-जो कि सबसे आसान काम था।

कान्ति पाण्डे को सफदरजंग एअरपोर्ट से स्टेशन वेगन का पीछा करते समय फियेट ड्राइव करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी।

और सबसे खतरनाक मुहिम पर, ताबूतों में पुसकर दुर्लभ ताज बुराने का काम दशरथ बिलीमोरिया और कुलभूषण को सौंपा गया।

खुद को इतने जोखिम भरे काम पर नियुक्त होते देख कुलभूषण का दिल नगाड़े की तरह बज उठा।

उसका कलेजा मुंह को आ गया।

वह अपने सर्वेट क्वार्टर जैसे छोटे से कमरे में लेटा बेइन्तहा बेचैनी का अनुभव कर रहा था।

उसे यह पता तक न चला कि शीतल कब उसके नजदीक आकर खड़ी हो गयी।

"भूषण!" शीतल ने उसे आहिस्ता से पुकारा।

कुलभूषण चुपचाप पड़ा रहा।

"भूषण!" इस मर्तबा शीतल ने आवाज देने के साथ-साथ उसे झंझोड़ा भी-तो वह चौंककर पलटा।

"त...तुम!" शीतल को देख कर उसकी आवाज कांपी- "तुम!"

"क्या सोच रहे हो?"

"क...कुछ भी तो नहीं।"

"मुझसे झूठ बोलते हो।" शीतल उसके नजदीक ही बैठ गयी- "क्या मैं नहीं जानती कि तुम इस वक्त क्या सोच रहे हो।"

"क...क्या सोच रहा हूं?"

"तुम कल की योजना को लेकर डरे हुए हो- यह सोच-सोचकर तुम्हारी जान निकल रही है कि सेठ दीवानचन्द ने तुम्हें कितने खतरनाक काम पर नियुक्त किया है।"

"न...नहीं।" कुलभूषण की आवाज फिर कापी- "य...यह सच नहीं।"

"मुझसे झूठ बोलते हो।" शीतल की आवाज कड़वाहट से भर गयी- "को क्या तुमसे वाकिफ नहीं। आज तक जिंदगी-में कभी एक मक्खी तक नहीं मारी-कभी किसी के दस चुराने तक का हौसला दिल में पैदा नहीं हो सका-और कल तुम्हें इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी में रखा दुर्लभ ताज चुराने के लिये भेजा जा रहा है। ऐसी परिस्थिति में अगर तुम डरोगे नहीं-तो क्या करोगे।"

कुलभूषण अब साफ-साफ सहमा हुआ नजर आने लगा। "भूषण!"

कुलभूषण चुप रहा।

"मेरी बात ध्यान से सुनो भूषण!" शीतल फुसफुसा उठी- "उस दुर्लभ ताज को चुराना तुम्हारे जैसे चूहे दिल वाले आदमी के बस का काम नहीं है। मुझे तो बार-बार यह सोचकर हैरानी हो रही है कि सेठ दीवानचन्द ने इतने खतरनाक काम का अंजाम देने के लिये तुम्हारे जैसे डरपोक व्यक्ति को ही क्यों चुना। एक बात बोलूं भूषण?"

"क...क्या?" कुलभूषण का सस्पैंसफुल स्वर।

"मुझे तो इसमें सेठ दीवानचन्द की कोई चाल नजर आती है। तुम मानो या मानो-लेकिन मुझे साफ-साफ लगता है कि वह तुम्हें जरूर किसी नये चक्कर में फंसाने जा रहा है वरना वह खुद भी तो हॉल नम्बर चार के अंदर जा सकता था-दशरथ बिलीमोरिया के साथ कान्ति पाण्डे को भी तो भेजा जा संकता था। लेकिन नहीं-उसने ऐसा कुछ नहीं किया। उसने तुम्हें चुना-तुम्हें- एक बिल्कुल नये, बेहद डरपोक तथा, नातजुर्बेकार आदमी को।"

"तु...तुम तु कहना क्या चाहती हो?"

"मैं सिर्फ यह कहना चाहती हूं कि अब तुम्हारा यहां एक मिनट और भी रुकना खतरे से खाली नहीं है-तुम्हारी जान जोखिम में है-इसलिये जितना जल्द-से-जल्द संभव हो, यहां से भाग चलो।"

"न...नहीं-यह नहीं हो सकता।"

"क्यों नहीं हो सकता? क्या तुम अहुए से बाहर निकलने का रास्ता नहीं जानते?" शीतल फुसफुसाई।

"वह सब जानता हूं-ल...लेकिन मैं भागकर कहां जाऊंगा शीतल? कुलभूषण की आवाज में पीड़ा थी- "कहां मुझे आसरा मिलेगा? म...मेरी जिंदगी अब शै और मात के खतरनाक खेल में फंस चुकी है। पूरे दिल्ली की पुलिस मुझे इस तरह तलाशती धूम रही है-जैसे भूसे के ढेर में सूई तलाश की जाती है।"

"फ...फिर, तुम क्या करोगे?"

"मैं कर भी क्या सकता हूं।" कुलभूषण के स्वर में बेहद निराशा थी- "अब तो मेरे सामने यही एक रास्ता है कि मैं सेठ दीवानचन्द के आदेश का पालन करूं। ल...लेकिन मेरे दिमाग में अब एक योजना और है शीतल।"

"य...योजना-कैसी योजना?"

"मैंने इन शैतानों को चुपचाप बातें करते सुना है कि दुर्लभ ताज हाथ में आते ही यह तीनों हिन्दुस्तान छोड़कर खामोशी से अपने सुपर बॉस के साथ अमरीका भाग जायेंगे। इसके लिये जाली पासपोर्ट और वीजे वगैहरा की भी तैयारियां हो चुकी है।"

"कहीं तुम इस गलतफहमी में तो नहीं।" शीतल तुरन्त बोली- "कि यह तुम्हें भी अपने साथ अमरीका ले जायेंगे?"

"मैं इतना बड़ा पागल नहीं हूं-जो इस तरह के लोयों से ऐसी उम्मीद रखूंगा।"

"फ...फिर क्या योजना है तुम्हारी?"

कुलभूषण अब शीतल की तरफ झुक गया तथा और धीमे स्वर में फुसफुसाया- "अव यह लोग कभी अमरीका नहीं जा सकेंगे शीतल।"

"य...यह तुम क्या कह रहे हो?" शीतल के नेत्र आश्चर्य से फैल गये।

"मैं ठीक, ही कह रहा हूं। इस वक्त तुम मेरी कोई बात अच्छी तरह नहीं समझ सकोगी-लेकिन अब एक बात ध्यान रखना। आज तक तुम मुझे डरपोक और बुजदिल समझती थी न-तो सुनो अब डरपोक कुलभूषण मर गया। आज से एक ऐसा नया कुलभूषण जन्म लेगा-जो अपने आपमें बहादुरी की मिसाल होगा। आज तक लोग मेरे खिलाफ षड्यन्त्र रचते थे-लेकिन अब मैं षड्यन्त्र रचूंगा। ऐसा षड्यन्त्र-जो सबके छक्के छुटा देगा।" बोलते-बोलते कुलभूषण की आखों से' खून उतर आया- "और... और उस व्यक्ति को तो मैं किसी भी हालत में माफ नहीं करूंगा शीतल-जिसकी वजह से आज मेरी यह हंसती-खेलती जिंदगी नरक बन गयी है।"

कुलभूषण का चेहरा ज्वालामुखी की तरह दहकने लगा।

होंठ गुस्से से कंपकंपाने लगे।

वह एक ही पल में दरिन्दा बन चुका था-साक्षात दरिन्दा। कुलभूषण का वह रौद्र रूप देखकर उस साये का कलेजा पत्ते की तरह काप उठा- "जो उस छोटे से कमरे के दरवाजे से आख और कान सटाये खड़ा उनका वार्तालाप सुन रहा था।

अगले ही पल वो तेजी से पलटा।

उसके शरीर मेइं फुर्ती-सी समा गयी थी।

फिर वो लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ कांग्रेस हॉल की तरफ बढ़ गया।

गहन अंधकार में भी उस साये के कदम इस तरह उठ रहे थे-मानो वह उस अहुए के एक-एक हिस्से से वाकिफ हो।

वह बल्ले था।

बल्ले!

फिर आखिरकार वो महत्वपूर्ण समय भी आ ही गया-जिसका सेठ दीवानचन्द और उसके संगठान के मैम्बरों को पिछले कई दिनों से इंतजार था।

सचमुच वह रोमाचकारी क्षण थे।

रोमांचकारी भी और रहस्य से भरे हुए भी।

कोई नहीं जानता था कि आगामी कुछ घण्टों में अब क्या होने वाला है।

खेल शुरू हुआ।

"पत्ते बिछाये जाने लगे।

वह रविवार की खून में डूबी हुई शाम थी-जैसे ही पांच बजे, इण्डियन म्यूजियम की एक स्टेशन वेगन ताबूत लेने के लिये सफदरजंग एअरपोर्ट की विशाल मारकी में जाकर रुकी।

स्टेशन वेगन में उस समय जगदीश पालीवाल के अलावा छत्रपाल सिंह नाम का एक बेहद लम्बा-चौड़ा ड्राइवर भी मौजूद था-जो हरियाणा का रहने वाला था और जिसके कंधे पर हमेशा एक दोनाली बंदूक टंगी रहती थी। वह बदूक सरकारी थी और म्यूजियम की तरफ से उसे इसलिये हासिल हुई थी-ताकि कोई भी खतरा देखते ही वह उसका इस्तेमाल कर सके।

लगभग दस मिनट बाद ही शेर और चीते की खालों के दोनों ताबूत स्टेशन वेगन के बॉक्स पोर्शन में रख दिये गये।

फिर छत्रपाल सिंह के सामने ही जगदीश पालीवाल ने दरवाजे पर पीतल का भारी-भरकम ताला लगाकर चाबी अपनी जेब में रखी। उसके बाद स्टेशन वेगन तूफानी रफ्तार से म्यूजियम की तरफ दौड़ पड़ी।

छत्रपाल सिंह पूरी 'तन्मयता से वेगन ड्राइव कर रहा था।

वैसे भी वो दिलखुश आदमी था।

हमेशा मस्त रहता।

उसकी बराबर में बैठे जगदीश पालीवाल ने रियर व्यू में देख लिया था कि एअरपोर्ट से ही सफेद रंग की एक फियेट उनकी वेगन के पीछे लग गयी है।

बेगन अपना फासला तय करती रही।

वह अभी मुश्किल से एक किलोमीटर भी न चली होगी कि जगदीश पालीवाल ने एकाएक जोर से सिसकारी भरकर अपना सिर पकड़ा और फिर एकदम से ड्राइविंग सीट पर ढेर होता चला गया। वो सीधा छत्रपाल सिंह की गोद में जाकर गिरा।

"साहब जी-साहब जी!" छत्रपाल सिंह के हाथ-पांव फूल गये-उसने जल्दी से स्टेशन वेगन' के ब्रेक अप्लाई किये- "के होया साहब जी?"

पालीवाल कुछ न बोला।

वह जख्मी सांड की भांति बुरी तरह हांफता रहा-जोर-जोर से हांफता रहा।

"कुछ तो बोलो साहब जी-क...के होया जी?" छत्रपाल सिंह बुरी तरह दहशतजदां हो उठा था।

"म...मेरे सिर में बहुत तेज दर्द हो रहा है छत्रपाल।" पालीवाल पीड़ा से बुरी तरह कराहकर बोला- "द...दर्द के मारे सिर फटा जा रहा है।"

"स...सिरदर्द में इतनी बुरी हालत साहब जी?"

"यह कोई साधारण सिरदर्द नहीं है छत्रपाल।" वह पीड़ा से और बुरी तरह छटपटाया- क... कभी-कभी मेरे सिर में एक गोला-सा टकराता है-त...तुम एक काम करोगे छत्रपाल।"

"हुकुम करो साहब जी-हुकुम।"

"तुम फौरन कहीं से सिरदर्द की एक टेबलेट ले आओ-वरना आज मेरे यहीं प्राण निकल जाने हैं।"

बेचारा छत्रपाल!

घबरा तो वह पहले ही काफी चुका था।

उसकी आखें बड़ी तेजी से चारों तरफ गयीं।

आसपास के इलाके में कैमिस्ट की दुकान तो क्या कैसी भी कोई दुकान न थी।

हां-पांच या छ: सौ गज के फासले पर उसे एक कॉलोनी जरूर दिखाई दी।

अगले ही पल वो बदहवास स्थिति में पैदल ही कॉलोनी की तरफ दौड़ पड़ा।

सफेद फियेट जो मन्थर गति से चलती हुई वेगन से आगे निकल गयी थी-छत्रपाल सिंह के कूच करते ही टर्न होकर दोबारा वेगन के नजदीक पहुंची।

फिर फियेट में-से बेहद आनन-फानन कान्ति पाण्डे बाहर निकला।

जगदीश पालीवाल भी अब बड़ी चुस्त अवस्था में, वापस सीट पर बैठ चुका था।

पलक झपकते ही कान्ति पाण्डे ने जगदीश पालीवाल से चाबी हासिल की।

फिर उसने दौड़कर बॉक्स पोर्शन का दरवाजा खोला।

उसके बॉक्स पोर्शन का दरवाजा खोलते ही फियेट में पहले से तैयार बैठे दशरथ बिलीमोरिया और कुलभूषण तुरन्त केरोसीन ऑयल 'की केने तथा डकैती में काम आने वाला कुछ जरूरी साज-सामान लेकर फुर्ती के साथ फियेट से बाहर निकले तथा फिर चीते की तरह दौड़ते हुए बॉक्स पोर्शन के अंदर घुस गये।

उस वक्त दोनों ने अग्निशमन कर्मचारियों की ड्रेस पहन रखी थी। उन दोनों के बॉक्स पोर्शनं में' घुसते ही कान्ति पाण्डे ने फौरन बाहर से दरवाजे का ताला लगा दिया।

चाबी जगदीश पालीवाल को सौंपी।

उसके बाद वो पहले की तरह ही आनन-फानन फियेट में जाकर बैठ गया।

फिर फियेट यह जा और वह जा।

मुश्किल से एक मिनट में ही सारा काम हो गया था।

थोड़ी देर बाद ही छत्रपाल सिंह की वापसी हुई-वह सांड की तरह हांफ रहा था।

जगदीश पालीवाल को बिल्कुल ठीक-ठाक अवस्था में सीट पर बैठे देखकर वह चौंका।

"अ...आपका सिरदर्द ठीक हो गयो साहब जी?" छत्रपाल सिंह के स्वर में हैरानी थी।

"हां छत्रपाल।" पालीवाल ने गहरी सांस ली- "तुम्हारे जाते ही सिर का दर्द बड़े आश्चर्यजनक ढंग से ठीक हो गया था। मैंने तुम्हें पीछे से कई आवाजें भी दीं-लेकिन तुमने सुना ही नहीं-क्या तुम टेबलेट ले आये?"

"हासाहब जी-टेबलेटतो मै ले आया।" छत्रपाल सिंह ने टेबलेट फौरन पालीवाल की तरफ बढ़ा दी।

"कोई बात नहीं।" पालीवाल ने टेबलेट जेब में रखी- "यह टेबलेट फिर कभी काम आयेगी। चलो-तुम अब जल्दी से म्यूजियम चलो।"

अगले ही पल स्टेशन वैगन पुन: इण्डियन म्यूजियम की तरफ भागी जा रही थी।

छ: बजने में उस समय दस मिनट बाकी थे-जब स्टेशन वेगन म्यूजियम के विशाल प्रांगढ़ में जाकर रुकी।

जगदीश पालीवाल के लिये वो सबसे ज्यादा नाजुक क्षण थे।

हैड सिक्योरिटी गार्ड सरदार गुरचरन सिंह, और छत्रपाल सिंह-उन दोनों ने मिलकर वेगन के बॉक्स पोर्शन में-से वह दोनों ताबूत उतारे।

लेकिन ताबूत उतारने में उन्हें अपनी भरपूर तागत का इस्तेमाल करना पड़ा।

"साहब जी!" छत्रपाल सिंह एक ताबूत उतारते ही बुरी तरह हांफने लगा- "यह बक्से आते-आते आते-आते इत्ते भारी कैसे ही गयो जी?"

पालीवाल हड़बड़ाया।

"ओये पापे!" सरदार गुरचरनसिंह अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोला- "रास्ते में चुड़ैल-शुड़ैल तो नहीं घुस गयी इन ताबूतों विच।" छत्रपाल सिंह की चुड़ैल-शुड़ैल के नाम हंसी छूट गयी।

पालीवाल भी मुस्करा दिया।

इस तरह मजाक में ही बो बात आई-गई हो गयी।

दोनों ताबूत उठाकर हॉल नम्बर तीन के नजंदीक लाये गये। सरदार गुरचरन सिंह ने हॉल का ताला खोलना चाहा-तो ताला न खुला।

जरूर सेठ दीवानचन्द वहां आकर अपने हाथों की कारीगरी दिखाने। में सफल हो गया था।

सरदार गुरचरन सिंह ने फिर कोशिश की-लेकिन इस बार भी उसे असफलता ही मिली।

"क्या हुआ?" पालीवाल जानबूझकर अंजान बना- "ताला कैसे नहीं खुल रहा"

"असी पता नहीं शाह जी।" गुरचरनसिंह के चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव उभरे- "पंज बजे तब मैंने ताला बंद किया था-तब -तो सब-कुछ ठीक-ठीक था।"

"फिर इतनी जल्दी क्या हो गया?"

गुरचरन सिंह से एकाएक जवाब देते न बना।

"सरदार जी!" छत्रपाल सिंह थोड़ा हेकड़ी से बोला- "जरा ताल्ली मेरे को दिखाना जी-मैं देष्पं यह ससुरा कैसे ना खुले।" सरदार गुरचरन सिंह ने चाबियों का गुच्छा छत्रपाल सिंह को सौंप दिया।

अगले ही पल गैंडे जैसा शक्तिशाली छत्रपाल सिंह ताले से उलझ गया।

जबकि पालीवाल के चेहरे पर अब सस्पैंसफुल भाव उभर आये थे।

छत्रपाल सिंह ने बेइन्तहा कोशिश की।

चाबी की मूठ पकड़कर खूब जोर लगाये-लेकिन आखिरकार ताला उससे भी न खुला।

"अब क्या होगा?" जगदीश पालीवाल ने नकली चिन्ता जाहिर की- "कहां रखेंगे इनू ताबूतों को?"

"शाह जी!" एकाएक सरदार गुरचरन सिंह बोला- "असी-अभी एक ताले वाले को बुलाकर लाता है-उसने पंज मिनट में ताला खोल देना है।"

"नहीं।" जगदीश पालीवाल फौरन बोला-"ऐसी गलती कभी मत करना गुरचरन सिंह?"

"क्यों शाहजी?"

"यह सारे ताले वाले एक नम्बर के बदमाश होते हैं-इन्होंने एक बार जिस ताले की चाबी बना ली, दोबारा उसी की डुपलीकेट खुद-ब-खुद बना लेते हैं। फिर तुम्हें तो मालूम ही है कि इस हॉल में कितना कीमती सामान रखा रहता है-अगर यहां कभी चोरी हो गयी, तो तुम्हारी आफत आ जायेगी।"

"आप बिल्कुल ठीक बोले साहुब जी।" छत्रपाल सिंह फौरन सहमति में गर्दन हिलाई- "हमारे गांव में ससुरों एक बिल्कुल ऐसा ही केस हो गयो था।"

"फिर असी क्या करें शाहजी?" सरदार गुरचरन सिंह विचलित हुआ।

"करना क्या है-इन ताबूतों को रात भर के लिये किसी भी सुरक्षित जगह पर रख दो। सुबह इस हॉल का ताला तोड़कर जब नया ताला लगाया जायेगा-तभी इन ताबूतों को भी इसके अन्दर रख देना।"

"ऐसी चंगी जगह तो अब बस एक ही है शाह जी-जहा इन ताबूतों को रातभर के लिये रखा जा सकता है।".

"कौन-लई जगह?"

"चार नम्बर हॉल।"

"तो फिर पूछते क्या हों-उसी रख दो। सुबह निकाल लेना।" ठीक छ: बजे उन दोनों ताबूतों को हॉल नम्बर चार में रखकर हॉल बंद कर दिया गया।

इस तरह दशरथ बिलीमोरिया और कुलभूषण सिक्योरिटी के इतने बड़े तामझाम को भेदकर सहज ही हॉल नम्बर चार में घुसने में सफल हो गये।

वह हॉल में बंद हो गये थे।

लेकिन किसी को पता तक न था कि थोड़ी ही देर बाद वहां कितना बड़ा हंगामा होने वाला है।

फिर योजना का अगला चरण शुरू हुआ।

हॉल में बंद होने के बाद सबसे पहले दशरथ बिलीमोरिया अपने ताबूत के तख्ते उखाड़कर बाहर निकला।

फिर उसके पीछे-पीछे कुलभूषण भी निकला।

जैसा कि स्वाभाविक था-फॉल्स सीलिंग की छत और प्लास्टर पेरिस की दीवारों के पीछे छिपी स्वचालित गनों ने उनके ऊपर गोलियां नहीं बरसायी।

ताबूतों से बाहर निकलते ही वह दोनों उस शीशे के बॉक्स की तरफ बढ़ गये-जिसमें दुर्लभ ताज रखा था।

और जिसकी कीमत कई अरब रुपये थी।

पलक झपकते ही वो दुर्लभ ताज दशरथ बिलीमोरिया के हाथों में था।

उसी पल कुलभूषण ने उस शीशे के बॉक्स में पीतल का वो नकली ताज रख दिया-जिसे उन्होंने जामा मस्जिद के मीना बाजार से खरीदा था।

इस तरह बिना किसी मुश्किल के-बिना किसी बड़े हंगामे के वो ताज चोरी हो गया।

अब उन्हें उस दुर्लभं ताज को लेकर सिर्फ उस हॉल से बाहर निकलना बाकी था।

हालांकिवों काफी मुश्किल काम था।

लेकिन वो भी हुआ।

कुशलतापूर्वक हुआ।

वहां से भाग निकलने की योजना रात के दस बजे से शुरू हुई। वो योजना काफी हंगामाखेज थी।

हंगामाखेज भी-और- दहला देने वाली भी।

जैसे ही रात के दस बजे-फौरन दशरथ बिलीमोरिया और कुलभूषण ने अपने साथ लायी केरोसिन ऑयल की केनों में-से तेल हरेल के अंदर-हीं-अंदर चारों तरफ छिड़कना, शुरू कर दिया। इतना ही नहीं-फिर दशरथ बिलीमोरिया ने आग भी लगा दी।

फौरन चार नम्बर हॉल के अंदर धू-धू करके आग लगने लगी। धुंआ तेजी से. बाहर निकलने लगा।

"आग-आग-आग।"

इण्डियन म्यूजियम की सिक्योरिटी रात होने की वजह से उस वक्त अपनी चरम सीमा पर थी-जब एकाएक चारों तरफे आग-आग का भीषण कोलाहल मच गया।

सब इधर-से-उधर भागने लगे।

बाहर तैनात हैड सिक्योरिटी गार्ड सरदार गुरचरन सिंह के कानों में भी जैसे ही उस कोलाहल की आवाज पड़ी-वह भी म्यूजियम के अंदर की तरफ भागा।

"क...क्या हुआ? अंदर आते ही गुरचरन सिंह ने एक सिक्योरिटी गार्ड से पूछा- "क्या हुआ?"

"ह...हॉल नम्बर चार में आग लग गयी है सर।" सिक्योरिटी गार्ड ने बुरी तरह बौखलाये हुए कहा-ब...बहुत बुरीं तरह आग लगी है।"

"ल...लेकिन कैसे?" गुरचरन सिंह के नेत्र फटे- "कैसे लगी आग?"

"यह मालूम नहीं सर-म...मगर खूब- धुंआ उठ रहा है-खूब आग की लपटें निकल रही हैं।"

सरदार गुरचरन सिंह फौरन हॉल नम्बर चार की तरफ दौड़ पड़ा।

वास्तव में ही धुएं से पूरा गलियारा भरा पड़ा था।

अंदर उठती भीषण आग की लपटें दरवाजे की झिर्री में से भी साफ नजर जा रही थीं।

सरदार गुरचरन सिंह को एकाएक न जाने क्या सूझा कि उसने दौड़कर वह सभी वायरें उधेधनी शुरू कर दीं-जिनकी बदौलत हॉल नम्बर चार में सिक्योरिटी का वह तिलिस्मी जाल बिछाया गया था।

पलक झपकते ही वो पूरा सिक्योरिटी सिस्टम ठप्प हो गया।

लेकिन बदहवासी के आलम में उठाये गये इस कदम से सेफ्टी अलार्म बज उठा था।

परिणामस्वरूप पूर दिल्ली शहर की पुलिस में हड़कम्प मच गया। सभी सीमा चौकियां को सतर्क कर दिया गया।

रोड ब्लॉक कर दिये गये।

पुलिस की जिप्सियां, पीट आर० सी० वैनें, जीपें-वह सब हथियारबन्द पुलिसकर्मियों से भर-भरकर इण्डियन म्यूजियम की तरफ भागने लगी।

तभी घटना ने एक और मोड़ लिया।

टन-टन- की आवाज आसपास के सारे वातावरण में गूंज उठी थी।

"फायर ब्रिगेड आ गयी।" एक सिक्योरिटी गार्ड चीख-पुकार मचाता अंदर की तरफ भागा- "फायर ब्रिगेड आ गयी।"

वह 'फायर ब्रिगेड' आने का ऐसा शोर मचा रहा था-जैसे वहां कोई तोप चली आ रही हो।

फायर ब्रिगेड इण्डियन म्यूजियम के प्रांगण में आकर रुक गयी। फिर उस फायर ब्रिगेड वैन के अंदर से दो अग्निशमन कर्मचारी बड़ी फुर्ती से बाहर कूदे।

"नीचे कूदते ही उन्होंने पानी का एक-एक मोटा पाइप अपने हाथों में ले लिया।

"आग किधर लगी है?" उनमें से एक अग्निशमन कर्मचारी हलक फाड़कर चिल्लाया।

"हॉल नम्बर चार में-जल्दी वहां पहुंचो-जल्दी।"

फौरन वह दोनों कर्मचारी हॉल नम्बर चार की तरफ दौड़ पड़े।

सिर पर हैलमेट और मुंह पर गैस मास्क लगा होने की वजह से उनका पूरा चेहरा छिप गया था।

पीठ पर गैस टंकियां बंधी थीं।

वह सेठ दीवानचन्द और कान्ति पाण्डे थे।

"वडी फौरन इस हॉल का दरवाजा खोलो।" चार नम्बर हॉल के नजदीक पहुंचकर सेठ दीवानचन्द ने हलक फाड़ा- "वरना सब कुछ जलकर राख हो जाना है।"

सरदार गुरचरन सिंह-जो अनायास घटे इस हादसे से बुरी तरह बौखलाया हुआ था-उसने फौरन हॉल नम्बर चार का दरवाजा खोल दिया।

इतना ही नहीं!

हॉल का दरवाजा खोलते ही वह अपनी जान की परवाह किये बिना धधकती आग में उसके अंदर कूद गया।

फिर वो अपनी सेल्फ लोडिंग राइफल संभाले दौड़ता हुआ दुर्लभ ताज के नजदीक जा खड़ा हुआ।

हड़बड़ाहट में ही उसने देखा कि दुर्लभ ताज अपनी जगह पर सुरक्षित मौजूद है।

वह फौरन राइफल संभाले दुर्लभ ताज के पास यूं तनकर खड़ा हो गया-मानो अगर आज उस ताज को चुराने दुनिया की कोई भी ताकत उसके सामने आ गंयी, तो वह अकेला ही उसे तहस-नहस कर डालेगा।

अपने कर्तव्य के प्रति पूरी तरह समर्पित था गुरचरन सिंह।

लेकिन काश!

काश उसने दुर्लभ ताज को ध्यान से देखा होता।

तो उसे मालूम पड़ता कि जिस ताज की हिफाजत के लिये वो अपनी जान की बाजी लगाकर वहां खड़ा है-वह ताज तो कभी का चोरी हो चुका है।

उधर-सेठ दीवानचन्द और कान्ति पाण्डे वहां एक नया ही नाटक खेल रहे थे। वह पाइप से निकलते पानी के मोटे धरि को आग पर बरसाने की बजाय इधर-उधर दीवारों पर मार रहे थे।

यही वजह थी-आग बुझने की बजाय हर पल और भीषण रूप धारण करती जा रही थी।

उन दोनों की नजर हॉल में दीवार से चिपके खड़े दशरथ बिलीमोरिया और कुलभूषण पर भी पड़ चुकी थी।

उन दोनों के चेहरों पर सफलता की चमक विद्धमान थी। वह खुश थे।

इस बीच म्यूजियम के बाहर पुलिस फोर्स का विशाल जमघट इकट्ठा हो गया।

तभी अपना कानफोड़ सायरन बजाती हुई फायर ब्रिगेड वेनों का एक बड़ा काफिला म्यूजियम के प्रांगण में आकर रुका।

देखते-देखते वहां चारों तरफ अग्निशमन कर्मचारी-ही-कर्मचारी नजर आने लगे।

कुलभूषण, सेठ दीवानचन्द, दशरथ बिलीमोरिया और कान्ति पाण्डे को जैसे उसी पल का इंतजार था।

वह अग्निशमन कर्मचारियों की भीड़ का फायदा उठाकर वहां से भाग खड़े हुए।

कुलभूषण और दशरथ बिलीमोरिया भी चूंकि अग्निशमन कर्मचारियों की ड्रेस में ही थे-इसलिये उन्हें वहां से भागने में कोई परेशानी न हुई।

सबने यही समझा कि उनकी फायर बिनेड वेन के टेंकर का पानी खत्म हो गया है-इसलिये के वापस जा रहे हैं।

बहरहाल सारे सुरक्षा प्रबन्ध रखे रह गये।

म्यूजियम के बाहर दिल्ली पुलिस के जत्थे-के-जत्थे खड़े रह गये।

और वह चार आदमी-सिर्फ चार आदमी उनके बीच से उस बेहद मूल्यवान दुर्लभ ताज को लै उड़े।

उससे भी ज्यादा डूब मरने की बात यह थी कि किसी को इस बात की कानोकान भनक तक नहीं थी कि वो दुर्लभ ताज चोरी हो गया।

अगले दिन धमाका हुआ।

अगले दिन के सारे समाचार-पत्र एक ही खबर से रंगे पडे थे- बेहद जबरदस्त सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद दुर्लभ ताज चोरी किलेबंद सिक्योरिटी को आसानी से भेदा गया

हर अखबार ने उस समाचार के अलग-अलग शीर्षक बनाये थे।

उस समाचार को खूब मिर्च-मसाला लगाकर छापा गया था।

दो-तीन अखबारों ने तो दिल्ली पुलिस की कार्यकुशलता पर व्यंग्य भी कसे थे और फ्रंट पेज पर कार्टून भी प्रकाशित किये थे।

बहरहाल.उस समाचार में एक बात और बड़ी दिलचस्प थी-जिससे वाकई दिल्ली पुलिस की काबलियत का पता चलता था। उस खबर के मुताबिक दिल्ली पुलिस ने दुर्लभ ताज चुराने के इल्जाम में तत्काल ही एक व्यक्ति को गिरफ्तार भी कर लिया था।

वह कृषि था-इण्डियन म्यूजियम का हैड सिक्योरिटी गार्ड सरदार गुरचरन सिंह!

गुरचरन सिंह का दोष ये था-उसने अग्निशमन कर्मचारियों के कहने पर हॉल नम्बर चार का दरवाजा क्यों खोला?

फिर वो उनके आगे-आगे आग में क्यों कूदा?

इस सम्बन्ध में दिल्ली पुलिस के एक बड़े अफसर की टिप्पणी भी अखबारों में छपी थी-जो काबिलेगौर थी- "यह सब सरदार गुरचरन सिंह की वजह सं हुआ। सरदार गुरचरन सिंह अपराधियों का 'इनसाइड हैल्पर' था। जरूर उसी ने हॉल नम्बर चार में भीषण अग्निकाण्ड किया था और फिर वह आग में आगे-ही-आगे कूदा भी इसलिये था-ताकि दुर्लभ ताज चुराने में अपराधियों की मदद कर सके। बहरहाल गुरचरन सिंह से कठोर पूछताछ की जा रही है तथा उम्मीद है कि बहुत जल्द चोरी से सम्बन्धित कुछ और रहस्य की गुत्थियां भी सुलझेंगी।"

वाकई-बेचारा सरदार गुरचरन- सिंह फंस गया था।

खामखाह फंस गया था।

उसी दिन एक आश्चर्यजनक घटना और घटी।

दोपहर के दो बज रहे थे-जब सुपर बॉस डॉन मास्त्रोनी एकाएक सेठ दीवानचन्द के अड्डे पर आ गया।

डॉन मास्त्रोनी को देखकर सब हैरान रह गये-बेहद भौंचक्के क्योंकि उसके आने की पहले से कोई सूचना नहीं थी।

एक बार फिर वह सब कीफ्रेंस हॉल में आयताकार मेज केइर्द-गिर्द जमा हुए।

आज ऊंची पुश्त वाली उस रिवॉल्विंग चेयर पर डॉन मास्त्रोनी बैठा था-जिस पर हमेशा सेठ दीवानचन्द बैठता था।

जबकि दीवानचन्द उसके पहलू में ही पड़ी एक कुर्सी पर भीगी बिल्ली-सी बना बैठा था।

अन्य कुर्सियों पर दशरथ बिलीमोरिया, कान्ति पाण्डे और कुलभूषण बैठे थे।

शीतल भी मासूम गुड्डू को गोद में लिये वहीं बैठी थी।

डॉन मास्त्रोनी के अपने दुर्लभ ताज रखा था। दुर्लभ ताज-जिसे वो, हाथों वे हाथो मे ले-लेकर बड़ी हसरत भरी निगाहों से रहा था।

डॉन मास्त्रोनी की उम्र लगभग चालीस-पैंतालीस के आसपास थी।? कद लम्बा था-नैन-नक्श आकर्षक थे और उसके बाल बेहद विशिष्ट अंदाज में पीछे की तरफ कड़े हुए थे-जिससे घूमका व्यक्तित्व काफी रौबदार बन गया था।

डॉन मास्त्रोनी ने अपने गठे हुए शरीर पर इस समय ब्राउन कलर का सूट पहना हुआ था।

डॉन मास्त्रोनी काफी देर तक दुर्लभ ताज को हसरत भरी निगाहों से देखता रहा।

"म...मुझे इस वक्त आपको यहां देखकर हैरानी हो रही है सुपर बॉस!" सेठ दीवानचन्द थोड़े सकपकाये स्वर में बोला- "व...वडी आपको इतनी जल्दी न्यूयार्क में यह खबर कैसे मिल गयी कि हमने दुर्लभ ताज चुरा लिया है-अ...और आप इतनी जल्दी न्यूयार्क से इधर दिल्ली कैसे आ गये?"

मुस्कराया डॉन मास्त्रोनी

उसके लाल-सुर्ख होठों पर बाल जैसी बारीक मुस्कान दौड़ी थी।

"तुम दोनों ही बात गलत ढंग से सोच रहे हो दीवानचन्द डॉन मास्त्रोनी ने एकदम शुद्ध हिन्दी में जवाब दिया।

"क...क्या मतलब?"

"दरअसल तुम लोगों ने दुर्लभ ताज लिया है-मुझे यह खबर न्यूयार्क में नहीं पता चली थी।" डॉन मास्त्रोनी बोला- "बल्कि दिल्ली आने के बाद पता चली। मैं कल ही न्यूयार्क से दिल्ली आने के लिये उड़ान भर चुका था और आज सुबह जब मैंने दिल्ली के इंदिरा गांधी एअरपोर्ट पर कदम रखा-तभी एक अखबार के जरिये से मुझे यह खुशखबरी मिली। ही-यह इत्तफाक जरूर हुआ कि मेरे कदम ऐसे शानदार मौके पर दिल्ली शहर में पड़े-जब तुम अपनी योजना में कामयाब हो चुके थे।"

सब सनसनायी-सी अवस्था में बैठे रहे।

"ऐनी वे!" डॉन मास्त्रोनी ने अपने पीछे को कड़े बालों पर हाथ फेरा- "अब कुछ काम की बातें कर लें। सबसे पहले तुम लोग मुझे यह बताओ कि क्या तुम सभी ने अपने-अपने पासपोर्ट और वीजे तैयार करा लिये हैं?"

"यस सुपर बीस!" कान्ति पाण्डे ने आदर से गर्दन झुकाई-हम सभी के पासपोर्ट और वीजे पूरी तरह तैयार हो चुके हैं तथा हम सब हिन्दुस्तान छोड़ने के लिये एकदम तैयार हैं।"

"सुपर बॉस!" दशरथ बिलीमोरिया भी बोला- "हम लोगों को अब जल्द-से-जल्द हिन्दुस्तान छोडू देना चाहिये।"?

"क्यों डॉन मास्त्रोनी की आखें सिकुड़ी- "जल्द-से-जल्द क्यों?"

"क्योंकि अब हमारे लिये यहां खतरा-ही-खतरा है वडी।" सेठ दीवानचन्द अपने चिर-परिचित अंदाज में बोला- "आपको तो मालूम ही होगा नी-हमने इस पूरी योजना को कामयाब बनाने के लिये इण्डियन म्यूजियम के चीफ सिक्योरिटी ऑफीसर जगदीश पालीवाल की इनसाइड हेल्प हासिल की है। वडी जगदीश पालीवाल एक देशभक्त आदमी है-ईमानदार आदमी है-उसने इस पूरी डकैती में हमारी मदद भी इसलिये की, क्योंकि उसका वेटा गुड्डू हुमारे कब्जे में था। लेकिन हमने जैसे ही उसका बेटा उसे लौटाना है सुपर बॉस-उसने उसी क्षण हमारी सारी करतूत का पुलिस के सामने भंडाफोड़ कर देना है। बडी उसने मेरी सूरत नहीं देखी-लेकिन बाकी सबकी सूरत देखी हा -वो बाकी सबको पहचानता है। इसलिये इससे पहले कि वो हमारे लिए कोई आफत पैदा करे-कोई मुश्किल पैदा करे-उससे पहले ही हम हिन्दुस्तान छोड़कर भाग जायें।"

"औ० के०।" डॉन मास्त्रोनी धीरे-धीरे गर्दन हिलाने लगा- "ओ० के०-आइ एण्टायरली ऐग्री विद यू। मैं कुछ बंदोबस्त करता हू।"

थैंक्यू-थैंक्यू सुपर बीस!"

डॉन मास्त्रोनी की आखें फिंर दुर्लभ ताज पर जाकर टिक गयीं।

"देट्स वण्डरफुल!" डॉन मास्त्रोनी ने फिर उस दुर्लभ ताज को अपने हाथों में लहराया- "वाकई इस दुर्लभ ताज को चुराकर तुम लोगों ने कमाल कर दिखाया है। एक ऐसा दुर्लभ ताज-जिसे शान्ति और खुशहाली का प्रतीक बताया जाता है-जिसे आज तक कोई नहीं चुरा सका। जिस दुर्लभ ताज के बारे में प्रसिद्ध है कि जिसने भी उसे बुराने का प्रयास किया-वही बर्बाद हो गया-वही मारा गया। और उसी दुर्लभ ताज का चुराने का कमाल तुम लोगों ने कर दिखाया-दैट वाज वेरी ब्रेव ऑफ यू।"

"इसमें हमारा क्या कमाल है सुपर बॉस!" दशरथ बिलीमोरिया मुस्कराकर बोला- "सारा कमाल तो आपका हैं-अपके द्वारा बनायी गयी अद्भुत योजना का है। दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी इतनी परफैक्ट थी कि हम लोग तो लगभग हार ही मान बैठे थे-हमें लगने लगा था कि हम दुर्लभ ताज चुराने में कभी सफल नहीं हो पायेंगे। लेकिन तभी आपने दुर्लभ ताज चुराने की मास्टर पीस योजना भेजकर हमारी सारी परेशानियां दूर कर दीं।"

दशरथ बिलीमोरिया की बात सुनकर डॉन मास्त्रोनी के नेत्र एकाएक बुरी तरह फैल गये।

उसने दशरथ बिलीमारिया को यूं अचम्भे से देखा-मानो उसके सिर पर सींग उग आये हों।

"म...मैंने तुम लोगों को योजना भेजी।" डॉन मास्त्रोनी के मुंह से तेज सिसकारी छूटी- "य...यह कैसे हो सकता है-यह क्या कह रहे हौं तुम त-"

"वडी बिलीमोरिया वही तो कह रहा है-जो सच है।" सेठ दीवानचन्द बोला- "अगर आपने हमें वो धांसू योजना- ना भेजी होती सुपर बीस-तो आज हम इस दुर्लभ ताज को चुराने में ही कैसे कामयाब होते?"

"ल...लेकिन मैंने तो तुम लोगों को कोई योजना नहीं भेजी।"

डॉन मास्त्रेनी नें एकाएक उनक बीच जबरदस्त विस्फोट कर दिया था- " और मैं कोई योजना बनाकर भेजता भी कैसे -मुझे तो ये भी जानकारी नहीं थी कि इस दुर्लभ ताज की इण्डियन म्यूजियम में क्या सिक्योरिटी की गयी है।"

सब दंग रह गये।

बुरी तरह दंग।

सबको ऐसा लगा-मामो उनके दिमाग में 'एटम-बम' फट रहे हों।

फट रहा हो।

सचमुच वो एक हंगामाखेज सस्पैंस था-जिसका राज उन लोगों के बीच अब जाकर खुला।

कान्तिपाण्डे ने रूमाल निकालकर फौरन अपनेचेहरे पर छलछला आगे ढेर सारे पसीने साफ किये-फिर खौफ से कंपकंपाये स्वर में बोला न ल...लेकिन अगर वह योजना हमें आपने नहीं भेजी सुपर बोंस-तो फिर किसने भेजी?"

"मैं क्या बता सकता हूं कि वह योजना तुम्हें किसने भेजी?"

डॉन मास्त्रोनो के चेहरे पर भी जबरदस्त सस्पैंस के चिन्ह थे। सबके दिल धाड़- धाड़ करके पसलियों को कूटने लगे।

ब...बीस!" दशरथ बिलीमोरिया एकाएक दीवानचन्द से सम्बोधित होकर कंपकंपाये स्वर में बोला-. "म...मैं एक बात, बोलूं बॉस?"

इस समय उसका पूरा शरीर जूड़ी के मरींज की तरह थर-थर कांप रहा था।

"बोल।"

"ह...हम पर कोई आफत आने वाली है बॉस!" दशरथ बिलीमोरिया एक और धमाका करता हुआ बोला- "क...कोई अनर्थ होने वाला है-म मुझे लगता है कि अब हमारा सर्वनाश होकर रहेगा।

"वडी यह क्या बकता है तू।" दीवानचन्द भड़क उठा- "तू पागल हो गया है।"

"न...नहीं-मैं पागल नहीं हुआ।" दशरथ बिलोमोरिया के जिस्म का एक-एक रोआ खड़ा था- "म...मैं आपसे पहले ही बोलता था बॉस-इस दुर्लभ ताज को मत चुराओ-मत चुराओ। इसने जिस प्रकार आज तक दूसरे अपराधियों को बर्बाद किया हैं-उसी तरह यह हमें भी बर्बाद कर डालेगा। और देखो-इस दुर्लभ ताज के आते ही हमारे ऊपर संकट, की शरुआत हो चुकी है।"

"वडी बंदकर-बंदकर अपनी यह बकवास।" दीवानचन्द दहाड़ उठा- "तू पागल हो गया है-और तू अपने साथ-साथ हम सबको भी पागल करके छोड़ेगा।"

सेठ दीवानचन्द के वह शब्द अभी पूरे भी न हुए थे। कि तभी एकाएक कांफ्रेंस हॉल में किसी के जोर-जोर से खिलखिलाकर हंसने की आवाज गूंज उठी।

वह हँसी ऐसी थी-जैसे कब्र में से निकलकर कोई शैतान हंसा हो।

"विलीमोरिया ठीक ही कहता है सेठ दीवानचन्द!" फिर एक भयानक आवाज पूरे कॉफ्रेस हर में गूंजी- "सचमुच तुम सबकी बर्बादी का समय शुरू हो चुका है।"

एक साथ!'

बिल्कुल एक साथ सबकी गर्दनें उस. भयानक आवाज की दिशा में घूमी।

और!

अगले पल एक और एटम-बम फट गया।

बल्कि एटम-बम से भी खतरनाक कोई बम!

उन सबके सामने बल्ले खड़ा था।

काला भुजंग बल्ले!

वो बल्ले!

जिसके हाथ में इस समंय रिवॉल्वर थी और होठों पर बेहद कातिलाना मुस्कान मटरगश्ती कर रही थी।

"व...बडी तुम!" बल्ले को वहां देखकर सेठ दीवानचन्द के नेत्र अचम्भे से फैल गये- "तुम अंदर किधर से आये?"

"उसी गुप्त रास्ते से आया।" बल्ले एक ही रिवॉल्वर से उन सबको कवर करता हुआ बोला-जिस रास्ते का इस्तेमाल सेठ दीवानचन्द या तो कभी-कभार सिर्फ तुम करते हो या फिर तुम्हारे अलावा मेरे चाचा चिना पहलवान भी कभी-कभी उस गुप्त रास्ते का इस्तेमाल किया करते थे। जबकि तुम्हारे यह दोनों प्यादे दशरथ बिलीमोरिया और कान्ति पाण्डे उस रास्ते के बारे में कुछ नहीं जानते।"

बिलीमोरिया और पाण्डे-उन दोनों के नेत्र अचम्भे से फैल गये।

वाकई इस रहस्य से तो वह भी वाकिफ नहीं थे कि वहां कोई और गुप्त रास्ता भी है।

खुद सेठ दीवानचन्द भी सन्त-सा बैठा था-उसे अपने हाथ-पैर बर्फ होते महसूस दिये।

"वडी इसका मतलब दुर्लभ ताज चुराने की जो मास्टर पीस योजना हमें मिली-वह हरकत भी तुम्हारी थी?"

"नहीं।" काले भुजंग बल्ले ने बड़ी ईमानदारी के साथ इंकार में गर्दन हिलाई- "वह काली हरकत नहीं थी। दरअसल जबसे मैंने छुपकर तुम लोगों की बातचीत सुनी है-तबसे खुद मेरे दिमाग में भी रह-रहकर यही एक सवाल कौंध रहा है कि तुम लोगों के पास वह योजना भेजी तो किसने भेजी।"

सब आवाक् रह गये।

यूं हतप्रभ और भौंचक्के-मानों किसी दुर्धटना के श्राप से पत्थर की शिला में बदल गये हों।

"व...वडी यह योजना वाकई तुमने नहीं भेजी?"

"नहीं।"

सबकी हैरानी बढ़ती जा रही थी।

"बहरहाल अब तुम लोगों को यह सोच-सोचकर परेशान होने की जरूरत नहीं है कि तुम्हें वह योजना भेजी तो किसने भेजी।"

"क्यों?" डॉन मास्त्रोनी बोला- "परेशान होने की जरूरत क्यों नहीं है।"

"क्योंकि जो दुर्लभ ताज तुम लोगों की बर्बादी का कारण बन सकता है-उस ताज को मैं अपने साथ लिये जा रहा हूं।"

उसी क्षण मानो गजब हो गया।

एकाएक कुलभूषण ने वो किया-जिसकी कोई उस जैसी आदमी से कल्पना भी नहीं कर सकता था।

बल्ले की रिवॉल्वर गोली उगल पाती-उससे पहले ही कुलभूषण का पौने छ: फुट लम्बा जिस्म रबड़ के किसी खिलौने को भांति हवा में उछला।

उसने कलाबाजी खायी और फिर धड़ाधड़ उसकी दोनों लातें बड़ी तूफानी गति से बल्ले के सीने पर पड़ी।

चीख उठा बल्ले!

उसके हाथ से रिवॉल्वर छूटकर दूर जा गिरी।

धायं!

तभी किसी ने गोली चलायी-फौरन बल्ले की खोपड़ी तरबूज की तरह फट गयी।

बल्ले हलकाये कुत्ते की तरह डकराता हुआ नीचे गिरा और नीचे गिरते ही उसके प्राण-

पखेरू उड़ गये।

उसका चेहरा मरने से पहले बेहद वीभत्स हो गया था।

कुलभूषण भौंचक्की अवस्थामें उस तरफ पलटा-जिधर से गोली चलायी गयी थी।

गोली डॉन मास्त्रोनी ने चलायी थी-और इस समय वो रिवॉल्विंग चेयर की पुश्तेगाह से पीठ टिकाये बैठा बड़े इत्मीनान से अपने रिवॉल्वर की नाल में फूंक मार रहा था।

अभी वह सब बल्ले की अकस्मात मौत से उभर भी न पाये थे कि तभी घटनाक्रम में एक और नया मोड़ आया।

उन सभी ने अड्डे के ऊपर तेज शोर-शराबे की आवाज सुनी।

उन्हें ऐसा लगा-जैसे ज्वैलरी शॉप में ढेर सारे लोग आ जा रहे

"बडी!" सबसे पहले सेठ दीवानचन्द के कान खड़े हुए- "वडी यह ऊपर क्या हो रहा है-यह ऊपर कैसी हलचल-सी मची है।"

डॉन मास्त्रोनी के चेहरे पर भी पसीने की बूंदें चुहचुहा आयीं। "जरूर कुछ गड़बड़ है।' ' डॉन मास्त्रोनी बोला- "जरूर कुछ घपला है।"

"मैं ऊपर जाकर देखता हूं कि क्या चक्कर है।" दशरथ बिलीमोरिया झटके से कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

फिर वो तेजी-उन सीढ़ियों की तरफ दौड़ा-जो ऊपर ज्वैलरी शॉप की तरफ जाती थीं।

उस ज्वैलरी शॉप में इस समय सिर्फ एक सेन्समैन बैठा आ- जो संगठन का ही मेम्बर था।

दशरथ बिलीमोरिया सीढ़ियां चढ़कर जितनी तेजी से ऊपर गया-उतनी ही तेजी से वो वापस लौटा।

लेकिन उन चंद सैकिण्ड में ही उसकी दहशत से बुरी हालत हो थी-वह यूं पत्ते की भांति थर-थर कांप रहा था, मानो उसने साक्षात के दर्शन कर लिये हों।

"व...वडी क्या हुआ?" उसे यूं घबराया देखकर दीवानचन्द के दिल में भी हौल उठी-"वडी तू इस तरह थर-थर क्यों कांप रहा है?"

ब...बॉस-बॉस!" दशरथ बिलीमोरिया शुष्क स्वर में बोला- "पुलिस ने हमारे अड्डे को चारों तरफ से घेर लिया हैं-लगता है कि किसी ने पुलिस को हमारे संगठन के बारे में इनफॉर्मेशन दे दी है।"

"क...क्या सबउछल पड़े- "प...पुलिस-पुलिस आगयी।" सब 'पीले' पड़ गये।

"साई!" दीवानचन्द झटके से कुर्सी छोड़कर खड़ा होता हुआ बोला-"हमें, फौरन अड्डे से भाग निकलना चाहिये-जल्दी करो-जल्दी।"

"ल...लेकिन किधर से भागें बॉस!" दशरथ बिलीमोरिया के जिस्म का एक-एक रोओ खड़ा था- "ऊपर ज्वैलरी शॉप में पुलिस है-जरूर पीछे वाले मकान में भी अब तक पुलिस पहुंच गयी होगी।"

"वडी तुम सब मेरे पीछे-पीछे आओ।" सेठ दीवानचन्द बौखलाया-सा बोला- "हम उस गुप्त रास्ते से भागते हैं-जिसका इस्तेमाल आज तक सिर्फ मैं करता रहा हूं या फिर कभी-कभी चिना पहलवान भी किया करता था। वडी रास्ता पीछे वाली गली में ही बनी एक कृत खूबसूरत कोठी में खुलता है

सब बड़ी सस्पैंसफुल स्थिति में दीवानचन्द के पीछे-पीछे लपके।

वह कॉफ्रेंस हॉल से निकलकर एक दूसरे कमरे में पहुंचे।

"वहां भी दीवार पर एक अर्द्धनरन लड़की की काफी बड़ी पेंटिंग लगी हुई थी-जो बड़ी मोटी-मोटी कीलों से दीवार पर फिक्स नजर आ रही थी।

लेकिन सेठ दीवानचन्द ने उस पेंटिंग की दीवार से कैलण्डर की तरह उतारकर एक तरफ रख दिया।

तब मालूम हुआ कि पेंटिंग में जो मोटी-मोटी कीलें लगीं हुई नजर आ रही थीं-वह दिखावटी थीं।

पेंटिंग के उतरते ही उसके पीछे स्टेयरिंग कील जैसा एक चक्का नजर आने लगा।

दीवानचन्द ने उस चक्के को घुमाया-तो उसके पीछे का हिस्सा स्लाइडिंग डोर की तरह एक तरफ सरक गया।

फौरन वहां काफी लम्बी सुरंग नजर आने लगी।

तुरन्त फिर एक ऐसी घटना घटी-जो अब तक घटी तमाम घटनाओं में सबसे ज्यादाहंगामाखेज थी और उस घटना के बाद सबका खेल खत्म हो गया।

स्लाइडिंग डोर के हटने के बाद जैसे-जैसे ही सुरंग का दहाना नजर आया-तो कुलभूषण तुरन्त दौड़कर सबसे पहले उस सुरंग में घुस गया।

सुरंग में घुसी ही वो फिरकनी की तरह उन सबकी तरफ घूमा-इस बीच उसके हाथ में .38 कैलीबर की एक पुलिस स्पेशल रिवॉल्वर भी आ गयी थी।

"डोंट मूव!" कुलभूषण गला फाड़कर चिल्लाया- "अगर कोई एक कदम भी आगे बढ़ा-तो मैं उसे शूट कर दूंगा।"

"व...वडी यह क्या मजाक है?" दीवानचन्द भी चिल्लाया- "यह" क्या बकवास है कुलभूषण!"

"कुलभूषण नहीं।" कुलभूषण ने सख्ती से दांत किटकिटाये- "बल्कि मुझे कुलभूषण प्रताप सिन्हा बोलो दीवानचन्द-मैं दिल्ली पुलिस की स्पेशल क्राइम ब्रांच का इंस्पेक्टर हूं!"

स...स्पेशल क्राइम ब्रांच का इंस्पेक्टर।"

सबके दिल-दिमाग पर भीषण बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी। सब भौंचक्के रह गये।

"साईं!" दीवानचब्दै बोला-साईं-तू जरूर मजाक कर रहा है।"

मैं तुम सब के साथ मजाक ही रह रहा था। कुलभूषण गरजता हुआ बोला-लेकिन आज नहीं बल्कि आज से पहले तक मैंने मजाक किया था। तीन जुलाई दिन बुद्धवार की रात से आज तक जितनी भी घटनायें घटीं-वह सब मेरे दिमाग की उपज हैं-मेरे दिमाग की उपज! और यह पूरा तिलिस्म इसलिये बिछाया गुया-ताकि तुम सब लोगों को रंगे हाथों गिरफ्तार किया जा सके।"

"इ...इसका मतलब यह सब तुम्हारी वजह से हुआ है?" डॉन मास्त्रोनी की आखें भी फटीं।

"हां-यह सब मेरी वजह से हुआ है।"

"यू चीट-कुलिश।" डॉन मास्त्रोनी चिल्ला उठा- "यू कान्ट गैट अवे लाइक दिस-डोन्ट डिजर्ट फॉरगिवनेस।"

"व्हइ आर यू लुजिंग टेम्पर?" कुलभूषण भी अंग्रेजी में ही चिल्लाया- "तुम आपे से बाहर क्यों हो रहे हो मूर्ख आदमी-तुम्हें शायद, मालूम नहीं है कि तुम्हारा सारा खेल खत्म हो चुका है और अब तुम हिन्दुस्तानी पुलिस के मेहमान हो।"

यही वो क्षण था-जब इंस्पेक्टर चक्रधर अपनी पूरी पुलिस पलटन के साथ ज्वैलरी शॉप वाला दरवाजा तोड़कर वहां आ घुसा। इतना ही नहीं-ढेर सारे पुलिसकर्मी पिछले मकान वाले रास्ते से भी वहां आ गये थे।

देखते-ही-देखते अड्डे में चारों तरफ पुलिस फैल गयी।

इतनी पुलिस को देखकर डॉन मास्त्रोनी और उसके साथियों के रहे-सहे कस-बल भी ढीले पड़ गये।

इंस्पेक्टर चक्रधर ने आते ही कुलभूषण को जोरदार सेल्यूट मारा-फिर आदर से गर्दन झुकाकर बोला- "मुझे आपकी पोस्ट के बारे में मालूम हो चुका है सर!"

कुलभूषण सिर्फ आहिस्ता से मुस्करा दिया।

जबकि अन्य पुलिसकर्मियों ने शीतल को छोड़कर बाकी सबके हाथों में हथकड़ियां पहना दी थी।

शीतल!

जो उस जबरदस्त रहस्योद्घाटन से खुद बहुत हैरान थी।

अगला दिन-एक बार फिर समाचार-पत्रों की धुंआधार बिक्री का दिन था।

न सिर्फ दिल्ली शहर के बल्कि पूरे हिन्दुस्तान के अखबारों में उस संगठन के पकड़े जाने की बड़े व्यापक रूप से चर्चा हुई।

सबने कवर पेज पर उस स्टोरी को छापा।

आम नागरिकों में भी यह जानने की तेज जिज्ञासा पायी गयी कि कुलभूषण ने उस संगठन हुक विरुद्ध जो औल बिछाया-वह जाल किस तरह का था। आम नागरिकों की जिज्ञासा को देखते हुए कुलभूषण ने यह घोषणा की, कि वह आज रात नौ बजे उस पूरे केस का पर्दाफाश करेगा। इतना ही नहीं-वह उस पूरे केस पर पर्दाफाश भी सेठ. दीवानचन के अड्डे में ही बैठकर करेगा।

कॉफ्रेंस हॉल के अन्दर ही।

यही वजह थी कि रात के नौ बजते-बजते छोटे-बड़े सभी किस्म के पत्रकारों और प्रेस फोटेग्रिाफरों का भी एक बड़ा हुज्जूम सेठ दीवानचन्द के अड्डे में जमा हो चुका था।

कल तक जिस अड्डे में चंद लोग नजर आते थे-आज वहां भीड़-ही-भीड़ थी।

पुलिस का वहां इतना जबरदस्त बंदोबस्त किया गया था कि कॉफ्रेंस हॉल में पैर रखने, तक को जगह न बीच थी।

दिल्ली दूरदर्शन, स्टार टी० वी० और जी टी० वी० जैसे टेलीविजनों की कई टीमें वहां आयी हुई थीं।

दिल्ली दूरदर्शन ने तो आम नागरिकों की, जिज्ञासा को मद्देनजर रखकर उस बेहद सनसनीखेज मीटिंग का सीधा प्रसारण राष्ट्रीय चैनल पर करने का फैसला किया था।

कॉफ्रेंस हॉल में काफी ऊपर लकड़ी का मचान बनाया गया था-जिस पर टेलीविजनों की टीमें अपने शानदार ड्यूमेटिक कैमरों के साथ मौजूद थीं।

विशाल आयताकार मेज के दोनों तरफ पड़ी कुर्सियों पर इस समय डॉन मास्त्रोनी, सेठ दीवानचन्द, कान्ति पाण्डे और दशरथ बिलीमोरिया बैठे थे। उनके अलावा इंस्पेक्टर चक्रधर और जगदीश पालीवाल भी उन्हीं कुर्सियों पर विराजमान थे।

तभी उस विशाल हुज्जूम को चीरकर टवीड का काला सूट और लाल फूलदार टाई लगाये कुलभूषण ने कॉफ्रेंस हॉल में इस तरह कदम रखा, जैसे रंगमंच पर सबका चहेता कोई अभिनेता प्रकट हुआ हो।

आज उसके व्यक्तित्व में विचित्र-सी आभा-दैदीप्यमान हो रही थी। कुलभूषण को देखते ही सब लोग उसके सम्मान में खड़े हो गये।

कुलभूषण आज उस रिवॉल्विग चेयर पर जाकर बैठा-जिस पर कभी सेठ दीवानचन्द बैठता था।

रिवॉल्विंग चेयर पर बैठते ही उसने एक मधुर मुस्कान सबकी तरफ उछाली।

फिर भूमिका बांधते हुए अपने सामने रखे माइक पर बोला- "मैं जानता हूं कि आप' सब लोग यह सलिये? उपस्थित हुए हैं-ताकि इस केस के बारे में पूरी जानकारी हासिल कर सकें। इसमें कोई शक नहीं कि यह एक काफी दिलचस्प केस था-जिसमें दिमाग का भरपूर इस्तेमाल किया गया। दरअसल यह सारा ड्रामा तीन जुलाई दिन बुद्धवार की रात से ही शुरू नहीं हुआ बल्कि हमारा क्राइम ब्रांच पिछले कई महीने से इस-ट्रामें की तैयारी कर रहा था। संग्रहालयों से दुर्लभ वस्तुओं की जो चोरी हो रही थी-उसने पूरी दिल्ली पुलिस में हड़कम्प मचा दिया था। अपराधियों ने दो साल के छोटे से अंतराल में ही बाइस करोड़ रुपये मूल्य की कई दुलभ वस्तुएं चोरी कर लीं-जो कि काफी सनसनीखेज बात है। लेकिन दुर्भाग्य ये था कि दिल्ली पुलिस उन चोरों को पकड़ना तो बहुत दूर उनके बारे में कोई सूत्र तक पता नहीं लगा पा रही थी। तब यह केस हमारी क्राइम ब्रांच ने अपने हाथ में लिया और मुझे ऑटो रिक्शा चालक बनकर अपराधियों का पता लगाने का आदेश दिया। इस तरह, बहरूपिया रूप धारण करने के कारण पुलिस को कई बार बड़े फायदे होते हैं-जिनमें सबसे बड़ा फायदा तो यही है कि इस तरह का रूप धारण करने से पुलिस का आदमी आम नागरिकों, से. कोई भी सवाल पूछ सकता है और उसे अपने उस सवाल का जवाब भी बड़ा सही मिलेगा-जबकि किसी ऑफीसर के सवालों के जवाब देने में आम आदमी थोड़ा कतराते हैं। ऐनी वे-अपनी विभाग से आदेश मिलते ही मैं ऑटो रिक्शा चालक बनकर दुर्लभ वस्तु चुराने वाले संगठन की टोह में लग गया।"

बोलते-बोलते रुका कुलभूषण!

पूरे कॉफ्रेंस हॉल में सन्नाटा था।

गहन सन्नाटा!

अपना गला खंखारने के बाद कुलभूषण ने फिर बोलना शूरू किया-"मैं सिर्फ नाम के लिये ही ऑटो रिक्शा चालक नहीं बना था-बल्कि मैं अपने कैरेक्टर को ज्यादा सजीव रूप देने के लिये दिल्ली शहर में सवारियां भी ढोता था। उसी दौरान मेरी शीतल से मुलाकात -जो अपने ऑफिस आते-जाते हुए कई बार मेरी ऑटो रिक्शा में। इसे इत्तफाक ही कहा जायेगा कि जल्द ही मेरी शीतल से अच्छी जान-पहचान हो गयी। बाद में जब मुझे यह मालूम हुआ कि शीतल जरायमपेशा लोगों की बस्ती किशनपुरा में रहती है-तो मैं उससे और ज्यादा सम्पर्क बढ़ाने की कोशिश करने लगा-क्योंकि मैं जानता था कि शीतल कभी भी मेरे लिये सूत्रधार का काम कर सकती है।"

"एक्सक्यूज मी सर!" इंसपेक्टर चक्रधर बोला- "क्या मिस शीतल को यह बात पहले से मालूम नहीं थी कि आप क्राइम ब्रांच के ऑफीसर हैं?"

"नहीं-बिल्कुल भी नहीं।" कुलभूषण की गर्दन इंकार में हिली-

"दरअसल जो ड्रामा मैं आप सब लोगों के साथ खेल रहा था-वही ड्रामा मैं शीतल के साथ भी खेल रहा था। यह बात अलग है कि कई बार मेरे दिल ने चाहा-मैं कम-से-कम शीतल को अपनी सारी हकीकत बता दूं। लेकिन नहीं-मैं हर बार जज्बातों के उस बवण्डर को अपने सीने में दफन करके रह गया। क्योंकि अगर मैं ऐसा न करता-तो यह अपने डिपार्टमेंट के साथ, अपने फर्ज के साथ गद्दारी होती।"

सब मन्त्रमुग्ध अंदाज में कुलभूषण की एक-एक बात सुन रहे थे।

"खैर!" कुलभूषण आगे बोला- "मै शीतल से सम्पर्क बढ़ाता चला गया। उन्हीं दिनों जब मुझे पहली बार इस बात का अहसास हुआ कि शीतल मुझसे प्यार करने लगी है-तो मैं सन्न रह गया। मुझे सूझा नहीं कि ऐसी परिस्थिति में मुझे क्या करना चाहिये। जिस दिन मुझे शीतल के प्यार का अहसास हुआ-उसी दिन क्राइम ब्रांच के एक दूसरे ऑफीसर को यह भेद मालूम पड़ गया कि दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाले संगठन का चिना पहलवान भी एक मैम्बर है। इतना ही नहीं-उन्हें यह भी मालूम हो गया कि चिना पहलवान किशनपुरा में रहता है। फौरन मुझे हैडक्वार्टर आया गया-शीतल और मेरे सम्बन्धों के बारे में भी उन्हें आश्चर्यनजक ढग से जानकारी मिल चुकी थी। हैडक्वार्टर से मुझे नया आदेश मिला कि मैं चिना पहलवान पर नजर रखने के लिये किशनपुरा में एक किराये का मकान लेकर रहना शुरू कर दूं। विभाग के चीफ ने मुझे यह भी सलाह दी कि इस पूरे सिलसिले में शीतल मेरी काफी मदद कर सकती है।"

पूरे कॉफ्रेंस हॉल में सन्नाटा था।

सबकी निगाहें एक ही व्यक्ति पर केन्द्रित थीं।

कुलभूषशा पर!

"अब मैं एक अजीब उलझन में फंस गया था।" कुलभूषण एक के बाद एक रहस्य की गुत्थियां खोलता हुआ बोला- "एक तरफ मेरा कर्तव्य था-जो मुझे लगातार शीतल के साथ ड्रामा करने के लिये प्रेरित कर रहा था-क्योंकिए इसी में पूरे केस की भलाई थी। जबकि मेरी आत्मा मुझे धिक्कार रही थी-एक मासूम-सी लड़की के साथ धोखा-नहीं कभी नहीं। लेकिन दोस्तों!" बोलते-बोलते कुलभूषण की आवाज भारी हो गयी- "आखिर में जीस फर्ज की हुई-कर्तव्य की हुई। कानून की वेदी पर अपनी आत्मा की बलि चढ़ा दी। मैंने न सिर्फ शीतल को धोखे में रखा बल्कि उसके साथ प्रेम का नाटक भी किया। उसी की मदद से मैंने किशनपुरा में एक किराये का मकान हासिल किया और वहां रहने लगा। इसी तरह-एक महीना गुजर गया-पूरा एक महीना। फिर आयी तीन जुलाई की रात-हादसे की वो रात जिस रात से इस पूरे घटनाक्रम की आधरशिला रखी गयी।"

"इसी सारी घटना की शुरुआत कैसे हुई?" चक्रधर ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"वहीं बता रहा हूं।" कुलभूषण बोला- "दरअसल इस पूरे घटनाक्रम की शुरुआत यूं तो तीन जुलाई की दोपहर से ही हो गयी थी। हुआ यूं कि तीन जुलाई की दोपहर कें समय हमारे विभाग को एक मुखबिर के द्वारा बड़ी महत्वपूर्ण सूचना मिली कि जो छः नटराज मूर्तियों इण्डियन म्यूजियम से चुराई गयी थीं-उन्हें चिना पहलवान किसी को सौंपने चार बजे होटल मेरीडियन जायेगा। फौरन हमारे विभाग के एक-से-एक धुरंधर जासूस चिना पहलवान- के पीछे लग गये-लेकिन इसे बदकिस्मती कहो कि न जाने कैसे चिना पहलवान को यह भनक मिल गयी उसका पीछा किया जा रहा है-उसने पुलिस के शिकंजे से भाग निकलने की बेइन्तहा कौशिश की और इसी भागा दौड़ी के चक्कर में चिना पहलवान पुलिस की गोली का शिकार हो गया तथा घटनास्थल पर ही मारा गया। चिना पहलवान के रूप में दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाले संगठन तक पहुंचने की जो आशा की किरण दिल्ली पुलिस को नजर आ रही थी-वह भी उसकी मौत के साथ लुप्त हो गयी। चिना पहलवान की लाश के पास से हमें दो महत्वपूर्ण चीजें मिलीं।"

"वो महत्वपूर्ण चीजें क्या थी?"

"पहली चीज-सेठ दीवानचन्द की ज्वैलरी शॉप का एक विजिटिंग कार्ड था। दूसरी चीज-सोने की वो छः नटराज मूर्तियां थीं, जिन्हें इण्डियन म्यूजियम लिए से चुरया गया था।"

"अ...आपका सोने की वो असली नटराज मूर्तियां मिल गयी थीं?" इंस्पेक्टर चक्रपर ने बुरी तरह चौंककर पूछा था।"

"हां-वो नटराज मूर्तियां हमें मिल गयी थीं।"

कइ और दिमागों में भी धमाके से हुए।

"फ...फिर वो नकली मूतियां कहां से आयी?" चक्रधर ने पूछा।

"वह भी बताता हूं। दरअसल चिना पहलवान की हत्या बुद्धवार के दिन दोपहर तीन बजे हो गयी थी-लेकिन क्राइम ब्रांच ने इस बात को पूरी तरह गुप्ता रखा कि चिना पहलवान मारा गया है। उसकी हत्या के बाद फौरन ही आनन-फानन क्राइम ब्रांच के हैडक्वार्टर में एक मीटिंग बुलायो गयी। उस मीटिंग में इस सवाल पर शिदद्त से विचार किया गया कि अब किस तरह दुर्लभ त्वस्तु चोरी करने वाले सगठन तुक पहुंचा जाये। काफी सोच-विचार के बाद एक जबरदस्त योजना तैयार हुई। योजना ये थी कि साधारण नागरिक की जिंदगी बसर करते क्राइम ब्राच के ऑफीसर को लोगों के सामने यह शो करना था-जैसे चिना पहलवान की हत्या उसी ने की है इतना ही नहीं-उसे अब यह भी शो करना था मानो सोने की छः नटराज मूर्तियां उसके पास है। ज्यरी के मैम्बरों की राय थी कि जब दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाले संगलन को चिना पहलवान की हत्या के बारे में खबर मिलेगी-तो वह बौखला उठेंगे-इतना ही नहीं, वह लोग चिना पहलवान के हत्यारे को भी तलाश करने के लिये जमीन आसमान एक कर देंगे। सिर्फ इसलिये भी, क्योंकि उसके पास सोने की छः बहुमूल्य नटराज मूर्तिया है। हत्यारे को तलाशने की इस कोशिश में संगठन के आदमी स्वाभाविक रूप से हमारे जासूस तक पहुंचते और इस तरह इस संगठन का पर्दाफाश हो जाता।"

"वैरी गुड! एक रिपोर्टर बड़ा प्रभावित होकर बोला-"वाकई ज्युरी के मैम्बरो ने संगठन तक पहुंचने के लिये लाजवाब योजना बनायी थी।"

वहां मौजूद तमाम लोग उस योजना से बेहद प्रभावित हुए उसके बाद क्या हुआ?" पत्रकारों की भीड़ में सें किसी महिला पत्रकार ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

"उसके बाद उस लाजवाब योजना को कार्यरूप देने का काम मुझ सौंपा गया।" कुलभूषण ने धाराप्रवाह ढंग से बोलने हुए कहा- "लेकिन मैंने ज्युरी के सम्मनित सदस्यों के सामने एक शर्त रखी और कहा-अगर में इस केस पर काम करूंगा, तो सिर्फ और सिर्फ एक साधारण ऑटो रिक्शा चालक बनकर। मेरे सामने परिस्थितियों चाहे कितनी भी मुश्किल क्यों न आ जाये-लेकिन मुझे इस मिशन के दौरान किसी भी हालत में अपने पद का इस्तेमाल नहीं करना है और न मेरा विभाग ही मुझे कोई सहायता देने की कोशिश करेगा। मेर्रा शर्त ज्युरी के मैम्बरों ने कबूल कर ली-फिर योजना के तहत बेहद आनन-फानन में पीतल की पांच नकली नटराज मूर्तियां बनवायी गयीं।"

"पांच ही क्यों!' आकाशवाणी के एक संवाददाता ने फौरन कुलभूषण की बात काटी- "छ: क्यों नहीं?"

"यह रहस्य भी आप लोगों को आगे चलकर मालूम हो जायेगा। बहरहाल उसके बाद पूरा ड्रमा शुरू हो गया। मुझे अब सबसे पहले चिना पहलवान की हत्या का दोबारा से ड्रमा स्टेज करना था। इसलिये मैंने तीन जुलाई की रात रूस्तम सेठ के ठेके में जमकर शराब पी। योजना बनाते समय हमने उन दिनों दिल्ली शहर में चल रही ऑटो रिक्शा ड्राइवरी की हड़ताल का भी भरपूर फायदा उठाया। इत्तफाक से रूस्तम सेठ मेरे ऊपर पिछले कई दिन की उधारी बकाया थी-मुझे मालूम था कि मैं जब उसके ठेके पर बैठकर ज्यादा शराब पीऊंगा-तो एक ऐसी स्टेज जरूर आयेगी, जब रूस्तम सेठ झुंझलाकर या तो शराब पीने से रोकेगा या फिर मुझसे उधारी के रुपये मांगेगा।

और मै यही मैं चाहता था-मै ऐसा माहौल पैदा करना चाहता था जिससे झड़प हो और मुझे ऑटो ड्राइवरों की हड़ताल होने के बावजूद अपना टो चलाने का बहाना मिल सके। लेकिन रूस्तम सेठ की और मेरी झड़प कोई तूल पकड़ पाती-उससे पहले ही शीतल ने वहां प्रकट होकर मेरी सारी योजना पर पानी फेर दिया। परन्तु फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी-मैं जो ड्रामा रूस्तम सेठ के साथ खेलना चाहता था-फिर वही ड्रामा मैंने शीतल के साथ खेला उघारी यह कहता हुआ ऑटो रिक्शा लेकर गुस्से में निकल पड़ा कि अब तुम्हारी उधारी के रुपये कमाकर ही लौटूंगा। किशनपुरा से मैं योजना के अनुसार रीगल सिनेमा पर पहुंचा। एक भात और- ऑटो रिक्शा को नम्बर प्लेट पर मैंने भी पहले ही पोत दी थी।"

"सेठ दीवानचन्द-जो कुलभूषण की एक-एक बात बड़े गौर से सुन रहा था-वह पूछे बिना न रह सका- " डी जब चिना पहलवान की मौत बुद्धवार को तीन बजे ही हो गयी थी-तो वह व्यक्ति कौन था, जो रीगल सिनेमा के सामने तुम्हारी ऑटो रिक्शा में आकर बैठा?"

"वह हमारे विभाग का ही एक जासूस था और उस वक्त चिना पहलवान का रोल अदा कर रहा था।"

"ओह!"

"लेकिन साई तुम्हें चिना पहलवान की हत्या का नाटक दोबारा स्टेज करने की क्या जरूरत थी।"

"दरअसल वह नाटक ही हमारी योजना का मुख्य आधार था मिस्टर दीवानचन्द।" कुलभूषण बोला- "हत्या का वह नाटक दोबारा स्टेज करते समय मुझे अपने खिलाफ कुछ सबूत इस तरह छोड़ने थे-जैसे वह मेरे न चाहने पर भी अकस्मात् छूट गये हों। अगर मैं वह सारा ड्रामा स्टेज न करता तो तुम्हीं बताओ कि इंस्पेक्टर चक्रधर को या फिर तुम्हें इस बात का भ्रम कैसे होता कि चिना पहलवान की हत्या मैंने की थी। पुलिस की और तुम्हारी दृष्टि में अपने आपको चिना पहलवान का हत्यारा साबित करने के लिये मुझे कोई-न-कोई ड्रामा तो स्टेज करना ही था-अपने खिलाफ ऐसे सबूत तो छोड़ने ही थे, जिनको आधार मानकर पुलिस मुझे चिना पहलवान का हत्यारा समझती। फिर वह ड्रामा रचना इसलिये भी जरूरी था-क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि शीतल को मेरे ऊपर कैसा भी कोई शक हो। जबकि सच्चाई ये है कि आई .टी.ओ. के ओवर ब्रिज से आगे जब फ्लाइंग स्क्वायड दस्ते ने मेरी ऑटो रिक्शा रोकी तो वह भी मेरी योजना का ही एक अंग था।"

"कैसे-वडी वो कैसे नी?"

"दरअसल फ्लाइंग स्क्वायड की नीली जिप्सी को देखकर मैंने जानबूझकर ऑटो रिक्शा की रफ्तार तेज कर दी थी-क्योंकि मैं जानता था कि स्पीडिंग के अपराध में फ्लाइंग स्क्वायड दस्ता फौरन मेरे पीछे लग जायेगा-ऐसा ही हुआ भी। मैंने फ्लाइंग स्क्वायड दस्ते को जानबूझकर अपने पीछे इसलिये लगाया था-ताकि मैं उन्हें शीतल के प्रेग्नेट होने के बारे में बता सकूं।

इण्डिया गेट पर चिना पहलवान की लाश भी मैंने योजना के तहत ही फेंकी। मैं फ्लाइंग स्क्वायड दस्ते के सब-इंस्पेक्टर को अपनी ऑटो रिक्शाका नम्बर नोट करते भी देखा चुका था। मुझे मालूम था कि सुबह जब पुलिस को इण्डिया गेट पर चिना पहलवान की लाश पड़ी मिलेगी तो स्वाभाविक रूप से उनका शक सीधा मेरे ऊपर जायेगा। मेरे ऊपर शक जाना इसलिये भी जरूरी था- क्योंकि हड़ताल होने के बावजूद मेरी ऑटो रिक्शा उस इलाके में देखी गयी थी। हां-इंस्पेक्टर चक्रधर ने मेरे खिलाफ एकदम एक्शन लेने की बजाय-पहले मेटरनिटी वार्डों की जो भर्ती रजिस्ट्री चैक की-उसके लिये मैं वाकई उनके दिमाम की दाद दूंगा। यह बात अलग है कि मिस्टर चक्रधर द्वारा उठाये गये इस कदम से भी आखिरकार मुझे ही फायदा हुआ। चिना पहलवान की लाश इण्डिया गेट पर फेंकने के बाद मेरी योजना का सबसे पहला काम था-किसी भी तरह पुलिस के शिकंजे में फंस जाना। ताकि मैं दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाले संगठन की दृष्टि में-यानी!" कुलभूषण ने सभी अपराधियों की तरफ उंगली उठाई- "आप सब महानुभावों की नजरों में खुलकर आ सकूं।"

"एक सवाल का जवाब और दीजिये सर!" इंस्पेक्टर चक्रधर बोला- "जब आप इण्डिया गेटकी तरफ जा रहे थे-उस समय आपकी ऑटो रिक्शा मै चिना पहलवान की लाश कहां थी? वह तो आपके विभाग का वो जासूस था जो चिना पहलवान की हत्या का ड्रामा रच रहा था। फिर दिल्ली पुलिस को इण्डिया गेट पर बृहस्पतिवार की सुबह जो असली चिना पहलवान की लाश पड़ी मिली-वो वहां कहां से आयी?"

"वैरी सिम्पल-इसके लिये एक बड़ा साधारण-सा तरीका अपनाया गया।" कुलभूषण बोला-"दरअसल बृहस्पतिवार की सुबह इण्डिया गेट पर जो लाश पड़ी मिली-चिना पहलवान की उस असली लाश को हमारे विभाग के आदमी पहले ही इण्डिया गेट की झाड़ियों में छिपा गये थे। मैंने जब चिना पहलवान का रोल अदा करते जासूस को वहां फैंका-तो वह हमारे दृष्टि से ओंझल होते ही वहां से कूच कर गया था। इस तरह बृहस्पतिवार की सुबह पुलिस को जो लाश झाड़ियों से बरामद हुई-वह वास्तव में ही असली चिना पहलवान की लाश थी।"

इंस्पेक्टर चक्रधर की आखों. में बेइन्तहा प्रशंसा के भाव उभर आये।

"सर!" तभी 'नवभारत टाइम्स' अखबार का विशेष संवाददाता बोला- "मेरे दिमाग में बहुत देर से एक सवाल हलचल मचा रहा है-अगर साथ-साथ उस सवाल का भी जवाब मिल जाये, तो का, रहे?"

"क्यों नहीं-जल्द पूछो।"

"सर-हमारे नवभारत टाइम्स अखबार में चिना पहलवान की मौत की बाबत जो खबर प्रकाशित हुई थी-उस खबर को मैंने ही तैयार किया था। जहां तक मुझे याद पड़ता है सर-उस खबर में यह लिखा था कि चिना पहलवान जब रीगल सिनेमा के फस से ऑटो रिक्शा में बैठकर भागा, तो उससे पहले बुलेट पर सवार पुलिसकर्मियों ने पास की गली में दो फायर की आवाज सुनी थी।"

"जी हां-यह खबर बिकुल सही है।"

"फिर वह गोलियां किसने चलायी सर?"

"गुड क्वेश्चन!" कुलभूषण ने जवाब दिया-! "दरअसल चिना पहलवान का रोल अदा करते हमारे जासूस ने ही दो हवाई फायर किये थे। वह भी इसलिये-ताकि बुलेट पर सवार पुलिस कर्मियों को योजना अनुसार अपनी तरफ आकर्षित किया जा सके और बाद में यह साबित करने में आसानी रहे कि चिना पहलवान खी हत्या वास्तव में किसी ऑटो रिक्शा चालक ने ही की थी।"

"वैरी इनट्रेस्टिंग।"एक रिपोर्टर बे-साख्ता कह उठा- "वाकई क्या खूब योजना थी।"

कुलभूषण आहिस्ता से मुस्कराया।

"खैर-मैं अब आगे की योजना के बारे में बताताहूं।" कुलभूषण थोड़ा रुककर पुन: बोला-

"उसके बाद मैं पीतल की मूर्ति बेचने खासतौर पर सेठ दीवानचन्द की दुकान पर इसलिये गया-ताकि यह मालूम हो सके कि सेठ दीवानचन्द और चिना पहलवान के बीच आपस में क्या रिश्ता था। यह बात मैं पहले ही बता चुका हूं कि चिना पहलवान की जेब से हमें सेठ दीवानचन्द की ज्वैलरी शॉप का एक विजिटिंग कार्ड मिला था। हां-इस स्पॉट पर एक करिश्मा जरूर हुआ।"

"करिश्मा।" दीवानचन्द चौंका- "वडी कैसा करिश्मा नी?"

भई-यह क्या कम बड़ा करिश्मा था।" कुलभूषण के होठों पर मुस्कान रेगी-"कि मैं तुम्हारी ज्वैलरी शाप पर मूर्ति बेचने गया और इत्तफाक से तुम ही दुर्लभ वस्तु चुराने वाले संगठन के बॉस निकले। जब तुमने मुझे तलाशने के लिये मेरे पीछे आदमी दौड़ाये थे-मैं तभी समझ गया था कि इस अवैध धंधे में जरूर तुम्हारा कोई-न-कोई रिश्ता है। उसके बाद मेरे द्वारा छोडे गये लीक प्वाइंटों की जांच-पड़ताल करते हुए इंस्पेक्टर चक्रधर का मेरे तक पहुंचना और फिर मेरा किशनपुरा से भाग निकलना-सामान्य घटना थी।"

"मुझे तो अब इस बात का भी शक होने लगा।" जक्रधर बोला-कि किशनपुर से भागते आपकी जो जेब कटी उसके पीछे भी आपकी ही कोई चाल थी।"

"बिल्कुल ठीक कहा तुमने।" कुलभूषण मुस्कराया- "दरअसल बस में चढ़ते समय मैं जानबूझकर एक शराबी से टकरा गया था और मेरी जेब में उस समय जो बीस रुपये थे-उन्हें मैंने खुद ही उसकी जेब में डाल दिये थे।"

"ऐसा क्यों किया आपने?"

"क्योंकि मैं चाहता था कि मैं टिकिट न लेने के अपराध में गिरफ्तार हो जाऊं-पुलिस के शिकंजे में जल्द-से-जल्द फंसू।"

"ओह-लेकिन अगर आपको गिरफ्तार ही होना था।" चक्रधर ने पूछा- "तो आप मेरे आने पर शीतल के घर से भागे ही क्यों-गिरफ्तार तो मैं आपको तभी कर लेता।"

"निःसन्देह तुम मुझे गिरफ्तार कर लेते-लेकिन मैं यह ड्रामा करते हुए गिरफ्तार होना चाहता था-जैस मैं पुलिस से बचने की कोशिश कर रहा होऊं। क्योंकि ऐसी स्थिति में दिल्ली पुलिस का तथा संगठन के लोगों का संदेह मेरे ऊपर और दृढ़ होता।"

"वाकई।" खामोश बैठे जगदीश पालीवाल ने भी कुलभूषण की खुलेदिल से तारीफ की- "आपने एक-एक प्यॉइंट पर काफी बारीकी से काम किया मिस्टर कुलभूषण।"

"वह तो किया।" कुलभूषण के होठों पर मुस्कान रेंगी- "लेकिन मुझे गिरफ्तार करने के बाद मिस्टर चक्रधर ने मेरी जो जमकर धुनाई की-वह बारीक काम नहीं था।"

"सॉरी सर!" चक्रधर के चेहरे परखेदपूर्ण भाव उभरे- "मैं वाकई अपने किये के प्रति बहुत शर्मिन्दा हूं।"

"इसमें शर्मिन्दा होने जैसी कोई बात नहीं मिस्टर चक्रधर।" कुलभूशण फौरन बोला-

"इट्स रादर ए मेटर ऑफ प्लेजर-आइ एम प्राउड ऑफ यू। उस समय तुम अपने कर्तव्य का पालन कर रहे थे-इसलिये सिर्फ मुझे ही नहीं बल्कि पूरे पुलिस डिपार्टमेन्ट को तुम्हारे ऊपर गर्व होना चाहिये।"

"यू आर वेरी काइंड सर।"

कुलभूषण आहिस्ता से मुस्करा दिया।

"अब अदालत वाला स्पॉट आता है।" कुलभूषण आगे बोला- "यह तो अब आप लोग भी समझ गये होंगे कि मैं गिरफ्तार ही इसलिये हुआ था-क्योकि मुझे यकीन था कि संगठन के लोग मुझे पुलिस के शिकंजे से किसी-न-किसी तरह जरूर निकाल लेंगे।"

"आपको ऐसा यकीन क्यों था सर?" एक पत्रकार ने पूछा। "सवाल अच्छा है।" कुलभूषण बोला- "दरअसल मेरे इस यकीन का सबसे बड़ा ठोस कारण ये था कि संगठन के लोगों को मेरे बारे में पता चल चुका था-और वह पुलिस की तरह मुझे न सिर्फ चिना पहलवान का खूनी समझ रहे थे बल्कि उन्हें इस बात का भी पूरा भरोसा था कि नटराज मूर्तियां मेरे ही पास हैं-यही मेरे यकीन की असली वजह थी-मैं जानता था कि नटराज मूर्तियां हासिल करने के लिये वह किसी-न-किसी तरह मुझे पुलिस के शिकंजे से जरूर आजाद करायेंगे-जैसा कि इन्होंने किया भी। डिफेन्स लॉयर यशराज खन्ना के तर्क वाकई लाजवाब थे-और मैं जीवन में पहली बार किसी वकील से इतना प्रभावित हुआ था। इस प्रकार संगठन के लोग मुझे अदालत से रिहा कराकर खुद ही अपने अड्डे पर ले गये-इन्होंने अपनी मौत को खुद ही दावत दी। हां-धुनाई मेरी वहां भी खूब हुई।"

पूरे कांफ्रेंस हाल में हंसी का फव्वारा छूट गया।

"उसके बाद दिल्ली पुलिस द्वारा मेरे ऊपर जो एक लाख रुपये का इनाम घोषित किया गया-वह भी हमारी ही योजना थी।"

"उससे क्या फायदा मिला आपको?"

"बहुत बड़ा फायदा मिला। उसी घोषित इनाम की वजह से मैं सेठ दीवानचन्द की रहनुमाई हासिल कर सका-उसका कृपापात्र बन सका-और इन सबसे ऊपर मैं उसी घोषित इनाम की वजह से संगठन का सक्रिय मैम्बर बन सका।"

"लेकिन आपको इनके संगठन में शामिल होने की क्या जरूरत थी सर।" दूरदर्शन टीम के एक सदस्य ने पूछा- "आपका मिशन तो वहीं खत्म हो गया था-आपने फौरन ही इन लोगों को गिरफ्तार क्यों नहीं करा दिया?"

"मैं बिल्कुल यही कदम उठाता।" कुलभूषण बोला- "लेकिन जब मुझे यह मालूम हुआ कि इनका कोई सुपर बोस डॉन मास्त्रोनी भी है-तो मैं रुक गया। मैंने फैसला कर लिया कि मैं इन सबको रंगे हाथों सुपर बॉस के साथ गिरफ्तार करूंगा।"

"ओह!"

"घटनाक्रम आगे बताने से पहले मैं आपको एक बात और बता देना मुनासिब समझता हूं-वो यह कि इंस्पेक्टर चक्रधर को जो असली सोने की नटराज मूर्ति बल्ले ने दी, उस मूर्ति को मैंने ही जानबूझकर घटनास्थल पर फेंका था। और मेरे पास मौजूद छः मूर्तियों में से वही एक असली सोने की मूर्ति थी। मैं समझता कि अब आप लोगों को यह बताने की जरूरत नहीं कि पीतल की पांच ही मूर्तियां क्यों गढ़वाई गयी थी। मैं फिर स्पष्ट करता हूं-दरअसल पीतल की पांच मूर्तियां इसलिये गढ़वाई गई थी-क्योंकि आवश्यकता ही पांच मूर्तियों की थी।"

सब स्तब्ध भाव से कुलभूषण को देख रहे थे।

"इस पूरे घटनाक्रम के बाद।" कुलभूषण बोला- "दुर्लभ ताज का नाटक रचा गया।"

"क...क्या?" डॉन मास्त्रोनी के नेत्र अचम्भे से फटे- "दुर्लभ ताज का कजाखिस्तान से यहां आना भी एक नाटक था?"

"जी हां।" कुलभूषण के होठों पर चालाकी से भरी मुस्कान रेंगी- "दरअसल तुम लोगों ने इण्डियन म्यूजियम से जो दुर्लभ ताज चुराया-वो असली ताज नहीं था। वह तो असली ताज की डमी मात्र था। सच्चाई ये है कि असली ताज तो कजाखिक्तन सें यहां आया ही नहीं-वह कजाखिस्तान में अपनी जगह मौजूद है। यह सारा नाटक कजाखिस्तान गणराज्य की सहमति लेने के बाद तुम्हें गिरफ्तार करने के लिये रचा गया। यहां तक कि मिस्टर जगदीश पालीवाल की तरफ से अखबार में गर्वनेस की आवश्यकता के लिये जो विज्ञापन छपा-वह विज्ञापन भी हमारे ही मायाजाल का एक हिस्सा था। मिसेज पालीवाल को जानबूझकर एक सप्ताह के लिये उदयपुर भेजा गया। शीतल को गवर्नेस बनाकर भेजना भी हमारी पहले से सोची-समझी योजना थी-और यह सारा खेल इसलिये खेला गया, ताकि पूरे ड्रामे कोहकीकत का रंग दिया जा सके।"

"इ...इसका मतलब मिस्टर पालीवाल को यह रहस्य पहले से ही मालूम था।" चक्रधर हैरानी से बोला- "कि आप क्राइम ब्रांच के ऑफीसर हैं?"

"पहले से ही नहीं बल्कि बहुत पहले से मिस्टर पालीवाल को यह रहस्य मालूम था--दरअसल वह मेरे बचपन के मित्र है। हमने साथ-साथ पढ़ने से लेकर लगभग हर काम साथ-साथ किया है। हां-एक काम में, मैं इनसे जरूर पिछड़ गया।"

"किस काम में सर?"

"शादी इन्होंने मुझसे पहले कर ली।"

पूरे कांफ्रेंस हॉल में हंसी का तेज फव्वरा छूट गया।

"अन्त में मैं एक रहस्य और बताकर इस पूरी कहानी का पटाक्षेप करता हूं।" कुलभूष बोला- "दुर्लभ ताज चुराने की जो मास्टर पीस योजना दीवानचन्द का सुपर बॉस के नाम से मिली-दरअसल वह योजना भी मेरे दिमाग की ही उपज थी। शीतल की मदद से मैंने वह कागज कांफ्रेंस हॉल में फिंकवाया था।"

एक बार फिर सब सन्न रह गये।

"तो दोस्तों-यह थी वो योजना।" कुलभूषण थोड़ा रुककर बोला- "जिसे क्राइम ब्रांच ने इस संगठन को गिरफ्तार करने के लिये रचा था-हमें इस बात की खुशी है कि हम अपने मकसद में कामयाब हुए। इसके अलावा अगर आपमें से किसी के दिमाग में कोई सवाल मंडरा रहा है-तो वह बे-हिचक उसका जवाब पूछ सकता है।"

"सर।" अखबार का एक रिपोर्टर बोला- "आप बल्ले के बारे में कोई, टिप्पणी करना चाहेंगे?"

"जरूर! इस पूरी योजना को अंजाम देते समय बल्ले एकमात्र एक करेक्टर था-जो हमेशा मौत की नंगी तलवार बनकर मेरे सिर पर लटका रहा। अगर मैं पूरी योजना में किसी से आतकित हुआ-तो वह बल्ले था। यशराज खन्ना की हत्या उसने जिस प्रकार देखते-ही-देखते कर डाली थी-वह वाकई उसके जुनून की इन्तहा थी। फिर मुझे अंदर-ही-अंदर बल्ले से हमदर्दी भी थी-क्योंकि वह जो कुछ कर रहा था, भावनाओं में बहकर कर रहा था। मैं बल्ले को बचाने की हर मुमकिन कोशिश करता-लेकिन डॉन मास्त्रोनी ने जितनी तेजी से उस पर गोली चलाई, उस पोजीशन में कोई कुछ नहीं कर सकता था।"

"एक आखिरी सवाल और सर!" दूरदर्शन टीम का इन्चार्ज थोड़ा मुस्कराकर बोला-

"आपने सबके विषय में बता दिया लेकिन यह नहीं बताया कि मिस शीतल अब क्या रोल अदा करने वाली हैं?"

"थोड़ा धीरज रखो।" कुलभूषण ने भी मुस्कराकर ही जवाब बहुत जल्द इस सावाल भी मिल जायागा भी।"

"थैंक्यू सर।"

"एनी क्वेश्चन?"

"नो सर!"

"ऐनीथिंग ऐल्स?"

सब खामोश रहे।

फिर वो सनसनीखेज मीटिंग वहीं बर्खास्त हो गयी थी।

डॉन मास्त्रोनी सेठ दीवानचन्द, दशरथ बिलोमोरिया और कान्ति पाण्डे पर अदालत में मुकदमा चला।

मुकदमे के दौरान एक बात का और पर्दाफाश हुआ वो यह कि सुपर बॉस डॉन मास्त्रोनी माफीया ग्रुप का एजेंट था और उसे जितनी भी महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल होती थी, माफिया ग्रुप के माध्यम से ही हासिल होती थीं।

उन चारों को अदालत ने उस कैद की सख्त सजा सुनायी। जगदीश पालीवाल को अपना बेटा मिल गया।

और शीतल!

किशनपुरा स्थित अपने घर में खामोशी से लेटी थी. शीतल। मुंह तकिये में छिपा रखा था और उसके अन्तर्मन में उठा ज्वार-भाटा उसे हिचकियां ले-लेकर रोने के लिये प्रेरित कर' रहा था।

वह रोती जा रही थी।

रोती हो जा रही थी।

उसकी आखों के गिर्द कुलभूषण का चेहरा चक्कर काट रहा था। उसे वह पल याद आ रहे थे, जब कुलभूषण ने उससे बड़े अनुरागपूर्ण स्वर में कहा था- "मैं तुमसे प्यार करता हूं शीतल-और कभी-कभी- एक सपना भी देखा करता हूं।"

"क...कैसा सपना?" शीतल का दिल धड़क उठा था।

"यहीं कि हमारे पास खुब धन-दौलत हो-आगे-पीछे नौकर-चाकर हों-शानदार गाड़ी हो-खूबसुरत घर हो। और'...और उस घर में तुम किसी राजकुमारी की तरह रहो।"

कुलभूषण के वह शब्द सुनकर शीतल का पूरा अस्तित्व हवा में परवाज करने लगा था-उसे यूं महसूस हुआ था, जैसे सारे जहान की दौलत उसे मिल गयी हो।

"हे भगवान!" शीतल ने जोर से सुबकी ली- "भूषण ने आखिर मेरे साथ ऐसा मजाक क्यों किया? क्यों किया?"

"उसने तुम्हारे साथ मजाक नहीं किया शीतल।"

"यह मजाक नहीं तो और क्या था?" शीतल गुर्रायी- "क्या अधिकार था उसे मेरे सपनों से खेलने का?"

"यह अधिकार दिया नहीं जाता पागल।" तभी किसी ने स्नेहसिक्त भाव से शीतल के बालों मैं उंगलियां फेरी- "यह अधिकार तो खुद-ब-खुद हासिल हो जाता है।"

शीतल एकदम चौंककर पलटी।

सामने कुलभूपण खड़ा था।

"न...तुम...तुम।" शीतल हड़बड़ा उठी।

"किसी महापुरुष नें सच ही कहा है शीतल-हर आदमी की सफलता कई पीछे किसी-न-किसी स्त्री का हाथ होता है। आज मुझे यह जो सम्मान मिला-यह जौ शोहररत मिली-उसकी एकमात्र हकदार तुम हो-सिर्फ तुम।"

"य...यह तुम क्या कह रहे हो भूषण?"

"जानती हो।" कुलभूषण भानुकतावश बोलता चला गया- "इस केस को सॉल्व करने का मुझे जो सबसे बड़ा पुरुस्कार मिला है-वह तुम हो शीतल-तुम। मुझे आज तुम हासिल हो गयीं-सच्चे दिल से प्यार करने वाली एक पत्नी हासिल हो गयी।"

"म...मुझे यह सब कुछ एक सपना लग रहा हैं भूषण।"

"नहीं-यह सपना नहीं है।"

"ल...लेकिन मुझे यकीन नहीं आ रहा।" शीतल की 'आवाज कंपकपायी।

कुलभूषण नें फौरन अपने दहकते होंठ शीतल के होठों पर रख दिये-फिर उसे कसकर अपनी बांहों में भर लिया।

"क्या अब भी तुम्हें यह सब एक सपना ही लग रहा है शीतल" वह गरम सांसों के वेग में बोला।

शीतल खामोश रही।

उसका शरीर तपने लगा।

वक्ष उठने-गिरने लगे।

"ज...जवाब दो शीतल।" कुलभूषण की आवाज में मदहोशी थी, बेचैनी थी- "क्या अब भी तुम्हें वह सब एक सपना ही लग रहा है?"

"नहीं।" शीतल की आवाज वासना के वेग से कांपी- "नहीं-यह सच है-अ...अटूट सत्य।"

वह कसकर कुलभूषण के सीने से लिपट गयी।

बाहर एक शानदार गाड़ी शीतल का इंतजार कर रही थी। एक खूबसूरत जिंदगी उसका इंतजार कर रही थी।

कुलभूषण ने उसे जितने भी सपने दिखाये थे-वह आज तमाम सपने पूरे हो चुके थे।

तमाम सपने!